

## भूमिका ।

—०—

जिनमें कोप हिन्दीभाषा में प्रकाशित हो चुके हैं उन में ऐसे बहुत ही कम निकलेंगे कि जिन में पूरी सहायता मिल सके। भाषा के तन्त्र जानने के लिये कोप का होना आवश्यक है, मैं इसी शोध विचार में था कि बाबा वैजूदास जी महात्मा का बनाया हुआ विवेक नामक एक अपूर्व कोप महात्मा ज्ञानी दास महेश स्यान फतुहा (जिला पटना) से मेरे हाथ लगा और देखने में सब भाँति उपकारी जान पड़ा। मैं उस को सर्वसाधारण के लाभ के लिये प्रकाशित करना हूँ। आशा है कि लोगों का उम्र से उपकार होगा। इस स्थान पर यह कहना अनुचित न होगा कि विवेक कोप में मैंने अनेक पुस्तकों के कठिन शब्दों को भी जोड़ दिया है।

उदाहरण में ऐसे २ द्रोहे दिये गये हैं कि जिन से एक शब्द के अनेक नाम मालूम होने हैं। जैसे पंकज लिख कर कमल के सब नाम लिख दिये गये हैं। अनेकार्थ वाले शब्द भी रखे गये हैं। रामचरितमानस के भायः सब शब्द इसमें आगये हैं। दोहा, चौपाई, छंद इत्यादि। उदाहरण में लिख कर उन का अर्थ भी लिखा है।

इस कोप में चमत्कार यह है कि साहित्य जाननेवालों के सिवाय वैद्य, कवि, व्याकरणज्ञ इत्यादि को भी लाभ पहुँच सकता है क्योंकि औषधि तथा रोगों के नाम, पिंगल के छन्द, जातिवाचक शब्दों के भेद और यौगिक शब्द इत्यादि पढ़ाने की रीति उत्तम प्रकार से लिखी गई है। इस की उत्त-

मता के विषय में मेरे कहने की आवश्यकता नहीं पाठकगण आप ही अनुभव कर लेंगे ।

मेरा यह कहना तो अभिमान समझा जायगा कि विवेक कोष के सदृश कोई दूसरा कोष ही नहीं छपा परन्तु इस कहने का मैं साहस कर सकता हूँ कि अनेक शब्द जो इस कोष में आये हैं आज तक हिन्दी के किसी कोष में पाये नहीं जाते । मैं इस बात को भी भली भाँति जानता हूँ कि यह कोष दोष रहित नहीं बल्कि अनेक दुषणों से परिपूरित होगा । परन्तु यदि इस से लोगों को कुछ भी सहायता मिलेगी तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूँगा ।

इस कोष के संकेतवाले अक्षरों का अर्थ नीचे लिखा जाता है ।

स	= संस्कृत
प	= प्राकृत
फ़	= फ़ारसी
द	= देशी भाषा
क	= कदाचित्
मु	= मुहाविरा
गु	= गुणवाचक
स्त्री	= स्त्रीलिंग
पु	= पुल्लिंग

दारनपुर  
संवत् १९२७  
रामनौमी रविवार ।

श्रीतल प्रसाद सिंह.

# मङ्गलाचरण ।

दोहा ।

- नमो प्रथम श्री गुरुचरण , जिन ते भयो विवेक ।  
 जनम जनम की अज्ञता , मिट्टी सकल छन एक ॥१॥  
 दूजे सन्त समाज पुनि , जाते चित सर सान ।  
 बन्दों सादर कर जुगल , लहन सकल कल्याण ॥२॥  
 रामायन शब्दार्थ कुन , श्री तुलसी परवीन ।  
 और ग्रंथ के शब्द कछु , कंठहि लहत कठीन ॥३॥  
 नव स्वर चौतिस अच्छरहि , आदि नाम परबन्ध ।  
 नाम रूप कठोरता , एक जाइ निरबन्ध ॥४॥  
 जय जाको जहि नाम का , अर्थ समुझि नहि जात ।  
 अच्छर आदि विचारि ते , सहज होत सरुपात ॥५॥  
 संस्कृत माकृत फ़ारसी , विविध देस के बोल ।  
 सगढ़ि इशि सुनि यथामति , रक्षित कोष अलोल ॥६॥  
 पदति सब के मध्य में , अच्छर चारि प्रकार ।  
 संस्कृत वार्ण सकार ते , माकृत बोल पकार ॥७॥  
 फ़ारस बोल फ़कार ते , बानी देस दकार ।  
 या प्रकार ते जानिये , चारहुं वर्ण विचार ॥८॥  
 पण्डित ताहि सराहिये , मुनि परवानी मुक ।  
 बिगरी बात मुधारिहें , नहि धरि राखें चूक ॥९॥  
 राम चंद निधि अत्रिमुन , सम्मत अगहन मास ।  
 कोस विवेक प्रचार किय , श्रीजुत बैजू दास ॥१०॥

सोस्टा ।

- भदा रहहि मुख रूप , अधिकारी सब याहि के ।  
 राखें छोड़ अनुर , दास विवेक अति चिन्तइ ॥१॥  
 मुन्दीचक गो ग्राम , भागलपुर महं जानिये ।  
 तहां जपन गुरुनाम , सिद्ध होत मानस विमल ॥२॥

# विवेक-कोष ।

प. ]

[ अं०.

प. (स) विष्णु संज्ञा. विष्णु का  
नाम, निषेधार्थ. वर्णमात्रा  
का पहिला अक्षर. निषेध  
वाचक अव्यय जैसे अभर्न,  
और जब यही प ऐसे  
शब्द के पहिले पावे कि  
जिसका पहिला अक्षर  
खर हो तो प को पन्  
ही जाता है जैसे अनंत,  
अगादि, अनेक इत्यादि ।

अक्षयः अकष्य, कहने के योग्य  
नहीं ।

अक्षयनीय जो न कहा सके,  
अक्षय, जो कहने के योग्य  
नहीं ।

अकारोत् (स) किया ।

अं. (स) असम, फिरण ।

अंकुरः (स) उत्पत्ति, आरंभ.

पहले का निकला पत्ता,  
रुधिर, वात, जल अनंत,  
असंख, अंकुरा, पुनगी ।  
अंशुषा । [आयुध ।

अंकुश (म) हाथि के मेरु का  
अंग (म) कंधा. खंड, भाग,  
हिस्सा किस्मत, टुकड़ा ।

अंशु (म) किरण, किरक ।  
अंशुमत्फला (न) रिव बंला ।  
अंशुमती सरिवन ।

अंगुदः अंगूठक (द) सूर्य चंद्र-  
मा के किरण कनी पानी ।

अंशुमान (म) नानराजा सगर  
पौत्र अर्थात् अममंजस-  
पुत्र, मूर्ख, दियाकर ।

अंशुकः (म) पत्ता, वस्त, कप  
ड़ा । बहुवचन अंशुकानि ।

अंष्ट्र (स) पाप, अपराध ।



पंक्ति (म) चरक, पञ्च. पंक्ति ।  
 पञ्चक, (म) कंठक विना,  
 निर्भय, वेष्टका, मन्त्रविना  
 निरुपद्रव वेष्टक के ।  
 पञ्चनि (म) कनकाई के, पुनि  
 के, पुनि कर के ।  
 पञ्चरथ पञ्चरथ, विना का-  
 रण । , नागति ।  
 पञ्चरथ (म) नाम वाचम मे  
 पञ्चरथ (म) पञ्चरथ, निर्भय ।  
 पञ्चन (म) वाच पाव भोगीन,  
 वाच पाव पादि पंग के  
 विना, कोष, कनकाईन,  
 कनकाईन ।  
 पञ्चनर (म) वाचपाव, पुनः-  
 पुनः, पञ्चनर, वेष्टन ।  
 पञ्चनरात् (म) देवान् यथा  
 यथा, पञ्चनरा, पुनःकाव्य ।  
 पञ्चनर (म) विन मनीजन,  
 मनी विनाकारण ।  
 पञ्चन (म) दुष्टेन, कनका,  
 पञ्चनर, कुनमय, विना  
 कनका के ।  
 पञ्चाक्ष (म) मनीर रचित ।

पञ्चाक्ष के- (म) पञ्चविना ।  
 पञ्चाक्षको, (म) विजयी, दा-  
 मिनी । [ मरन ।  
 पञ्चाक्षपञ्चाक्ष विना, मरन,  
 पञ्चाक्ष, कनकाईन, निरुपद्रव  
 कनकाईन मनी ।  
 पञ्चाक्ष की कनका- (म) विजयी-  
 रा, कावे पञ्चाक्षविना ।  
 पञ्चाक्ष, (म) पञ्चाक्ष, पञ्चाक्ष ।  
 पञ्चाक्षमन्त्र—नमः श्रीम  
 ताराय नमः पञ्चाक्ष विजयी ।  
 पञ्चाक्ष नाम पञ्चाक्ष विजयी  
 पञ्चाक्ष । पञ्चाक्ष पञ्चाक्ष विजयी-  
 य पञ्चाक्ष विजयी । पुनि  
 पञ्चाक्ष विजयी नाम  
 पञ्चाक्ष । पञ्चाक्ष नाम-  
 न पञ्चाक्ष, कोष पञ्चाक्ष-  
 निनीय । मोन वात पञ्चाक्ष  
 पञ्चाक्ष पञ्चाक्ष पञ्चाक्ष-  
 मोन १ १ १  
 पञ्चाक्ष (म) पञ्चाक्ष, पञ्चाक्ष,  
 मोन, निरुपद्रव पञ्चाक्ष  
 मनी, पञ्चाक्ष कनकाईन-  
 पञ्चाक्ष रचित ।

चक्रिन्ध्रिय (म) निष्ठाप, वेगु-  
नाह । [मी ।

चकीर्ति (म) प्रशयय, बटना-  
प्रतिन, (प) बाढ़ागामी, सुगि  
के, कगयाएके ।

चर्चोदिनी (म) सेना विजय  
लिधमे २१८००, रघु पीर  
२१८०० हागी ६१६१०  
घोड़ी के सवार १०८१५०  
पैदक घोडा हो । [दीन ।

चकुल (स) कुल रचित, कुल-  
चकुलाना, घबराना । दुखी  
होना ।

चकीर्त्त (म) समृद्ध, समस्त ।  
चकुल (म) निर्माशक, चलय,  
तीक्ष्ण, भावहरित, चौध,  
चर्चक साम ।

चकुटा (द०) सुजाहवा ।

चकुटा (स) बहुदेव जाता हो-  
नका बड़ा, छोटा होना  
चलय चलय, जिस का लय  
मही, भाव रचित । [अम  
का भाव हो ।

चकुटा (स) सुजाहवा ।

चट्टीट (स) चंकोत ।

चट्टीटक (स) चंकोन ।

चट्टीन (म) टेका ।

चमण्ड (म) भंपुरी मारा, पूर्ण,  
मयन, एक रम, चमण  
रचित, जिस का नाम  
न हो, जिसका टुकड़ा न  
हो, दिनटूटा ।

चमंडित (स) जिस का चंड  
न हो भदे । [चमण ।

चमारा, (प) मट्टपुट, भूमि  
चमारा (प) नाह, जड़ने की  
कगद, गुमाई का धाम  
गोमाई व रदनेकी कगद ।

चमिल, (स) पूर्ण, मपूर्ण  
समृद्ध, निरुद्ध, संभकार,  
कगद, कगद, मय, मय,  
मय । पुरा, मारा ।

चमेट, (स) भावा, रचित,  
निर्मित, रचित ।

चम (स) कगद चमेट,  
चमेट, चमेट, मय ।

चमणित । द० चमणित,  
चमणित । द० चमणित, चमणित ।

चंगुठ (५) चंगुठा ।

चंगुठादि (५) चंगु चदि, चानर

विज्ञायठ चादिभूषण ।

चंगुरि } (५) हाथ पाथी  
चंगुरी } की उंगलिय ।  
चंगुली } [प्रियङ्गु ।

चङ्गल (५) पत्नी, मिहरी, नारी.

चङ्गनामिका (५) विरंगु ।

चङ्गवनि-चंगवनिद्वारा (६)

महला, जगा चंगेजन-

द्वार, मादमी ।

चङ्गारक (५) मङ्गलवार, चम्पि.

मैंगराज रवि ।

चङ्गार कङ्कटी (५) निहरी गोह

मादि चव के विज्ञान का

जो होता है । [करनजी ।

चङ्गावली (५) चम्पेती ज्ञान

चङ्गाव हल (५) ईगुन, दरमल ।

चङ्गिरा (५) हङ्गलति, तादा

मल्ल ।

चङ्गिरी चङ्गिरी (६) करती,

रथवस्त, वक्तार । [ङि ।

चङ्गि (५) चरण, पगु, पैर चं-

चङ्गुरी चङ्गुरी (६) पगुनता,

रिङ्गी, मयपरी, ठठोनी,

मयटता, मेनाइवन, दु-

हतर, महेदे ।

चङ्गवत (५) पान करत ।

चङ्गव (५) चङ्गरक, चाङ्गव ।

चङ्गव (५) विष्णु, चङ्गव, चङ्गव

चादि चिर, चिर, चटन ।

चङ्गर (५) जो न चङ्गव नह ।

चङ्गवा (५) मङ्गी, पुष्पाचादि

चिरा, चटला ।

चङ्गुत (५) चरण रदित, चिर

परमात्मा ।

चङ्गवत (५) चिर, शांत ।

चङ्गव (५) चङ्गमान, रहने,

हाते मय प्रकारको कुमलता ।

चङ्ग (५) चिटिया, बहारा,

गोवन, चला, जङ्गरीन,

जङ्गरहित, ईश्वर, ओ

जङ्गला नहीं, मङ्गल मङ्गला,

चाङ्गु, चङ्ग, ओङ्ग, पङ्गति,

राजा दमय के पिता का

नाम ।

चङ्गक (५) सुपेद चङ्गरी ।

चङ्गक (५) मङ्गला ।

पञ्चम्या (म) पञ्चवादन ।

पञ्चम्याहा. (म) पञ्चवादन ।

पञ्चम्यिका. (म) बज्जरी ।

पञ्चहा. (म) कवाछ ।

पञ्चमीदा. (म) पञ्चमीदा ।

पञ्चमीटिका. (म) पञ्चवादन ।

पञ्चम्यिका. (म) मिट्टासिंहो ।

पञ्चम्यी. (म) बकरासिंहो ।

पञ्चम्य. (म) शिवधनुष ।

पञ्चमर. (म) बिशालमर्प्यमेष्ट ।

पञ्चम, (स) शिव, गोकर्, मदा-  
देव ।

पञ्चर. (म) पट्टह, करारहित,  
बुद्धीतो बिना, बिना बु-  
द्धाया. चमर, युवा ।

पञ्च (द०) पञ्च, पञ्च ।

पञ्चा. (म) प्रयायी, कली,  
पार्यती, हरी, बकरी,  
नाया ।

पञ्चाटि (म) बकरी का दूध ।

पञ्चादूध (म) बकरीका दूध ।

पञ्चानिल (म) एक पायी का  
रस का नाम । [रसा ।

पञ्चा (म) का लोता नहीं

पञ्चातरिपु. (म) राजाधि-  
ठिर ।

पञ्चाचक (म) लो फिफ कांनता  
मे रहीत होनाय ।

पञ्चाम. पञ्चानु (म) पञ्चाम,  
आंध्रप्रदेशनम्या ।

पञ्चिन (म) बघहाला, हरिन  
को खास, मृग हाया, मृग-  
चर्म, चमहा, आ पूजाया-  
अ मे प्रमिह चर्म ।

पञ्चिर (स) पामिना, चौक ।

पञ्चिद्वग. (म) बाघ, तीमर ।

पञ्चीर्ण (म) चोगुप, नवीन,  
अपच ।

पञ्च (स) मूर्ख, देवकुप बिद्या-  
हीन, अज्ञान, पञ्चानी  
अज्ञान, बिनाज्ञान ।

पञ्चता (म) कृता, मूर्खता,  
देवकुप, अज्ञानता ।

पञ्चात (म) बिनाज्ञान, न जा-  
ना दूदा, नामानुम, अज्ञ-  
ज्ञान, अज्ञ, अज्ञोप, अ-  
ज्ञमभ । [ना ।

पञ्चात (म) जानाभाह, मूर्ख

अपने अनुसार । [ना।  
अनुकृति (म) होर, विद्वत्-  
अनुक्रम (म) परिपाटी, रीति,  
भाति ।

अनुकीय (म) छपा, दया,  
दयालुता, निर्या चेमा ।

अनुग- (क) योगुन, मग्न, दूत,  
दाम, मेवक, पीछे चलने-  
वाला ।

अनुग्रह (म) दया, छपा, मि  
हवांसी, मुदा दया, प्रस-  
न्नता ।

अनुनामी- अनुचर, (म) अनु-  
कृष्ट, दाम मेवक,  
दूत, दायाकारी, नीचर,  
नाचर, पीछे चलनेवाला,  
टहकृष्ट, मःपी ।

अनुचरी- (म) दाया, टहलिनो,  
सीढ़ी दादी ।

अनुचित (म) अयोग्य, जो  
मीमांसित नहीं, अयोग,  
टीक नहीं ।

अनुव- (म) पीछे से कन्दा कृष्ट,  
अनुभाता, सीढ़ी भादि ।

अनुजा (म) छोटी बहिनो,  
सप्तमा भगिनो, बहिन ।

अनुदिन (म) सदा, प्रतिदिन,  
दिन पीछे, हरएक दिन,  
दिनदिन । [सम्बन्ध ।

अनुम्य- (म) मित्र, सुहृद,

अनुवाद (म) बारम्बारकथन,  
बारबार कहना, पीछे  
कहना । [वर्गीभूत ।

अनुवर्ती (म) विद्युत्तुंग,

अनुभव (म) पहल, जो थोछ  
काम्यव में पाव सी कामा  
योग वा सुना, जाय, ज्ञान,  
दयाईबोध, अनुमान, वि-  
चार, दयाईज्ञान, मोच-  
ना, समझना, वृत्तना ।

अनुपायनी ( ) बिना मोड़ के  
चलना ।

अनुभवही (दो) अंतममय सुख  
पावना जो बचन से न  
कहा जाय ।

अनुभवति (दो) जानति ।

अनुताप (म) क्षमा करके पद-  
ताका ।

अनुभाउ (द) नदिमा ।  
 अनुभावणी (स) अंत समग ।  
 अनुमति (म) पात्रा, भगति,  
 सनाह, राज, हुक्म, विचार ।  
 अनुमान (स) पन्दाङ्ग, घटकारा,  
 व्यास, विचार, विचारांश,  
 अनुमार, प्रमाण, घटक्षण ।  
 अनुमानी (स) नेवायिक  
 विचार किया ।  
 अनुभवगम्य (स) अनुभवति  
 गमने में जो आवै ।  
 अनुमीदन (म) गर्भमा, सरा-  
 हना पर सुख देखि जो  
 सत्तोष ।  
 अनुराग (म) छेद, ली, प्रीति,  
 नमता, अत्यंतसाह, अति  
 प्रीति, बहुत मुहब्बत मोद,  
 छोड़, सनेह, प्यार ।  
 अनुरागी (द) प्रीतिहरनेवाला ।  
 अनुरूप (स) सदृश, न्यायक,  
 तुल्य, योग्य, बराबर, अनु-  
 सार, समान, एरुसा, अपने  
 योग्य, अनुकूल, जैसा भावे ।  
 अनुपम (स) उपमारहित,

अनूप, उत्तम ।  
 अनुगोष } (म) रोक, रोकना,  
 अनुशोष } अनुसार, उपकार,  
 अवेछा ।  
 अनुविह (म) अहा हवा ।  
 अनुगासग (स) पात्रा, हुक्म  
 अनुमति, भग करग,  
 गिछा, मीन ।  
 अनुदिन (स) सदा ।  
 अनुसन्धाग (म) मागगा, मा-  
 नस, भन्वेपण, खोजना,  
 तत्ताम, खोज पता ।  
 अनुसार (द) चलना ।  
 अनुसरण (द) बीच में पड़ना ।  
 अनुसारी (स) गम, विचार,  
 आह्वस, समान, चलन,  
 सहज, तुल्य, नुवाफिक,  
 साधक, योग्य ।  
 अनुतारी (म) कही, अनुकूल ।  
 अनुध्या (स) अविमुनि की  
 पत्नी ।  
 अनुहरणी (द) स्वकर्म को  
 कहते हैं । [सर्वमय ।  
 अनुस्यूत (स) मर्त्य व्यापक,  
 अनुहर (स) अनुसार, योग्य,

अप (म) पानी ।

अप (स) जल, मीठा, नीच,  
गह, मुरा, पहे, दूर ।

अपकर्म (स) भागना ।

अपकीर्ति (स) अपयश, बद  
नामी । [दूर] ।

अपकारी (स) नष्टकारी, दुःख

अपगति (स) दुर्माति, अपनी  
गति । [नामा] ।

अपमन (स) जना जना मिट

अपना (स) नदी, सरिता ।

अपमय (स) चुक, [गति] ।

अपत्य (स) पापी वा बिना

अपहर (स) मिथ्याहर, पाप  
घोर वे भय, कुनाम, भूठ,  
हर, निजहर, निज चार  
वे हर ।

अपति } (स) पापी, बिना  
अपत्य } तिहा, अपाहर ।  
अपत } [हर, भूठा हर] ।

अपमय (स) भय, हर, अपनी

अपय (स) राह रहित ।

अपत्य (स) पुत्र, सन्तान,  
कन्या ।

अपट्ट (स) मूर्ख, गड़ ।

अपवर्ति (स) नम्र ।

अपट्टः (स) तिमिस ।

अपमयन मिटाना ।

अपमय (स) मूर्ख, कन्या,   
गोचः [अपमय] ।

अपवाद (स) निन्दा, दीप,

अपमय (स) भाषावनन, अप-  
मय, नाय, बिनाहा वृषा,  
अमय मय, पातमाया ।

अपमय (स) मोन मय ।

अपयः (स) करोत ।

अपमान (स) अपाहर, तिर-  
स्कार, प्रतिष्ठा भंगहोना,  
मानरहित, वैरमृती ।

अपमयन (स) अपकीर्ति, बद-  
नामी ।

अपर (स) दोष, ग्यारा, चौर  
भिद्य, दूनरा, चौर एक,  
चौर दुवरा कोई ।

अपरंज (स) प्रमदपि, चौर भी ।

अपराजिता (स) दोनों विष्णु-  
त्ताम्ना । [अपट्टना] ।

अपराधुननेवा (स) भास गद-

अपवर्गः (घ) मोक्षः ।  
 अपेक्षः (स) इच्छा, दृष्टि ।  
 अपराधः (म) गट्ट पाराधनः ।  
 अपर्धः, पाप, दोष, क्लेशः ।  
 अपरिगपदगन् न गिनता  
 हुषा, न विचारताहुषा ।  
 अपरिमितः (स) अचञ्चलः,  
 अनन्तः ।  
 अपरोक्षदूकः (म) साक्ष रेंड ।  
 अपस्तः (स) अस्त ।  
 अपसीदः (स) अवस्य, दोष,  
 निन्दा, अपलोक, अपयमः ।  
 अपमन्थः (स) भाषा, पाठन, वायु  
 त्याग, अग्न्यन्थ, नटवादी ।  
 अपसन्धनाः (म) समन्तरः । नाश  
 अपमर्त्यः (स) निर्मल, अन्नमः ।  
 अपहं (स) नाशकम् । शिना ।  
 अपहरही (द) भीरावरी इ ।  
 अपहस्तः (स) नाशक, दूर  
 करत ।  
 अपहारः (म) नाश, घात ।  
 अपहरता-दूर करना ।  
 अपहारी (स) नाशक, घातक,  
 नाश करनेवाला, नाशकर्ता

अपहरण करनेवाला ।  
 अपघ्नः (स) पंचहीन, पंचनाश ।  
 अपचीयर्तः (स) जीने जीने दिन  
 रितित दे सो घोष होत ।  
 अपधानः (स) भागभा ।  
 अपवाहः (म) आँख का दारद  
 बाका कोया, आँख की  
 मोक्ष । [हो चितवन ।  
 अपाह्वयमः (म) कटाक्ष, तिर-  
 अपानः (म) } अग्न्यन्थ, पाप,  
 (प) } चेत, अपमर्त्य अ-  
 पने को ।  
 अपानागः (न) विरचिरी ।  
 अपानागंफलः (स) विरचिरी  
 का बीज ।  
 अपायः अपायनः (म) पागाती,  
 अयः नाश, हाजि, दूर  
 होना, मिटना ।  
 अपारः (म) पार रहित,  
 अपाराः समुद्र, अगम ।  
 अपि (म) निन्दक, भी ।  
 अपुर्णवः (म) निर्जन, सुक्ति ।  
 अपूर्ण्य (स) अपाय, अन्नम,  
 अनूप । [सच ।  
 अपेक्ष (प) पृथक् पृथक्, प-





अवदातः (म) अवज्ञा, निर्ममता ।

अवदातः (म) सामान्य ।

अवधः (म) शीघ्र, विचार, नि-  
ष्ठा, प्रवृत्ति ।

अवधः (म) अवधियापुरी ।

अवधपतिः (स) अवधका राजा ।

अवधिः (स) पार्ष्व, समय,  
अर्जुन पाण्डव, करार,  
नियम, इदम् ।

अवनिः (म) पृथ्वी ।

अवधिवैराग्यः (म) तीनिर्दुःखो-  
क्तिपय मन त्याग ।

अवधूतः (स) योगी, संन्यासी ।

अवधिगः (स) अवध का राजा ।

अवभृथः (म) स्नान, गन्धन ।

अवराधः (म) सेवा, टङ्कन ।

अवराधकः (म) सेवक, टङ्कन,  
पूजक ।

अवरेषः (म) शिष्टादृष्टा, डाह,  
सरस्त, विचार । [रचना ।

अवरेषुः (द) चौर परदोष

अवरोधः अवरोधनः (स) रश्मि-  
वास, रोक, अटक ।

अवरोहः (स) सीढ़ी, संपादन,

अवरोः (प) खण्डान्य यन्त्रण  
अवरेषः (म) अर्थ जो अन्तरि के

अर्थ लगावना या तोड़ि-  
तोड़ि अर्थ लगावना ।

काहे कि अर्थ लगाने का  
लक्षण दू, एक खण्डान्य,

जो अन्तरि के, तोड़ि ताड़ि  
के, दूजी खण्डान्य, जो

सीधे अर्थ लगावना और  
जागा चाहिये जो अर्थ

लगाने का लक्षण तीनि  
भांति धुनि, ११ अवरो, ११

कश्चित् गुण, २१

अवर्त्तः (म) लक्ष्मण, भौंर ।

अवर्त्तः (म) निर्बल, दुबला,  
कम, अवर्त्त, दुबला ।

अवर्त्तम् (म) पात्रय, घंजन,  
पाधार, पासा पकड़ के

रहना ।

अवर्त्ताः (स) स्त्री, वस्त्रोपा,  
नारी, मेहराह ।

अवर्त्तोः (स) पंक्ति, सतर, येथी,  
पांती, लकीर । [पत ।

अवर्त्तोक्त (स) तत्कत, या दे-



पवित्रिचः (स) निरन्तर, अवलम्बः ।

पवुषः (स) मूक, अघाती ।

पलः (स) कमल, चन्द्रमा, गुरु  
इत्यादि, लल मे श्री गम्भी ।

पथि ( स ) जलमसुद्र, नीर-  
सागर ।

पव्यक्तः (स) निरूप, मध्य, मूल  
गङ्गाति, पद्मगट, निर्दोष,  
गुण वा ईश्वर । [हेतुजः ।

पव्यवाः (स) पीडारहित, हर

पव्यवः (स) पवित्राग्नी, निर्दोष-  
म, मूल, नागरहित, व्यय  
रहित । [रुपा ।

पव्यवाः (स) माया, इत्यन-  
पव्याहत (स) रीतिरहित ।

पव्यक्तः (स) सत, भक्तिहीन ।

पव्यवः (स) निष्ठ, निर्भय,  
विनाडर ।

पव्यव्यवाः (स) सत्त्वहीन ।

पव्यवाः ( स ) हरहेतु, हरि-  
पथ ।

पव्यवः (स) लोना ।

पव्यवः (स) पुष ।

पवि (स) पदपद, हरि चौर

मे, चौकरी, पागी ।

पविकरणः (स) पकाग, गोभा,  
भूषण ।

पविष्टाः (स) गोभा ।

पविगमः (स) मित्राप ।

पविचंतर (स) भीतर, चंतस-  
की वासना । [पादिकर्म

पविचारः (स) गारव, उपाटन,

पविचारी (स) गव ।

पविच (स) प्रवीच । [ग ।

पविजात (स) कुलीन, विदा

पवितः (स) सत्त्व ।

पविनयः (स) गया ।

पविनितः (स) सुदृढ विजय,  
नक्षत्र विजय ।

पविप्रागः (स) विद, पता ।

पविधाः (स) नाम, पद्वी ।

पविधानः (स) गण्डार, वीर,  
नाम, संज्ञा ।

पविनन्दनः (स) पकाग, प्रद-  
मा, पविष्टाप, उपाटना ।

पविप्रायः (स) पागय, गनीर  
ट, नमोविचार, प्रदीपन,

मनस्य ।

अभिधादन- (म) ममस्कार,  
प्रथम ।

अभिधत्- (म) पराजय, दार ।

अभिभूत (म) पराजित, दारा ।

अभिगतस्मान्- (वि) हासम्)  
मन न भया है आद  
निसु का ।

अभिगत- (स) वाहित, दग्धत,  
रुष्ट, वाचागया, चंगक-  
रण का संकल्प धारा,  
मनभाषा । [गहर ।

अभिगत (म) गन्ध, भवहार,

अभिमुख- (स) सम्मुख, जाने  
नामने । [सुयह करहु ।

अभिरक्ष्य- (स) रक्षाकरहु, अ

अभिराग (स) सुन्दर, गोमा,  
गोमायमान, सुखद, प्रिय  
पागन्ददाता, सुखदाई,  
सुख । [मनोरथ ।

अभिधाय (म) रक्षा नामना,

अभिनायी (द) वाचनेवाला ।

अभिनीम (म) छाया हुआ,  
मिला हुआ ।

अभिलुलित (म) विलना हुआ ।

अभिधेक- (स) तिमक, मन-  
दिरक, शान्ति, ध्यान,

पूजा, राजभट्टी, जनहि  
रचना, वा सानकरना ।

अभिधा- (स) नी नी धपने  
धति वा नीतम वे मिचने  
को जाना ।

अभिधारिका- (स) नटाक्षी,  
भट्टागारी । [मित ।

अभिहित- (स) कथित, तबा-

अभीष्ट- अभिश्रित (स) इच्छा,  
मनोरथ, कल्याण, वाहित,  
वाचागया । [ट्टे ।

अभिद- (स) मीठदिना, नी न

अभंग- (स) नी न टूटे, नी  
अभी न टूटे । [स्वार ।

अभीष्ट- (स) पुनः, पुनः, दार-

अभूत्- (म) हुआ ।

अभूतविषु (स) मन्त्रहीन, जा-  
कोरिषु कथय नहीं है,  
मन्त्रहित । [मन्त्र ।

अभीष्ट- (म) भीमने के योग्य

अभ्यपिचत्- (स) छिड़काया  
हुआ ।



અમાનુષ્ય ( બ ) ફેરાર જો મનુષ્ય  
 થે ન હો સકે । [ કર્મો ।  
 અમાનુષી કર્મો ( સ ) ફેરારી  
 અપાયા ( બ ) માયારહિત,  
 આમમારહિત દુષ્કારહિત ।  
 અમિત ( સ ) અર્થક, વૃદ્ધત,  
 અવગાજ, ત્રિગુણા અંગ  
 મર્ત્યો )

बसो ( न ) पण्डित. यह सब,  
मापी, यः सतः ।

ਅਸੀਸ (੨) ਅਸੀਸ, ਅਸੀਸ :  
 ਅਸੀਸ ਅਸੀਸ (੨) ਅਸੀਸੀਸੀਸ,  
 ਅਸੀਸ ਅਸੀਸ, ਅਸੀਸੀਸੀਸ :

समोदमूर्ति } ( १ ) जमीन  
समोदमूर्ति } ( २ ) जमीन

અમેદાદ (મ) જાગૃતિ :

ଉତ୍ତର ୫୫ ପ୍ରଶ୍ନ କର, ପ୍ରଶ୍ନ କର ? ୫

ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਸਾਥੀ (ਸਿ. ੪੫੭) :

ਅਸੂਲ ੧) ਭੀੜੀ ਸਫ਼, ਕਰ,  
ਸਾਖੀ : ਮੁੱਖ ੩ :

ବିଷୟ ଓ ବିଶ୍ୱାସପୂର୍ଣ୍ଣ ହେଉ ।

५५९ व. ५५९ व. ५५९ व. ५५९ व. ५५९ व.

समय, बुद्धि, शक्ति, निर्विकल्प.

मधुर, मुरिषः ।

चमत्कृतः (२) भागवाती ।

पञ्चमस्तो (क) मुद्रिष १ पा  
साग ३ । [डरे, पौता]

अमता- (म) इवद्विष, गुरी

પ્રમલેશ (સ) દેવતા. નિર્જન

पन्ने ५ (५) चतुर्थ, पन्ने ५  
सक १

अमेय (न) अमयमायोग्य ।

चमोष (स) मध्य, अष्टाङ्ग, फल-  
दाता, चक्षुः, आदि, चमत्.  
मध्य, जिसकी मूँद नहीं  
जामता, सफल हो निष्कल  
म हो ।

<sup>1</sup> यमीधर (ब) बरनिरुंग ।

चम्प (स) देवता, देवता ।

अथ कृतयि (८) } राजाः वि-  
अथ कृतयि (९) } शेषः ।

प्राप्त्यव (म) मेच, मयम ।

सम्बन्धनी (न) व/जर्देकोपय ।

१. पञ्चमी-<sup>२</sup>(स) सङ्गतालोपादि ।

सत्य (५) इष्टा. पा. भाग. ५.

मत्. पीत. सिन्धु । 'किर ।

सम्यग्भक्ति (न) मर्त्ये 'दिव्या

पञ्चा. (म) माता, जननी,  
मासिका। [मासिका।

पञ्चिका. (स) देवी, भवानी,  
पञ्चु पञ्चम. (प) जल, नीर,  
पानी, पप्।

पञ्चुगण्डाक्षी. (स) गण्डकद्वय।  
पञ्चुग. (म) इक्षर।

पञ्चुद. (म) मोटा। [रिप।  
पञ्चु मरापिका. (म) जलमि

पञ्चुग. (म) कमल, पद्म।  
पञ्चुद. पञ्चुघा. (म) मेघ,

घटा, वर्षा। [सागर।  
पञ्चुधि. (म) समुद्र, अर्णव,

पञ्चुगति. (म) बहुवदेवता,  
जलदेवता।

पञ्चुहार. (स) दादर।  
पञ्चा. (स) पानी।

पञ्चीग. (म) कमलादि, कल।  
पञ्चीद. (म) मेघ, अह, दादर।

पञ्चीनिधि. (स) जलरमुद्र।  
पञ्चीरह. (स) कमल।

पञ्चीविन्दुपट्टरमसाम्. (वि.  
पातकान) पानी की बुन्दें

मेघ में तत्पर।

पञ्चा. (प) माता, जननी।

पञ्चु. (स) पाणी।

पञ्चुद. (म) सुगन्धवाता।

पञ्चुनागा. (स) सुगन्धवाता।

पञ्चुमार. (स) केला।

पञ्चदधि. (स) घटा दही।

पञ्चवचक. (स) तिली छीक।

पञ्चवैतस. (स) पञ्चवैत।

पञ्चा. (म) इमली।

पञ्चाटन. (स) बाणपुष्प गौड़-

देम में प्रसिद्ध।

पञ्चातक. (स) माल्दही पाम।

पञ्चिका. (स) इमली।

पञ्चिकागणपक. (स) इमली

का पत्ता।

पञ्चि. (स) का बटक इमली

का भिगाया बर।

पञ्ची. (स) इमली।

पञ्चदही. (स) पाटी।

पञ्चटा. (स) पाटी। जही-

पुल २ कीनीपाठाग ३

मासिका ४।

पञ्चात. (स) बाणपुष्प, गौड़देम

में प्रसिद्ध। पञ्चाटन २।



अभ्यास (स) अमृतमय !

धयः (म) गति, प्राप्ति, वस्तु  
 सोऽदयता, सोऽदा ।

अथतः (स) भागित, प्राप्ति, वि-  
श्रास, शोहा, कस्याः धय ।

पद्य (स) छन्द प्रयोगकी भाँति,  
मय्यकी भाँति, घर, अ्यान ।

अथम् (म) एह एह, यह ।

पदमिति (म) विना अट्टा कृपा  
विना मत्ता कृपा ।

अथमितगत्वेन ( वि० शरीर )  
विना विना नृह द्विगमके ।

अथवा (म) चर्चा, अथवा,  
निम्न।

अयम् (म) वज्र, लोहः। (मर्त्ये)

अथान अथाना (प) भूठ.

अयुक्त (म) मन्त्रालय, दिल्ली, १०००० नया

महत्तमः । इति ।

અનુષ્ઠ ( મ ) સામાન્ય પ્રશ્ન.

७३. (१) महार उद्योग मंत्रालय

परगई ३

पुनः ५५५

अथैतत् सारं सुमनसं जगत् ।

परमाना (द) अशम डोन,  
अव । . . .

पदार्थः (५) अमृतः ।

परनी- चाम नद्योको जलहो।

परवि- (न) भाषी सोधारण,  
काष्ठविशेष ।

परची परमी- (स) यज्ञ म  
पश्चि निशाने का भाव.

मधो के चाम निवासनी  
की सकही ।

वरण्ड (४) रेडबल, पण? ।

पण्डित (४) बनारसी ।

परम (च) वन, गङ्गा-  
आनन ।

पञ्च (स) समुद्र ।

अरविन्द (न) कमल, अत्यन्त

परध (३) धर्ध, पाधा ।

अवलुः (स) लीनवराः । ईन।

अरुण- (२) तिथरी, देह पि

अराति- (म) कण्टक, शत्रु, भैर

अति- (७) दुष्ट, बेरी, मधु, दुष्ट  
मज ।

અરિમહ્મદ - (અ) ગાંધીદી ।

परिच (स) शाख १ महसुल

२ नीम ३ रीठा ४ ।

परद (स) रत्नवर्ष, सुखे सार-  
ही, ज्ञान, सूर्य ज्ञान रंग ।

परद चट परद } सुग्गा  
मिषो. (म) } पची ।  
परदचूड ।

परदारी (द) कास ।

परदाई. (प) कालोमा, मोर ।

परद (स) पतीस १ पोट्टुल  
फूल २ मशीठ ३ ।

परदोदय (स) प्रातः काल,  
विज्ञान ।

परद्वती (म) वगिठ सुनि की  
पत्नी, वगिठ की स्त्री ।

परद्वक } (म) मेजावा ।  
परद्वक }

परोह (म) द्विष्ट, चेर ।

परोह (स) रोहरहित ।

पर्क-पर्क (स) सूर्य, चाक,  
मन्दा, वृक्ष ।

पर्कपर्की (स) तामागही ।  
काल परदवन २ ।

पर्कपुष्पी (स) कुटुम्बिनी वृक्ष ।

पर्कवध (म) समस्ततास ।

पर्कफल (स) सूर्य कोहड़ा,

पाक फल ।

पर्व (स) मूर्त्यादि पुत्रानिमित्त  
काल नीचे गिरागा, मादर  
निमित्त सामथी, मोल ।

पर्व (स) पर्व के योग्य ।

परद्व (म) धनी ।

पर्वक (स) पूजारी, सेवक ।

पचारी (स) दुकान, पंगति ।

पर्वा (म) पूजा, सेवा ।

पर्विस् (स) सोई ।

पर्विव (स) करपा, दया, चर-  
ल, कोमल, नरम ।

पर्वुन (स) दुम, वज्जल, सह-  
सा, तोसरा पांडव ।

पर्वुनाडा (म) कहूपा ।

परधंग परधंग, पाधा शरीर,  
पाधा धंग ।

पर्व (स) लल, नीर, पानी ।

पर्वी (द) दिया ।

पर्वी (म) समुद्र, सागर ।

पर्व साधन (स) रीठा ।

पर्वीस (म) नैवेद्य समाना,  
नुति ।

पर्वी (स) प्रयोजन, वस्तु, याचना,

द्रव्य गन्दाद्यैः ।  
 दैम्- निमित्त, किये ।  
 दैत्य चर्चोपग, मङ्गलापन ।  
 दनय- (द) चर्चय, समुद्र ।  
 दै (स) पाया, मध्य ।  
 दैवष्टिका (स) देवीमतावर ।  
 दैवष्टा- (स) पतिरक्ष ।  
 दैवित्तः (स) मेवाकी निरेता ।  
 दैवदम्, पाया निवृत्ता  
 दुपा (जेने फल का वपा)  
 दैवद- गरतीवार, गरम, समय  
 में जल देना ।  
 दैरासि (स) पाधीरानि,  
 महानिमा ।  
 दैन्दुमौलिः शिव, महादेव,  
 (पाया लम्भा है मुकुट  
 निम जाता ।  
 दैव (स) सोहा, निविविजिय,  
 दैव्याविमिय, दैवकोटि ।  
 दैव- (स) बाकक, शिशु,  
 पुत्र, लडका । [यमः  
 (स) पादित्य, सूर्य ।  
 दैवः (स) योम ।  
 दैवो तुम्ह योम है ।

परं- (द) रेंडतय ।  
 अक्ष- (स) अक्षय, व्यर्थ, मगर्थ,  
 पूर्णोदो । अक्षममलं प-  
 क्षरय वृत्ति, अक्ष पुः पक्षि  
 नाम । अक्ष अक्षय अक्ष  
 अक्षय ताजि, अक्षमममो ।  
 अक्षय ३ २८ ।  
 अक्ष (स) (अक्षय) व्यर्थ, मगर्थ  
 पूरण, पाभरण, अक्षय,  
 अक्षय ।  
 अक्षय (स) वेग, धुंगर, अक्षि-  
 य । बाक, बाकी की जूट ।  
 अक्षय (स) छाही ।  
 अक्षय (स) लटका, भर्मा ।  
 अक्षय (स) डुरी विजिय, कूमेर  
 भक्त पिता पुत्र व्यान,  
 कूमेर की पुरी यलो को  
 पुरी का नाम ।  
 अक्षय (स) लट का सिरा ।  
 अक्षय अक्षय (स) गोमित,  
 सुन्दर । [गदना ।  
 अक्षय (स) गोमा भूपदयुक्त,  
 अक्षय (स) गोमा लक्ष्मी न ना सुखे ।  
 अक्षय अक्ष, अक्षय ।



अक्षर (स) खेच, कूट, धिर,  
अटल ।

अक्षरिण (स) अक्षरि, अक्षर  
रत्न, जो जोर में नहीं,  
जैसा दूसरा नहीं, जोर न  
जैसा दूसरा नहीं, जोर न,  
प्रकाशित ।

अक्षरिण (स) जोर न जोर न ।  
अक्षरिणभाम् (वि. अक्षरिणम्)  
जोड़ी जोड़ी के अक्षर  
किस में ।

अक्षरिण (स) जोर न जोर न ।  
अक्षरिणः (स) जोर न ।  
अक्षरिण (स) जोर न ।  
अक्षरिणसदृश (स) जोर न ।  
अक्षर (स) जोर न ।  
अक्षरकाल (स) जोर न ।  
अक्षरगति (स) जोर न ।  
अक्षरगति (स) जोर न ।  
अक्षरगति (स) जोर न ।

अक्षरगति (स) जोर न ।  
अक्षरगति (स) जोर न ।  
अक्षरगति (स) जोर न ।  
अक्षरगति (स) जोर न ।  
अक्षरगति (स) जोर न ।

अक्षरि (स) जोर न जोर न ।  
अक्षरि (स) जोर न ।

अक्षर (स) जोर न जोर न ।  
अक्षर, अक्षर, जोर न जोर न ।  
अक्षर करता ।

अक्षर (स) जोर न ।

अक्षर (स) जोर न, जोर न,  
जोर न, जोर न, जोर न,  
जोर न, जोर न ।

अक्षर (स) जोर न, जोर न,  
जोर न । [अक्षरगति ।

अक्षर (स) जोर न, जोर न,  
जोर न ।

अक्षरगति (स) जोर न ।

अक्षरगति (स) जोर न ।

अक्षरगति (स) जोर न ।

अक्षरगति (स) जोर न ।  
जोर न, जोर न ।

अक्षरगति (स) जोर न ।  
अक्षरगति (स) जोर न ।

अक्षरगति (स) जोर न, जोर न,  
जोर न ।

अक्षरगति (स) जोर न, जोर न,  
जोर न ।

अविदितः (स) बिना रोका हुआ ।

अविकलः (म) सम्पूर्ण ।

अविषयाः (स) मुहागिनि, सो-  
भाग्यवती । [तार ।

अविरलः (स) निरन्तर, लगा-

अविरतोक्तपठम् (वि) पठम्)

निरन्तर है चाव जिस में ।

अविर्विष्यः (स) भेड़ा, चारपाया-

अविद्यापांशः (म) अविद्या प्रादि  
पांशु क्लेश ।

अविनयः (म) ठिठारै । [नहीं।

अविनाशो (स) जिस का नाश

अविरोध (स) बिना विरोध ।

अविवेक (म) अज्ञान, विवेक  
रहित ।

अव्याहत (म) अरोक, जिस  
का रोक नहीं ।

अव्ययाः (स) हरे १ दही  
भुङ्गलो २ गुलाब ३ ।

अव्यापदः (म) कीता हुआ ।

अविदारीः [म] विदाररहित ।

सुख प्रादि विकारहीन ।

अविगतः [म] व्यापक ।

अविद्याः [म] अज्ञान ।

अविचलः (स) स्थिर ।

अवहोत [स] निरन्तर ।

अविद्याः [स] अज्ञान ।

अवनतः (म) झुका हुआ ।

अवनिग्रयनाम् [वि साधीम्]

पृथ्वी है ग्रन्थों जिस की ।

अवनीपः (स) राजा, भूप, नृप,

ठिठारै, पृथ्वी पति ।

अवहितः [म] भिन्न ।

अवतीर्णः (स) अवतार मानो

जब नदण से नीचे उतरि

प्रावना उतरा हुआ ।

अवधूतः (म) इनाया हुआ ।

अवनी अवनि (स) धरती,

पृथ्वी, भूमि, माता ।

अवनीकुमारी (स) लागकी,

सीता, भूवर्गा ।

अवलीर्णः (स) फैला हुआ ।

अवलुलः (स) बकुरी ।

अवतंस (स) मटुका, भोगा, क-

रनफूल, मायेदा करना ।

अवतरे- (द) अवतार लिया ।

अवकाश (म) अवसर प्राप्त,

रावकाश, शौकाश ।

अवनीश (न) राजा, वृष, भू-  
पति ।

अवली (न) अवलम्बन मृगरी ।

अवलिता (न) अवलम्बन मृगरी ।

अवध (न) अष्ट, द्वेष्ट, मरीच,  
आदि अन्तः ।

अवधाय (न) अटकाव, आधातु

अवधाय धारण कपता हूं मैं ।

अवधी (न) अवध ।

अवध (न) अवधानि मित्रा  
वृषा वनका आटमं तावक  
जो मे अटनी ।

अवधि (न) अवधेय, बाकी ।

अवधिमिन् (न) मित्र का  
भरसा न हो ।

अवधेय (न) अन्त, मृत्यु, व-  
धिम कपल, मेधवदा स  
कट, जेम ।

अवध (न) अन्तर ।

अवधेयिन अवधेया (न) अव-  
धेयुन, अन्तमुन, जेमिन,  
वन, बाकी । [ अवधेय ]

अवधेय (न) निवध कर के,

अवध (न) अन्त मिय,

अवध (न) अन्त मिय ।

अवध (न) अवधाय समय ।

अवध (न) अन्त, वध, वधन,

दिन, यात्र, कुमार, धौवन,

वृषा, द्वेष्ट, की अन्त, आशत,

अन्त ।

अवधिम (न) अन्त, अन्त

वृष, अन्त, अन्त वित्त ।

अवधिम (न) अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

अवध (न) अन्त, अन्त, अन्त

पञ्चमः ।

पञ्चमः (म) दास, दसु ।

पञ्च (म) किरिद ।

पञ्चकः (म) दस ।

पञ्चमः (म) पञ्चमः ।

पञ्चविंशतिः (म) पञ्चविंशति, पञ्चदश, पञ्चोद । [ लङ् ।

पञ्च, पञ्चुः (म) पञ्च, पञ्चका

पञ्चकः (म) गङ्गा, गङ्गा ।

पञ्चद्रुतम्, (वि. पञ्चम्) पञ्च

। पञ्च मे भीमा इति ।

पञ्चकः (म) पञ्चकः । [ दिग्गोपः ]

पञ्चकः (म) ग्रीष्मदित, दृष्ट

पञ्चमः (म) पापान्, पत्पार ।

पञ्चमः (म) पञ्चमः, पञ्चमः, पञ्चमः ।

इति ।

पञ्चोक्तः (म) पञ्चोक्त इति, दृष्ट

विशेष, ग्रीष्म रदित ।

पञ्चोक्तः (म) कृष्ण ।

पञ्चमः (म) ।

पञ्चमेदः (म) ।

पञ्चमेदः (म) बहुवार ।

पञ्चकर्मः (म) सले वृत्त ।

पञ्चकर्मः (म) सले वृत्त ।

पञ्चमः (म) पञ्चमः ।

पञ्चवत् (म) पीपल इति, तमत् ।

पीपल इति, तमत् ।

पञ्चवत् (म) भुवि दत्तम् ।

पञ्चवत् (म) पीपल इति ।

पञ्चवत् (म) वृद्धा वीर्ये ।

पञ्चवत् (म) देविता

पीपल ।

पञ्चवत् (म) पञ्चमः ।

पञ्चवत् (म) पञ्चमः, पञ्चमः

नच ।

पञ्चवत् (म) पञ्चमः ।

वैद्य रवि पुत्र एकद्विंशति

का दो भ्राता दो पञ्चवत्

के गभंते सत्यं जौवा ।

पञ्चमः (म) पाठका ।

पञ्चवत् (म) मेदः, महानेदः,

काकोशी, चिरकाकोशी,

चट्टि वृद्धि जिह्वक मयः

भक्त, एतं पाठ द्रव्य पठ

वर्ग है ।

पञ्चमः (म) पञ्चमः ।

पूर्व, पञ्चमः, दृष्ट, वायु-

कोन, रश्मिकोण, पञ्चमः ।



जीन, नीरित जीन ।

पट्टमिहि विमेषण (स) अविमा,  
महिमा, गरीमता, सविमा,  
प्राप्ति, काम, समीकरण,  
ईशता । शीक । अविमा  
सविमा प्राप्तिः प्राक्कर्म  
महिमा तथा । ईमित्वं,  
अमित्वं, तथा आभास-  
सायिना ॥ १ ॥

पट्टाद्य (स) पठारह । [मि] ।  
पट्टाङ्ग (स) पाठ है पङ्क जिस  
पट्टाद्यभार (न) वनस्यति १८  
भार ।

पट्टापद (न) सीमा, द्रव्य, स्वयं ।  
पस (स) पासन, कवित्त, गुण,  
कलप, दार, ऐसा ।

पसन् (स) सक्रिय, बहारहित  
तप, जीन, दान आदिक ।

पसभ्य (स) जी सभा के योग  
न हो, धूर्त, दुष्ट, नाशायक ।

पसंभार (स) सभारहित गैर-  
सुसज्जित ।

पसंख (स) बैतादाद, वेमुतार ।

पसज्जन (स) पस ।

अमङ्गल (स) घोडा सा ।

अमङ्गलव्यक्ति (स) (वि) मुचम्  
कुञ्ज एव दीप्तता हुआ ।

अमङ्गल (स) बाराबार ।

अमङ्गल (स) तलवार, बज्र ।

अमङ्गल (स) तलवारके ।

अमङ्गल (स) भोजन ।

अमङ्गल (स) अमङ्गल, ऐश ।

अमङ्गल (स) अमङ्गल, कामदेव ।

अमङ्गल } (स) द्विविधा, अ-  
अमङ्गल } न्देह, नामराजा,  
अमङ्गल } सगरपुत्र अश्वमेध ।

आ पितृ, दुःख ।

अमङ्गल [ स ] विपत्ति काश,  
अकाश, कुपमय, बिना  
पटु ।

अमङ्गल (स) कामदेव,  
अमङ्गल (स) कामदेव मर ।

अमङ्गल (स) अनियत,

शोक, अथवा अचित्त अ-  
मुक्त अथवा अमङ्गल,

नहीं, नित्य के अनित्य  
अथ अनित्य की नित्य

जानना ।

अमङ्गल (स) जी सुहृन् सके ।

पञ्चदशः (द) विनाशदायक ।

पञ्चरैः (स) सरांशरहित ।

पञ्चाधीः (स) पञ्चाध्य, जो दूर

न हो । [न हो ।

पञ्चाध, पञ्चाधि (स) जो दूर

पश्चिः (स) तलवार, खड्ग,

खाँड़ है ऐसी, तू ।

पश्चितः (म) वक्र, वाह्य, देव

ऋषि विशेष, काष्ठा, (जो

स्वेत न हो) [वाह्य ।

पश्चितनयनः (म) काशी पाँख-

पश्चितसारथः (म) तेंदुहथ ।

पश्चिताः (स) पीड़ित ।

पश्चिनः (स) तलवार, खड्ग ।

पश्चिपतः (स) केतारी ।

पश्चीः (प) पाज्जा, मछा ।

पश्चिवः (द) पतंग ।

पश्चुष्टिन् (स) जो सुखी न हो

पर्याप्त सुखी ।

पश्चुरः (म) राक्षस, राक्षस,

धर्मविरोधी, दैत्य, दानव ।

पश्चुष्टाः (स) निंदा, जिसी के

गुद में दोष लगाया ।

पश्चुरपरोक्षः (स) शुक,

धमना ।

[तीर्थ ।

पश्चुरसेनः (स) दैत्यसेना, गंधा

पसंमतः (स) प्रतिकूल ।

पश्चिमाक्षः } (स) डाढ़भर ।

पश्चिमाक्षः }

पश्चुकः (स) रुधिर, रक्त, लोहू ।

पश्चुकूः (स) सूका ।

पश्चीः (स) यह एक प्राणी,

एह वषं बह ।

पश्चाः (स) क्षिपाव, लुकाव,

पश्चसेन, नीचेगया हुआ,

हुवा हुआ ।

पश्चकोपः (वि० घनेशः) जिस

का कोप दूर हो गया है ।

पश्चाम् (स) हुआ हुआ, नीचे ]

गया हुआ ।

पश्चः [म] रक्त । [वास्तविक ।

पश्चाव्यष्ट [स] क्षिप्रभिन्न,

पश्चावक [स] पर्वत विशेष ।

पश्चिः (म) है, वह ।

पश्चुः (स) होय, पात्रावाचक ।

पश्चुतिः (द) बड़ाई ।

पश्चः (स) मलपद्मादि रित्ति

य, खड्ग, मल युक्तमल, या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

८. मोर ऐन्द्रि हवयार ।

पशुपतिमूर्ति ( म ) दक्षिण  
पशुपतिमूर्ति ( उ ) - विष्णु

यथा न द्योः पदमो जगत् ई  
 चरित् सति न जायते गरीः  
 का पश्य, वल्ली : "

१. अथर्ववेदः ।  
 २. अथर्ववेदः ।  
 ३. अथर्ववेदः ।

अथर्ववेदः ॥ १॥ अथर्ववेदः ॥ १॥  
अथर्ववेदः ॥ १॥ अथर्ववेदः ॥ १॥  
अथर्ववेदः ॥ १॥ अथर्ववेदः ॥ १॥

अथवा ॥ ६ ॥ अथवा ॥ ७ ॥

चण्डेश्वरः । ५८ ।

कथं च न भूय विद्युति ।

मन्त्रः । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

અવસાન, ૪, ફાલગુણે ।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

सविस्तरम् ५७ इत्युक्तिरिति दृश्यते ।

ਦਫ਼ਤਰ : ੪੧ ਵਿਭਾਗੀਕ

दस्य ७) बौद्ध, पश्चिमी, गौतम ।

अथ (५) वृत्तः, द्वयः ।

॥ अथ श्री भक्ति योगः ॥

‘हरिम् ।’ (सहकारं, मेम्)।

पङ्कः (मो) पायथि, दिग कष्ट,  
पङ्कदोः (मो) गाय, दगा, पैमि  
मः, गङ्गुर ।

पद्मं (स) दिग् । [पद्मकार् ।

पंचमिति (म) मी. न. सैन.

पञ्चम्याति (क) पञ्चम्याति, मग

सोम, मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि ।

ਪੰਨਾ ੧੦ (੧) ਵਿੱਚੋਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਸਿ-

अधिनियम (अ) द्वितीय भाग, द्वितीय

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

महाराज, यह है, यही है।

115

श्री ॥ (२) ॥ नमः, नमः, नमः ॥

नामरूपद्वितीयं

पनि. धर्मि. धर्मि. धर्मि. धर्मि.

स.स. १. पञ्चमसंग सांख्ये

दसमः अध्यायः

图 1-1-1

पुस्तिका (पुस्तिका) 1/1/1/1

कर्मिणः (३) भूतः कर्मकर्मिणः

पट्टिनादः (स) श्रेयनाग, पट्टी-  
म । [नी ।

पट्टिनी (स) नागिनी, सावि-  
पट्टिमैतः (स) } पट्टीमः ।  
पट्टिमैतकः }

पट्टिबल्लगी (स) नागवेली,  
पान की । [नाग ।

पट्टिराजः पट्टिराजा (स) श्रेय-

पट्टिवातः (स) सुहाग, मीमांस्य-

पट्टिवेकि (स) वर्षविशेष  
पान मंश ।

पट्टिमघी (स) मोरपट्टी, म-  
सूर । [पट्टी ।

पट्टिहा (स) गीतमनुनि की

पट्टीन्द्रः (स) कपूर, बापूर ।

पट्टीमः (स) श्रेयनाग, नाग  
पति । [सुगया ।

पट्टेर (प) शिखार, पट्टिट-

पट्टेरी (प) शिखारी, बट्टेनिया ।

पट्टेरुः (स) देसौ शतावर ।

पट्टी-पट्टीवतः (स) पट्टय,  
पायर्थ, कठिन, पट्टभा,  
पट्टरज, भाग्य, दुःख, इर्थ,  
धन ।

पट्टीराजः (स) टिगराज ।

पट्टं (स) में । [उच्चारण ।

पट्टनः पट्टानः (स) पुकार,

पट्टः (स) बट्टेहा हट्ट, पाया,  
जूवा, गेठ ।

पट्टः (स) एक पैसा भर वजन ।

पट्टफलः (स) बट्टेरा । [हट्ट ।

पट्टदवटः (स) प्रयाग का बट

पट्टरः (स) वर्ष, जीव, मोक्ष,  
घोर ककारादि वर्ष ।

पट्टि (स) नयन, नेत्र ।

पट्टिः (स) मुनगा ।

पट्टीवः (स) वकारन ।

पट्टटीकः (स) पट्टरोट ।

पट्टीभः (स) निर्वोद, पट्टोद,  
निसन्देह, पट्टीक ।

पट्टोद्विषी (स) सेनापूर्व, तिस  
हे दिवरच, श्लोक । "नव-

नाग सहस्राणि नागाच्छतं  
गुणान् रघान । रघाच्छत

गुणान् रघान् रघाच्छत गुण-  
नानरान् ॥१॥ दयलवदन्ती

विगुणोरघनानवकोटियो-  
ध्यादयकोटिबाणी," इति

मुनयोपदन्ति ॥१०॥ स्कन्ध  
भामवत ४८ अध्याय प्रमाण

पद्म- (स) पद्मांगी ।

पद्मात- (स) विना आने ।

पद्मता (स) मूढता ।

**आ**

पा (स) उपमर्ग इति, आस-  
मलाभाज, आदि, पूर्व,  
इतिहास ।

पाः (प) कष्ट सूचक शब्द ।

पा (स) पर्यन्त, तक (जैसे यहाँ  
तक, वहाँ तक)

पांक (प) निषेध ।

पांकी- (प) संसुषा ।

पाइ (स) भीषण, समिर ।

पाकर (स) पद्मादि ज्ञान,  
'जानि, ज्योति, गहर, कही,  
मे रत्न पातु' पादि निक  
कते हैं, जान, (जानि) ।

पाकार- (स) पाजति मूरत ।

पाकप्यं (स) दुग्ध के, मुत्ता ।

पाकप्यं (स) घसापट, दल  
से 'खोचसाफना, मंत  
विमंथ, खेचना, क्षमिग ।

पाकाश (स) उकाश, गु-  
आलो ।

पाकाजवन्नी (स) चमरलति

पाकाक्षिन् (स) पादता हृष

पाकाय प्रविहित मुजम्- (।

भाम्) पाकाय की सं

बाइ उठाए हुए को ।

पाकिष्ठन (स) यति हा

द्रता, लडाक, क्षपिण ।

पाकशि (स) तिरछा, टे

वाड़ा मोटा । [क,

पाकुष्ठित (स) सज्जित, पा

पाकुल (स) विचक, पूर्ण भ

हृषा व्याकुल उदास ।

पाकुलसामवेत्याः (प दशा

वसियों से भरे हुए हैं र

हृष जिन के ।

पाकति (स) मूर्ति, 'हा

मूर्ति' होके, पाका

स्वरूप, शरीर ।

पाद्य- (स) किसी के सेव ।

कथन में दीय निवासन

परखंडन की मुक्ति कहन

तकेश्वरना, एगराज कर



पानि- [प] चोट, साइके ।

पापः (स) } जल, पाणी, पापने  
पाप (प) } [रट]

पापक- [स] दोषान, डाट,

पापहा- [स] पापहृत्कान, [स] वि-

प्रति काक, चर्पा, दुष

विपत्ति । [पुत्रादि]

पापहा [स] लक्षदाता, सत्ता

पापेन् [स] शरणागती ।

पापक [स] विपत्ति संहित,

प्राप्त, शरणा, विपत्ति में

पडा, उद्यम रहित ।

पापक [स] पृथले तू, पञ्चा,

केले तू ।

पापकः (स) मकीम ।

पापकः पापक, [स] पञ्चा-

हन, टाल पदने पञ्चानते

पदने पञ्चद टंवि श्यो ।

पापक- [स] पञ्चापट, पिरापट

पाप (स) पायुस, उमिर ।

पाप (स) पापहाट्टा ।

पापहाट्टा (वि-पञ्चापटः)

पञ्चापटमी विपदहा ।

पापको (प) पंक्ति, पंक्ति, म

तर पवयो । [पञ्चाने का]

पापक [प] पञ्चपामित्री से मनु

पापकन- [स] पापान, पुकारा

पापक से दोषाना, पुकारा,

पापकः (स) पापकोम

पापकः (स) मीठी का दृष ।

पापक- (स) तत्पर, निवेष्टित,

पञ्च, कोम ।

पापक (स) डांका, घेरा ।

पापक (स) उडरची, पञ्चाप ।

पापक- (स) मयप, पञ्चाप,

मयना, पापकप ।

पापक (स) पापक, वमक ।

पापक (स) लक्षन, पञ्चा-

पञ्च ।

पापकप

पापकपटमोहनी (स) } पञ्च ।

पापक (स) गोप, पञ्चिर,

भीम ।

पापक- (स) पञ्चाप, मय-

पापक (स) पञ्चना मरीर ।

पापक (स) पञ्च, कापक, वि-

कार पञ्चविकार, दोसारी ।

पापक (स) कोम, कोम, डाट ।

पामनकः (म) पोला, चंवरा,  
फल, पाँवर।

पामण्डः (म) सदैव रेंड।

पामनीरः (म) कथा दूध।

पामान्यः (म) मंशी वलीर।

पामिपः (म) मांसादि पचाय  
वज्र, काम, जोध, मास।

पामोदः (स) सुगन्ध, पामन्द,  
रथ।

पामोक्षन्तिः हासेगी, फेंकेगी।

पायायः (म) वेद, पादि, शास्त्र,  
परम्परा।

पामन्दः (म) कुह, मन्दी ध्वनि।

पायनकः पायनकाः (स) पोला  
हस्त।

पायः { (स) एकहिं वज्र की हिं  
पायः { तौनिवार छत्रार करप,  
पायः { नाम वन निकट मरजु,  
नही तोर, पामफल, पाम  
का हस्त, पम्पाफल।

पामकूटः (म) एक पहाड़ का  
नाम है जिस पर पाम के  
वृक्ष बहुत हैं।

पामगन्धः {  
पामगन्धाः { पामाहरी  
पामगन्धिः {

पामवधः (म) पाम का पत्ता।

पामपुष्पः (म) धैर्य ? पाम का  
फल २। [ पचा।

पामपदायकः (म) पाम का

पामबीजम् (म) पाम का  
कीड़न।

पामावर्तः (म) चंमवट।

पायतः (स) चौड़ा, लम्बा, वि-  
शाल, धूप, पाधोन, बहा।

पायतवेत्तः (म) जिस के पा-  
मने सामने का भुजा तुल्य  
हो और चारो कोने सम-  
कोण हो।

पायतन (स) स्थान, भेंवण,  
पोमार, घर।

पायतः (म) नम्र, पधीन, बर्छ।

पायसः (स) { चौड़ा।  
पायसी {

पायसुः (स) पात्रा, अनुमति।

पायानः (स) विस्तार, चौड़ा,  
धैर्य, लम्बा। [ यल।

पायासः (म) क्लेश, दासना,

पायुः (म) पायेल, पावर्हा,  
जीवन काल, उम्र।



चायुतः (स) दशमस्कन्ध, विद्यासूत्रः ।

चायुधः (स) सामान्य हथियार

। खड्गादि, यस्त्र यस्त्र यस्त्र,

हथियारः । [उमः ।

चायुधम् (स) बड़ी चायुधाने

चायुनिन्दिषा (स) मीथो ।

चायोधन (स) युद्ध, संघाम ।

चारकूटः (स) पीतल ।

चारम्बः (स) चमकता स ।

चारण (प) नाम राजा दम्बर

की चार नाम एक देव वा

की माध्य किये ताते प्रशंसित

नाम चारण भय, खसुर,

श्रेष्ठ ।

चारण्य (स) वन, विविन ।

चारण्यकुकुटः (स) वन सुग्रीव ।

चारत (स) दुःखित, होम,

दुखी, चार्तः ।

चारति (प) पीडा, चति

प्रीति, चार्ति दुःखी ।

चारतिहरः (स) विष्णु दुःख

हरण, केशवमायक ।

चाररीतिः (स) पीतल ।

चारुनाभः (स) चिह्नो भक्त का ।

चारता (स) बैरी, चारति,

यम् ।

चारव (प) चोट, चत्तर ।

चारथ (स) नदय, नवजम,

प्रार्थन, युद्ध, सन्तान, नये

काम का चलाता ।

चारमी (प) दर्पण, मकर ।

चारति (स) बैरी, कष्टक ।

चारचन (स) पूजा, भजन,

सेवा, चवाचना ।

चारण्यो (स) पूतकर ।

चारामः (प) { वाटिका, सुपवन,  
सुखद, चंगा, चैन,  
(क) { सुखदातर, बगी-  
चा, बाग ।

चारण्य (स) बैठि के, चढ़ि के,

चढ़ कर ।

चारुदः चारुदः (स) स्त्रिय,

चढ़ा, चढ़ना, चढ़ा दुषा ।

चारो (द) चारुट ।

चारिवतः (स) चमकता स ।

चारोप्य (स) रोगरहित ।

चारोपितः (स) चाच्छादित,

दांका, सोंपा ।

पारोहः पारोहः (म) बीड़ी,  
चढ़ाव, चढ़ना ।

पारोहः (म) पमनान ।

पार्यः (म) ग्रहणः ।

पार्ष्णिः (म) पीड़ा, रोग दुःख ।

पार्ष्णिः { (म) सरण, नरम,  
पार्ष्णिः { कोमल, मनमोहक  
पार्ष्णिः { है समान व्यापार,

कहना, दया, दयालुता,  
सीधापन, शुभीतलता ।

पार्ष्णिः (स) पीड़ित, दुःखी,  
हीन । [ चटमरेषा ।

पार्ष्णिगणः (म) गुलाबी फूल के

पार्ष्णिगुला (म) देवती ।

गुलाब, कोमल ।

पार्ष्णिः (स) बीजा, पासा ।

पार्ष्णिः { (म) चढ़ाव ।  
पार्ष्णिः {

पार्ष्णिः (स) मित्र, कल्याण,  
मात्रि, कुलीन, देव, पिता,  
पूज्य, देव की यात्रा का  
पार्ष्णि करनेवाला ।

पार्ष्णिपुत्रः (स) देव पुत्र, अमर,  
वर्ति, गुरु, गुरु पुत्र ।

पार्ष्णिः (म) पार्ष्णी, गिरजा,  
देवी ।

पारोः पारोः (र) पारो ।

पार्ष्णिवर्तः (स) पूर्व समुद्र से  
ले के पश्चिम समुद्र तक  
घोर हिमालय विंध्याचल  
का मध्य ।

पारः (स) { हस्त विधाय, किं  
(प) { पारी, स्नान ।

पारः (स) हरताल ।

पारकः (स) साड़ी ।

पारसम् (स) यज्ञ, मेघ, वृद्धि-  
दाग । [ पारस ।

पारसम् (स) सहारा, आधार

पारसम् (म) दक्ष करता, मा-  
रता । [ वृत्त्य दृष्टा ।

पारसम् (स) ली दक्ष से

पारसम् (स) घर, स्नान, भवन,  
गृह, नक्षत्र ।

पारसम्, पारसम् । [ री, यासा ।

पारसम् (०) चंद्रोरा, विद्या-  
पारसम् । (म) सुफी ।

पारसम् (म) गजदन्त, देही ।

पारसम्, पारसम्, पारसम्, पारसम्,

स्वर गितानाः ।

पाणिन्य (न) निश्च कर ।

पाणिन्य (न) क्रांती मे जग

- गा । [ गाय दृष्टा ।

पाणिन्य (न) क्रांती मे ज

पाणी (न) सन्धो सन्धो,

(न) पंक्ति, नवीर ।

पाण (न) गुण, महिमा, पाण

पाणुप्यने (न) धृष्टता होना ।

पाणुक (न) पाणु पो कन्दा ।

पाणिन्य (न) निश्च ।

पाणीन्य (न) दृष्टि देखना ।

पाणीन्य (न) देखिके, तजिके ।

पाण (न) पायम, नमस्ति, पाणुनिक

पाणिन्य (न) पायम, पमति ।

पाणिन्य (न) कृष्णमा । [ टाण ।

पाणिन्य (न) पाणुन्य, पोटा

पाणिन्य (न) क्रीडक, दिता

कर, भाटा कर

पाणिन्य (न) निश्च ।

पाणिन्य (न) निश्च ।

पाणिन्य (न) निश्च ।

पाणिन्य (न) निश्च ।

पाणिन्य प्रथममुक्तो, ( निः

कन्दोः ) पदो वसी

दिखाई दी है निग की ।

पाय ( न ) वासना, दृष्टा,

भरीसा ।

पाय ( न ) मोहित, कीन,

नम्यमान, नगी । [ नम्य ।

पाय ( न ) नम, मोर,

पाय ( न ) नम, नम्य ।

पाय ( न ) अभिप्राय, तात्पर्य

गततब, मुराद ।

पाय ( न ) दिग्, दिगा, भरीसा

दृष्टा, पाय, नगी, नम्य ।

पाय ( न ) निश्च ।

पाय ( न ) भरीसा, नि-

पाय ( न ) नगी, नगी ।

पाय ( न ) नगी, नगी ।

पाय ( न ) नगी, नगी ।

पाय ( न ) नगी, नगी ।

पाय ( न ) नगी, नगी ।

पाय ( न ) नगी, नगी ।

पाय ( न ) नगी, नगी ।

पाय ( न ) नगी, नगी ।

पाय ( न ) नगी, नगी ।

जगह ।

[ बाला ।

पोटा, बैठने की दस्त, बदन,  
चटाई ।

पायमन्त्रः (म) पायम मे ठेने

पामनः (स) पामन वृष ।

पायमी- (म) ब्रह्मचारी पादिवा

पामनः (म) निकट ।

पाययः (स) शरदागति, पामि,

पाधार, रक्षक, पनाह ।

पामनदिवसः (म) पामन,

पायितः { (म) शरदागति, प-  
पासितः { भीन, ब्रह्मचारी, पामा-  
पाययुक्तः ।

बीरामन, गुरुपामन, गुरु-

मन, शक्तिदासग, दृष्टा-

मन, मोनापूजामन, तुग-

स्कामन, ह्यागामन, मयू-

रासन, व्याघ्रासन, दाघी

पामन, समदान, पामय-

सुष, इन्द्रासुष, इत्यादि ।

पाययिगः (स) पद्वै ।

पायिष्टः (स) सगा हुआ ।

पायिष्टकानुम् (वि) मेवम् ।

मिथर पर सगा हुआ ।

पायिष्टः (म) मिलना । [ हुआ ।

पासवः पामवमयः (स) महिष

गद, दाह । [ चीन ।

पायमन्त्रः (म) टाहस देता

पायमन्त्रः (म) प्रकृतित वित्त

जी, टाहस पाई हुई जी ।

पायमन्त्रः (स) टाहस देकर ।

पायिनः (स) मास विधिय,

कुमार ।

पासा वसनः (स) नंगा, दृष्टा

पासायत् (स) प्राप्त करना ।

पासायः (म) नृपस्य धारः नीह ।

पासारप्रयमितदनीपद्मम्, (वि

त्वान्) नृपस्य धारः नीह व

मिटारि है बग की पीड़ा

लिखने ।

पासकः (स) निविष्ट, अनुरक्त,

मन, पतितन, सत्य,

नम्रगुण । [ पशुपति ।

पामोनः (स) स्थिर बैठा हुआ ।

पासकः (स) निविष्ट, खेद,

पामुरः (स) कासा नीन ।

पासकः (स) बैठकी, खीकी,

पायमन्त्रः (स) बुद्ध, संप्राप्त ।

आदि (स) संकारवाचक है ।

आदि (स) ईश्वरवादी,

साधु ।

आदि (स) विषय करने हैं ।

आदि (स) मुख, बदल ।

आदि (स) आदि ।

आदि (स) आदि, लक्ष्मी ।

आदि (स) निश्चय, अंक ।

आदि (स) अंकुर, अंशुपा ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर, अ-

निरादि ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

आदि (स) अंकुर, अंकुर ।

इत्तरी. (स) भ्रष्ट स्त्री ।

इति. (म) समीप बोधक शब्द,  
एव, यत् सपाधि यय,  
हेतु, प्रकार, यादि. स-  
माप्ति, पूर्ति, समाप्त, इस  
प्रकार, प्रस्ताव, प्रकाश,  
समाप्तः श्लोकः । अति हृष्टि  
रथा हृष्टिर्मुप का ज्ञानभा  
श्रुताः । अन्त्याः गत्यायः ।  
ज्ञानः यद्दे ते इत्ययः श्रुताः  
॥ १ ॥ [दिश ।

इतिर. (ट) परम्परा का उप-  
इतिहास. (स) कथा, प्राचीन,  
हत्तान्त, पूर्वहत्तान्त, जैसे  
महाभारत यादि ।

इत्यं. (स) ऐसी प्रकार सी,  
ऐसा. परभाव विजय कि  
चौर को चौरने उपचार ।  
करव, नकल, खिल, सीमा  
इस भांति ।

इत्यभूत. (स) इस भांति हुआ ।

इदं. (स) यह सामने, प्रत्यक्ष ।

इदम्. (स) यह ।

इदमित्यं. (स) यह परसो

प्रकार, एक ही हेतु नीला.

ऐसे ही यह ऐसा ही है ।

इदानीं. (स) अब, एवम् ।

इत. (स) मूर्ख । [कमला ।

इन्दिरा. इन्दी. (म) कप्री,

इन्दीवर. (स) सखीपति, ग्याम,  
कमल । [वर ।

इन्दीवरी. (स) पहाड़ी, सता-

इन्दु. (स) चन्द्रमा, चण्डी,

लपूर ।

इन्दुप्रिया. [स] चन्द्रकान्तमणि

इन्दुर. (स) मूषा, चूहा ।

इन्दुशम्भे मिहिस्ता. [वि. या]

चन्द्रमा से जगे हैं तरङ्ग

रूपी हाथ जिस है ।

इन्दी. [स] चन्द्रमा का ।

इन्द्र. (स) स्वर्गपति, बासव,

इन्द्र, तथा, देवताओं

का राजा, पूर्वदिशा का

स्वामी ।

इन्द्रबाप. [स] इन्द्रपुत्र ।

इन्द्रताप्त. इन्द्रबाप. (स) बाजी



विमः (न) विमला  
(मीमा) ममली ।

विमः (न) तुल्य, ऐसी, लैडे,  
सहम, दरावर ।

विमः (न) लार के नशीला ।

विमः (न) बाव, इच्छा ।

विमः (न) बहम, सुखन, सुख,  
नामित, बाबा हुआ, जन  
माया (इहलवन इहान)

विमः (न) नामजके ।

विमः (न) रचना, विदा ।

विमः (न) सुख देवता ।

विमः (न) कुबदेवता ।

विमः (न) [पम] एही विमि,  
दहे न, दही, दह नोब  
र, दह, संजिने ।

विमः (न) लफ, केमारी ।

विमः (न) लालन, लाना ।  
कांती र विमः दहे न ।

विमः (न) विमि, विमि ।

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।  
तारी के रन, कांती ।

विमः (न) विमली, एव  
रादा, बा, लान ।

विमः (न) कुम ।

विमः (न) लालन ।

ई

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।  
विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।  
विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।  
विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।  
विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।

विमः (न) लालन, लाना ।



प्रभु, सामी, राजा, समर्थ,  
मित्र ।

रमाने [म] मित्र, इन्द्र, धर्म  
नरकोप, महादेव ।

रमिता [म] नामलिङ्गि, प्रभा  
मता, महत्त्व ।

रमर [म] परमात्मा, ऐश्वर्य  
वान्, सामी, राजा, पर-  
मेश्वर, मित्र ।

रमर [म] ऐश्वर्य, मा-  
धुर्य, कीर्त्य ॥ ३ ॥

रमरी [म] विवेकी, काको,  
कली, पार्श्वी दुर्गा ॥ ३ ॥

रमर रमना [म] कालना,  
रम्य, कालना, कालना,

रम्य, तोन मकार, मी,  
रम, रम ।

रमर, रमर [म] काल, काल  
नर, रम्य ।

रम [म] रम्य, काठी ।

रम [म] कालमय, महत्त्व ।

रमर [म] ऐश्वर्य ।

रम रम [म] ऐश्वर्य को  
मिता, रम्य, रम ।

रमर [म] रम, रम, रम ।

उ

उ [म] मित्रमित्र, इन्द्र ।

उकठना [म] कालना । ठना

उकठि [म] उकठि, ठना, उक-

नकठि [म] उकठि, ठना, उक-

ठोते ठे, उकठना ।

उक [म] काल, काल, काल-

मया, काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, मा-

का, काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, मया

काल, काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उक [म] काल, काल, काल-

उचितः (स) योग्य, मनासिद्ध ।

उच्चावचः (स) नामा प्रकारः ।

उच्चः उच्चैः, (स) ऊँचा, बड़ा ।

उच्चैर्भुजतरुः (वि० वनम्) ऊँचे  
वृक्ष ही हैं भुजा जिसकी ।

उच्चैःश्रवाः (स) इन्द्र का घोड़ा ।

उच्छङ्खः उच्छङ्गः (स) गोदी, कोर,  
तट, गोदा, उच्छङ्ग ।

उच्छिखलाः (स) उदासी, त्यागी ।

उच्छिष्टः (स) खा कर बचा  
इष्टा, लूँठा ।

उच्छिखीम् (स) कठफुला,  
कुकरमुत्ता ।

उच्छिखीभ्यातव्याम् (वि० म-  
हीम्) कठफुला हैं कृष  
जिस का ।

उच्छूनः (स) सूखा इष्टा ।

उच्छ्रायः (स) उँचाई, चोटी ।

उच्छासितः (स) खुसा इष्टा, खास  
लेता इष्टा, प्रफुल्लित ।

उच्छासः (स) खास ।

उच्छासितः (स) खास लेते लेते  
यखा इष्टा । [भरा इष्टा ।

उच्छासितः (स) ऊँची खासों से

उज्जयिनी- { (प) उज्जयिन नगरी,  
उज्जैनी- { पञ्जयिन एक नगर  
का नाम ।

उज्जरुपाः (ट) रोग छानन,  
सपेद कोढ़ ।

उज्जागरः (स) प्रसिद्ध, उज्ज्वल,  
यशस्वी, शोभित, नारा ।

उज्ज्वलः (स) सफ़ेद ।

उद्गुः (स) बिडङ्ग, ताडवर्तक,  
तारागण, नक्षत्र । [गण ।

उद्गुगणः (स) तारागण, नक्षत्र

उद्गुपः (स) नौका, चन्द्रमा,  
गरुड़, वराह ।

उद्गुम्बरः (स) गूँबर । [उत्तंग ।

उतङ्गः (स) दीप, दिया, ऊँचा,

उतराईः (ट) खेवाई, उबसाई ।

उतादलः (प) उताइल, जलद ।

उतः (म) ऊँचा, ऊपर, वितर्क,  
उहाँ, दूर ।

उत्कटः (स) तप ।

उत्कः (स) खाद्याभरा इष्टा (घट्ट-  
वचन उत्काः)

उत्कण्ठः { (स) ऊँचराग, उम-  
उत्कण्ठा- { ग, अभिरुचि, खेद,  
चाव, प्रेम ।

उत्कृष्टित (स) बाव में दुखी ।

उत्कृष्टाविरचितपदम् (वि०  
इदम्) बाव में रचे गए हैं  
पद जिस के ।

उत्कृष्टोपसिद्धद्वया (नि०  
सा) बाव से फूला है द्वय  
जिस का ।

उत्कृष्टैः (स) मड़ाई ऐठपन,  
उत्कृष्टैः उत्तम, सुख्य ।

उत्कृष्ट (स) कावना ।

उत्कृष्ट (स) इन से जातना,  
नपाड़ना ।

उत्कृष्ट (स) उत्तम, ऐठ, उत्कृष्ट  
विशिष्ट प्रतिपत्ति ।

उत्कृष्टा (स) विषय किया,  
जीता हुआ ।

उत्कृष्टा (स) खोटा हुआ ।

उत्कृष्ट (स) मटुका, भूषण, मि  
रामुपत्ति ।

उत्कृष्ट (स) ऐठ, प्रधान, बहुत  
अच्छा, सुन्दर ।

उत्कृष्टगन्था (स) बसेली पुथ ।

उत्कृष्टाग (स) मस्तक ।

उत्कृष्ट श्री महाया (वि० इदम्)

सुन्दर श्री हैं माय जिमके ।

उत्तान- (स) { शीघ्र, पाश, विज्ञ,  
(प) { मन्मुख, लंघ, उद्य  
मा लंघ ।

उत्तर उत्तराशा- (स) प्रति-  
पाश, लबाव, उन्नीची  
दिमा ।

उत्तरायन- (स) मकर को सं-  
क्रांति से मिथुन को संक्रां-  
ति तक ।

उत्तरीतर (स) प्रति वास्तोत्तर,  
लबाव का लबाव ।

उत्तम्य (स) उठाकर, लगा  
कर । [ हुआ ।

उत्तित (स) उठा हुआ, जागा-

उत्तानपत्रकः (स) कास रेंड ।

उत्तीर्ण (स) उत्तर कर ।

उत्पत्ति म उत्तर का उठान ।

उत्पत्ति उत्पत्ति (स) जन्म, अ-  
नम, अवतार, पैदायश,  
पैदा हुआ ।

उत्पत्ति (स) कमल, कंत, कीरे,  
भूषण, मणि, गोदाकमल ।

उत्पत्ति उत्पत्ति (स) कमल १  
कथिंकार २ कूट ।

उत्प्लुतः (स) फुसा हुआ ।

उत्प्लुतः (स) ऊपर की उठतू ।

उत्प्लुतः (स) सोचता हूँ मैं ।

उत्प्लुतः (स) उत्पन्न करके ।

उत्प्लुतः (स) दवा कर निजा-

ला हुआ ।

उत्प्लुतः (स) यत्न, हर्ष, युक्ति ।

उत्प्लुतः (स) गोद, कोख, कोर ।

उत्प्लुतः (स) गिरहणी, उ-

गीसा ।

उत्प्लुतः (स) गोद ।

उत्प्लुतः (स) निकलना ।

उत्प्लुतः (स) पर्यट करण ।

उत्प्लुतः } उपद्रव, प्रवृत्तात ।  
उत्प्लुतः }

उत्प्लुतः (स) दान ।

उत्प्लुतः (स) उद्वाह, यज्ञ, पर्व,

पक्षीरज, पानन्द, पाल-

हाद जनक, व्यापार, वि-

दाहादि, सुग्री । [ गट ।

उत्प्लुतः (स) लुप्त, सोप, भ्रष्ट,

उत्प्लुतः (स) उद्योग,

यत्न, हर्ष, पानन्द, उद्यम,

प्रमाद्य ई साधन की

शामना ।

उत्प्लुतः (स) चाट भरा हुआ ।

उत्प्लुतः (स) बहुतात, बहुलता,

बढ़ती । [ भीर उठाना ।

उत्प्लुतः (स) फेंकना, ऊपर की

उत्प्लुतः (स) बीररस ।

उदकी (स) जटुगुप्त स्त्री ।

उदः उदकः (स) जल, नीर,

पानी, उत्तरदिशा, संक्षिप्त

पाथा ।

उदकम् (स) पानी ।

उदकीर्य (स) परार ।

उदगारग्रीष्म (स) ग्राहणीरा ।

उदच्छा (स) बहुत पानी मिखा

मठा दही का ।

उदघटः उदघाटी (स) प्रगटता,

ख्यात, मिलान, वा उद-

यावत्त की घाटी ।

उदङ्मुखः (स) ऊपर भीर

मुख है जिस का ।

उदक्षः उदीची (स) उत्तरदिशा-

उदन्तः (स) संदेश ।

उद्यान (स) उद्योग । [ गर ।

उदधि (स) लक्षधि, समुद्र, सा-

उत्कण्ठित (स) चाव ॥ दुखी ।

उत्कण्ठाविरचितपदम् ( वि०  
इदम्) चाव में रसे गए हैं  
पद निभ हैं ।

उत्कण्ठोष्णसिन्धुदया ( नि०  
सा) चाव से झूठा है हृदय  
लिस का ।

उत्कर्ष (म) बड़ाई, थोड़ापन,  
उत्कर्ष (स) उत्तम, मुख्य ।

उत्क्रम्य (स) काँवना ।

उत्कपय (म) हल से काँतना,  
उपाड़ना ।

उत्कृष्ट (स) उत्तम, श्रेष्ठ, उत्कर्ष  
विशिष्ट, प्रतिमत्त ।

उत्क्रान्त ( स ) विमल किया,  
लीता हुआ ।

उत्क्रान्त (म) छोड़ा हुआ ।

उत्सर्ग (म) मटुक, भूषण, मि-  
राभूषण ।

उत्सर्ग (स) श्रेष्ठ, प्रधान, बहुत  
पच्छा, सुन्दर ।

उत्सर्गमग्न्या (स) चमेची पुष्प ।

उत्सर्गमग्न्या (स) मस्तक ।

उत्सर्गमग्न्या (स) चमेची (वि० यथा)

सुन्दर फूल हैं माय त्रिमूर्ति ।

उत्तान- (म) { शीघ्र, पाय, पित्त,  
(स) { अशुभ, लंघ, उग्र  
मा लंघ ।

उत्तर उत्तराशा- ( स ) प्रति-  
वाक्य, जवाब, उत्तीची  
दिमा ।

उत्तरायण (स) मकर की सं-  
ज्ञाति से मिथुन की संज्ञा-  
ति तक ।

उत्तरोत्तर- (स) प्रति वाक्योत्तर,  
जवाब का जवाब ।

उत्थाप्य- (स) उठाकर, जगा-  
कर । (दुष्ट) ।

उत्थित (स) उठा हुआ, जागा-  
उत्थानपत्रकः (म) जान रेंड ।

उत्थिर्ग (म) उत्तर कर ।

उत्थित (स) ऊपर की उठ नू ।

उत्थित- उत्पन्न (स) जन्म, उ-  
त्पन्न, अवतार, पैदायम,  
पैदा हुआ ।

उत्पन्न- (स) कमल, कंज, कोई,  
भूषण, मणि, मोलाचमस ।

उत्पन्न उत्पन्नम्- (स) कमल ।  
कविचार रे सुंद ।

उत्पुल्ल (स) फुला हुआ ।

उत्पल (स) ऊपर की ओर ।

उत्पलामि (स) सोचता हूँ मैं ।

उत्पाय (स) उत्पन्न करके ।

उद्योह (स) दवा कर निष्का-  
ला हुआ ।

उद्योग (स) यत्न, इर्ष्य, युक्ति ।

उत्पल्ल (स) गोद, कोख, कोर ।

उत्पलीसा (स) गिरहणी, उ-  
प्रीसा ।

उत्पल्ल (स) गोद ।

उत्पल्ल (स) निष्कलना ।

उत्पल्ल (स) धर्म्य करण ।

उत्पात } उपद्रव, चक्रेयात ।  
उत्पात }

उत्पल्लन (स) दान ।

उत्पल (स) उच्छाह, यत्न, पथ,  
पथीरज, पानन्द, पाल-  
हाह जनक, व्यापार, वि-  
दाहादि, सुखी । [ गण ।

उत्पाद्यन्त (स) लुप्त, सोप, अष्ट,

उत्पाह-उत्पाह (स) उद्योग,  
यत्न, इर्ष्य, पानन्द, उद्यम,  
पमाध्य के साधन की

वाचना ।

उत्पुल्ल (स) चाट भरा हुआ ।

उत्पल (स) बहुतात, बहुलता,  
बढ़ती । [ भोर उठाना ।

उत्पल (स) फेंकना, ऊपर की  
उत्पाहवर्तन (स) वीररस ।

उदकी (स) जलकुण्डली ।

उद-उदक (स) जल, नीर,  
पानी, उत्तरदिशा, सलिल  
पाथा ।

उदकम (स) पानी ।

उदकीर्य (स) चरार ।

उदगारमोघन (स) ग्राहणीरा ।

उदच्छा (स) बहुत पानी मिला  
मठा दही का ।

उदघट-उदघाटी (स) प्रगटता,  
ख्यात, मिलान, वा उद-  
यावत की घाटी ।

उदधुमुख (स) ऊपर भोर  
मुख है जिस का ।

उदधु-उदीची (स) उत्तरदिशा-  
उदन्त (स) संदेश ।

उद्यान (स) उद्योग । [ गर ।

उदधि (स) जलधि, समुद्र, सा-

नक्षत्रिण (स) चाव ॥ दुष्टी ।

उत्कृष्टादिरचितपदम् ( वि०  
रदम्) चाव म रवे मय है  
पद क्रिय के ।

उत्कृष्टीप्रसिद्धदया ( वि०  
मा) चाव से फूला है हृदय  
जिस का ।

उत्कृष्टी (स) उडार, येठवन,  
उत्कृष्ट, उत्तम, सुख ।

उत्कृष्ट (स) जीवन ।

उत्कृष्ट (स) उल से जीतना,  
जवाड़ना ।

उत्कृष्ट (स) उत्तम, येठ, उत्कर्ष  
विशिष्ट, प्रतिष्ठित ।

उत्कृष्ट ( स ) विषय क्रिया,  
जीना दुषा ।

उत्कृष्ट (स) ओटा दुषा ।

उत्कृष्ट (स) मटुल, सुख, मि  
रोमयक ।

उत्कृष्ट (स) येठ, प्रधान, बहुत  
चष्टा, सुख ।

उत्कृष्ट (स) उत्कृष्टी दुषा ।

उत्कृष्ट (स) उत्कृष्ट ।

उत्कृष्ट (स) उत्कृष्ट (वि दया)

सुन्दर जो है साथ जिसके ।

उत्कृष्ट (स) { गीत, चाव, विल,  
(स) { मधुख, लंघ, उद्य  
(स) { मा लंघ ।

उत्कृष्ट (स) प्रति-  
वाक्य, लबाव, उकीची  
दिशा ।

उत्कृष्ट (स) मकर को सं-  
ज्ञाति से मिथुन को संज्ञा-  
ति मकर ।

उत्कृष्ट (स) प्रति वाक्योत्तर,  
लबाव का लबाव ।

उत्कृष्ट (स) उठाकर, जगा  
कर । (दुषा ।

उत्कृष्ट (स) उठादुषा, जागा-

उत्कृष्ट (स) जागा रोड ।

उत्कृष्ट (स) उत्तर कर ।

उत्कृष्ट (स) उत्तर का उठानू ।

उत्कृष्ट (स) उत्कृष्ट, उत्कृष्ट,  
उत्कृष्ट, उत्कृष्ट, उत्कृष्ट,  
उत्कृष्ट ।

उत्कृष्ट (स) उत्कृष्ट, उत्कृष्ट, उत्कृष्ट,  
उत्कृष्ट, उत्कृष्ट, उत्कृष्ट ।

उत्कृष्ट (स) उत्कृष्ट १  
उत्कृष्ट २ उत्कृष्ट ।

उत्पुस. (स) पुसा हुआ ।

उत्पुस. (स) लपर की उठ तू ।

उत्पुसामि. (स) सोपना हूं मैं ।

उत्पुस. (स) उत्पस कर दे ।

उत्पुस. (स) दवा कर निशा-  
ला हुआ ।

उत्पुस. (स) यज्ञ, इष्ट, युक्ति ।

उत्पुस. (स) गोद, कोख, कोर ।

उत्पुसीसा. (स) मिरहसी, उ-  
मीसा ।

उत्पुस. (स) गोद ।

उत्पुस. (स) निकलना ।

उत्पुस. (स) पर्यट कर प ।

उत्पुस. } उपद्रव, पक्षपात ।  
उत्पुस. }

उत्पुस. (स) दान ।

उत्पुस. (स) उकाह, यज्ञ, पक्ष,  
बधीरन, पानन्द, पाल-  
हाट जनक, व्यापार, वि-  
वाहादि, सुमी । [ गट ।

उत्पुस. (स) लुप्त, सोप, अष्ट,

उत्पुस. उत्पुस. (स) उद्योग,  
यज्ञ, इष्ट, पानन्द, उद्यम,  
पणाध के साधन की

शानना ।

उत्पुस. (स) बाट भरा हुआ ।

उत्पुस. (स) बहुतात, बहुताता,  
बहुती । [ पोर उठाना ।

उत्पुस. (स) फेंकना, लपर की

उत्पुस. (स) बीरस ।

उदकी. (स) उत्तुमुक्त की ।

उद. उदक. (स) लल, नीर,  
पानी. उत्तरदिमा, सन्निध

प्राधा ।

उदक. (स) पानी ।

उदकीर्य. (स) परार ।

उदगारमीधन. (स) ग्राहणीरा ।

उदच्छा. (स) बहुत पानी मिछा  
मठा देरी का ।

उदघट. उदघाटी. (स) प्रगटता,  
छात, निशान, वा उद-  
याचन की घाटी ।

उदहमुख. (स) लपर भीर  
मुख है जिस का ।

उदध. उदीची. (स) उत्तरदिमा.

उदन्त. (स) संदेया ।

उदयान. (स) उद्योग । [ गट ।

उदधि. (स) लघधि, समुद्र, सा-



८५५ (५) १५५५

७५४५ (७) अङ्क, अत्यन्त ।

ବହୁ (କ) କହଣା ଗୁଣି ଲାଗି,  
ଲାଗିଲି ।

સાહિત્યવન (સ) વાનિજી બોમ :

बहुयनितः (१) बहुधापनः ।

अहमद (म) काग के एव राजा  
का अहमद मन्त्रालय ।

अथ ह्यसौम्यः ॥ १ ॥

(वि० अथर्ववेद) अथर्ववेद

अथाहो वा मया ज्ञानम्

काशी के समुद्र तट के कड़ी

७१६: [५. ५०५]

[illegible]

५३६३६ (६) ५३६३६ ५३६३६

१५५५ :

中世史, 第 (4) 卷, 第 1 卷, 第 1 卷

କଟକ (କ) କଟକ, ଓଡ଼ିଶା, ଭାରତ

॥ १॥

重刊本 1册，上海图书馆藏。号1771。

निर्देशक, प्रोफे. बहादुर, प्रबन्ध,

१३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००.

३५३३ :

한글: 2000년 1월 1일, 서울, 한국

उद्दिष्ट (म) दृष्टान्त ।

तद्वान् (स) अंठ की बायु ।

महःपः (म) बलकीरो ।

जयसिंह (ग) विवरणाची ।

बदायी बदायनीन ( स ) यत्

मित्र भाग्यवर्धन शर्मा, सं.

આશી, સમી, સજન, મ

मृतं न विदुः ।

कवित्त (क) अक्षर, आनिर्भूत ।

अदिनः (क) अदिनः ।

कहीवी (न) सुगन्धवासा ।

अनुवर्तिनः (ग) सुवर्तः ।

कर्मकांड ( ५ ) अध्याय, शतकं.

अथ, तस्मात् वादः ।

ନବମସ୍କନ୍ଧ (କ) ଅଂଶ

वसुधातुय स. ना. ना. :

ନିଜମାମୁଦାରିଆ : ୫ ନାମ ବା

ହେଉ ନାହିଁ ।

ਅਨੁਸਾਰ ( ੨ ) ਭਾਗ, ਅਸਲ,

कृष्ण, श्रीकांत, कृष्ण ।

। इन्द्रजालिनी (क) कलकत्ता, १९५५।

ਸੇਵੇ ਵਾਪਸ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ।

● 1997 年 10 月 1 日

१. कृष्णार्जुन 'स' पदार्थः पृथग्विदः ।

उद्गृहीत (स) ऊपर की उठा  
हुआ ।

उद्गृहीतानुक्रान्ताः, (वि० व-  
जिताः) ऊपर की उठाए हैं  
पक्षों के छोर जिन्होंने ।

उद्गृह्ण (स) घिसना, रगड़ना ।

उद्ग्राम (स) बेमर्याद, खुले  
बन्धन । [रूपा ।

उद्दिष्ट (स) कहा हुआ दिखलाया  
सहूत (स) दिखाया हुआ,  
भड़काया हुआ ।

उद्दूतपापाः, (वि० पद्वानाः)  
हिस गये हैं पक्षवा दूर  
हए हैं पाप बिरुद्धे ।

उद्यत (स) तैयार, उपस्थित ।

उद्दीपन (स) प्रज्वलन, प्रकाशन ।

उद्देक (स) दकाहन ।

उद्देग १ उछाट, उछोट्टी, भट  
उद्देग २ उलट्ट, झोम ।

उद्देश (स) उत्पत्ति, उत्पन्न ।

उद्दिष्ट (स) जमीन फोड़  
कर जो पानी का धारा  
झींझ ।

उद्भिन्न (स) हवादिज की इसी  
तीव्र कर उद्वहरी ।

उद्यम (स) उद्योग, उपाय,  
व्यापार । [हित ।

उद्यान (स) उपवन, बागीचा,

उद्योग (स) यत्न, उपाय, तद-  
वीर ।

उद्गीर्ण (स) उच्छेदना ।

उद्गृह (स) पुत्र ।

उद्देष्टनीय (स) बोझने योग्य ।

उद्दाह (स) पादिपक्ष, दि-  
वाह, व्याह । [उत्कंठा ।

उद्देग (स) व्याकुलता, भय,

उद्गत (स) खंवा, ऊपर ।

उद्धार (स) मुक्ति ।

उद्दति (स) हृदि, तरङ्गी ।

उद्भिन्न (स) जाती रही है नोंद  
जिस की ।

उद्भूत (स) विदित, शीराह,  
मतवाला, पागल, धतूरा ।

उद्भाद (स) चित्तविभन्न, पा-  
गलपन, चित्त का विदित,  
होना । [है जिस का ।

उद्भुत (स) ऊपर की ओर मुझ

उन्मेष (स) बुद्धि, ज्ञान, पक्ष,  
उद्गृह, पांथ का मोड़ा

समकला ।

उप. उप. (स) उपसर्ग, समीप,  
मृग, वनाया ।

उपकण्ठ (स) तट, तीर ।

उपकथा (स) जवरसुवर, क  
हानी वनाई । हारा ।

उपकार (स) सहाय, मदद, स

उपकारक (स) उपकारी, सहा  
यक, मददगार ।

उपकाशिका (स) श्याम, नीरा ।

उपकुक्षिका (स) उपघटा इत्या  
यसी १ मगरैका २ ।

उपकुक्षी (स) मगरैका ।

उपकुक्ष्या (स) पोवर ।

उपकर्तुम्, उपकार करने को  
मंहारा देने को ।

उपगत, (स) निजादुपा, पास  
पहुँचा हुआ ।

उपगम, (स) पास पहुँचना ।

उपगूढ, (स) छिपातीसे लगाना ।

उपचार- (स) प्रभुग, दिव्यत  
युक्ति, कथन, उपाय सेवा,

मन्त्र प्रयोग ।

उपचित, (स) दण्डा, बड़ा

- दुधा, रधा, दुधा ।

उपचितरथाः, (वि० ते) बड़ी

हुई चमिंसाया वाली ।

उपचितवसिम्- (वि० सरसम्या-

भम्) की गई है, पूजा जिस  
की । [पंडुवाला ।

उपचितवपुः, (वित्त्वम्) बड़े हुए

उपजिगमिषु, (स) पास जाने  
का इच्छा माने ।

उपदेय (स) पातयक रोग ।

उपदेय- (स) हित ध्यान, तसि-  
हत, सिधना ।

उपद्वय (स) उपाधि, उद्यात,  
पुसाद । [नदी ।

उपचित्रा (स) बड़ा तामा

उपतट, (स) किनारा, तट ।

उपाय, (स) सेवा, मन्त्र प्रयोग ।

उपधातु (स) समीप धातु,

जगु धातु, वनाया धातु,

मोना मकड़ी, कृपा मकड़ी,

तुलहिषा, चाँदा, पीतक,

सेदुर, मिम्राजित, धाति ।

उपधान- (स) शिरहनी, तबिया

उपनिषट- (स) वेदान्त शास्त्र,

वेटका ररस्य भाग ।

उपपातक ( स ) सधुपाप ।

नहापाप, होटेपाप ।

उपपाटन ( स ) सम्पादन, सं-

यज्ञ, संहत, बनाया बन ।

उपपाद्य ( स ) किये जानें के  
गोम्य ।

उपपन्न ( स ) दुःख, पीडा ।

उपवन ( स ) समोपवन, सधु-

वन, वाटिका, मनवि-

यान के निमित्त बन,

विहार करने की वाटि-

का, बाग़ीचा ।

उपवर्द्ध, उपवर्द्धना ( स ) गिर-

हरी, वाक्मि, राजावि-

श्रेय, तद्विद्या, उपधन ।

उपवास ( स ) उपवास, निर-

उपवासा ) दार भूषारहना ।

उपविद्य ( स ) संशयन, सुठरि-

या सीन, करिहारी, बन-

रस, धतूरा, पादि उप-

विद्य है । [ निज ।

उपधीत ( स ) यज्ञोपनीत, ल-

उपभोग ( स ) विषयों का

मुखास्वादग ।

उपमा, ( स ) दृष्टान्त, पटतर ।

उपविद्या ( स ) पत्नी ।

उपमाण ( स ) सादृश्य ।

उपमेय ( स ) उपमा के योग्य ।

उपयम-उपयमन ( स ) पाणि

पद, विवाह ।

उपयुज्य ( स ) लेकर, पीकर ।

उपरस ( स ) काँच, फिटकि-

रिषा पत्थर, गीप, ग्रंथ,

पाटि ।

उपरति ( स ) शान्ति, विरती,

परमानन्दा, तीसरा पट

सम्पति जो पन्तर बाह्य-

उभय इन्द्रियों का वेग एक

रस, घीर रहना ।

उपरमः ( स ) गन्धक, सिंगरिफ,

अबरख, करतास, मयन-

मिल, सुरमा, सोहागा, सु-

न्धक, फिटकिरी, पुरी, ख-

परिया, संग्रराहत, गेरू,

जामोस, कौड़ी, बोंस,

दाऊ, कौड़वा, सुरठी,

माटी, संख, पिहड़ी, यज्ञ

ਭਧਰਸ ਏ ।

सपराग (भ) { मय्यादि सह-  
सपरागा (प) { य. यङ्गोकार  
{ यक्षहना. दृ

सत्य, गहन, सम्यक् निवृत्ति ।

उपराजाः (स) उपकाया, उप-  
राजना । (म्य, स्थान ।

उपराम. (न) परिणाम. बैरा-  
उपरि. (स) ऊपर।

सपरीध (म) सहायता, मोरव ।  
सपरीध (स) एकपद्धा मरु,  
पंजला ।

सदस्य. (म) जलबगोरी, पाल्य-  
कपकपो, ग्रेन, गिरी,  
पर्वत, शिवालय, पत्यर,  
पाल्यर ।

उपस्थिति (म) बुद्धि ज्ञान ।

सपकम्भ (स) प्र.म. ।

**उपबन्ध- (म) बगीचा ।**

उपस्थ- (न) निहङ्गन्दी, पत्नी वा  
पुत्रस्य विन्द ।

उपस्थित: (म) मौजद, हाजिरा

उपस्थानं. (ग) पाचममं. [द्रव ।

ਦਰਸ਼ਨ- (੪) ਅਧਿਆਪਕ, ਰਾਜ-

सपहार- (स) जपाल, भोजन  
वस्तु, सत्कार, भेंट, पूजा,  
नेत्रेय, मण्डप ।

उपवास. (अ) चूड़, ठाँ,  
हाल, परिहाल, हंसी ।

उपाटो, (१) उपाटना, उपा-  
ट के उपाटना ।

उपाद. उपादय. ( उ ) यद्वत्,  
भंयत्. यज्ञोक्तम् ।

उपादान (स) कार्य, विशेष,  
सहाय । (प्रत्यय ।

અવાજ. (મ) ઉપદ્રવ, અન્યાય,  
અપાધ્યાય (જ) જો કોઈ વેદ,

और वेदांग को पढ़ावे,  
ऐसा गुरु, पढ़ाने वाला ।

उवाचि (स) धर्मं ध्यातुं, कृतं,  
पदवी, उदारण, समीप

नित. (म) निवृत्त, तट ।  
 नाय. (स) यत्र, तदवीर ।  
 नायक. (म) भेंटी, गङ्गराना.

उभय (म) { हि. दो. दोनों,  
 उभौ (स) } परस्पर ।  
 उभयपक्षमूल. (म) दोनों पंख-  
 मूल । [ हव ।

उपहार ।  
 उपाया. (स) उपजाया ।  
 उपाये. (म) उत्पन्न किया ।  
 उपाय. (द) उपारी, उपारना ।  
 उपासा. (द) उपवास, भुंखा  
 रटना, फाँटा ।

उमरि उमरि. (स) गूनरि  
 उमा. (म) { पार्वती, शिव-  
 उमानी. (प) } पत्नी शिवमा-  
 निता, युद्ध पां-

रत शिवाय, जीवमंजरा,  
 शिव की स्त्री ।

उमापति. (स) शिव ।  
 उम्मी (म) गोदूम यव के बाल  
 का होरहा ।

उपासक. (स) उपासना करने  
 वाले, भक्त, पूजाकरने  
 वाला, भेवक । निवा ।  
 उपामन. उपामना (स) भक्ति.  
 उपेक्ष. उपेक्षा (स) त्याग, त्याग,  
 उपाहर, धोखा ।

उपेक्ष (द) उदयभरण, प्रग-  
 टेज, लपटा, उदयभया ।  
 उर रु (स) रुदय. मोती  
 दाती ।

उपेक्षित. (स) त्यागता है ।  
 उपेक्ष. (स) विष्णु ।

उरग (स) रुद्र, भुवङ्ग, शीत  
 माँव. व्याघ्र, हरि, सी  
 धातु ।

उपेक्षु. (स) उदय ।  
 उपेक्षिका. (स) लाइनाम ।

उरगाद उरगाराति (द)  
 उरगारि उरगारि (द)

उपेक्ष. उदृष्टि. (द) उदृष्ट,  
 मंजरा, बंटना ।

उपेक्ष. (स) उदयभया, उदयभया ।  
 उपेक्ष. (द) उदयभया ।  
 उपेक्ष. (द) उदयभया ।

उपेक्ष (द) उदयभया, उदयभया ।  
 उपेक्ष (द) उदयभया ।

જામા (મ) મેઢા ।

नद्वय (म) द्वातौ कनेत्रा ।

ਸੁਰ ਸੁਰਾਤੁ ਮ / ਸੁ) ਯਾਨ, ਪੰਜ ।

महाभारत (स) द्वयवर्णनी, द्वयवर्णनी  
द्वयवर्णनी

बहीबल (२०००) ॥

नद (क) प्रस्ताव विज्ञाप, का.प्र.

ଉତ୍ତର, ପଶ୍ଚିମ :

ਅਕਤੂਬਰ (ਸ਼. ੧੯੫੭) ਤੋਂ

संज्ञा १५५

५३ (५) २०११

बडीय (अ) बडुवाय बडुव-  
 लय : [नगा]

ਚਰਿਤਾਮ : ੧੧ ਸਕੀਰੀ ਕਾਟ

कालेन च । अथ चक्षुः । सुखं च ।

ਅੰਕ ੧੭੨ : ੧੭ਵੀਂ

५२० (५ भाग) ५२० ५

1995-1996

[illegible]

महोदय

ସଂସ୍କୃତ, ଇଂରାଜୀ ଓ ଉତ୍କଳ

[illegible]

ਗੋ ਸਿਵਾਹ, ਗੋਸ਼ਾ ਅੰ ੮

7-5 4516-1

**उत्तीर्ण नशीबना (प) बाराबिछदि**

ज्ञान, उपर्युक्त, केवलनाशक,

संस्कृतम् ।

जमशुख जमशुख (म) मज्जु, दिवा

ପଞ୍ଚୀ, ମୃଗୀ, ଶୁକ୍ରୀ, ଶୁକ୍ରୀ

आ पछी, जो दिन में नहीं

ਦੇਵਗਾਹ ੫

समस्तस्यैव (सं) शृंगारः ।

नमस्को (स) मङ्गल, शनिवार, मङ्गल ।

नमः । (म) विजयगरी, पतङ्ग ।

लब्धः। सुखितनमशीय। अमरः.

(वि. देव.प्रि.) पिलगा-

दियो के जला दिये के जम-

## ही श्रमों को पुरुष के लक्षण

विषय में ।

मज्झिमुल्ल (म) कलङ्का वृत्ता ।

१५ न दृष्ट पात्रम्,

प्रमाण ।

॥ १ ॥ (१) गङ्गादेवता, काशी ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमोऽस्तुते, श्रीः गुरुभ्यो नमः ।

संख्या १७१३३३, १७१३३३, १७१३३३

॥ १ ॥

**Figure 6**





सोभतः मरुतः, सोपा ।

कृष्ण (स) कर्म, मार, उधार ।

कृतम् (स) मत्त, माय ।

कृतु (स) वसंत, शीत, वर्षा,

शरत्, हेमंत, मिश्र,

हो दा मास विशेष, सि-

धो का रक्षोधर्म, लोधर्म

होना । [वासी स्त्री ।

कृतुमती (स) रत्नमती, हेतु

कृद् (द) वृद्धि ।

कृतुगण (स) वसंत काल,

वसंत कृतु गीत, मेघ,

हो नाम ।

कृतुविज (स) यज्ञकरनेवाला ।

कृते- (स) विद्वत्, भिन्न, वि-

ना, चलन, विवाह ।

कृदि (स) धन, सम्पत्ति,

चोदनी, आधार, कृति,

उत्तर्य, धनदोहन, कृदि

इसके न मिलने से विस्तार

कट ।

कृपम (स) चोट ।

कृपमः (स) चेष्ट, बैल ।

कृपमक (स) कृपमक इस के

न मिलने से विस्तारकट ।

कृषि (स) मुनि, विद्व, पादि

ग्रास्त बैठ का जानने

वाला मुनि । .

कृषिक (स) इन्द्रो, गङ्गरथ ।

कृष्टि (स) चक्र, करवाल,

यज्ञ, पाषाण्य ।

कृष्यमुख (स) नाम पर्यंत,

सुषोष स्थान । [हरित ।

कृष्यः (स) काच, पण्ड का

कृष्या (स) देसी सतावर ।

कंगडिया ।

कृत- (स) भाग, राजा, नक्ष

त्र, रीति, हिंस्रता भंग्या

वाचक । २ ।

कृतेश (स) नामन्त, भाग,

भाग ।

कृ

क- (स) देवताधी को माता ।

कृतुहिमादिषट् ॥ ६ ॥ (स)

हिम कृतु चपक्य पूय ।

मिश्रकृतु माघ काग-

न ॥ वसन्तकृतु चैत

वेगाख ॥ यीषम चतु ल्येठ  
चपाट ॥ वर्षाचतु था-  
वण भादो ॥ शरदचतु  
पाश्विन कार्ति ॥ ६ ॥  
दो ॥ पाश्विन कार्ति ॥  
शरद चतु, अगहन पुष  
हिमनाल ॥ माघ फागुन  
मिथिर कहत, मधु माघव  
चतु राख ॥ ११ ॥ ल्येठ चपा-  
टहि यीषमहि, वर्षा चतु  
हिमाम ॥ ए दो चतु, प  
मिहं ६, वेद हि कियो  
प्रकाश ॥ २ ॥

चटपि (स), सुनि, तपस्वी, यति ।

**ए**

एक (द) एकही, मुख्य, पहलवा ।  
एकव (स) एकठा, एक जगह ।  
एकटा (स) एक समय ।  
एकधा ( स ) एक प्रकार, एक  
तरह ।

एकरसः दृष्टिकारि रचित अर्थात्  
कानादि विचार से रहित  
घटभाव विचार रहित ।  
एकतन (स) एकदंती, टोकरा ।

कोई जगह द्वारे दूसरा नहीं  
एकदंत (स) गणेश ।

एकपत्री (द) पतिव्रता ।

एकवेणी (स) सब बालों का  
एक झूड़ा ।

एकस्य (स) एकठा ।

एकाकी-एकाकिन्द-एकाकिन(स)  
एकसा, त्यागी, चहेसा ।

एकाग्र ( स ) एक चित्त, एक  
मन, पाविष्ट, स्वस्थ, अर्थात्  
विशेषरहित ज्ञान जो और  
विषयों से दृष्टा कर एक  
विषय में लगा हो ।

एकादश (स) ग्यारह, ११ संख्या ।

एकान्त ( स ) निर्जनस्थान,  
अलहदह, सुन्य स्थान ।

एकान्तः (स) चहेसा, निरन्तर ।

एकाग्रन (स) हृष्ट, तह, एका-  
एक ।

एकाटीना (स) पाठ १ बड़ी  
मोममरी २ । [पाला ।

एकाग्र (स) हाथा, एक पांख

एतः एत (स) हरिण माधव,  
जग, वासारांग का हरिण,

મધ્યમ : [નિમ્ન] :

પોતાના ( જ ) હતા. સતી.

चोदायकः (न) महत्तमः ।

सोदण्डर ( स ) गुणरफल १

तद्विषयं चतुर्षु च येषाममरः सः ।

બોદિદ્દ: (મ) રેહ મિદ્દો ।

ਬੀਹਿੰਦ ਨਾਮ (੨) ਗੁਮੀਨ

ਘੋੜ ਘਰ ਜੀ ਧਾਮੀ ਘਾ

પાલન નિબંધે, [મુદ્રા]

ਬੀ. ਐਲ. (ਸ) ਸੁਭਾਸ਼, ਚੰਦ

पौन (क) पौन ।

ਪੀੜਾਦ (੬) ਸਮਾਜ, ੧੯੮੧।

ਘੋੜੇ (੫) ਵਿਆਹ, ਸਮਾਜ,

ਬਾਟੁਕਾ, ਸੰਤੀਪ,

शोधक (ग) ह.प.।

ॐ

संख्या (४) १६५, प. ६६, दिल्ली.

अथवा, न ही । [यम् ।

अंश (४) चयन बादि, राजपूत आ

वर्ष १९५५ (१९५५) १९५५

ਬੰਦਗੀ (ਜ) ਕਾਨੂੰਨ ।

ਬੰਦ ਕਰਵਾ (੭) ਸਾਲ, ਜਲਦੀ

ଅବସରରେ ।

ਸੰਤਾਨ (੨) ਦੀ ਸਿਖ :

અંશ: (૧) ૬૫૨, ૫૪૫૫ ।

अवरोध ( म ) एक राजा ।

महामा

पंच (स) मन्त्र, पानो ।

चंद्रधर (५५) मीठ, बान्हर ।

चंद्रविधि } असुद्र ।  
 चंद्रनिधि }  
 चंद्रवर्ति }

अद्वयति (अ) अद्वय, अद्वय ।

ସମ୍ବୋଧର (ମ) ସାହୁ ।

संभोज (अ) जागृत ।

પાંજરા (૭) ને ચમકાવવા ।

अग्नि ( ५ ) संज्ञक भाग।

प्राप्त कर दें ।

ਅੰਕ (੧) ਸਦਾ, ਅੰਕ ।

चंडिकादेव (म) मन्त्रालय ।

ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ (ਸ) ਵਿਸ਼ਵ ਰਾਸ਼ੀ

અનુક્ર. (અ) મિદ, મોતર : { બા

प्रीतहृदयम् (५) भगवद्वाचः।

योगबहाल १ अंतर्भांग, शिप  
अन्तर्भांग १

अनारहित (अ) अनारहित, लि

सूचक :

ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ ਸਾਹਿਤ: (੨) ਸਮਝੇ ਜਾਣੇ

अंतावरि (स) अंतही, आंत,  
अन्त अनूद ।

अंदा-अंदा (द) आंदा, माता ।

## क

क (म) आत्मसंज्ञा, सत्त्वसंज्ञा,  
धिर ।

कं (म) कुल, लज्जा, अनस,  
शीर्ष, काम, लक्षण, पा-  
लाय ।

कः सो कौन ।

कंस (स) कण्ड का नामा, उप-  
मेन का बेटा, कांसीधातु ।

कंरु (द) कहीं, कोई लगद,  
कोईठाम । [कण्ड ।

कंनारि (म) विष्णु, नारायण,  
कलच्छन्द (स) केवड़ा ।

ककारः (म) भूरा कोईड़ा ।

ककुण्ड (स) हथ, पेड़, टकी ।

ककुत्स्थ (स) भागीरथ पुत्र,  
देस । [मिखा ।

ककुद (स) रात्रिरिह, पर्वत

ककुदनी (स) मासकौनी ।

ककुभ (स) दिग्, सोर, दिग्मा,

हृत्त विज्ञेय पर्वत चर्जुन ।

ककुभः (स) कदम्बा । [वगुण ।

ककरी (प) कांछ, कोछ,

कड (म) दनिद्र, वगुणा पत्नी,

कुरी, पत्नी विज्ञेय, गिह

सुमान । [बासा ।

कडर (प) कडप, कड़ा,

कडतिका (म) कडदिपा ।

कडवन्ध (स) लज्जा, नीर, पप ।

कडु (म) कुरी, पत्नी ।

कडुठः (स) कोडवा ।

कडोमि (म) चमोक ।

कडोस (स) कंकोल ।

कडू (म) मासकौनी ।

कडू न (म) } कौनी ।  
कडू (स) }

कडूरा (फ) { पर्वत गिह,  
(प) { मन्दिरादिकटि-  
कोर, बुज, गुंज ।

कध (स) बाल, हेम, रोम,  
नेत्र, वादन ।

कधकरलान (द) बाल का  
जीव, टीस, हेम लान, दूय ।

कश्चित् (स) कभी ।

कसुलि कसमलि (ट) कुचाको.

कुचाटी, बाढ़ ।

कसटः (स) चवराई चाम ।

कसूरः (स) कसूर ।

कसू (स) कस, अद्रिल ।

कसूकः (स) तून हथ ।

कसूयः कसूयः (स) { कसूपा,  
(व) { नामनि  
वि ।

कसूरा (स) कसासा । सुरा-  
सभा ।

कस (स) काडा, टेढ़ा ।

कसक कसकगिरि (स) चंजन,  
काजक, सूखा पत्त ।

कसम (स) सुख, कस, सोमा ।

कसितः (स) कोडा, कस, पत्त ।

कसक (स) केकेरी ।

कसु (स) कसकासा, कोकी,  
चंगिवा ।

कसु (स) कसक, पत्त ।

कट (स) कसर, कटि, कांड ।

कटहटेरी (स) दाहकट्टी ।

कटक (स) काकक ।

कटमी [ स ] माकलीनी, १  
कररी २ ।

कटमरा [ स ] सोनपत्ता, १

मस्यपसारको २३ करडी ।

कटसारिका [ स ] सुपेदफस  
का कटसरेया ।

कटु [ स ] सोनपत्ता ।

कटक कटाक. कटकाई [ स ]

दल मेमा, दासा, 'कडा',  
कोक, खहुंया ।

कटाई [ स ] कसा, कठाही  
पात, डण्डा, दिम्पार, क-  
साह, कोप ।

कटाच [ स ] भकली, तीही,  
चितवन, माहातकन, ति-  
रहीनकर, तिरवी चित-  
वन ।

कटि [ स ] कांड, कसर, कट,  
कसुपा, कसिका ।

कटिपू [ स ] कसकनी, कस-  
र को कोरी ।

कटिपूर [ स ] ग्यामपहरी ।

कटिनी [ स ] चरी निचने का ।

कटि [ स ] करेला । [ कसा ।

कटिमक [ स ] जाल गदहप-

कटी [ स ] एकाट्टी ।

कटो. [स] कौटलीनी । कुट-  
कोर । [कटुपा ।  
कटु. [स] कटवा, तीता, कटुपा  
कटुरानी. [स] तीतरजन ।  
कटुसुखीर. [स] तीतासुखा,  
तीता कटु जलपात्र ।  
कटुकछेर. [स] सरभो का नैस ।  
कटुका [स] कुटकी ।  
कटुतिता [स] बिरेता ।  
कटुतिक. [स] धौठ, धीवर,  
मिरीच ।  
कटुसुखी. [स] तिता कौटा ।  
कटुगद्र [स] धौठ, पदरस ।  
कटुगोहिणी. [स] कुटकी ।  
कटिहार कटिहार. [द] मसा-  
ह, मांझी, कपंधार ।  
कण्डक. [स] खोज ।  
कप. कपी [स] टुकड़ा, खूर्च,  
बुझनी, बूंद ।  
कपा. [स] कपुवीपनि, धीवर,  
कपिका, मेघ, मकरा, सु-  
पेदणीरा ।  
कपिका. (स) छोटी बूंद ।  
कणामूल. [स] पिपरनामू ।

कण. कणक [स] मनु, बैरी,  
गांठा ।  
कणकाया (स) कुटुम्ब १  
पिमर गुप्त । २ ।  
कणकारी (स) रंगनी ।  
कणकारी फल (स) रंगनी  
के फल ।  
कणकिनी (स) रंगनी ।  
कणकी. (स) कण्टार ।  
कणफल. (स) कटहल ।  
कणकीफल (स) धीरा हीनी ।  
कणफडा. (स) कुटकी ।  
कणवी (स) खयरवृक्ष ।  
कण्टानिखा. (स) रंगनी ।  
कठोर (स) कठिन, दृढ़, पुट,  
निर्देय, क्रूर, समुत्त ।  
कण्ड (स) गन्ना, कटुवा, गर-  
दन ।  
कण्डव्यभिः. (वि० त्वम्) गले  
की सो छवि है जिस में ।  
कण्ठपुत्रभुजसतापन्य. (वि०  
उपगूढम्) कुट गई है गले  
में दाँड जता की गाँठ  
जिस में ।

कपुलि कपुलि (ट) कुपासो.

कुपाटी, बाढ़ ।

कपटः (स) चवराई धाग ।

कपूरः (स) कपूर ।

कपटः (स) धन, अद्वैत ।

कपटः (स) तून छप ।

कपटः कपटः (स) { कपुपा,  
(प) { नामनि  
धि ।

कपटः (स) कपटः १ दुरा-  
सभा ।

कप (को) बाढ़ा, टेढ़ा ।

कपट कपटकमिरि (स) चंवन,  
काजल, सुरमा पर्वत ।

कपट (स) चुबु, चुबु, सोना ।

कपटः (प) छोड़ा, कम, पटर ।

कपटः (ट) बेकरी ।

कपट (स) मंथवाजा, बोली,  
चंगिया ।

कपटः (स) कपट, पट ।

कट (स) कपट, कटि, फाड़ ।

कटकटिरी (स) दाढ़कटिरी ।

कटफल (स) कायफल ।

कटभी [ स ] मासकीनी, १  
करही २ ।

कटभरा [ स ] मीनपता, १  
मन्मथसारणी २१ करही ।

कटसारिका [ स ] चुपेकल  
का कटमरीया ।

कटु [ स ] मीनपता ।

कटक कटाक. कटकाई [ स ]  
दल, मीन, बाता, 'कटा',  
फोड़, चहुंघा ।

कटाई [ स ] कसा, कटाई  
पात, दण्डा, विष्टार, क-  
ड़ाई, कोप ।

कटाई [ स ] भूतकी, तीही-  
चितवन, बाढ़ातवन, ति-  
रहीनवर, तिरकी चित-  
वन ।

कटि [ स ] फाड़, कपट, कट,  
कपुपा, कपटिका ।

कटिपू [ स ] कपटनी, कप-  
र की डारी ।

कटिपूर [ स ] म्यामपर्वरी ।

कटिनी [ स ] चरी लिखने का ।

कटि [ स ] करेजा । [ कपट ।

कटि [ स ] काल गदगद-  
कटी [ स ] एकाङ्को ।

कट्टी. [स] घोषघीनो १ कुट-  
लीर । [कट्टपा ।

कट्टु [स] करुवा, तीता, कट्टुपा  
कट्टुशानी. [स] तीतवचन ।

कट्टुतुम्बोर. [स] तीतातुम्बा,  
तीता कट्टु, कलपाच ।

कट्टुकसेह. [स] सरसो का नैस ।

कट्टुका. [स] कुटची ।

कट्टुतिक्त. [स] विरैता ।

कट्टुत्रिक. [स] सीठ, पीपर,  
मिरीच ।

कट्टुतुम्बी. [स] तिता सीका ।

कट्टुभद्र. [स] सीठ, पदरख ।

कट्टुगोहिणी. [स] कुटकी ।

कट्टिहार कट्टिहार. [द] मला-  
ह, मांभी, कपीधार ।

कट्टक. [स] चीस ।

कट्ट कट्टी. [स] टुकड़ा, चूर्ण,  
बुबनी, बूंद ।

कट्टा. [स] कट्टुपीपलि, पीपर,  
कटिहा, जेय, मकरा, सु-  
पेट्तीरा ।

कट्टिका. (स) कोटी बूंद ।

कट्टान्न [स] पिपरनाम् ।

कण्ठ. कण्ठक. [स] शत्रु, बैरी,  
कांटा ।

कण्ठकाया (स) कुङ्कुम १  
मिमर वृक्ष । २ ।

कण्ठकारी (स) रैगनी ।

कण्ठकारो फल (स) रैगनी  
के फल ।

कण्ठकिनी. (स) रैगनी ।

कण्ठको. (स) कण्ठार्द्र ।

कण्ठफल. (स) कटहल ।

कण्ठकीफल. (स) खीरा दोनों ।

कण्ठकहा. (स) कुटकी ।

कण्ठवी. (स) खयरवृक्ष ।

कण्ठासिका. (स) रैगनी ।

कठोर. (स) कठिन, दृढ़, पुट,  
निर्दय, क्रूर, सख्त ।

कण्ठ (स) गला, 'कट्टुवा, गर-  
दन ।

कण्ठच्युतः, (वि० त्वम्) गले  
की सो हवि है लिस में ।

कण्ठच्युतभुजसतापन्य. (वि०  
उपगूढम्) कुट गर है गले  
में दाँद सता की गाँठ  
जिस में ।



कसुसि कसवसि (ट) कुषाक्षी ।

कुषाटी, बाहु ।

कसुटः (स) चयराई चान ।

कसूरः (स) कसूर ।

कसूर (स) बग, कसूर ।

कसूरक (स) तून हल ।

कसूरप कसूर (स) { कसूरपा,  
(प) { नामनि  
धि ।

कसूरुरा (स) कसूरुरा १ दुरा-  
लभा ।

कस (को) बाहु, टेढ़ा ।

कसक कसकगिरि (स) चंजन,  
काजल, सुरमा पर्वत ।

कसन (स) चुनर्ष, सूर्य, सोना ।

कसित् (प) सोडा, कम, पत्थ ।

कसूर (द) केकेयो ।

कसु (स) चंखवाला, बोली,  
चंगिया ।

कस (स) कमल, पत्थ ।

कस (स) कमल, कसि, फाड़ ।

कसुट्टेरी (स) दादबसुदी ।

कसुट्ट (स) कायकस ।

कसुमी [ स ] मासकीनी, १  
करडी २ ।

कसुमी [ स ] मासकीनी, १  
मासकीनी २ १ करडी ।

कसुसारिका [ स ] सुपेदफल  
का कसुसरेया ।

कसु [ स ] मासकीनी ।

कसु कसुका. कसुकाई [ स ]  
दल, मेना, दासा, 'कडा,  
फोड़, चहुंपा ।

कसुका [ स ] कसुका, कसुका  
पात, कसुका, विस्तार, क-  
सुका, कोय ।

कसुका [ स ] भक्तकी, तीर्थी-  
चितवन, बाहुतकन, ति-  
रकीमजर, तिरकी चित-  
वन ।

कसु [ स ] फाड़, कमल, कसु,  
कसुपा, कसुका ।

कसुम [ स ] करकीनी, कस-  
र की डारी ।

कसुमर [ प ] ग्यामवर्धरी ।

कसुमी [ प ] चरी लिखने का ।

कसुमी [ स ] करकीनी । [ कसुमी ]

कसुमीक [ स ] जाल गदहप-  
कटी [ स ] एकादशे ।

कट्टी. [म] शीतशीतो १ कुट-  
कोर । [कट्टपा ।

कट्टु [म] करवा, तीता, कट्टपा

कट्टुबानी. [म] तीतबनम ।

कट्टुग्वीर. [म] तीतागुग्वा,  
तीता कट्टु. कसपाच ।

कट्टुकसेर. [म] सरसो का तेर ।

कट्टुका. [म] कुटकी ।

कट्टुतिरु. [म] बिरेता ।

कट्टुतिक. [म] शीठ, पीपर,  
मिरीर ।

कट्टुग्वी. [म] तिता शीका ।

कट्टुभद्र. [म] शीठ, चदरख ।

कट्टुगोहिपी. [म] कुटकी ।

कट्टिहार. कट्टिहार. [द] मसा-  
ह, मंभी, कट्टिहार ।

कट्टु. [म] पील ।

कट्टु. कट्टी. [म] टुट्टा, सुई,  
बुद्धनी, बूंद ।

कट्टा. [म] कट्टुपौपनि, पीपर,  
कट्टिका, लेय, मकरा, सु-  
पेटशीरा ।

कट्टिका. (म) लोटी बूंद ।

कट्टाम्. [म] पिपरनाम् ।

कण्ठ कण्ठक [म] मनु, बेरी,  
कांटा ।

कण्ठकाया (म) कुक्कुट १  
मिमर वृक्ष । २ ।

कण्ठकारी (म) रोगनी ।

कण्ठकारी फल (म) रोगनी  
के फल ।

कण्ठकिनी. (म) रोगनी ।

कण्ठको. (म) कण्ठाई ।

कण्ठफल. (म) कट्टक ।

कण्ठकीफल. (म) पीरा दोनों ।

कण्ठरुहा. (म) कुटकी ।

कण्ठवी. (म) मयूरवृक्ष ।

कण्ठानिका. (म) रोगनी ।

कठोर (म) कठिन, दृढ़, पुट,  
निर्दय, क्रूर, ससूत ।

कण्ठ (म) गन्ध, कट्टुवा, गर-  
दन ।

कण्ठच्छदिः, (वि. त्वम्) गले  
की सो हडि है लिम म ।

कण्ठश्रुतभुजलतापत्रि. ( वि.  
अपगूटम्) कुट गड है मसे  
मे हांड सता की गांठ  
जिस म ।

कण्डूय (स) कंठ ॥ घ्रात, वरज  
वान ।

कण्डोरव (स) सिंह, वनवर ।

कण्डिच म। रोषारी ।

कण्डूरा (स) कमाच ।

कण्डू कण्डू (घ) { योषा जल-  
(म) { वर, सुजनी  
{ लाज ।

कण्डूय (घ) सुजनी खाज ।

कण्डोवन (स) वृक्ष, कणिका ।

कणाद (स) वैशेषिक शास्त्र आ  
कर्ता कटिपि ।

कनम (घ) वृद्धों में से कोन ।

कनर (स) दोनों में से कोन ।

कन कति (म) { कति, कति  
{ ने, कही, कहे  
{ विष विद्ये ।

कनवार (घ) टण ।

कति (स) कितना ।

कतिनिम् (स) कितने, यव ।

कतिनम (स) कितने कुछ यव ।

कतिनकटिन्यादिहयः ( वि०

वगावी ) कुछ दिन चंभी

क ठुने योग्य ।

कनक (घ) काका, कोन ।

केवला २ निर्मली ।

कविच- (घ) रोहित ।

कय } (स) केचि विधि, क्यों  
कयम् } करि, क्योंकर ।

कयन (स) कडतल, कडन,  
वर्षन कडना ।

कयचित् (स) किसी भांति ।

कयमपि (स) किसी भांतिभी,  
कठिनाई से ।

कयवत् ( स ) कहता हुआ,  
बतलाता हुआ ।

कयनीय- (स) कहने योग्य ।

कया (स) बहरी वृक्षात्, प्रबंध,  
कल्पना, वर्णन, कहानी ।

कयित (स) वत कहा हुआ ।

कदन (स) दुःख, नाशक,  
वधिका ।

कदम्बः (स) सरसो ।

कदम्बा (स) कटकी ।

कदम्ब कदम्ब कदम्ब (स) क-  
दम्ब का वृक्ष, समूह, वृक्ष

विशेष । [ दली ।

कदम्बपुष्पिका ( स ) बड़ी भं-

कदर (घ) पयसिका कल ।

कदवाह (प) कादर भाव, का-  
दर होना ।

कदम्य (म) कदम, धूरि ।

कदसी (स) केरा, केराफल  
विशेष ।

कदतिकम् (प) केभा का कद ।

कदाचित् (स) कभी, कभी,  
कभी ।

कदा (म) कब ।

कदापि (स) कभी भी ।

कद्रु (स) नाग नाता ।

कद्रुबिन्ता (स) चमयनाम  
स्त्री, राजा काश्यप ताके

इतिहास ७ है

कन कनी कनिका

मुप, पाटा, क

कनक स) सोनाद्रव

धधुरा, धतुरे का

कनककदलीवेष्टनः, (वि

सुनहरी केशों के

हुपा ।

कनकनिकपक्षायय (वि

टामिन्या) चमकतो

नामो कसोटी पर

की लकीर ।

कनकम् (स) सोना ।

० एक कस्यान्त की कथा

है कि जो राजा काश्यप की दो

राणी बड़ी बद्रु, छोटी विन्ता,

कद्रु के पुत्र नाग हैं । विन्ता

के पुत्र गरुड़ हैं, एक दिन

राजा विन्ता के पुत्र की गोद

में लेके खेलाते थे, एक कद्रु के

पुत्र नीला पंढा था, कद्रु एक

चरित देखि के मन में अपने

खेन साई, राजा को अपनेप्री

भाव ते ऐसी अपनेप्री बड़ी कि

जो राजा उस रोज सों वि

की अपने विन्ता के तरफ

बठालिए, विन्ता ने पुत्र सने

उस रोज सों विन्ता ही

बहु काश दुःखित मानी रही

एक एक कथा कद्रु विन्ता

की नाककही की भी है,

किन्तु रामादण विदे उसकी

कथा थापु विदेय हंकाकाउ

में लिखा है वर्णन प्रयोजन

नहीं है

कनकाक्षय (स) चतुर्था ।

कनकाक्षर (स) भाषा ।

कनकभूषणकार (स) सुमेरु  
पर्वत के समान ।

कनककल्प (स) वृक्ष विशेष ।

कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकाट,

(विक्रामी) सामें का भुज-

संघ गिर कर सुनो हो गई

है बाह्य शिथिल की ।

कनकविन्दु (स) सुवर्ण की  
टिफुली ।

कनकवेली (स) सती विशेष ।

कनकलोचन (स) हिरण्मय,

देव्य विजय चवतार, पुष्पा,

शौरण्यात् ।

कनककसिपु (स) हिरण्मयकश्यप  
एक देव्य का नाम ।

कनकगीप (स) हिरण्मयकश्यप  
देव्य कश्यप चवतार ।

कनिष्ठपञ्चमूल (स) दिघरौघ १  
चकारवंध २ वनमांटा ३  
रगनी ४ हरचिह्नकार ५  
एई पांच ।

कनिष्ठ } (स) अतिचल्प, छोटा,  
कनिष्ठा }

कपू कुंटी चगुली, छोटा  
भाई ।

कल्प (स) पत्ति, पत्रप, प्यामो  
कल्पकल (स) निमेषो ।

कल्पा स प्या, नारी, पत्नी ।

कल्या स मुदहा कथही ।

कन्द (स) मूल, जड़, जड़न,

रोगविशेष, रोग्यादिरोजा ।

पोल ३ कन्द सभ ४ ।

कन्दन  $\left. \begin{array}{l} १ \\ (५) \end{array} \right\}$  लपटिंग गृहमर ।

कन्दर कन्दरा (स) वन, गुफा,  
छाद ।

कन्दर्प (स) कामदेव, पतङ्ग ।

कन्दल (स) सहार, युद्ध सयाम

कन्दला (स) कन्दरा, गुफा,  
ढोका, छोड़ ।

कन्दली (स) फूल विशेष ।

कन्दु (स) कदुवा फल, कड़ी,  
बेही । [ विशेष ।

कन्दुक (स) गेहूँ, छिनीना

कन्द कन्दर (स) कवि, गला ।

कर्मोक्ती (स) जोन, खोपीर,  
गहो ।

कन्य-कन्यक. (म) मस्तान. पुत  
दम बर्ष का ।

कन्यका-कन्या. (स) पुत्री दम  
वर्ष की, दम बर्ष तक की  
सहकी, सहकी। [नार२।

कन्या. (स) फूँटखेकसा १ टेक  
कर्ना. (स) कंद, कनिका ।

कपट. (स) दगा, धोखा,  
लज, भगक, फरेब ।

कपर्द (स) कोही ।

कपट भू. (स) माया भूमि ।

कपाट (स) किवाड़, षोट.  
हार, उपरीटा, बेवाड़ी ।

कपाश (स) मस्तक, समूर,  
कलाट, खोपरी, सिर.  
मुण्ड । [रुद्र.]

कपास (प) बाझा, कर्पास,

कपि. (स) दानर, प्रागविशेष  
के नाम लस, लसमान  
कुंदा, तासुधा रूपाभक्ति  
के पि कही पागकर्त्ता  
पदवा ककार पात्मासंज्ञा  
१, ता पात्मा को रस को  
पाग करै सो कपि, नर

वाचक, देग वाचक ।

कपिश, (ट) कपासी रंग ।

कपित्थ (म.) कैथ का हृद्य ।

कपिश (ट) दानरों का राजा ।

कपिकण्डू (म) कमाह ।

कपिकृत (न) पलास, पीपर ।

कपिञ्जल (स) श्वेतगोतिर ।

कपितन (म) पलास, पीपर

१ शिरीस हृद्य २ चमड़ा

हृद्य ३ ।

कपितैल (स) शिखारस ।

कपित्य-कपत्य (स) कैथा ।

कपित्यत्वक् (स) एतवालुक् ।

कपिनामा (स) शिखारस ।

कपिपर्याय (स) शिखारस ।

कपिविषयी (स) लास निर-  
विरी ।

कपिप्रिय (स) कैथा फल ।

कपिल्ला (स) पीतल धातु १  
रेणुका २ ।

कपिसेह (स) शिखारस ।

कपिकुंजर. (स) कपिशेट,  
दानर येठ ।

कपिधन. (स) सुग्रीव, मुकंठ,

पालिभ्राता ।

कविध्वज ( स ) यजुर्जुन पा-  
गुण, हनुमान् ।

कविन्दा ( स ) कविविशेष  
कविश्रेष्ठ, कविन्द्र ।

कविन्दरी का राजा ।

कविश ( स ) गुणि विगेष,  
जिसने साख्य शास्त्र ब-  
नाया ।

कविज्ञा, कविज्ञी, ( स ) गौ  
विशेष, धेनु पीक्षी ।

कपीश. ( स ) बानर का ईश  
बन्दर का राजा ।

कपीवल्ली ( स ) गज पीपल ।

कपीतक ( स ) दाढ़ कस्तूरी ।

कपुष ( स ) कपूत, कुपुष,  
अपुष ।

कपूर. ( प ) कपर्द, सुगन्ध द्रव्य  
विशेष । [ शिप ]

कपूरी ( स ) पान, पत्र वि-  
कपीत-कपीतक, ( स ) कपू-  
तर-पत्ती, परावत, परेवा  
पत्ती ।

कपीतपरपा ( स ) नमुका ।

कपीतवह्ना. ( स ) बरगी ।

कपीताशन ( स ) व्याधमुर्मा ।

कपीक ( स ) गाक्ष, गण्डव्यस ।

कपीकयाम- ( स ) कम्प, कांथा ।

कफ ( प ) सँझा, सँझार ।

कवन्ध ( स ) दैत्यविशेष, गीर,

महविनाशिर, वण्ड, दम्-

महस्त्रवाची, दमनचपा-

हा, वेदमै महारथो, नम-

कोटिपद्मर कर्षीपेदर, प-

तारथ गौ जूभि के शिवा

शिर को गाचे ताको सर्व

संज्ञा, दुर्वाया के शरावने

राक्षसभया चक्र इन्द्र के

माप घेव टेट हीए के

कवन्धपर रह्यो । [ गुन,

कवाक. ( स ) सद्यम, हुनर,

कवि ( स ) सामान्य कपीशर

मुक्त, बाल्मोक्ष मुख्य कपी-

श्वर, भांड, पंडित अन्य

कर्ता काव्यकर्ता ।

कविश ( स ) काव्य, कहतव्य,  
कविता ।

कविशतगुण ( स ) को पद दो





कायिक, बलात्, सोपे, कर्म-  
क इत्यादि ।

कम्बु (म) वल्लवर्ष, शङ्ख, गज,  
रट कण्ठ, मला ।

कम्बुक (म) शंखनाद ।

कम्बुकन (म) ककशा पीदा ।

कट का केला ।

कावेपीतः (स) तून्दकस्य ।

करि (व) काशी ।

(म) } दास, किरणमय्या  
कर (द) } द्वि, गजमुण्ड, टोल,  
                    } विद्य, करने पीना,  
कर्त्तावाचक, का, मामूक,  
मूढ ।

करका (म) } चकारवृत्त, पीडा ।  
                    (व) }

करका (द) पीसा ।

कातूति (द) करतव्य ।

कारोत्तर (द) वृद्ध ।

करकाभ (म) नागिन्द, वृद्ध ।

कारक (स) करजनी, गद्य ।

संगुलीकृत को ।

करक (म) साधन, कारक,

हेतु, रन्ध्रो, शरीर ।

करवी (स) कर्म, व्यवसाय,

इत्यमी ।

करवीय- (म) करवीय्य,  
साधनयोग्य ।

करतम- (स) तलकधो, रये-  
सी, दासपर । [पाङ्गत ।

करवर (स) विपदा, वृथाधि,  
करवेर- (द) विपत्ति ।

करमस्यि (दो) कान्तक ।

करतारो- (द) वाद्यकी तारी ।

करन (म) ईन्द्रिय, ज्ञान, सा-  
धन, कारण, करना ।

करनीवर (स) हाथीका समूह  
करनीया (द) करवीय, करने  
के योग्य ।

करवी (स) विपदा ।

करवाक- (म) कृष्ट, तलवार ।

करकः (म) चकार ।

करकाजसम् (स) चकार्य से  
पत्यर गिरता सो पानी ।

करवी (स) करवा ।

करवी (स) चकार ।

करकाजः (स) करन ।

करतः (स) निमंजी ।

करमञ्जिका (स) चकार ।

करमर्दः (स) }  
करमर्दिचा. (स) } करयंदा.

करवीरः (स) सुपेद कनईत ।

करहाटः (स) कमल का कंदा ।  
मयन फल ।

करप. करपा. (स) बैर, रिह,  
खैरना, घेरल, रूपा ।

करपि. (प) खैरना, खैर कर  
के रगह, करपना, कर्पणा,  
रगह ।

करार. (प) करार पक्षी विशेष  
करवध. करिनी का शिकने  
वाला । [का मुह ।

करह. (स) हाथ की चंगुनी

करारा. (स) { भयङ्कर, कठिन  
(द) { काकटिधी, नटी  
{ की लंबी तट,

कागभेद, कराल, बिनारा

कराल. (स) भयंकर, कठोर,  
राक्ष. हथ विशेष, पुष्प  
फल हीन ।

कराला. करारा. (स) काल  
देवी, कागविशेष ।

करिन्. (स) हाथी ।

करिपो. (स) इस्तिनी, इथिनी

करो. (स) हाथी, मूर्छ, पन्द्र.  
गोमरी, कमेनी कसाइन ।

करई. (द) कटु, कटुई ।

करन. करपा, (द) दया ।

करपाकरति. (स) गुण कइ  
कर के बिताप करती ।

करपावृत्ति. (वि० चत्तरात्मा)  
कामल स्वभाव वाला ।

करीरः (स) बांस का चक्र १  
करीर हथ २ ।

करील. करीला. (प) वृक्षविशेष  
पतहीन, खारदार ।

करव. करवा. (स) दया, रीद-  
न, कस्पित, लप ।

करपाकर. (स) करपा के बर-  
मने वाले ।

कप. (स) कान, पतवाकनावह,  
रवि तनय । जीव ।

ककैटा (स) कीड़ी के भीतर का

ककैटास्या. }  
ककैटमृगौ. } (स) ककरासिंहो ।  
ककैटाया. }

ककैटोद्वा (स) कपटी १ बन्दा ।

ककैथू. (स) बयर फल ।

ककैयः (स) कमलागुणी ।

कर्मोन्नी २ ।

कर्मोन्नी (स) परवर ।

कर्मोन्नी (स) भूरा कोट्टा ।

कर्मोन्नी (स) वन्दान ।

कर्मोन्नी (स) खेकसा ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) गुलाब १ सिवती

२ कर्मोन्नी के बीज के रहने

का जगह का पत्ररियो

के भीतर २ ।

कर्मोन्नी (स) कर्मोन्नी १

जगह का २ ।

कर्मोन्नी (स) निर्मलो ।

कर्मोन्नी (स) पलाश, पीपल ।

कर्मोन्नी (स) लाल धान ।

कर्मोन्नी (स) पलाश, पीपल ।

कर्मोन्नी (स) पपरोट ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।

कर्मोन्नी (स) कपूर ।





कली. (प) कलिका, कोपल,  
दरी ।

कलीक. (फ) घोड़ा, पत्त, च-  
इटा, पंक, कीचर ।

कलुष. } (ग) पाप, मल, दीप ।  
कलुष. }

कलीकर. (ग) मरीर, पत्र, टेक,  
लिख ।

कलीय. (प) दुःख क्लेश, विपद,  
पवित्रादि पांच, चंद्रमा ।

कलीक. (ग) साँझ, निहवार ।

कलीक. (स) क्लीडा, खिल, खिल  
हूट ।

कली. (स) कुपल, कपट, ज्ञान  
का दिवस, ज्ञान का दि-  
समय, कल्पवृक्ष, रचना,  
प्रसव, कल्पना, स्वर्ग का  
हूट, मनोरथ ।

कलीक. (स) कलूर । [पंत ।

कलीक. (स) ज्ञानादि धारुणिक ।

कलीक. (स) कल्पवृक्ष, स्रष्टुम ।

कलीक. (स) संबलप, तर्क,

लाकडा, कट, रचना, सि

ताम, वाहिता, समर्प,

बनावट, सपाय । [रत्नवट ।

कलीक. (स) मनोरथ,  
पुष्पवृक्ष विशेष ।

कलीक. (द) योग्य होते हैं ।

कलीक. (स) दुःखित, बगाया,  
कृतिम, चसत्य, भूठ, भूठ  
तर्क, बगाडा हुपा, रचि-  
त ।

कलीक. (स) भूठ करके, कल-  
पना, बना लेना ।

कलीक. (वि. तर्क) बना-  
या है चर्च जिस के लिये ।

कलीक. (स) पाप, मल, नरक ।

कलीक. (स) कुपल, मङ्गल,  
शुभ, मोक्ष, प्रसव, सुख,  
पुण्य ।

कलीक. (स) भाग्यवती ।

कलीक. (स) विद्रुम, प्रवाली-  
कता ।

कलीक. (स) तरङ्ग, वेग, गर्जन ।

कलीक. (स) तरङ्गिनी, की-  
राहसिनी, तरंगसमेत  
नदी ।

कलीक. (स) कुंभी, बनस ।

कलीक. (स) दफे, बकतराप







काञ्चन (स) सोना द्रव्य,  
 स्वर्ण, सुवर्ण, सोना ।  
 काञ्चनत (स) सोना ।  
 काञ्चनकः (स) साक्षधान ।  
 काञ्चनाम्बुः (स) नाग केसर ।  
 काञ्चनी (स) हरिद्रा, हलदी ।  
 काञ्ची (स) क्विहिची भूयश्च,  
 पुरी, ताम्रहो ।  
 काञ्चिकः (स) पानी, राइ  
 नील, एक सायलव उद्वा-  
 हो ।  
 काञ्ची } (स) खटाई, खडा,  
 काञ्ची: } गडा, गडि, मिरचा, ख  
 हा पानी राई का ।  
 काञ्चीबटकः (स) काञ्ची का  
 बर । [रहित ।  
 काना (स) कादर-पधीर-धैर्य-  
 काञ्ची (स) दुग्ध का पटीम ।  
 काण्डः (स) कण्ड, मकरण,  
 शिख ।  
 काण्डतिलः (स) चिरेता ।  
 काण्डेयुः (स) ताक्षकाना  
 र बतारी एक तरंग का ।

काण्डेरः (स) चौरार, माग ।  
 कातरः (स) कातर, मोहित,  
 व्याकुल, निरुत्साहि, दृष्टा  
 दुष्टा, कांहर । [रोदापन ।  
 कातरत्व (स) निरुत्साहीपन,  
 कादम्बः (स) परवा पयो,  
 पानी का घेरनेवाचा ।  
 कादम्बरी (स) गहिरा, मद्य,  
 दाह ।  
 कानः (स) स्वर्ण, यवण, साग ।  
 कानम् (स) दम, कटल, मर्मा  
 का मण । [मंकीच ।  
 कानिः (स) मर्याद, यवण,  
 कानो (स) घेर, साग, द्वेप  
 हिमा, मंकीच ।  
 कान्त (स) पुष्प कानो, सुन्दर  
 गमोहर, मोभायमान ।  
 कान्तलकः (स) तून वृक्ष ।  
 कान्तकीटः (स) कान्ता-  
 कीट ।  
 कान्तः (स) पति ।  
 कानूता (स) की, पत्नी, सुन्दरी,  
 प्यारी (विद्योग करके  
 रचित ।) विमर्श ।

कान्ताविरहशुक्ला. (वि. भाषे  
ने) को है ।

कान्तारः { (स) वन, जङ्गल,  
कांतारः { बंतारी, जङ्गल ।

कान्ति. (म) दृष्टा, गोभा,  
सुन्दर, सौन्दर्य, प्रकाश ।

कान्तिमत् (न) गोमायनाम ।

कान्तिभोदः (न) कान्ती-  
भोदा । [लोहा ।

कान्तीमारः (स) कान्ती

कान्ता. (प) सुनिके, कनिया  
को, संगीकार करके ।

कान्तकुलः (स) कनौजदेश ।

कापरः (द) दया, कपट ।

कापोतः (स) सजी पार ।

काव्यः (स) कविता, शुक, पद,  
दण्ड ।

काव्यार्धनक्षरः ४१ (स) धुनि,  
पदविष, गुण, लाति, ४ ।

(म) { कल्प्यः पमिका  
काम (प) { म, मिहि, बान,  
(फ) { गोश, मुराद, सु-

न्दर, कामना, कामदेव,  
विपद, धंसा, बादना,

४२५५ ।

कामवारी. (द) बटा जाने की  
दृष्टा हो यदा जाने की

सामर्थ्यवाना । [तप ।

कामतह (म) कामवृत्त, देव  
कामना 'मो भेदी ।

कामरुद्रवाम (म) मालुद्ध  
का वाम ।

कामाङ्ग (म) वामफल । [वाम ।

कामाद्या (म) मालुद्ध का

कामुकः (म) माधवी ।

काम्यतः (म) कमला गुठी ।

काम्यिनः (म) पतनधानु

काम्योत्री (म) वन छिद ।

कामद (म) कामनादायक,

मनोरथदाता, कामर दे-  
नेवाले ।

कामदुर्गाई (द) कामवेनु ।

कामवेनु { (म) एतनी, का  
कामदुर्गाई { अनिकमीरिगय ।

कामना (म) कामना, पमि  
गुहि, दृष्टा ।

कामनि (द) पविः रिमो एक  
की को । [कना ।

कामर (म) कामर दे

कामरिपु (स) जिय गइर ।

कामरूप (स) दृष्ट्याचारीरूप,

कामरूपर दृष्ट्यारूप धा-

वन करने वाञ्छा ।

कामागि (स) कामवृत्ति ।

कामातुर (स) कामतेव्याकुल

कामास, कामी ।

कामानुश (स) कामम, कोर ।

कामारि (स) जिय निरिग,

काम से शत्रु, महादेव ।

कामिन् (स) कामी, प्रेमी, खेडो,

कामिनी (स) रमणी, प्रेमी स्त्री,

काम के शत्रु, महादेव, सो

प्रेमवती स्त्री, चुन्दर स्त्री ।

कामो (स) कामातुर, माने

का होता । [माशक्त ।

कामुक (स) मिथ लस्यट, का

कामुकत्व (स) प्रेमीवन, का-

मीवन । [शिया ।

काय (स) काया, शरीर, देह,

कायधन (द) शरीर और

धन से । [मान ।

कादर (स) कादर, चीज, भय

भावना (स), रव ।

कामाव्यक्त (स) काकोसी रस

के प्रभाव में प्रसंग्य ।

का (फ स) काज, कार्य,

कर्मोवाचक ।

कारण (स) हेतु, व्यवस्था, प्रयो

जन, विना, निर्मित,

प्रकृति । [मानक ।

काशगर (स) वधनालय जित

काश्क (स) कर्मा, करेया, व्या

करण की मकरणविधि ।

विभक्ति की प्रथम करने

वाञ्छा ।

काशो (स) अजानीदा रमण

वैजा २ भाषा २ चतुष्टय

४ संज्ञक ३ ।

काश्कीलक (स) अजानीदा ।

काश्कील (स) अजानी ।

काश्कीली (स) अजानी ।

काश्की (द) अजानी ।

काश्की (द) काश्की ५५ भाषादि ।

काश्कीकृत (स) महत्त्वादि

के कारण ।

काशी (स) काशी ।

कादम्बिक कादम्बिक सो दया

नु, दयावान रोदनकार,  
कनैकपुष्प । [सुवर्ण ।

कार्तस्वर (न) मोगा द्रव्य  
कार्तिक (स) महीमाविजित,  
कार्तिक जित पुष्प, एक  
महीने का नाम ।

कार्पण्य (प) दक्षिणा, दीन-  
ता, कादरभाव, लपटता,  
बंझुतापन । [छद्म ।

कार्पास (म) कगस, बांगा,  
काय (म) हेतु प्रयोगन काम ।

कार्मुक (म) बकाइन ।

कार्मुक (न) घनुपे, चाप ।

कार्य (स) दुस्नापन ।

कार्यक (म) किमान, लपेट,  
इलवाहा ।

कान } (म) समय, यम, सपे  
कानः }  
पगित, पवस्या, लल्लु,  
मरप, मकरतेंद २ तेंदु ३  
पहल बनानद, नीच, का-  
का, ग्याम, नेम ।

कान्ध्यान (म) काना माप ।

काण्डम (न) मोटवा साग ।

काणिरात्रि (स) कानिका-  
देवी ।

काणकण्ड - } (म) पणीहा  
काणकण्डः } पचो, गरवैया  
पचो २ ।

काणकूटः (स) दिप, इनाइत ।  
काणकंजी (म) नील । [नाम ।  
काणस्वर (म) गिव का एक  
काकनेमि (म) पचुरविशेष,  
पूर्वगर्वध इन्द्र समा काया  
देख कै हंसने काय चो  
दुर्गमा मुनि के थाप ते  
राक्षस होय राक्षस के  
गंगा भयो, इति पुराण  
प्रसिद्ध ।

काणपीलुकः (म) मकरतेंदु ।

काणमेपिक (स) मंगीठ ।

काणमेपिका (स) पनिकर ।

काणमेपी (स) बकुषी ।

काणमेपना (स) दाप, कुहारा

काणमाकः (म) मोटवा साग ।

काणमैरदः (स) पीत चंदन ।

काणव्यानी (म) पांहर हथ १

पांहर २ ।

कासा (स) गीत १, गभीठ २

भासा रंग ३ ।

कासाकाशी (स) स्यादभीरा ।

कासानुसार्यः (स) पीत चन्दन

१, तगर २ ।

कासानुसार्यकः (स) कुरीमा १

पीत चन्दन ।

कासायसः (स) जोडा । [ हव

कासास्यासी (स) कठपांडुर

कासिड (स) इंदरयथ १ को

रेया २ ।

कासिन्दः (स) तरबूना ।

कासियकः (स) दादकल्दी ।

कासेयक (स) दादकल्दी ।

कासेया (स) यगिर ।

कासचैप (स) मगयविगाना,

तुना १ निवेद करना ।

कासक (स) लक विगय ।

कासक्या (स) तमान हव ।

कासि (स) बिलि, मय, मुजर

गति । [ हजरा ।

कासिका (स) देवी मसी, व्या

कासिन्दी (स) यमन मटी

कासिन्दीवा (स) बज्जट,

बज्जट ।

कानो (प प) देवी, कास,

श्याम, कास, कास ।

कासरति (स) समय की रात

कासीन (स) दिनी, पुराना

समय का ।

कासीय (स) मय, माग,

कासीयः (स) व्यास, पीत चन्दन ।

कासर (प) कासर, बड़गी ।

कास्यः (स) कासा उपधातु ।

कासमीर (स) बेगरि पुष्प,

देग विगय । [ र हव ।

कासमी कासिरी (स) गमा-

कासमीरः (स) पुष्करमूल १,

बेसर या काफरान २ ।

कासी (स) देग, पुष्पविगय ।

कासगी (स) धरती, मिदिनी

कास (स) कासही ।

कासग्रीवः (स) भीवरदाता ।

कासपाटका (स) काठपांडुर

वृष ।

कासा (स) दिग, दिगा ।

कासा (स) कासा पशिलाप-

रादिग

काटालुः (म) } कन्दा का मुंछा ।  
 पटालुकः }

कासरः (म) भैंसा चतुःपद ।

काममई (न) कसौंजी ।

कासमईचलम् (स) कसौंजी

का पत्ता ।

कासमर्यः (न) गम्भार वृष ।

कामार (न) सरोवर, ताम ।

कास (स) पांसी रोग ।

कामारी (स) कसौंजी ।

कसोसः (न) कामोष ।

किं (स) प्या, सेवा, टहल,

पपवा ।

किंशुकः (म) } पन्नाशवृष टांक,  
 किंसुकः (प) } फूल ।  
 किंसुकः (प) }

किम्बित् (द) क्या । [कर. टास ।

किहूर (म) सेवक, नोकर, चा-

किहिराटः (म) } बधूर वृष ।

किहिरातः (न) }

किहिरातः (स) किहिरात ।

किहुरी (स) दासी, चारुति-

ए, टहलगी ।

किहिनि-किहुरी (स) कटि

भूषण मुंडर, कुंदरिहा,

करधनी, नेपसा ।

किश्चिन- (स) कछु, कुछ ।

किञ्चलुकः (म) समस्त के फल

के पछारियों के भीतर का

केसर ।

किश्चित्-किश्चिन् (स) पण.

घोड़ा, कुदण्ड, घोड़ासा ।

किचक (स) दांस ।

किग-किह- (प) कीन, की,

ल्लेय, घाव, क्यों नहीं ।

किटः (म) सोहे का नैस ।

किटिफूत (स) रमस ताग ।

किटिः (स) सोह, सिहान,

पत्यन् ।

किटिहो- (स) बिरबिरी ।

किटय (स) हस्तिधा, की-

किटयहः (स) धतूरा ।

किटावनः (स) नल्लि-

किटर [म] काटन, नेपसा

इवो- इवो- इवो-

इवो- इवो- इवो-

इवो- इवो- इवो-

इवो- इवो- इवो-

इवो- इवो- इवो-

इवो- इवो- इवो-

हे जो स्वर्ग में माने हैं :

किमपि ( स ) कुछ भी, कुछ

- सोहा सा । [ विधि :

किम किमि [ यो कोसे, कोन

किमिद [ ट ] क्योंकर पावे ।

किमुनर [ स ] फिर क्या कर-

ना है । -

किम्ब [ स ] क्या प्रयत्न ।

किमुक्त [ स ] पलाय, डोका ।

किरच [ ट ] कथिचा, टुकड़ा.

[ स ] देवदास्य ।

किरगु [ स ] रश्मि, सूर्य का

तैल । [ धार :

किरवान [ स ] लपक, गल

किरात [ स ] व्याधाकाति,

भिन्न, निम्न ।

किरात [ स ] चरेता ।

किरातक [ स ] चरेता ।

किरातिनी [ स ] भिक्षुनी

किरातिन [ स ] भिक्षुनी

किरकिरा [ स ] रोड़ी, कड़वा

किरिच [ ट ] चण्ड टुकरा ।

किरीट [ स ] मटुक, पीतम

सुवट, ताप ।

किरीटी [ स ] लण, पञ्जुन,

मटुकधारी । [ दृढ़ ।

किम [ स ] निचव, नियत,

किमक [ स ] हँसो, चटव, च-

मक, कदाचित ।

किमिः [ स ] देवदारी ।

किमकिमा ( न ) मानरी की

किमाइट हँसी ।

किमिच [ स ] पाप, मल ।

किमु [ स ] पचांतर सेविन ।

किमवय [ स ] कोमलपत्र, दुद

दकी, पुट, कोपक, नवी-

नवता, नरनवता ।

किमुक्त [ स ] पचायकच, डोका

किमु ( ट ) किच का ।

किरीट [ स ] वयसविशेष, वा-

लकमप्रा, बाल घोर युवा

पनस्या का कीच, लहवा ।

किमि [ स ] पुरी निमेष ।

किमान ( स ) खेतिहर, गृहस्थ,

कीतदार ।

कीच [ ट ] चटटा ।

कीचक ( ट ) बोका बाम ।

कीट (म) कीड़ा, कटुपविशेष ।

भूमि, नीच, गुट ।

कीट-तोषर-धीर-धीर-नि

कुपाड (द) कुपा सगाभार ।

इति जगति विमेष ।

कुकर (म) कुपा ।

कीट-कीर-नि [स] तोता-पत्नी,

कुंर (प) राजकुमार,

गुरु, गुण, गुदा ।

राजपुत्र ।

कीर-नि [म] कन, कीर्ति ।

कुकाठ (प) कुर रत्नादि

कीर-नि [म] कन, कीर्ति ।

काठ काठी कूटा कीट

कीर्तन [म] योगदान, कुरज

ई पुट, कुर या काठ का

कीर्तन [म] योगदान, कुरज

मनेपरपक्ष की कुरति गदि

कीर्तन [म] योगदान, कुरज

नंदिन करि का राज की

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कुट माहते ई या विध्वंस

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कीट ।

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कुकाठ (प) कुर रत्नादि

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

काठ काठी कूटा कीट

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कीट ।

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कुकाठ (प) कुर रत्नादि

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

काठ काठी कूटा कीट

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कीट ।

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कुकाठ (प) कुर रत्नादि

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

काठ काठी कूटा कीट

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कीट ।

कीर्ति (प) कन, कुरति, कीरत.

कुकाठ (प) कुर रत्नादि



द्रव्य विधेय २. मेसर या  
काफिरान ।

कुटुम्बा (स) गुम्मात या चबीर  
रखने का पात्र जो रङ्ग  
भाग सभा में फैलत है ।

कुच (स) स्नाग, लाती, धन ।

कुचन्दनः (स) पतंग ।

कुचिर (प) चशुभ पातों, च  
सुद कथा ।

कुचित (स) टेढ़ा ।

कुज (स) मङ्गल, चम्ब, हुम  
नाम, भीमासुर ।

कुमन्त. (स) मनेयरी मूर्ति,  
मनि घड़ । [पुष्पीला ।

कुजा (स) मङ्गला, देवी,

कुण्डीती (स) निमयी, रुंधारी ।

कुचिन्दाः (स) मिथी ।

कुची (स) मगरैला ।

कुञ्चित (प) केशवक्र, कोच  
आया, कुसुमार, कुसुमारि,  
टेढ़ा ।

कुजोगी कुयोगी (द. स) विषयी ।

कुम्भ { (प) कुम्भवाच, निकुं-  
(म) मण्डवा, गोमा, कु-  
(स) रचवाचो, कसौच  
हय समूह ।

कुम्भार, कुम्भार. (स) हाथी, गज ।

कुम्भनिवा. (स) दो तरह की  
राई ।

कुम्भरा (स) धावा हय ।

कुम्भरासनः (स) पीवर ।

कुट (स) पर्वत शिखर, नि-  
हाय लोह ताहन ।

कुटसः (स) कोरेपा ।

कुटलबीजः (स) इन्द्रयव ।

कुटलवा. [स] सोनपत्ता ।

कुटलवटः [स] केवटी, मोघा ।

कुटिल-कुटिलः [प स] गल, कपटी  
मट, भौं, टेढ़ा २ तगर ।

कुटुम्ब [स] परीवार, घर के  
सोग ।

कुटी कुटीर [प] भवन, स्ना-  
न, भावको, २ झुल्ला ।

कुटीरः [स] शामपर्वरो ६  
तूनयुव ।

कुठरा [स] कुचरायो, टांगी,  
परशु, फरवा ।

कुठारी [प] कुचरिया, ग-  
देया, टांगी ।

कुठाव [ ? ] कुरी घुमड़ ।

कुठाहरः ]

[ सुन्द.

कुठाहरः [प] नीनजगद, नष्ट  
लगद ।

कुत्तितशान्मसी [म] ग्रीमर  
का भेद ।

कुठिनः कण्ठितः [स] धारहीन,  
सज्जित, भोग्य, दानसी ।

कुघः [स] प्रातस्माग धारोप-  
रूप, पीडित । [बुद्धि ।

कुण्डलनीः [म] जसैया ।

कुटावः [म] कुगति मे कलित

कुण्डलनीः [स] लिखी, जि  
नी । [नीय ।

कुटालः [म] कचगार ।

कुण्डलीः [स] गुरिष, या नि

कुट्टि [स] नीबट्टि, पाप-  
दंष्ट, खांटोगिगाह ।

कुण्डोः [द] नीचे कीं टोपी, रप  
वस्त ।

कुधरः [स] पर्वत, गिरी  
पराह ।

कुतः [स] [पय्य] कहांते,  
विधर में, बासी ।

कुधान्यः [स] बीनी वस्त ।  
कुधान कुधान् [द] नटव  
सीहा ।

कुतरत्वः [म] [पय्य] वहां-  
विधे, कहांपर ।

कुमटीः [स] धनिनी ।

कुतर्कः [स] कुतरक नीबनि-  
चार, गुरीतर्क ।

कुनटी [म] नयनमिल ।

कुतूहलः [म] कीतुक, परिहा-  
स, खिल, पापयं, विविध,  
सुन्दर ।

कुनाचरः [म] यथाता

[स] } वस्त, व  
कुत्त-[द] } तप, कवा  
} भासाकु

कुवचित् (स) कवहिं, कदरी ।  
कुवः [स] कहां ।

कुत्तर-कुत्तर [स]

कुत्ताः [स] निद्रा, पवसा,  
अपमान । [नीव ।

कुत्त-कुत्त [स] ग्रीम  
पान्तिगमान,

कुन्द, कुन्द [स] ग्रीम  
नद, कुन्द, फूल

कुत्त [स] निद्रा, महीन,



पचा, छंटी, फूल, फल ।

यतीक्ष्णः (स) । धरी ।

दीक्षः (स) ।

दिक्षाः (स) । कायकक्षः ।

(स) घट, हंजगं ।

यतीक्ष्णः (स) । नक्षत्र, वंद

कुम्भारः (स) निमिषर विमेष

रक्षार, रक्षार नक्षत्र ।

कुम्भारः (स) कुम्भारः कुम्भार

कुम्भारः (स) पगला, नक्षत्र ।

कुम्भारः (स) बलकुम्भी ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

कुम्भारः (स) कायकक्षः ।

रंग का । [कटमरैपा ।

कुम्भारः [स] पीछा फूल का

कुम्भारः [स] बायकक्ष ।

कुम्भारः [स] कटांकुत प्रची ।

कुम्भारः [स] काय फूल का

कटमरैपा ।

कुम्भारः [स] । सोया ।

कुम्भारः [स] ।

कुम्भारः [स] । खेमकरपी पची

कुम्भारः [स] । प्रविष्टी, मंग

नाम पयिमख्यात मसिह ।

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कुम्भारः [स] पग फल, सोया

कृष्णदिन, समुद्र, साधना ।

कृष्ण (प) सदिशुष ।

कृष्ण (प) गन्धर्विरोधा ।

कृष्ण (प) कपटी वा - जोट-  
ना ।

कृष्ण (म) कृष्ण ।

कृष्ण (न) भोजनार्थी, नीच  
मन, तुलसी वरणादा ।

कृष्ण (न) वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्णद्विती, गट  
कृष्णद्विती, गट भोजन ।

कृष्ण (न) गन्धर्व ।

कृष्ण (न) वरणादा ।

कृष्ण (न) विष्णु भगवद् रूपः ।

कृष्ण (न) कृष्ण वरणादा ।

कृष्ण (न) वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्णद्विती, गट  
वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्णद्विती, गट  
वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्णद्विती, गट  
वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्णद्विती, गट  
वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्णद्विती, गट  
वरणादा ।

गन्धर्वदि ।

कृष्ण (म) कृष्ण, समुद्र,  
वरणादा ।

कृष्ण (न) विष्णु विष्णु, वरणादा ।

कृष्ण (न) विष्णु, वरणादा ।

कृष्ण (न) विष्णु, वरणादा ।

कृष्ण (न) विष्णु, वरणादा ।

कृष्ण (न) विष्णु, वरणादा ।

कृष्ण (न) विष्णु, वरणादा ।

कृष्ण (न) विष्णु, वरणादा ।

कृष्ण (न) वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्ण, वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्ण, वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्ण, वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्ण, वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्ण, वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्ण, वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्ण, वरणादा ।

कृष्ण (न) कृष्ण, वरणादा ।



कुहो ५, कुषाणः } (१) कोटिह।  
कुम्हू ५, } (२) कुषाणः -

वर्द्धमानसुमनो- (म) श्रीसर'बा  
श्रीदुर्गादेविनाम . १०८

सुप्रसन्नवती (स) श्रीः सुप्रसन्नवती ।

कृष्णस्यः (निकटं) मन्त्रः

कृष्ण एड. (मं) बौद्ध हट ।

क. र. म. (मौ. भा. वि. १७) १२११

कट (घ) बट ।

वर्षा ऋषिः कः । इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

वाटुगैरु(सु) समनस्य ।

भारत सरकार के अधीन

कृष्ण (ग) वृक्षः । - ५

विष्णुः कथं च । विष्णुः कथं च ।

कष्टमोक्षः (६५) पौष्पकसंज्ञः ।

॥ १ ॥

ਸੰਸਦੀ ਵਿੱਚੋਂ ਜੇਕਰ ਕੋਈ

५३५ (५) अन्तर्गत प्रमाण

संख्या (४०) का प्रयोग है।

के. ए. ए. ए. ए.

शुभर (२१) राजकुमार ।

कपड़ी (द) सोरा कीटी.  
(प)

कुशला (२) शब्द करमा गुणमा ।

पौ. भद्र बीटों का पत्र।

ਯਾਗਦਿ (੪) ਯਾਗਨੰ ੬, ਯਾਗਨੰ ੬

महेश्वर उवाच ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

कृष्णम् ।

(四) 2 1715

पुष्प (५) पशुओं का बीज

यू. (६) } मिथ्या, बादा,  
(७) } महात्मा, श्री १००

(म) } ६६०

ਸਿੰਧੀਆ ਸਾਹ. ਮਤੀਰ. ਅਪ.

मा.ट. (ब) } मिनिस्त्रकारि बजुत

टी. डेवारी - - - - -

स्यज्ञ, पञ्चमं तं द्विचर, यज्ञि

ਸਰਕਾਰ (ਸ) ਕੀਤਾ, ਜਿਸਨੇ।

ਦੇਵ, ਜਰ, ਅਛਟ, ਦੇਵਤਾ।

कर्म (२) संवत् २०७३-७४

पराङ्मुखी-पराङ्मुखी, निराङ्क

पुनः (३): अत्र चोक्तं - "अत्र चोक्तं"

कृतस्य (स) सर्वदा युक्त प्रकार

कोटः अष्टादशसहस्रम् ।

मं नितां, विर मिदिवा

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

परमात्मा ।

[illegible]

कृतम्: (१) चरित्रम् .

॥ श्री गणेशाय नमः ॥







कृष्णा. (म) पीपर १ पपरिषा. केतकी. (म) पृथ्वि विज्ञेय ।

सप्त २ नेवती फूल ३ केतकाधानदेतोः, (वि० कल्प)

स्वावलीरा ४ गम्भार ५ । केतकी के गर्म का हैतु ।

कृष्णकणा. (म) मित्रिष भीषण ; केतु. (म) बाहन, ध्वजा, पट

कृष्णता. (म) गुंता, काकविष्टी. भेद. पताका, भादी यह

कृष्णसार, (म) हरसायय चर्चात्. विज्ञेय ।

काशाहरिद ।

केतुपदवत्तमः (म) वेदुर्यंगपि ।

कृष्णा. कृमना, ( म. द ) कषु केतुताया ( स ) पुच्छकतारा,

पीरनि, केव, कारी, वसु धूमकेतु ।

देव के पुत्र काना, रंग । केर. (स) या, सम्बन्धकारण

कृत्त, (म) बनायाहुषा, मना का विद्व ।

हृष ।

केदारधान्यः (म) बिपारी की धान ।

कृत्तकृद्देः, (वि पुपुः पददा

नरिनैः) टूट्टो के बनाय

हृष ।

केमुकः (म) केवपाभाग ।

के, कोन ।

केज. केमि ( म ) केन कीड़ा बिदार ।

केटे. कका. (म) मटूरका मन्द,

केन्द्र (म) हतका, मध्यभाग, मरकटा ।

केटा (३) कीर की लूक ।

केतवद. (म) व्यवहार, क्रिया

मन्द का बहुवचन,

यकादि. भीति, भास ।

केनि. केसी. (म) { कोड़ा, दि-  
का, खेन,  
घर ।

केकी. (म) कोरपली, मटूर ।

केवट. (म) मसाह. मटूर, के-  
वनी ।

केचित्. (म) कोन से के, कोर

कोर ।

केवल. ( स ) मात्र, एकेनविं,

केतक (म) केतकी ।

पुङ्गव, मित्रिष, पुष्प, पृथ

क्रीडी, टीन ।

क्रीडा (म) दंडाभू मेहरवागी  
क्रीडा (म) गामा चत म  
क्रीडा (म) कोन ।

क्रीडा (म) कोडा, कोट, काण्ड,  
क्रीडा ।

क्रीडा (म) दानो राई ।

क्रीडा (म) दानिर्गम रजमणी

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा (म) द्यमिर्गम ।

क्रीडा कापीतः (म) मेम वतुः  
पद ।

क्रीडा (म) द्याह वनर  
क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

क्रीडा (म) द्याह वनर ।

कौरवी (म) कीची ।

कौरात (म) बिरैता ।

कौमाज (म) चव्यंत, विमेष,  
नामपदाइ ।

कौवर (म) मलाइ, बोई ।

कौवर्त (म) मलाइ, भीक्षर ।

कौवर्धिसुम्ता (म) चवटी  
गोपा ।

कौर (स) कोई ।

कौवन्त (स) सुक्ति, कन्याइ,  
कोघ, सुप्रमासि-कन्या मरण  
से रदित होना ।

कोइ (म) चकनाचली, जाल  
सेइ कमल ।

कोइगद (म) जाल, जगत ।

कोना (म) चकईपली, चक  
वा बो मीठी ।

कोका (स) चकना-चवई ए  
दुभो पली, दो पुरय  
याचक, का, कोकाचक,  
कगल, कंटिया ।

कोकिर (स) कोईन पली,  
दिश ।

कोविदा (म) कोईन-पली ।

कोविभाच (स) तान-  
मयाता ।

कोकी (म) नूर्मनुषी पुष,  
चवई ।

कोकू (स) लघु कनस ।

कोर (द) कोखा, जरायु,  
पेट ।

कोइ (द) गोदी, कोर ।

कोले (द) चंचल, गोदी ।

कोट (म) दिका, घेरा, गढ़,  
दुर्ग ।

कोठर (प) कोठरा पृथ का,  
चूच की खोहर ।

कोठर (द) कोठरा ।  
(म) करीइ संख्यावाः

कोटि (म) चक, घुंघुंर, पूष  
पष धनुष का होर ।

कोटो (स) धनुष की गोमा,  
पगुभाग, करीइ पष,  
धनुष का होर ।

कोठार (प) कुल्लारी, टांगी ।

कोरप (म) हधिर, लोह ।

कोतन (फ) खाली घोड़ा,  
(प) बहतात ।

कोद (स) कोघा, कुलित ।  
(प) कोघा, कुलित ।

कुली, अथवा अक्षरानाम ।	केशरीकुमुद (स) माता पिता
केश (स) बाल, रोम, मात ।	कोई' वा ।
केशनामकः (स) सुमन्यवान् ।	केशरी (स) सिंह, गुरुराज,
केशवर्षी (स) जात निचिरी ।	केशरी, हनुमानजीका पिता ।
केशवाम (स) बालों का पूरा ।	केश [स] कोई, कथित ।
केशमुष्टोः (स) बलाहन ।	कौकयी [स] राजा मेघ की पुत्री
केशरध्वजः (स) } भैरवराज ।	कज्जोरवासी यम राजा
केशराजः	दसरथ को मरु की ।
केशवल्ली (स) समी हंस ।	कैरभ- 'ग' देवविशेष ।
केशर(स)हसविशेष, धनुष, फल	कौव [स] कपट, कल, माया ।
का कपी ।	कौवय [स] राक्षस, देव विशेष ।
केशरि. (स) पृथ्विविशेष ।	कौटिल्य (स) काय कल ।
केशरी (स) नाम बालर हनु	कौववादिनी (स) 'दूती,
मान के पिता, सिंह ।	ठगिनी ।
केशरीगन्ध. (स) हनुमान,	कौश' (स) मुण्डाक्षर, मुद्रिषा,
बजाद ।	नागरी यक्षर ।
केशव (स) विष्णु, कृष्ण ।	कौद [स] बन्धमान्, बन्ध ।
केशिनी (स) राजा सगर की	कौववन्द [स] कुँई के सिद्धे
ज्येष्ठा स्त्री ।	बन्धमा ।
केशी (स) भाविष्ठा र जगत्वरर,	कौदारजसम् [स] विप्रांती का
मेघरः (स) नागकेशर या ना	पानी ।
मेघर ।	कौवर्ती [स] भेंट ।
केशरी (स) सिंह, माता पिता,	कौवर्षी फलः [स] बेरो ।
केशरी, हनुमान के पिता ।	कौव (स) श्वेतकुमुदिन ।
	कौवडः (स) भेंट ।

कैरवी (म) जधी ।

कैरात (स) बिरेता ।

कैराज (म) पव्वंत, विजैय,  
नामपदाइ ।

कैरा (म) गलाइ, बीरे ।

कैरा (म) गलाइ, भीर ।

कैरासिमुन्ना (स) कपटी  
मीघा ।

कैरा (स) बीरे ।

कैरा (स) मुनि, कन्या, कोघ,  
कुछमागि-तमा मरप के रहित होना ।

कोघ (म) लक्ष्मावली, मान  
मेरु कनका ।

कोकाइ (म) कान, पगता ।

कोका (म) पकड़वली, घर  
वा बी मीरी ।

कोका (स) पकड़ा-पकड़े प  
हुनो पकड़ी, को पुरुष  
दाइय, का, लीदाइय,  
कमल कोटिया ।

कोकिरा (म) बीरेन पलो,  
दिल ।

कोकिरा (म) कोरे प पला ।

कोकिराघः (स) तान-  
मथागा ।

कोकी (म) नूर्नुनी पुण,  
बजरे ।

कोकु मेलसु कनका ।

कोपा (द) बीचा, जरायु,  
पेट ।

कोइ (द) गांदी, कोर ।

कोले (द) चंवन, गोदी ।

कोट (म) किरा, घेरा, गढ़,  
दुर्ग ।

कोठर (प) कोठरा वृष का,  
वृष की खोहर ।

कोठर (द) कोठरा ।

(म) करीह संख्यावा-  
कोटि (म) बब, घुंघुं, पूष  
पक्ष धनुष का होर ।

कोटी (म) धनुष की गोमा,  
धनुषाग, करीह पक्ष,  
धनुष का होर ।

कोठार (प) कुल्लारी, टांगी ।

कोरप (द) रधिर, सोह ।

कातल (प) खाली घोड़ा,  
(प) दातात ।

कोद (म) मोपा, कुलित ।

प्राणी, ममय चक्षुःमातमान ।  
 केग (स) दास, रोम, माग ।  
 केगमासकः (स) सुमन्त्रवान् ।  
 केगवर्णी (स) जास निचिरी ।  
 केगवाग (स) बाजों का छरा ।  
 केगमुष्टी (स) बलादन ।  
 केगवृक्षः (स) } भेगराज ।  
 केगराजः }  
 केगवन्ती (स) समी हस ।  
 केगर (स) वृक्षविशेष, बकुल, फल  
 का रूपा ।  
 केगरि (स) पुष्पविशेष ।  
 केगरी (स) नाम धानर दनु  
 माग के पिता, सिंह ।  
 केगरीनन्द (स) दनुमान,  
 वज्राद्र ।  
 केगव (स) विष्णु, कृष्ण ।  
 केगिनी (स) राजा मगर की  
 प्येठा स्त्री ।  
 केग्री (स) माचिचा १ गंगावरर,  
 केमरः (स) नागकेसर या ना  
 गसर ।  
 केसरी (स) सिंह, माता पिता,  
 केसरी, दनुमान के पिता ।

केसरीकमुद्र (स) माता पिता  
 कीर्ति का ।  
 केसरी (स) सिंह, गुगराज,  
 केसरी, दनुमानजीका पिता ।  
 केर [ट] कीर्ति, कश्चित ।  
 केरय [न] राजा केर की पुत्री  
 कश्मीरवासी यह राजा  
 दसरथ को मद्य स्त्री ।  
 केरभ म देवविशेष ।  
 केरव [म] कपट, कल, माया ।  
 केरय [म] राधा, देग विशेष ।  
 केरट्य (स) काय फल ।  
 केरववादिनी (स) दूती,  
 ठगिनी ।  
 केय (स) सुखाक्षर, सुविधा,  
 नागरी यक्षर ।  
 केड [फ] बन्धमान्, वन्ध ।  
 केरवचन्द्र [म] कुंई के सिंघे  
 चन्द्रमा ।  
 केदारभक्षम् [स] विषादी का  
 पानी ।  
 केवर्ती [स] भेंट ।  
 केवर्ती फलः [स] बेरो ।  
 केरव (स) खेतकुमुदिन ।  
 केरवह. (स) भेंट ।

कौशिकी (स) गौरी ।

कौशिक (स) बिरता ।

कौशिक (स) पर्वत, विष्णु,  
नामपदाङ्ग ।

कौशिक (स) गंगा, योई ।

कौशिक (स) गंगा, भीमर ।

कौशिकीमुखा (स) दम्पती  
गोपा ।

कौशिक (स) कीर्ति ।

कौशिक (स) मुक्ति, कल्याण,  
कोष, कृष्णमार्ग, कृष्ण नरप  
से रचित होना ।

कौशिक (स) चक्रवाधनी, शान्त  
मेद कमल ।

कौशिकदः (स) काल, कमल ।

कौशिक (स) चक्रवाधनी, चक्र  
वा की मेरी ।

कौशिक (स) चक्रवा-चक्रं ए  
दुनो पक्षो, की पुरुष  
वाचक, का, कीवाचक,  
काल, कटिवा ।

कौशिक (स) कौशिक पक्षो,  
पिण ।

कौशिकी (स) कौशिक-पक्षो ।

कौशिकी (स) तान-  
मयागा ।

कौशिकी (स) नृसिंहा पुत्र,  
चक्र ।

कौशिकी (स) कर्म ।

कौशिक (स) कौशिक, नारायण,  
पेट ।

कौशिक (स) गोदी, कौर ।

कौशिक (स) चक्र, गोदी ।

कौशिक (स) किरा, चिरा, गढ़,  
दुर्ग ।

कौशिक (स) कौशिक वृक्ष का,  
वृक्ष की खोहर ।

कौशिक (स) कौशिक ।

(स) करीब संख्यावा-  
कौशिक (स) चक्र, चक्र, पूष-  
पक्ष धनुष का होर ।

कौशिकी (स) धनुष की गोमा,  
पक्षभाग, करीब पक्ष,  
धनुष का होर ।

कौशिक (स) काल, टांगी ।

कौशिक (स) कथित, लोह ।

कौशिक (स) खाली घोड़ा,  
(प) बहता ।

कौशिक (स) गोमा, कुष्ठित ।  
(प) गोमा, कुष्ठित ।



पेगनी, भगवत्पदेसातमा ।	पेगनीकमुद् (स) माता पिता
पेग (स) भाग, वीम, भाग ।	कोई' था ।
पेगनागः (स) सुगन्धवान् ।	पेगरी (स) सिंह, सुगरात्र,
पेगवर्णी (स) जात निचिरी ।	पेगरी, दमुमानगीथा पिता ।
पेगवाय (स) बाकी का दण ।	पेग [४] कोई, कथित ।
पेगमुद्रो (स) वसाइन ।	पेगवर्णी [५] राजा पेग की पुत्री
पेगवर्णः (स) } भैरव ।	पेगवर्णी [६] राजा पेग की पुत्री
पेगवर्णः	दसराज की मन्त्री ।
पेगवर्णी (स) सती कथ ।	पेगवर्णी [७] देवविशेष ।
पेगवर्णी (स) वलविशेष, वल्ल, फल	पेगवर्णी [८] कापट, जल, माया ।
का दण ।	पेगवर्णी [९] राजा, पेग विशेष ।
पेगवर्णी (स) पृथिवीविशेष ।	पेगवर्णी (स) काय फल ।
पेगरी (स) नाम भागवत् दण	पेगवर्णी (स) दूती,
भाग के पिता, सिंह ।	ठमिनी ।
पेगरी (स) वल्ल, फल	पेगवर्णी (स) मुण्डा, चर, मुद्रिप,।
का दण ।	नागरी चर ।
पेगरी (स) वल्ल, फल ।	पेग [१०] वल्ल, वल्ल ।
पेगरी (स) राजा मगर की	पेगवर्णी [११] कोई के सिद्धि
पेगरी (स) ।	पेगवर्णी ।
पेगरी (स) माता पिता ।	पेगवर्णी [१२] विपरीत का
पेगरी (स) ।	पेगरी ।
पेगरी (स) माता पिता ।	पेगवर्णी [१३] भेट ।
पेगरी (स) ।	पेगवर्णी [१४] पेगरी ।
पेगरी (स) माता पिता ।	पेगवर्णी [१५] पेगरी ।
पेगरी (स) ।	पेगवर्णी [१६] पेगरी ।
पेगरी (स) माता पिता ।	पेगवर्णी [१७] पेगरी ।
पेगरी (स) ।	पेगवर्णी [१८] पेगरी ।
पेगरी (स) माता पिता ।	पेगवर्णी [१९] पेगरी ।
पेगरी (स) ।	पेगवर्णी [२०] पेगरी ।

कैरवी (म) मेची ।

केरात (म) बिरेता ।

केनाग (म) पर्वत, दिनेप,  
नामपराङ् ।

कैवर (म) मलाह, कोरे ।

केवर्त (म) मलाह, धीवर ।

कैवर्तीमुक्तः (स) इजटी  
गोघा ।

कौर स कोर ।

कैरव्य (स) मुक्ति, कल्याण,  
लोच, सुप्रसासि-क्या मरण  
से रक्षित होना ।

कोक (म) चकवापछी, शान्त  
मेरु कमल ।

कोकनदः (म) काल, कगत ।

कोका (म) चकईपछी, चक  
वा की मेरी ।

कोका (स) चकवा-चकई ए  
दुनी पचो, की पुरुष  
वाचक, का स्त्रीवाचक,  
कमल कटिया ।

कोकिन (स) दाईन पछी,  
पिच ।

कोरिया (म) कोरिच-पचो ।

कोलिभाचः (स) तान-  
मपाना ।

कोकी (म) नूर्यमुषी पुष,  
चकर ।

कोकू स-कसु कगत ।

कोर (द) कोरवा, जरायु,  
पेट ।

कोर (द) गांदी, कोर ।

कोरि (द) चंवन, गोदी ।

कोट (म) पिता, घेरा, गढ़,  
दुर्ग ।

कोठर (प) कोठरा घृष का,  
घृष की खोहर ।

कोठर (द) कोठरा ।

(म) करीह संख्यावा-  
कोटि (म) चक, घुंघुंर, पूष  
पच धनुष का छोर ।

कोटी (स) धनुष की गोमा,  
चगुभाग, करीह पच,  
धनुष का छोर ।

कोठार (प) कुल्हारी, टांगी ।

कोरप (म) रधिर, सोह ।

कोतन (फ) खाली घोड़ा,  
(प) बरतात ।

कोप (स) गोघा, कुलित ।  
(प) गोघा, कुलित ।

कोथ (२) कडा, कडापर ।

कोथी (३) झोला, संकोच ।

कोदंड (४) धनुष, चाप,  
कामग ।

कोदक (५) कड़का, कालक ।

कोदक (६) को दो चक्र,  
कोदक (७) विग्रह । [मुद्राद

कोप (८) कोप, राग तामस,  
[ काम्य पक्षी ।

कोपर (९) कोप विग्रह,  
[ चारी विग्रह ।

कोपवधार (१०) कोपवधार,  
कोपवधार (११) को भी, को  
निधय ।

कोपो (१२) कोपी, तामसी,  
रागी, कोप ।

कोविद (१३) पण्डित, गृही,  
बुद्धिमान-चतुर ।

कोमल (१४) कामल, जलज ।

कोमल (१५) कमल, पक्षी,  
सुकुमोर, मृदु नम,  
माला । [वही ।

कोमलकला (१६) कला

कोमला (१७) मिंदुरिभा ।

कोम-कोमल (१८) कोना, गो  
कोमे (१९) गा, पाप

का कोमल, पाप का संग  
कोमल टिका ।

कोर (२०) कोरगा, पक्ष ।  
(२१) कोरगा, पक्ष ।

कोरि (२२) कोर करके, कोर  
ना, सुरचना ।

कोरही (२३) कोरहा रक्षा  
यरी ।

कोरदुःख (२४) कोरदुःख ।

कोरी (२५) कोरी, कोरी २०  
[२६] संख्यावाचक,

कोरहा नाति विग्रह ।

कोर (२७) कोर, कोर, गो  
[२८] को, पहाड़िया,

कोरव विग्रह औरकल, मृदु

कोरकम् (२९) कोरक ।

कोरकलो (३०) कोरकलो ।

कोरकलुचम् (३१) कोरकल ।

कोलागिमको (३२) कोलागिमको ।

कोला (३३) कोला, कोदी,  
(३४) कोला, कोदी,

२ कोपर ।

कोलादस (३५) कोला, कोला,

कष्टमत्त. गुप्तगारे, चिप्ता-

रट, दडा मद्ध ।

कोशी. (प) गली, छेडा ।

कोविद- (ट) पंडित, बुद्धिमान,  
चतुर । (ख) तानह ।

कोश- (स) चवतम्ब, पाशित

कोशकारः (स) स्याह पीर

की बेतारी । (मांस) ।

कोशवतम् (स) मंजुदि का

कोशफलः (म) कंकोल ।

कोशव्यः (म) मंजु, चोषा,

कोड़ी, सितुडा पादि ।

कोशामः (म) कोटा चाम ।

कोशल- कोशना, कोशलपुरी (म)

देश विशेष, चयोध्या पुरी.

एक देश का नाम ।

कोशसेग (स) चयोध्या के राजा ।

कोष- (स) } भराहार, चमि-  
(प) } धान, घर,

गासा. कमल का मध्य,

खजाना ।

कोड- (प) } कोष, कोष,  
(फ) } यक्षित ।

कोडवर (ट) कोतुक घर

ध्याह का । [कोशना ।

कोशप- (प) कल्पना, कठमा,

कोडी- (फ) } पचाहियः,  
(प) } कोधी, कोपी.

को- (स) पृथिवी में, भूमिगत ।

कोटः (स) } कोरेपा  
कोटनः }

कोलप- (स) राघव, निशाचर ।

कोतुक- (स) कोशा, मायावरो,

कुतूहल, खेल, पाचयै,

चचभा तपाजुष ।

कोतुकन- (स) परिहास, त

मागा, चमावास, चचभा

नई बात जानने की इच्छा ।

कोत्ती (स) रेमुका ।

कोप्यः (स) कुंपा का पानी ।

कोप्यनसन् (स) कुंपा का पानी ।

कोमुदी- (स) चन्द्रिका,

चान्दनी ।

कोमोदिका- (स) गदा चायुध ।

कोरव, (स) कुरु की सन्तान ।

कोल- (म) } वानमार्गी.  
[फ] } विम्वारुचाती,

चचन, करार पायंडी ।

ਫੀਲੀਪ [੪] ਵੁਰੀ ੧੯੯੧

योगल- [स] द्वाविशेष, मनीष,  
चमता ।

लोगक: [४] छीटा चाम ।

योगिनः [५] गुण, क, इन्द्र,  
सप्तः विष्णुमित्र, सुनि ।

कोशुभ-[स] मणिविशेष, समु-  
द्ररत्ने, विष्णु भगवत् ।

मन्त्रार्थः, मन्त्रार्थः ( अ । मन्त्र-  
कीर्तय ।

कंकन [२] घरी

संक्षेप [म] कड़ी, ककना ।

वैश्वदेव [५] भा. ५५ यमज ।

कण्ठाभ [रा] कण्ठ के तुल्य ।

कांश. [स] कमल पादि की  
जड़, मिश्र गन्ध ।

संज्ञा (पदात्तः) (म) वादनी ३  
समाप्तः ।

सङ्गः (स) यज्ञ, याज्ञ, पुत्र ।

अथ नमः [५] चण्ड ।

काव्य. (स) चगर ।

உத-உத மதத [ம] உதாய்.

• उदकाः ६ अरुणं वासाः ।

कृपाशी, सु, तारा ।

कृषायत्तन [न] कृषा ३५५

दृगसि- [न] धृपः के पात्र ।

कम्यत् कम्यत् (म) राजपं,  
यस्यप ।

क्रतुः (स, एकस, रीति, परि-  
पाटी, भांति, तरतीक,

ਚੀਫ਼।                      ਮਿਸਿਸਟਰ।

समस्या: ( म ) एषावति भाति

तामुक्तः ( ५ ) सुयत्तौ पृष्ठ १.

पगठानीर्जाप २. सुपारी

3. **तुल्य** ।

समिति [न] उदयना । [इत्या]

सावित्री (स) प्रकाश. श्रीमा.

सिद्धा (५) का. अ. अ. अ. अ.

ПЗВ. 1

कीहः (म) जनि. विम. वी

तक. खेन पणि स्त्री का

वाग्मिनास । शिरोराम् ।

कोडाशोनाह (वि. मा.) लेख

कृ-३ (स) ताम्रपत्र, राजग ।

ਸ਼ੁੱਧ: (੪) ਅਰੀਖ 1.

कृच्छरोपतः (ग) कश्चित् पृथक् ।

कृष्ण (स) रूख, मिहमा, अठोर

काशी मानदश, पण्टीह,

खोटा । [ खरोट फरोख्त ।  
 कथविक्रय (म) लेना, धेवना,  
 मारकभी (स) पक पुष्पो ।  
 क्रूरगन्धः (स) कन्धक ।  
 कोहः (स) विपिन, वन, संख्या  
 पाचक, हृदय, हाती ।  
 कोहकः (स) नागरनीया १  
 गोघा २ ।

कोहजः (म) } गोती ।  
 कोहनेतुकः }

कोही- (स) दाराटोकन्द ।  
 कोध- (स) तामस, राग, कोप,  
 गुल्लक ।

कोश- (म) कोश, भुनिका चार  
 सहस्र दायनाम्ने ।

कोटवित् (स) पिठान ।  
 कोटपिता- (स) दिलैपादन्द ।

कोटा { (स) मृकाल, मियार,  
 { गीदड़, रोनेवाला ।

कोख- (स) बीयाहोप, वक, १  
 कुररी पत्तो २ ।

कोखरम्भ- (स) नाम ६ एव  
 घाटी का जिस में होखर  
 ईस पावे जाते हैं ।

क्रान्त- (स) घना दूधा ।

क्रान्त दस्ताः ( वि-वे श्याः )  
 न के हैं दाघ ।

क्रिष्ट- (म) दुःखित, दोन, त्रि-  
 च, कठोर, दुःखी, मनीन

क्रिष्टकान्तेः, ( वि, रन्दीः )  
 मलीन है इ बि तिसकी ।

क्रीगकः (स) जेठोगध ।

क्रीगका (म) गोम । [ पमघे  
 क्रीव- (स) मधुसक, निर्व्यस, घ

क्रीट- ( स ) गीलापन, भोजा  
 पीद । [ विलाप ।

क्रीग ( स ) दुःख, कट पीड़ा  
 क्रीगिन, (स) दुःख देनेवाला ।

क- ( स ) कहीं, कुतः ।

कडू ( स ) कीनी ।

कडित्- ( स ) कवहिं, कहीं ।

कडू- (स) रांगकटही विषेय ।

काघ (स) काड़ाया लीगांदा

कडिता- ( स ) कटी ।

कडित- (स) घजतादूपा, भन  
 कारतादूपा ।

कंधर- (म) मिर ।

कंधरा- (स) मना ।

श्रीश्रीग [म] श्रीश्रीग ।

श्रीश्रीग [म] देवविशेष, मन्त्री, चमत् ।

श्रीश्रीग [म] छोटा चाम ।

श्रीश्रीग [म] शुभ, च दृष्ट, सम, विद्यामित्र, सुनि ।

श्रीश्रीग [म] मन्त्रविशेष, सम, दूरत, विष्णु भूषण ।

श्रीश्रीग [म] ककचा [ म ] केत-कीपुत्र ।

श्रीश्रीग [म] श्री

श्रीश्रीग [म] कडा, ककचा ।

श्रीश्रीग [म] कान ककचा ।

श्रीश्रीग [म] ककचा के पुत्र ।

श्रीश्रीग [म] ककचा यादि की कडा, केव ककचा ।

श्रीश्रीग [म] ककचा के समान ।

श्रीश्रीग [म] यज्ञ याज्ञ, पुत्र ।

श्रीश्रीग [म] यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

श्रीश्रीग [म] कृपा के यज्ञ, यज्ञ ।

दिशा, भाग १ प्रकार,  
छोपा निकाशा; राय २।

खण्डिता (स) यह नायका  
जिम का प्रीतम-दूगरी  
को के पास रहकर भोर  
घर पावे।

खण्डान्वयः (म) कछाण चर्च  
नगावै का जो कसटि के  
चर्च नगे, ता तीढिताहि  
के चर्च नगावै। [नवनी]

खदिरकः (स) पानी में की न  
खद्योत (स) भगजुगनी, जु  
गनू, कीड़ा, पटबोलना,  
जो रात में चगधता है,  
पटविजना, मुख्य।

खनि (द) खोदकरके।

खपरिपा (द) मंगवसरी।

खभार } (म) शून्यभाव भ्र-  
खभारु } मित, भ्रंश, शीव  
खेद, महा विपत्ति, कान्त,  
होम।

खभार (स) शून्य भाव, भ्रमिन्त,  
लोभ, शीव, होम।

खर (स) } गदहा, गधा, पशु,  
(क) } एक राक्षस, दूषण  
(प) } का भाई, लवा

तीक्ष्ण, घर्म, घाम, धूप,  
खरखराइट, रावण कर  
पभिभाग, कठोर।

खरबूजा (द) सासमी।

खरबूटः (स) भुईंस १  
गिहोहा २। [की।

खरत्तिक (स) लज्जीनी खेत

खरपर्णो (स) गोभी।

खरपुष्पा (स) वर्षरी।

खरगज्जरी (स) चिरचिरी।

खरगाकः (स) बभनेठी।

खरस्कन्धः (स) चिरवंगी।

खरसर्गः (स) यन्दास।

खरबृन्द (स) गधों का समूह।

खरधारा [स] तेजधार।

खरारि [स] रामचंद्र।

खरतर { (स) खरखराइट अ-  
[प] विक।

खरभर [द] होम, चतुषक।

खरगान [द] शान, तेज,  
घोष।

खरा [स] चगमोदा।

खरो [म] } गदहो, गधो, मही  
[प] } लिखै की।

खरो [द] लण।



कंध- (स) कंध, कंधा, मोटी  
 धार । [ दगममाना ।  
 कंधति (स) समुद्र कंधायमान

## ख

ख (स) इन्द्रिय, आकाश,  
 बीयर, मृत्ता, विंदो, गुन्य ।  
 खं (स) आकाश, मगध,  
 गुन्य ।

खंभभव (स) पवन, वायु ।  
 खग- (स) रवि, मशी, पवन,  
 अश्वद, विहङ्ग, पक्षी, वि-  
 द्या, आकाशगामी, तीर,  
 मूर्धादिपद, पक्षी पक्ष,  
 देव, हरि, वाण, पद,  
 अक्षर, आकाश ।

खगः (स) पक्षी सब ओर उपर  
 खग मध्य के तुल्य पक्षी  
 जानी ।

खगकट (स) भीषपक्षी ।  
 खगकेतु- } (स) गरुडपक्षी,  
 खगकेतु- } विहङ्गपक्षी ।  
 खगपति }  
 खगशठ (स) कौशा ।  
 खगडा (स) गेंडा, गेंडा, खड्ग ।

खगेग (स) गरुड, खगपति ।  
 खगोन्त (स) आकाशमंडल ।  
 खदिरः (स) खयर, जटा ।

खनना-खनी- (स) } जड़ना  
 पचित (स) } मरिषा

जड़ित या पक्षी कि  
 दुपा, जवाक, जवाक  
 पचन } (स) पक्षी विमेष, र  
 खंहरि- } रिद्ध खंहरि

मभीषापक्षी ।  
 खखरोटः (स) खड्गनिपक्षी  
 खट- (स) सुखकरना, लि  
 होना ।

खट्टा- (स) खाट, पसंग ।  
 खट्टी- खट्टी- खट्टी- (स)  
 सुखकरणी, खिरहोई  
 टिकहि, खिर रचना ।

खटिका- (स) } निषेधे ।  
 खटी- } खेती !

खटीमवरः (स) विनायक  
 पक्षी निषेधे की विवर्ण

खट्ट } (स) समवार, हरि  
 खट्ट } मार, डाल ।

खेड्डी- (स) गेंडा, बन चन्दा

खण्ड- (स) टुकड़ा, टुक, कित

दुःखिया, दुःखर, दुःखल,  
यका दुःखा, दुःखित, या-  
न, दुःखिया ।

खिचविद्युत्कलपः (वि० भवा-  
न्) यकी हे विजलीरूपी  
को लिख को ।

खिच (घ) चागल, चर्गल,  
धरम । [दिवि ।

खिला (घ) चाकिल, शून्य,  
खील-खील (ङ) रीम, कोप ।  
खीलन-खीलन (ङ) रीसात,  
कोपवरण ।

खीन-खीन (ङ) कोष, कोप,  
सुगम, निटित, वितित,  
गाम ।

खीना (घ) गट होनामा ।

खीगा (ङ) खेनी, खेगादि,  
कागां, गट हो जाना ।

खुवाह खुवार (फ) खराब,  
हरबाद, गट । [क्रोध ।

खुनक-खुनुम (प) गंसा, कोप,  
खुनली (ग-भौ, खुनुटी ।

खेमर (स) दह, पखी, विद्या ।

खेर, खोटि खदन्त को

गाधे-ताको भी-खेवर  
संघा हे-शास्त्र प्रमाण ।

खुरक- (स) खुरांगीगाधातु ।

खेटक- (स) पहेर, पञ्जविशेष ।

खेटकी- (स) बधिक, गिकारी,  
बहेसिया ।

खेत-खेच [प] जोतीभूमि,  
पस बोने का खान, रण-  
भूमि, समरभूमि ।

खेह-खेहे [स] { टीला, टीली  
खेर [ङ] } नगर की,  
पुरा, गांव पाठ घर की  
बस्ती ।

खेद- [घ] दुःख, कष्ट, मोक्ष,  
पहिताह, पीडा । [विन्द ।

खेदकरण- [स] पसेना, घात,

खेरक- [स] धूरि, गरदा ।

खेस-खेसा [प] कीड़ा, बिहार ।

खेसवार- [प] खेसाही, खेस-  
निहार ।

खेर- [फ] भला, कुमल ।

खेतात- [फ] भीष, भिषा ।

खोर-खोरी [टो] दूधद, हो-  
[स] } प, गही,  
दरगा, पयग, खोरी,

अर्जुनः [म] कृपाद्वय, अर्जु-  
र, कुदारा ।

अर्जुनी [स] कोड़ा ।

अर्जुनीतदः [स] कोड़ा के का-  
मुच । [को-ताड़ी ।

अर्जुनीतदतोयः स] अर्जु-  
अर्जुनः [स] अग्नि-अर्जुन,  
ओपरी, शिरसीपट्टी, पीठ ।

अर्जुनः [म] अर्जुना ।

अर्जुनी [म] अर्जुनी ।

अर्जुनी [म] } अर्जुनी ।  
अर्जुनी [म] }

अर्जुनी [स] अर्जुनी, कोटा,  
तुच्छ, अर्जुनीपट्टी की  
पट्टी ।

अर्जुनी [स] अर्जुनी, अर्जुनी,  
नील, तिक्तकी, कोठी,  
निधय, निधय कर के,  
निधय, अर्जुनी, अर्जुनी,  
दुष्ट, अर्जुनी ।

अर्जुनी (म) अर्जुनी देवता ।

अर्जुनी [म] अर्जुनीदेव, नील  
[म] अर्जुनी देवता में  
[म] अर्जुनी, अर्जुनीदेव,

अर्जुनी, अर्जुनी ।

अर्जुनी (द) अर्जुनी, अर्जुनी ।

अर्जुनी (द) अर्जुनी, अर्जुनी ।

अर्जुनी (द) अर्जुनी । [मी ।

अर्जुनी (म) अर्जुनी की तुच्छ-

अर्जुनीतदः (म) अर्जुनी का  
द्वारा । अर्जुनी की तुच्छ-

मी २ । [अर्जुनी ।

अर्जुनी (स) अर्जुनी, अर्जुनी,

अर्जुनी (द) अर्जुनी में  
द्वारा ।

अर्जुनी } (द) अर्जुनी ।  
अर्जुनी }

अर्जुनी (द) अर्जुनी, अर्जुनी ।

अर्जुनी (स) अर्जुनीदेव, अर्जुनी,  
अर्जुनी ।

अर्जुनी (द) अर्जुनी ।

अर्जुनीदेव (म) अर्जुनीदेव ।

अर्जुनी (म) अर्जुनीदेव, अर्जुनी  
अर्जुनी, अर्जुनी ।

अर्जुनी (द) अर्जुनी, अर्जुनी, अर्जुनी  
अर्जुनी, अर्जुनी, अर्जुनी ।

अर्जुनी (स) अर्जुनी, अर्जुनी  
अर्जुनी, अर्जुनी ।

अर्जुनी (म) अर्जुनी, अर्जुनी  
अर्जुनी (म) अर्जुनी, अर्जुनी

दुधिया, दूधर, दुधैल.

यथा दुधा, दुःपित, या-

न्त, दुःखिया ।

खिचविद्युत्कलत्रः (वि० भवा-

म्) यन्त्री है विजयोदधी

की लिख की ।

खिच (म) चागल, चर्मल,

धरन । [द्विवि ।

खिला (म) चाकाग, गुन्य,

खीन, खीन (द) रीन, कोप ।

खीनन, खीनन (द) रीसात,

कोपकरप ।

खीन, खीन (द) कोध, कोप,

खुगन, मिटिन, वितित,

नाम ।

खीसा (म) गट होजाना ।

खीसा (द) खेनी, चर्मादि,

कधानी, गट हो जाना ।

खुमार, खुमार (फ) खराब,

हरषाद, नष्ट । [कोध ।

खुनस, खुगुम (प) गांसा, कोप,

खुतन्दी (स) गौ, झुकुटी ।

खेनर (स) पद, पक्षी, विद्या ।

खेनर, खोटि खदन्ध लो

गाधे ताको भी खेवर

संघा है. याज्ञा प्रमाप ।

खुरकः (स) खुरारगाधातु ।

खेटक (स) पहेर, पञ्जविशेष ।

खेटकी (स) बधिक, गिहारी,

बहेलिया ।

खेत खे [ प ] जोतीभूमि,

पय खीने का स्वाग, रण-

भूमि, समरभूमि ।

खेह, खेहे [स] } टोसा, टोकी

खेरे [द] } नगर की,

पुरा, गांव बाठ घर की

बस्ती ।

खेद [स] दुःख, कष्ट, शोक,

चक्रिताव, पीडा । [बुन्द ।

खेदकरप [स] पनेना, घाग,

खेरन [स] धूरि, गरदा ।

खेल, खेला [प] मीड़ा, बिहार ।

खेसवार [प] खेलाही, खेल

गिहार ।

खैर [फ] भला, कुशल ।

खैरात [फ] भीय, भिदा ।

खीर खीरी [ट] } दूध, दो-

[स] } प, गली,

टटना, पयग, खीरी,

ਅਰਜੁਨ : [ਮ] ਰੂਪਾਦ੍ਰਵ, ਅਨੁ-  
... ੨, ਸੁਫਾਰਾ ।

शरच्चरी [स] को. नवरा ।

खर्जूरितदः [स] छोहारि का  
युस । [को ताहो ।

सुहृद्गीतकतीयः स) खजूर  
खपर सुहृद् (स) खजूरसुहृद्,

खोपरी, गिरखीपहो, पीठ ।

अथर्ववेदः (१५) अथर्ववेदः ।

संक्षेपः [स] समरसतो ।

अथः { स }  
अथः { स } } अथः ।

अथः परं [स] सध, को

तच्छ, संसारमात्र ही  
मर्त्य, ।

शतः कलु [स] धूर्त, पधम,  
 मोन, निजकी, सीटी,  
 नियय, नियय कर के,  
 नियय, प्यारतक, बागन,  
 दुष्ट, पन्प ।

समय (त) भाद ऐनेवाला ।

सुम [म] } कालिविगेय, नीच  
[न] } कालि मेपान म  
[प] } मविच, टणविगेय

અનિયા, જોસભિલ :

(६) मिनी, बकरा ।

શ્રીમદ્ (૨૬) ગિરિ, સુષમા।

सात (२) सालाय । [सी।

पञ्चमः (स) बोम्बा की.तुम्.

पाचसतिसः- (स) पोस्ता का  
दाना १ पोस्ता की तुलना

मी २ ।      [पुष्पद । ]

प्राङ्गि (स) तत्पवार, विधेय,

ଆନିଷ୍ଟ. ( ୧ ) ଗୋ ଆନିଷ୍ଟ  
ହୁଏ ।

आनि } (२) यत् ।  
 यनि }

જા(મિ) (-) જામતી, ઘટતી ।

प्राज- (स) मन्त्रालीरोग, कष्टः  
पुनः ।

ਘਰ (੬) ਰਾਜ :

आमोदक (ग) म. रियरबुध ।

श्रीमती (क) अज्ञानता, अप-  
क्षता, कष्टादि :

प्राप्त (पद) गङ्गा, नीचे वा  
हा, धोकनी, पाड़ी ।

पिचतः (स) अद्विगत, वा पक्षी  
किया हुआ ।

विषय चीज (म) } तच्छ, गच्छ,  
चीज (न) } अक्षित, दुष्ट

दुखिया, दूबर, दुर्धन,  
यका दुपा, दुःखित, आ-  
स्त, दुःखिया ।

खिचविद्युत्कलः (खि० भवा-  
न्) यस्ती हे विजयोदयी  
स्ती निच की ।

खिच (न) पागल, चर्मील,  
धरन । [दिवि ।

खिला (स) पाकाश, शून्य,  
खीन-खीन (द) रीन, कोप ।  
खीन-खीन (द) रीसात,  
कोपकरण ।

खीन-खीन (द) कोध, कोप,  
खुनम, मिटित, हितित,  
नाम ।

खीना (न) गट होजाना ।  
खीना (द) घेनी, चर्मीदि,  
करागी, गट हो जाना ।

खुपा-खुपा (फ) खराब,  
खरबाद, गट । [कोध ।

खुनम-खुनम (प) भासा, कोप,  
खुनली (स) भों, खुकुटी ।

खुनर (स) दर, पसी, दिवा ।  
खर, कोटि खरख को

माधे ताको भी खेवर  
संज्ञा हे शास्त्र प्रमाण ।

खुरक- (स) खुरांगाधातु ।

खेटक- (स) पहेर, पन्नविशेष ।

खेटकी- (स) अधिक, यिकारी,  
बहेलिया ।

खेत-खेच [प] जोतीभूमि,  
पय बोने का साग, रण-  
भूमि, समरभूमि ।

खेह-खेहे [म] } टोना, टोनी  
खेर- [द] } नगर की,  
पुरा, गाँव भाठ घर की  
बस्ती ।

खेद- [ग] दुःख, कष्ट, मोक्ष,  
पक्षिताव, पीडा । [बुन्द ।

खेदकरण [न] पसेना, घात,

खिरन- [स] धूरि, गरदा ।

खिल-खिला [प] कीड़ा, विहार ।

खिलवार- [प] खेवाही, खिल-  
निहार ।

खेर [फ] भला, कुशल ।

खेरात- [फ] भीष, भिला ।

खोर-खोरी [ट] } दूध, दी-  
[स] } प, गली,

ठरना, पयग, खोरी,

चन्दन की खोरी । [ चीन ।

खोरी [प] कपूर, मङ्ग, पद्म

खोरी [स] खोरी, खोरी

खोरी [प] गभीर गुफा ।

खोरी [स] तिलकलक्ष्मि, त्रिपु

खोरी [स] त्रिपु

खोरी [स] त्रिपु

खोरी [स] त्रिपु

खोरी [स] त्रिपु

## ग

गईबहीर [प] जो बस्य हैरा-

या या भय काते मिले,

या सुभार काये नाहीपु

या सुभार काये नाहीपु

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन-गगनः [स] आकाश,

गगन-गगनः [स] आकाश,

गङ्गाधर- [स] मित्र, विष्णु-

धर- [स] मित्र, विष्णु-

गङ्गासागर- (स) गङ्गा खोरी

गङ्गा का संगम ।

गङ्गा (स) चक्रता दृष्टा ।

गङ्गागोनाम् (स) चक्रता

गङ्गा का ।

गङ्गा [स] हाथी, करी, ही

गङ्गा [स] हाथ का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

गङ्गा [स] हाथी का नाप ।

यक शुभकरन, लखोहर  
 हेरेंव । यह दम नाम  
 यिनोद छत, हरि बिलाम  
 आलंब ॥ २४ ॥ पुनः नामालो  
 ने लिखा है—दो० । लंरो-  
 दर हेरेंव पुनि, हैमासुर  
 एवदंत । कूटववाहन  
 गजवदन, गनपति शिव  
 गुग संत ॥ २७ ॥ कोटि-  
 दिनायक लो लिखे, नहि  
 के कागद कोट । तो पे  
 तेरे पीय है, गुनहिन  
 आवे टोंट ॥ २८ ॥

गजारि [स] सिंह, बंसरी ।  
 गजासी [द] हाथियो का  
 समूह ।

गजामनः [म] पोपकबूच ।  
 गजान [स] गाम, नागक ।  
 गंजा [द] नागकर दिया २  
 भांग ।

गडाखा [स] साक्षर, नोन ।  
 गद [स] देवता, समूह, धोक,  
 काति, भुण्ड, गिरीह,  
 नरादेव के सेदकों का

समूह, जिनके नायक  
 गणेश लीहें ।

गदक [म] देवत्र, प्योतिपी  
 : दिप, नछुमो, रिमाव कर-  
 नेवाका । [हिसाव ।

गदन [स] संख्या, गिनती,  
 गदना [स] गिनती ।

गपित [स] गिनाइया, गपित  
 दिया, हिसाव का इत्थ ।

गदपति [स] } गेगिग, कम्बो-  
 गदरास गप- } दर, शिव, इ-  
 राज } न्द्रइत्यादि ।

गदरूपः [स] सुपेद पकवन ।  
 गदहासकः [म] भंडीकर ।

गण्डदूर्वा [म] गांहरदूब ।  
 गण्डकूलः [स] बेंतारी ।

गण्डारि [स] मंचीठ ।  
 गण्डावि [म] गांहरदूब १

शरईबीभाग २ ।  
 गण्डखेटापनयनरुचाकान्त-

रुचोत्पलानाम् । व० सु-  
 खानाम् कपोलों का पसी-  
 ना पोहने की पोहा के  
 कुददा गंध हैं । जानों के  
 कमल जिन के ।



गणिका (ग) लूहोष्ण, युद्धो-  
पुष्प, मेष्णा, कसवी, कं  
चनी, पतुरिया ।

गण्डः [स] ऐकोक्य चर्चमाण,  
गेडा चतुःपद । गास,  
कनपटी, कपोल ।

गणिकारिका [स] गणिपार ।

गत [स] लीन, प्राप्त, विष,  
गमन, व्यतीत-गुणराहुपा,  
नाम, भिन्न, गया, प्राप्त,  
निष्कृष्ट, विना, चमिय ।

गतवि [स] सूर्य का राश्या  
न्तर गमन चर्चात् संका-  
न्तितिथि । [रहित ।

गतमद्गाया (घ) गाया से

गति [स] गमन, नाश, मुक्ति,  
उपाय, नाश, शरण, रक्षा,  
पाल, ज्ञान, व्यव, दया,  
साधार, मार्ग चसना ।

गत्या (घ) लोचन, चक्षुकर ।

गघ (ह) } लोहो, दाम, मोक्ष,  
(घ) } लोह, दाम ।

ग } (म) रोग, कारण,  
ग } भाषण १ कूट २ ।

गदगद (घ) बोलिलगाई, घ-  
कककाई, हर्मित, पानः  
से फूलजाना, पानंदयुक्त ।

गदहा (घ) } रोगनाशक, वैद्य  
(घ) } गधा, छर ।

गदा (म) } आयुधविशेष,  
(फ) } साधु ।

गन (ह) गण, गिन से प्रसव  
चादि. विप्र, सनूर,  
पिंगल से नियम ।

गनक गनिक, गदिक (मं० पं०)  
ल्योतिथी, विचारक ।

गनराज } (द) गणेश ।  
गनराज } [छर से ।

गनि (ह) गन छरने, विचार

गनी (क) } तालीबन, धनी,  
(घ) } विवाहकन,

विचार, गनतीबाधा ।

गने (ह) गिनती से ।

गनेश (ह) देव, गणेश देवता,  
चारण, रम ।

गन्ध (घ) धोना ।

गन्धक (घ) पवन, वायु ।

गन्धक (घ) गन्धक रंग का ।

गन्धक (म) एकान्ती ।

ज्योतिषशास्त्रं (४) दृग्गन्धौ  
दिया ।

मन्त्राणां पुत्री (य) नहि ।

ਪੰਨਾ ੧ (ਅ) ਪੰਨਾ ੨ ਦੁਆਰਾ  
ਦਿੱਤਾ। [ਕਾ.]

मन्त्रादिः (स) मन्त्रादि ४ वंश  
मन्त्रादिः (स) मन्त्रादि ।

अन्वयविशेषः (क) विद्युत् ।

मन्त्रपत्नी (ग) ९६५ फुल ।

गुन्डगाछीरः. (स) बगबिछार.

जिसके नाम में पुण्य है  
वही सा होता है। (गो.)

गन्धनाभस्ती- ( क ) गन्धनाभ

मध्यमूलिका. (म) पदादी स-  
गंधवाला ।

गन्धर्वः (स) धीम ।

गन्धवती (न) नाम है एक  
गन्धी का । [वासा ।

ग.म.स. ( स ) पहाड़ी सुगंध

मन्त्रमाह्नः (स) पार्थिव विशेष ।

गन्धर्वः (स) घोड़ा ।

गान्धर्वैः स्तुतः- (स) सुपेद रेह ।

ग्रन्थसारः (स) रुपेद चन्दन ।

नान्यंगादना (२) पापद्विमेय ।

मनुष्यं (स) सुमायन, माने  
पाणि देवता । [चण्ड ।

सन्तुष्टभाष. ( क ) पण्डित, श्री.

गङ्गाधर- (ग) देवती ।

मनुष्यार्थः (स) मुखात् ।

गङ्गाविष्णुः (सं) सुमंथवासाः  
पदाङ्गोः । [ ५१ ।

सन्धिपत्र (स) सन्धुक्त ४ रंग

अनुषाङ्गः (स) द्वाविंशः ।

गम्भिन् (स) सुगंधमान ।

गन्धर्व (स) जाने के योग्य ।

गान्ध (क) भाग, पृ. १

नव (क) यमोरोवचनः । भगवः ।

गङ्गा-गङ्गा-पञ्च (न) शान्तविशेषः  
गङ्गा (द) गङ्गे ।

गभदा (भ) दिवाकर, पय्ये ।

गभक्षि (क) किरण, चंद्र, रश्मि।

गभुवार-गभुवार (९) गभंवा-  
 ष, बालक से गये बाल,  
 लक्ष्मबास ।

गम. [२] गया इषा ।

गमन-मधु- (स) ज्ञाना, रोम्.

॥ शशा, चन्द्रम, याज्ञ-पञ्चन ।

गन्ध [८] विताड्योत् ।

गमित- (स) गमा-दृषा, खीया  
दृषा, गंवाया दृषा ।

गमितगमिता ( वि० चसः )

गरे रे, गह, के, गिम की ।

गमारी- (स) गमा-दृषा ।

गमी- (स) गमा-दृषा, गमी, ग

गमी- (स) गमा-दृषा, गमी, ग

गमन, गमारी गमन ।

गमी- (स) गमा-दृषा, गमी, ग

गमी- (स) गमा-दृषा, गमी, ग

गम्य (स) जाननी के योग्य,

जानि योग्य, गमकरण

योग्य, गम्य । (पचो ।

गम्य- (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गम्य (स) जायो, गम्य,

गर्जितः गर्जितः (म) अतिमा-  
नी, पहलारो, मगयुक्त ।  
गर्भः (म) अमल, कोख का अन्तः  
गर्भावागः अगपरिहयम्, (वि)  
अगवन्तम्) गर्भधारण करने  
वाला, गर्भजन्तु के द्वारा जिसका ।  
गर्भः (द) धर ।  
गर्भकः (म) पिताजीकन ।  
गर्भमृतः (म) कुपेद फूल की  
रसगो ।  
गर्भजन्तुः (म) कीचारी ।  
गर्भोपागनः [म] कृता ।  
गर्भः (प) गर्भ, गर्भज, रोग,  
फाँसी ।  
गर्भवाः [म] धूमवाक ।  
गर्भयानः [प] अन्त, कांधा ।  
गर्भकृतीः [स] धकरो ।  
गर्भानिः [द] पीना, कला ।  
गर्भानिः [म] अर्धचर नकात ।  
गर्भितः [म] नट, घंतिन,  
[म] गन्टा, महियल  
गर्भगया, नाम, गिराहुवा ।  
गर्भानिः [स] मिष्टा, गप ।  
गर्भनः [प] गन्त, कागा ।  
गर्भहिः (द) गंव से ।

गर्भाटनीः (म) इनाकप ।  
गर्भमः [म] अमाई, चण्डा-  
गर्भमः [प] अ ।  
गर्भः [म] गो अहम, पशु,  
गर्भः [म] नीलगाय १ काका  
पांड रों हरिन ।  
गर्भाटनी (म) अगीला, गोखी,  
गान, वागर ।  
गर्भाटनी (स) गीत, अगीला ।  
गर्भाटनी (म) इनाकप ।  
गर्भाटनी [म] गवतन ।  
गर्भधुः [म] गरहुवा । [खण्डी ।  
गर्भधुवा [म] गरहुवा १ गुर-  
गर्भः [म] गाय की दुध, दही,  
धीव, गोबर, सब का नाम  
के लगे से गर्भदुग्ध पादि ।  
गर्भहः (द) पकड़ो ।  
गर्भगर्भः गर्भगर्भः [प] गोरीर,  
अगमान, नकाराका अर्थ,  
कले । [अर्थ के नकल ।  
गर्भगर्भः (प) बाजी, मानकाराके  
गर्भनः (स) दन, दुर्गम गहर  
दुध, पकड़ना । धारण,  
आड़े, अगम, विकट ।  
गंजनः [म] गोमदरना, भासते

करना ।

गंजा (म) नाथ किया ।

गज्जोर (म) गहिरा ।

गज्जना (म) कठिन, भूपथ,  
(प) धारण, पकड़ना ।

गज्जदर (म) सघन । [ गज्जदर ]

गज्जदर (स) गौगविशेष चाते

गजि (स) पकड़ ले ।

गजियानि (म) जाय पकड़ ले ।

गज्जक गज्जक [द] देरी, बिलम्ब  
देर, पछमछस ।गज्जदर [म] गूफा, गुन, खोह,  
सघन, भीष के साथ, गोंध ।

गज्जदर गज्जदि [द] पर्वत,

खोह, छिचित, छोड़ित,

कल्पित, सघन, साथ के

: साथ, प्रेमभरा, प्रेमयुत ।

गज्ज [म] नाथ बनार ।

गज [दे] गीवा, गजगच्छिया ।

गज्जोठ [प] गीवाभा, गो

गावा, गोपान ।

[प] पाणिन काति

का का बर्षा का पागो ।

गादेव [म] सीना घात ।

गादेवकी [स] गोरखणी ।

गागर [स] ककग, घेना ।

गान गानन [द] फिन, दूध

का फिन, बिलखी, नाथ

कती, नाथ करने वाला ।

गान: [प] दूध का फिन ।

गानना [द] दूधित होना ।

गानन: [स] गजरा ।

गाद गाद [प] { गूदक, गहि  
[द] { रा, गहक, चासविशेष ।

गादर गादर [द] भेड़ा, भेड़ी,

भेड़ी का जान, लूण, घात

विशेष, रूस का भेड़ा ।

गाद गादा [स] दूध, घटने, क

ठिन, लड़ा, बढ़ते, बचने ।

गाण्डर गाण्डर [द] घट भेद

रूमका भेद, घासविशेष

कास, लूणविशेष ।

गाण्डीव [स] धनुष विशेष,

गाण्डी वध को लड़की

का बना हुआ धनुष

का धनुष । [प] गाण्डीवधन्वन् [स] गाण्डीवधनुष

धारण करने वाला पद्यार्थ  
पद्यार्थ ।

गाण्डीधर (न) पद्यार्थ पाण्ड-

व लादे हाथ गांड़ीव था ।

गात गाध } बाधा, शरीर,

गाता (स) } पोती बाधनेकी

वैठन, रंग, रेश, क्रिया ।

गाध गाधा, (न) कटा, कटा

नी, शोक, छन्द, समूह ।

गाध (न) मूँघे ।

गाद (प) गदरी, सीठी, मस ।

गादुर (प) समगदुरी, निमि

गामी, समगदुरा ।

गाधि (न) पहाट, पल्लव,

राजाविशेष, एक राजा

का नाम, समूह ।

गाधि तनय (स) } विद्यामि-

गाधि सुपन (प) } च, कोमिक

सुनि ।

गान्धारी (न) लवाछा १ दु-

राजभा २

गाना (न) कथन, कहना ।

गामी (न) समनेवाला, नगन

करणहार । (गुली, नवेरा

गायन गायन (न) कदर,

गायन (न) खदर, नेश, लंद ।

गारह गारही (न) रियना

शक, विष करनेवाला,

विषहर्ता, वैद्य ।

गाम्भव (स) सोध ।

गालोच्य (स) कनकगदा ।

गार्हस्थायमकर्मविवरण (स)

धन उत्पन्न करे कोई यज्ञ

ते ताने १८ भाग में एवं

भाग तुरन्त पूजा करिदेई;

१७ भाग बाकी में गृहस्थी

करे, प्रतिदिन वेदन, कुटुम्ब

वेदन, यह पितर स्तुतिः

पर्यं पाहु करना, देवस्तकी

यज्ञ करना, स्तुति क्षत्रि

तीर्थ, व्रत, दान, करना यह

नित्य पंचवक्ती वेद्यकर-

ना, रिशु, मित्र, देवी, ग-

हम, सुख १ २ पांचदेवता

की पूजा करना विष्णु श्री

गुरुदेवजी की देवता की

पूजा वताये बाड़े पाजाने

ताकी पूजा करि योविष्णु

१ सुनि गांगना १ इति-

गार्हस्थायन । (विष्णु) ।

गार (प) दशम, गामाण्य देम,







गोष (१) जातिगोत, संय  
कुल, नाम, जैन, बन्धु.  
पत्नि ।

गोतदूत (स) धामोदूत ।

गोतदरि (स) पर्वत, भूमत ।

गोषा (स) चरती, गेदिनी ।

गोदावरी (स) नदीविशेष ।

गोधूनी (स) कृष्णाम्बुजमय ।

गोधूत. } गेहू १ गोधूत २  
गोधूमः } जात का ।

गोदावरी (स) नदीविशेष ।

गोधा. (स) पानीमें का गोह १  
गोह २ ।

गोमती (स) बिंदी गोधा ।

गोम. [स] गोवर्गनेवाला ।

गोवध्या (स) } समस्त दूध-  
गोवर्गः (स) } घर ।

गोवधूतः (स) ग्रास समस्त ।

गोवरमः (स) बीज ।

गोवदेव्य (वि० वि०) (वि० वि०) ।

गोवर्गनेवाला का सा है  
द्वि० वि० ।

गोपद (स) गो के दूध, गंध,  
गंध का दूध ।

गोपा (स) समस्त दुधकर ।

गोप्य (स) गुप्तयोग्य, गुप्तवत् ।

क्षिपाने के गोप्य, गोप;  
गोप ।

गोपी (स) ग्राह समस्त ।

गोपीश्वरी (स) कूल शिवसा ।

गोपुरः (स) केवटी गोधा ।

गोवर्धन (स) पर्वत विशेष ।

गोभी (स) गोभी ।

गोदय (स) } गोविष्टा, गोवर्ध  
गोमय (स) }

गोमयत्र (स) गोवर्धनात् ।

गोमयविय. (स) पमिचापर,  
काटा वाला । [सनी ।

गोमरी (स) कसौती, कण्टा-

गोमाय गोमाय (स) कानव-  
सी, गोवरावारी, विद्यार ।

गोमिष्टः (स) गोमिष्टमनो ।

गोप्य (स) } चरती, चरनी,  
(स) } दिला, गाला ।

गोप्य (स) } वदविशेष, वदु ।

गोप्यकण्टी (स) गुरंगी ।

गोरीचन (स) गोभीचन ।

गोलः (म) गंयनमिल ।

गोलकः (म) निवडिम्मा, दिप्र-  
वा ने छारजपुत्र, पांख का  
स्याग, बच्चु, इन्द्रिय का  
स्याग ।

गोलिदः (स) गोल दृष्ट ।

गोलोटः (स) गोल दृष्ट ।

गोलोमी (स) बब १ सुपेद  
दृष्ट ।

गोलिदं (म) वेदलभ्य ।

गोलोच (स) वेदलभ्य विज्ञेय  
वैज्ञानिक ।

गोलोई (प) सुमीपति, इन्दी  
पति, प्रानी, तपस्वी, सुद  
राजापादि गेटवाचक  
शब्द ।

गोलोनी (म) गोलन ।

गोलुरः (स) इतिहास ।

गोल (द) घर ।

गोल (स) अपमान, पान ।

गोलन (म) मुनि विज्ञेय, ब्रह्म  
विज्ञेय ।

गोलनारी (म) ब्रह्मविद्या ।

गोलनार (स) सहस्रभग हो

गोल सहस्रभग ।

गोल [ प ] गोलन, चानन,  
गाना । [ छलन ।

गोलः (स) गोल, सुपेद, स्वेत,

गोलः (स) धावा दृष्ट ।

गोलकः (स) गोलपची ।

गोलवन्तः (स) बगवन्तः ।

गोलव (स) भारी, दड़ापन,  
पान, बड़ाई, भारीपन ।

गोला (स) इरदी, चटक,  
बिहा, गोलोदा, बजला,  
गोल, दस्त ।

गोली (म) पाल्सी, दन्ता  
रामिनीविज्ञेय, गोलीपन,  
सुसगोशान और गोल,  
गिवा ।

गोलीय (म) गिब, गोलोव ।

गोलन [स] नाम दाना ।

गोलन [द] नाम दिया । एक  
मादक द्रव्य ।

गोलित (स) धावा दृष्ट, गोल  
दृष्ट । [ व, पोदी ।

गोल (स) गिरह, गोलो, दस्त-  
गोल [स] गोल, गिरह ।



## घ

घट. (न) घटा, देह, मन हृदय.  
देहा । [स्य स्तमि ।

घटक. (म) कुशाभचर्प, अग-

घटव. (द) करव ।

घटयोनि. घटसम्भव. (स) अग-

ह्यस्तमि, कुंभज मुनि ।

घटा. (स) समूह, नैव ।

घट्या. (म) कठपांडुर ।

घट्टारका. (स) वनमनई ।

घण्टिः. (स) घण्टियान्, लन-  
जंतु ।

घण्टिका. (म) घण्टी ।

घटि. (द) घटिया, कमती ।

घटित. (स) तुलित, भासित,  
रचित ।

घटिहिं. (द) करीमी, दीमा ।

घन. (म) बादल, सोह कूटपात  
नैव, सोहिका घन, इयोहा  
निहाई, हट, विस्तार, स-

घन, घना, घट्टत, गरित  
जास न किसी संख्या की  
तीन बार गुणा करने की

घन पडते हैं, लल ।

घनगाद. (म) नैपगाय, नैव-  
नाद । एक जड़ी का गान ।

घनराम. (न) बाबाय, मूय ।

घनम्. (स) फेनु का दूध ।

घनरम. (म) लल, पाणी,

घनरस. ) गौर ।

घनसार. (म) कपूर ।

घने. (प) घनेरे, बहुतेरे ।

घमोई. घमोई. (द) गहभाई,

वा पेह विमेष हांस समान  
वांभांवांस बीटा की,  
गरभई, घास ।

घान. (द) नासिका ।

घरनी. (द) कौ, गटस्त्रिनी ।

घर्म. (न) धान, धूप । [हुपा ।

घर्मन्व. (म) घान में पाया

घरि. (प) गुच्छा, घोषा ।

घा. (द) घोट, ठोकर, घाव ।

घाट. घाटी. (द) गट, मार्ग,  
दांट ।

घाट ननोडर. ४ (स) प्रथम

नोडर तुरसीदास की

अपनी दीगता, ११३ अक्षे-



विष्णुसंहिता । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः ।

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

ॐ

पुनः । [ ११४ ]

पुनः । [ ११४ ]

च

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

च । [ ११४ ]

अकर्मणः [म] चण्ड ३ ।

चक्रवर्ति (म) अक्षवर्ती राजा,  
मन्त्रिभोमराजा ।

सकृदहंती. [म] उपदिष्टा ।

सकलराशी (स) सकलजी ।

नमः । श्री [ग] कुटकी ।

नष्टानां [म] सुदुर्गम ।

बहुः (म) चगर्ति ।

बकवास बकवास (न) बकवास  
बकवासियों । बकवास ।

अक्षीः [ग] अथै, माग, दिश

॥ ४ ॥ विद्या लक्ष्मी मे ।

अने. [म] विद्या ।

नमः (४) श्रीगुरुभ्यो नमः ।

अथ [५] शिव, पार्वती ।

જા'હ [સ] જાત, જા'હ નેચ.

अनुवादि (१) मेव नृप, मेव  
विद्याम, अतिशुद्धम् ।

१५ [ व ] गङ्गामिदं गङ्गा  
[ क ] यत्नं वागमिदं ।

बभ्रुदे (मः) कदा।

५. अथवा [४] विभाग अथवा ४

बुधदिन (२५) अमरकोट, पीठ,  
(२६) मीरत ।

१५५

च. २. [२] नाशरेंद १ यमतीर

वसन्त [म] पाराधातु, ४  
वसन्त, कर्म्य (४) ।

अथवा, [सो] अथवा [सो] ।

—सिंह [२] मधुपरा ।

नयना [न] कछो, विजय

चटका: (स) गरमैया तथा

बटकागि। स] विवराम्  
सुदृश [स] चंद्रक।

अथवा, [स] अट पत्र ।

नववर्षः [स] वसंत ऋतुः ।

नन्दकामन्त्रकः [८] वना ॥  
मो. ॥

बन्ध- [सं] धर्माप, जग, तेज,  
तेजस्वी जगज्जगत्प्री, प्र

[illegible]

बुद्धि. [५] इति ।

अथः (५) का. अ. अ. अ.

देवी, दूताओं, कुंजिनी ।

॥ १ ॥

चतुर्विंशती [स] शिव, चण्डिका पति ।  
 चतुःपद्मी (स) मिरिचिकारी ।  
 चतुर चतुर (स) ज्ञानी,  
 नारदमुख्य चतुर धूर्त,  
 बुद्धिमान्, होमचार, चार ।  
 चतुर्गुण (स) चतुर्गुण । [वाच ।  
 चतुर्दश (स) चौथा चारि संख्या  
 चतुरङ्ग (स) श्याम, रत्न, पोत,  
 चरित, चौररंग की सेना,  
 सेना की पार चङ्ग, चर्चात  
 हाथी, घोड़ा, रथ, चौर  
 पैदाश, सतरंज ।  
 चतुरङ्ग (स) चमकताम् ।  
 चतुरङ्गी सेना (स) हाथी, घोड़ा  
 पैदाश, चण्डिका ।  
 चतुरात्मन (स) बुद्धि, चङ्ग,  
 चमकताम् ।  
 चतुर्दश (स) शीठ, पीपल,  
 निर्व, पिपरास ।  
 चतुर्दश [स] चौदह १४  
 चतुर्दश (स) चारपक्षी ।  
 चतुर्वर्ग (स) चर्च, धर्म, काम,  
 मोक्ष ।  
 चतुर्दशलोकविवरण १४ [स]

भूमीलोक, भगवत्लोक, मरु-  
 ल्लोक, जननीलोक, तपनीलोक,  
 सुरलोक, सत्यलोक ॥ ७ ॥  
 इति भास्करलोक ॥ अत-  
 न्त, पितृलोक, सूतलोक, महा-  
 तल, तक्षकलोक, रसातल,  
 पाताल, ॥ ७ ॥ इति पाता-  
 ललोक ॥ १४ ॥  
 चतुर्वर्जः [स] मंगरेला, जय-  
 दन, चनमुर, मेघी ।  
 चतुर्विंशतीवतारविवरण कणा-  
 सहित २४ [स] सेनक २ मन-  
 न्दन २ संगीतग २ मन-  
 लुमार २ पौरुष १६ परा-  
 च १ गोरिद २ नरनारा-  
 यण, कौपी बट्टीनारोचण  
 १३ कपिलगुनि ३ इति  
 सत्यगुनि, दत्तात्रेय १ यज्ञ  
 २ नामिध १ पुण्य १३  
 गीत १५ चमठ ५ धात्व-  
 मार ८ मोक्षनीरुप ३  
 नृसिंह ८ योगिन ११  
 परमेश्वर ६ व्यास १ राम  
 चन्द्र १३ इति तैत्तिरीयम् ॥



योक्तव्य १३ बी० ॥७४॥ इति चन्द्रमोक्षि चन्द्रजेश्वर (स)  
हापरे ॥७४॥ शिव, महादेव ।

चन्द्रा (स) चन्द्राकर, मन, चन्द्रमूर (स) चन्द्रमूर ।

बुद्धि, विज्ञान, चन्द्रचार । चन्द्रहाम (स) तलवार, हथि

चन्द्रना (स) सुपेठ चन्द्रन । चार, नामवाजपुत्र, चन्द्र

चन्द्र चन्द्र (स) चन्द्र, चन्द्रमा, शिव ।

अविमुनिमुत्तमब्रह्मा, हीरा चन्द्रहाम (स) गुरिच, सुपेठ

गणि । फल को रंगनी ।

चन्द्रहाम (स) गणिविशेष । चन्द्राच (स) कपूर ।

चन्द्रहामि (स) चाटो । चन्द्रावतंस (स) शिव, शङ्कर ।

चन्द्रवृष्ट (स) महादेव, [चन्द्र चन्द्रिका (स) चान्दनी, चाट

मा के सिर पर जिसके] न कोमल १ चन्द्रमूर २ ।

चन्द्रमूर्ति, [स] सुपेठ, चन्द्रन । चन्द्री (स) सुपेठ फल का

चन्द्रनामा [स] कपूर । चन्द्रवत ।

चन्द्रपाद [स] चन्द्रकिरण । अपरि नपे अपरि, मीमू न-

चन्द्रपुष्पा [स] सुपेठ फल को त्त मर । रत ।

रंगनी । [रंगनी । अपर १ (स) चन्द्रा चन्द्र

चन्द्रमा [स] सुपेठ फल को अपर १ चन्द्रा तरल, पारा ।

चन्द्रवासा (स) इलायची फल, अपरता (स) अपरता ।

एला, वही इलायची । अपरपथः (स) वीपल का वृत्त

चन्द्रा, चन्द्रमसी (स) चान्दनी, अपरता (स) विज्वली, सधुवी-

चन्द्रिका । पति, वीपर ।

चन्द्रमामुनि (स) निम्नाकर नाम चपेट-चपेटा (स) चपेट, त-

अधोमुनि के पुत्र का नाम । मीमा, धमा ।

चम. (स) तीला, तेल, जय ।

चमक. (द) दई, भसै, निषागा ।

चमक. (क) छिटक, किरक,  
ज्योति । [दादुर ।

चमगादुर. (प) चमगादुरी,

चमत्कार. (स) चहुत, पादये ।

चमर. (स) चंवरभेद, सुरगो-  
पूँह, मयूरपत्र, पंखा ।

चमरी. (प) चवनार, १ मीर  
ही गज, एक प्रकार का

हरिन १ जिस की पूँह  
का चमर बनता है । उ-  
रिह का मयदा ।

चमू. (स) चैना, दल, चैनाभाष.  
चैनाविज्ञेय, जिस में ७२८  
जायो, ७२८ रय २१८०  
घोड़े. १६४५ पैदल हों ।

चम्पक. (स) चम्पा फूल ।

चम्बर. चम्बर. (स) चवर, सुर  
हृद । [चमन ।

चर. (स) दूत, व्यादा, भक्षप,

चरज. चरजा. (प) तुम्हा. की  
(स) स पची ।

चरद. (स) पगु, पाद, पद, पाद,

पाप, सोरका चौघाभागा ।

चरदन्वास. (स) पाँव का चिन्ह,

चरण जिम्मा । [लल ।

चरदीदक. (स) पाँप का भक्षण

चरदिनि (स) चन्द्र किरिचि,  
चरिनी ।

चरदपिष्ट. चरदपीठ, [स]  
उदाच, पगुरघक ।

चरदायुध } [स] सुरगापची,  
चरदायुधः } चरदचूड़ ।

चरित (स) चरिच, हाथ ।

चरफर. (प) चानाच, देह  
होसत ।

चरफराहिं (द) होसते है,  
चरफराना, तरफराहिं,  
विकल । [न्य चोर कह ।

चराचर. [स] चर चरक, हैत.

चर. चर. [स] खीर, चाचर  
दुग्ध संयुक्त, इविथ होम  
काच का, दिव्य सुन्दर,  
दरगन । [पाचरद ।

चरित. [स] सीता, सभाष,

चरवर. [स] दूत, चैह, मदा  
दोराहा ।



गोट देना, मचिगडित,  
गुपदान् राजि गोठरेना

चाङ्गेरी. [म] क्षीनियां ।

चाटु. [म] नज, करो, दाय  
नुरखरी, प्यारिचन ।

चाटुहार. [म] दचनचतुर ।

[च] क्षीय, अभिकाप,  
चाङ् [च] कान, चाङ, जीह.

विजुषी । [नुर] ।

चापदन्तूष. [स] निवार-

पातक. चाटक. (म) पपीहा  
पपी ।

चातुर. (म) मुद्दिनां ।

चाप. (म) धनुर्, धनुः. जनान  
जन ।

चातुलीतः. (म) बड़ी रसायनी  
तऊ, नमिहार, तेजपात  
एई ४ ।

चापत. (म) दादत ।

चापत. (म) पत एपीवाद,  
चापना, दादना ।

चापनी. (म) लगन के पदविधि  
के भीतर का बंदर का  
लः होता है ।

चापी. (म) दवाई, चम्पाफूल,  
गामीसर ।

चामर. (म) चमो विशेष, लुग-  
लाला चर, चौर ।

चामीकरः. (म) मोना. द्रव्य,  
चामी कर) सुवर्ण, मोना धातु ।

चामुण्डा. (म) योगिनी भेद ।

चाम्येदः. (म) नलीसर । चम्पा  
फूल ।

चाम्य. (म) सामान्य धनुष ।

चार. (म) दूत, दुगुल, लवार,  
विरवंगो, संख्यावाचक,

४३ चार दुगुल, छिपि, पर  
दोम देवत, रसे, सी, मका-

म करे सो चार । बी० ।

देवत, मुख नद, मान, गि-  
हारी, । चामनीधन मुग

कति विभिचारी । क्षीमी  
लक्ष, लक्ष चार गुनली ।

मुग दुहि दुध परत, ए  
मानि । चर्मात् गुनामी

हुन रनुह । देवत मुख  
भिचारी, मान, चामनी

चर्मात् चामनी पादि

धन शुभ गति घर श्री  
शामी सोभी यश सुगल  
गुन समूह सो प मानो  
पापाग दुष्टि के दूध  
चाहत है कि दुष्टि से  
संसर्ग भाव से नष्ट हो।  
स्वामी बनाय सुख चाहति  
सो कैसे होयगो। चार  
गुमानी पाठ भिरजापुर  
निवासी पं० राम गुलाम  
द्विवेदी को चार दूत सो  
"गुमान करे।"

चारदांना (स) मंगरीका १  
चक्रवर्त्तन २ चमसुर ३  
मिथी ४।

चारिपदका (प) जाधत, खपू  
समुति, तुरीया।

चारिभाति भोजन (स) भक्ष्य,  
भीष्य, सेद्य, बीष।

चाही (द) चाह, देवना।

चारिधानि (प) करायुज,  
अष्टज, सद्भिज, मध्यज ४।

चारिपद (प) धर्म के चारपाँ  
सत्य गोप, दया, दान ४।

चारी (स) } भक्षण, संख्या-  
(प) } चक्र ४। चार,  
चक्रमेवासा, ४

गुली, चार, सुन्दर।

चार (स) सुन्दर, सुराहा  
मनोहर दिव्य, सोभार  
मान, [सार १।

चारहेसरा (स) वेवती १ शु  
चाहतम चाहतर (स) चति  
सुन्दर, चतिसुधाना।

चारफला (स) दाघ, दुहाहा।

चारकः (स) रामसरका।

चासति (प) होचासति, हो  
जाती, चासना, होचाना,  
हिसासति।

चाव (प) चाह, चसाह।

चाप (स) } चाचापची, नीव  
(द) } कंठ, पची विमिर  
येतर्ष्य मनुष्यकारी पवि  
देम स्यात।

चाहि (द) देय घर के, संसर्ग  
घोरमे चाहना देवना।

चिकुर, (स) वास, वंग।

चिचिछ - [स] चिचिछ।

चिचर [प] वेश वास, घुंघुर।

चिकरहिं [प] विचार करते हैं

चिखः [स] चमतो ।

चिखा [स] इमसी ।

चिपुकी [स] चमतो ।

चितव. चितयत. चितवन. [प]

तकित, दृष्टि, देखना, दे-

खता है, चितवाना ।

चित्त [म] चन्तःकरण हृत्ति,

मन दिल, चेतन, प्राण ।

चितेरा [द] चित्रकार, गिह्यी ।

चित् चित् [स] मनसंज्ञा,

ज्ञान, चैतन्य, बुद्धि, हृदय ।

चितचेता. चितचेता [स] छाव

धान, स्थिर ।

चिध. चिधः [स] चनेकरुह,

मूर्ति, छवि, रूप, तसवीर,

नकशा, सुपेद रेह ।

चिधकः [स] सुवकुन्दफल १

चीता २ ।

चिधकूट (प) नाम है एक

पहाड़ का ।

चितगी [स] चितकावरगठ ।

चितताखुहा [स] चागिरंग ।

चितपचः [स] चितकावर

पंडुका ।

चिधपर्णी [म] पिठवन ।

चित्रवर्तीकः [म] चगकपची,

बटेर की जाति ।

चित्रा [स] बहीतामाजड़ी १

इनारुण २ ।

चित्रहेतु [स] राजाविजय

जाहेपुषविपते सुपा घा

याको कथा है एक राजा

का नाम ।

चिदाकाश [स] चैतन्य आका-

श, परमात्मा ।

चिदानंद चैतन्य आनंद रूप ।

चिन्तक [स] भक्तजन, ध्या-

निक, अरुणिक । [फिक्त ।

चिन्ता [स] सोच, विचार

चिद [स] पताका, निमान ।

चिन्तामणि [स] परसमणि,

विष्णु, कल्पितामणि, विज्ञेय ।

चिपिटः [स] चिड़ड़ा ।

चिपिटिकः [स] चिड़ड़ा ।

चिबुक [स] ठुड्डी, ठोठो,

कपोल, डाटो ।

चिर. चिराना. चिरान् [स]

बहुलकाय, बहुशालीन,

पुराण, बहुत आसानीसे !

चिरमिट्टः [स] गुरुम्हो ।

विरचितकः [सं] पेश्या ।

विरिण्णदा । [ सं ] पक्षाको  
साग ।

जिम्हः [म] जीसहयसी ।

विमोदनी.

વિરજ-જીવિમુનિ . [૧] ગ્રામ-

१२. एडिङ्ग सुनि जाको प्रयाग

ਮੀਂ ਸ੍ਰੀ, ਵਿਸ਼ਨੁ ਦੇ ਮਾਯ।

• धिये सति विजयता ॥६॥

१. काकी कथा २. सन्ध्या ८

॥ २॥ अध्यायः श्रीभागवतः ॥

३। प्रविदितुं, गात्रं देवकृपि।

पौतः-३] व्याख्यायित, तेंदुना

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

‘सोमो ह्रीं [३]’ विनिर्दिष्टपद.

वीनाईकरी, १७, १८

શીર 'સો' દેવો' / પાછો દેવો

कपडा, धोतन, आदि

श्रीरा. [स] परमविशेष विधितः।

ਪ੍ਰੋਫ਼. (ਚ) ਬਿੰਦੂ ਸਿੰਘੀਓਕਰ

पुष्पाः [म]ः दृग्गोः ५०००००

शुक्रिका. [स] 'षेटपंशती'।

इमं चोद्दिश्य । पानिना ।

चुनौती- [प] मा कल्लुयेत, बीडः

पुनि- [६] छोटो ।

सुनोति. [प] नामर्त्तः वे०

सेना - को : दुर्लभता है, नि

नारायण, त्रयम्, त्रिभङ्गोर ।

सुम्यकः [स] सुम्यकेपत्यं ।

सुख-प्रेम-सुख-द्वयं को, सिद्ध-

गदि । १० । १०००००

चमत्कारः {८} चमत्कारः, इत्यादि।

पुस्तक १. १५५१ - १५५२

पूजा. [न] ग.सू.क. १.५.५.५.५.

ବାଦ, ଉଦ୍ଧାର, ମଧ୍ୟମତ

[illegible]

पुष्पाकराय. [पु. मु. पु. मु.]

पुद्गालः, पुद्गालः, (पुद्गालः)

संस्कृत, भूगोल, इतिहास  
भाषा :

(म) इसका मतलब क्या है?

संख्या-संख्या (म) वृत्तान्त ३१

साम. विसादया चरु

कुमकुम विधा इव

बन्धन ।

पूर्वाधारः (सं) सुपेद सिंग-  
रिफो

चेतकी (सं) चेतकेवृत्त, परे ।

चेतन (म) चेतना, चेतन, चेतन,

जीव, मनस्य, चेतनादि,

ज्ञान, संपद, ज्ञानेन्द्र ।

चेतन्य (सं) चेतन्य ।

चेत् (स) यद्, यच्च, यदि, की ।

चेतस् (स) चित्त ।

चेता (द) चित्त ।

चेतिहा (स) चित्ति । [चेत् ।

चेत् (म) चेतने होने का नाम ।

चेर (स) चेतन, चेतन ।

चेरी (स) चेतन, चेतन ।

चेरी (स) चेतन, चेतन ।

चेत (स) चेतन, चेतन ।

चोप (द) चोप, चोप, च

तिवाङ्गा, चोप, चोप,

चोप, चोप, चोप । [चोप

हेतु (स) रक्षा, गांव के पूज्य

चेष्टा (स) चोप, चोप ।

चोर (स) चोर, चोर, चोर

चोर (स) चोर, चोर, चोर

चोर (स) चोर, चोर, चोर

चोधा (प) चोधा, चोधा,  
चोधा, चोधा ।

चोक्त (प) चोक्त, चोक्त ।

चोनाग (प) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (प) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।

चोनाग (स) चोनाग, चोनाग ।



भू. ला. गिगा दृषा ।

क

कदे (१) रोग विगेष ।

कदे (२) क । [ का ।

कद्विषा (३) बिना सार दही

कद्विषा (४) चवेसा, चर्मा-

भूषण ।

कदे (५) कदे । [ नभिर ।

कदम (६) पामा, मकाग,

कदि (७) चानि, मिना-

रच, सन, कोड़ा, गाव ।

कद (८) काला जगरी ।

कद (९) मुरमोर ।

कद (१०) मडा १ कोटयुन

चदिषा चुर ।

कद्विषा (११) संभव । [ निर ।

कद्विषा (१२) कद्विषाति म

कद (१३) कोठ, पच ।

कद (१४) चर्मा, मकाग

कद (१५) चानि, मिना-

कद (१६) काल, मिना १७

कद (१७) मकाग, मिना

कद (१८) मकाग, मिना, चर्मा

कद (१९) मकाग, मिना

कद (२०) मकाग, मिना

कद (२१) मकाग, मिना

कद (२२) मकाग, मिना

कद (२३) मकाग, मिना

कद (२४) मकाग, मिना

कद (२५) मकाग, मिना

कद (२६) मकाग, मिना

कद (२७) मकाग, मिना

कद (२८) मकाग, मिना

कद (२९) मकाग, मिना

कद (३०) मकाग, मिना

कद (३१) मकाग, मिना

कद (३२) मकाग, मिना

कद (३३) मकाग, मिना

कद (३४) मकाग, मिना

कद (३५) मकाग, मिना

कद (३६) मकाग, मिना

कद (३७) मकाग, मिना

कद (३८) मकाग, मिना

कद (३९) मकाग, मिना

कद (४०) मकाग, मिना

कद (४१) मकाग, मिना

कद (४२) मकाग, मिना

कद (४३) मकाग, मिना

कद (४४) मकाग, मिना

खट्वा, नूतनरा, कपिला ।

हरिभीरुः (द) खड्गभीरुः ।

हरि (द) खरिंसा, खरिइटावि.

सुख, हटे, जिमि सेना

पति से साधु संताइस सी

घोड़ा मवार, ७०० ।

हल (स) खपट; करिद ।

हलिका (स) बकरी, वतुःपद.

हली (स) देली, ठग. [मज ।

हार्द (द) होमविजय, मुह.

हार्दो (द) खमि, जमडा ।

हार्दि खोदी (प) हर्दा दधि,

तक, दधिधोष का भीवन

हामा हामा (स) हकामा मीड़.

मीड़ा, बकरी, गीही ।

हामी (स) बकरी ।

हामि (प) मतवारी मधुवा,

मतवारा, मत, पी. ॥ ४ ।

होदि (द) पाहोदी ।

होदता (प) होमिता, होदित.

होदा (ट) होदा, होदमा,

होदमा ।

होद [म] होदिहो, जिह्वा,

होतः [म] होदा, नध, महत.

होदयत् [स] जाता हयो ।

होयः [स] यकरा ।

हारा [द] होरा, [दादि ।

हाया [प] होद, योग, हर-

हायात्मन् (स) प्रतिदिन्य ।

हायानिय (स) बटा हया है

प्रतिदिन्य जिम बा ।

हारा. होडा [प प] खमि,

दागिनी, राय, पागा ।

होर. होर (स) हूर ।

होदनी [म] होदादिहनी ।

होदिका [म] होदिका ।

होदपुष्पः [म] होदपुष्पी ।

होदरुहा [म] होदरुहा ।

होदा [म] होदा ।

होदोदा [म] होदोदा ।

होदिहोदा [स] पाताभग-

होदी [म] होदी, चाल ।

होदिहो [म] होदिहो, होदिहो,

होदिहो [म] होदिहो, होदिहो,

होदिहो [म] होदिहो, होदिहो,

होदिहो [म] होदिहो, होदिहो,

होदिहो [म] होदिहो, होदिहो,

होदिहो [म] होदिहो, होदिहो,

होदिहो [म] होदिहो, होदिहो,

विबर रभ संभ ६१३

द्विष (म) नष्ट, फटाटटा, कटा

दया, वेम्यावहित ।

क्षीना (द) क्षीय, दृवर ।

क्षीजना (प) घटना, क्षमना ।

क्षिप्र (स) जलद्वी ।

कुद्र कुद्र (म) नीच, स्वल्प,

तुच्छ मिथ्यावादी, छात्र

कुद्रा (म) रंगनी, गहना वि

शेष, कोछी बहि वाकी

क्षी । नाममाला में लिख्यः

क्षी । स्वादी मृदा काम

धुव, सकाल गेयुषः

क्षीयः । गुहा प्रवाल सुगो-

क्षाना, चान फला पुनि

क्षीय ३१३ यद कुद्रा वशि

पाव तत्र, रक्त एहि न

वादि । गहिं गग सीसी

वालसी, मिपट रधीकी

पादि ३२३

क्षिति क्षिति [स] पृष्ठी ।

क्षीन (द) दुर्धन, रहित ।

क्षुधित क्षुधित (स) भूषा ।

क्षीने (द) कटे ।

कोजहिं (प) घटादि, घटे,

कोजना, घटना, क्षमति ।

कुहे (प) क्षाजित, रवीन्द्र

विजित ।

कुप (द) घरे ।

कुस (म) क्षित, भूमि, वेग ।

कुप दहे प खाना, गुहा

कुप प रीक घटकाव ।

कुप न घरा, रीका कुपरा

कुप (द) टुकड़ा, तबका

कुस (म) कल्याण, सुख वेद

कुपना मगल क्षिपुषी

पुनि, भसिव गिर कदा

न । किल व क्षति वर

कुसल हे पः न कलि

मन न ३१३

कुद्वे [प] व धन क्षेपण

क्षिपणद्वार ।

कुद्वे [म] काटना, तोड़ना

कुल [म] वर ।

कुटना [म] वर । 'कुद्वे'

व कुद्वे, क्षीजना ।

कुसकरी [स] पत्नी विग्रेष

कुल [स] बाबा ।

हैला । [ द ] चक्रेत, बाडा ।

होर, होरप । [ द ] किमारा,  
चगर, पोर ।

होम । [ स ] कर ।

होगिप, होचिप । [ प ] राभा ।

होभा, होभ । [ द ] चवराइट ।

होडा । [ द ] माया, मोति ।

होदि । [ द ] होकि, होटिके ।

## ज

जग । [ म ] संसार, जंगम ।

जगजीवन । [ म ] मेघ, बादल ।

जगती, जगतीतली । [ स ] धर-

ती, पृथ्वी, मेदिनी, योग ।

जगत् । [ म ] पंचतत्त्वाकार, दृष्टी-

संसार, दुनिवा, चापनी

देह, देहकीही माता,

विता, जी, पुत्रादि ।

जगन् । [ स ] अवम, निन्दित,

नष्ट, नाश ।

जगत्पति । [ स ] पवन, वायु ।

जगदम्बा । [ स ] जगत्माता,

जगत की माता ।

जगदीश । [ म ] त्रिदेवा, ब्रह्मा,

विष्णु, महेश, राजा, ईश्वर ।

जगन्निवास । [ म ] विष्णु, जग-

योगी ।

जगन्मोनी । [ द, म ] मछी,

जगयोगी । [ व ] विरहि ।

जगम । [ स ] मेसधारी, विमेष,

चमनहार ।

जगन । [ प ] जाघा ।

जगन्मला । [ म ] कोटाकुम्हार ।

जगन्मल । [ स ] हरिण, सेवका-

तिक, मोनी, गाव, पोदि ।

जगन्मल । [ प ] जलर, चीर, फार ।

जंघा । [ द ] गांव । दोहा । ईद

नीच खंभा यया, रंभा के

पाकार । चहीवतं जंघा

जङ्गल, जङ्गल, मुनारि ।

जटा । [ द ] गिरिविषेय ।

जटाकुट । [ द ] जटा का कुट ।

जटा । [ स ] मुँह, पहरा । हंस

का जङ्गल ।

जटामासी । [ स ] जटामासी ।

जटायुः । [ स ] शुक्र, संपाति

मीष का भाई ।

जटित । [ स ] जटित, जटा ।

दोहा । कालिंदी रविच-  
पमी, कृष्णास्य मल चापः ।

यत्तु लमनः मम धमुट फलि,

प्रावत सुप्र पताप ॥ १ ॥

लमन (स) सुदस लाति, कास-  
यमनः ।

लमनिका (स) लारै, कजको

माया, लनाग । [मिका ।

लमन, ( स ) लीवा, युगम,

लमनार्जुन, ( स ) लभय कुबेर ।

पुन को लन्दन के द्वार

, गोशुन में श्री गारद लूके

मापते हय लीवा ली लो

पंगुवत भयो वयात् हापर

ली, श्री लण्णावतार होय

, श्रीयमोदागाता के लन्दन

, ली बाये कास वा लुपी को

श्री लण्ण लू भक्ता के माप

लनुपद कियों को बा पुनः

, दिव्य रूप होनी हो के

, लपुवत हति लाटि लमन

को गयो । हतियी-भाग

पत १- लमन लमन ।

लमातः (प) } लापु दब, लापु

(क) } कटक, लुण्ड ।

लमातः (स) } लमाट लमा

लमा- (द) } ल, पुनीपति ।

लम्यनि } (द) ली पुनय धंयुड,

लम्यत } लहापात ।

लम्युच (स) } लीटड लनवर,

लम्यक } लियार, लुदात ।

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,

लम्य (स) } लामन लामन,



अभयुत सब नाम यह  
 इकतीस । इमदि नाम  
 धकार धारे होत है वारी-  
 ग । शेष कंठ मृगाक  
 सुक्त होय धरहु जकार ।  
 भर धरे मीगदि कडिये  
 मेष धरे दकार ॥२॥ दोहा  
 जीवन जीवन जीवन मूल  
 सभोग नाम । राम  
 गीतका छंद ये, श्रीविम  
 लला मनाग ॥ १॥ नाम  
 गाथा में । दोहा । शंभु  
 जगत् कीकाल जल. पै-  
 पुष्कर वन धारि । अमृत  
 अरुण गोपन धन रस संवर  
 पापारि ॥ १॥ मेष पुष्प  
 द्विष. सधंभुष. कं कथं  
 रस तीर्थ । उदकपाश  
 संभर सलिल, अपव पीठ  
 पुनि मीय. ॥ २॥ पानी  
 नेन पपारि के, संतन  
 जायो नीम । मगट भई  
 विय श्री, सधी, निवट  
 सुधंभित दीन ॥ २॥

जलपति (प) भंवर, जल  
 कीट, जलभौरा जो जल  
 के प्रवाह में कबहुं सी-  
 धा कबहुं उछटा चलता ।

जलकामुखा (म) पकड़णी ।  
 जलकारिका (स) पानी में जो  
 सजीनी । [ पंहुखा ।

जलकुच (स) पनडूबा पची,  
 जलकुट (स) जल का सुरगा,  
 जलमुर्गा, मुर्गाबी ।

जलधर (म) जलजीव मीनादि  
 गहरी धादि जल के रहने  
 वाले जल, मत्स्यादि ।

जलधर (व) } बरस देव-  
 जलधर (स) } ता, जलध-  
 पति ।

जलज (म) } दो० । "जलज  
 जलज (स) } मीन, मीती ज-

जल, जलज संज्ञा पदचंद ।  
 जलज जलज जलज कि-  
 रत पुनि, हन पावत  
 गद नंद ॥१॥ मीन, मी-  
 ती, शंख, चन्द्र, जलजदि  
 जलजाल, जलवेत । दोनी





लस्यतः लस्यतः [स] पक्षकरत,  
 हयाकथन, वक्तव्य मिथ्या,  
 अभिमानकरत, गीघ पति  
 आचुर कथन, वक्तव्य है ।

लस्यता [स] मगंसा, बहापना  
 कथनो, झूठ । [कथादो ।

लस्यवादी [स] पक्षवादी, व-  
 लस्यसि [स] कथन करत हो  
 तुम्ह, तू वक्तव्य है लस्यता,  
 व्यर्थ वाद, वक्तव्य करत  
 हो तुम्ह ।

लस्यहिं [स] लस्यहिं, लस्यते है  
 लस्यता, वक्तव्य कथा ।

लस्येहि [स] लस्यत, झूठत,  
 झगुत, ।

लस्यो [स] लस्य विमेष ।

लस्यनिष्ठा [स] लस्यत, मेतः ।

लस्यो [स] लस्यनिष्ठ लो प्र-  
 थम, लस्य वर्गः पाए ते  
 मन्तागन् होतः है, लस्य  
 मिमिर भूतु मे, पक्ष होत  
 है हिंसा ।

लस्य [स] लस्य, यम्य, कीर्ति  
 लस्योमति यम्योमति [स] य-

गोदा, लस्योदा ।

लस्य [स] लस्य, लस्य की,  
 लस्यो, लस्यो ।

लस्यपति लस्यपति [स] लस्यो  
 लस्योपवीत लस्योपवीत [स]

लस्यो [स] लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

लस्यो [स] लस्यो, लस्यो ।

दुःख, गरुडकुण्ड, पीडा,

पीरा, तोम वेदना ।

जातवेदः (न) अनसु, अनि ।

जातरूपः (न) } सुवर्ण, सोना ।  
जातरूपः }

जातविभ्रनाः, (वि० स्त्रियः)

दृष्टा है चरन्ना जिन की

पर्याप्तः चरित ।

जातवतुर्विवाः ४:—(स) माघ-

व, चवो. वैश्य, शूद्र ॥४॥

तादे कर्म पार्थिव ॥ श्लोक ॥

समीदमस्तपः शोधं दान्ति

राज्यं निवृत्त । ज्ञानविज्ञान

मास्तिष्यं द्रष्टव्यं स्वभा-

वतम् ॥१॥ ग्रीष्मेनो धृति

दर्शयुते चाप्यवसायनम् ॥

दानमीश्वर मावय चात्रं

सर्वस्वभावतम् ॥२॥ क्षुधि

गोरक्षवादिष्यं वैश्यकर्म

स्वभावतम् । परिपूर्णाज-

कं चरन्नापि स्वभाय-

तम् ॥३॥ ॥४॥

जापकः (ह) नंदन, दापक ।

जापता (न) मांगता है ।

जाति- (न) सामान्य एक वि-

रादरी । [ मांगता ।

जाषा- (द) मांग, जाचना,

जातिनमिका- (स) चमेत्तीपुष्प,

जातिकीम- (स) जायकम ।

जातीपत्रः (स) जावत्री ।

जातीफलः (स) जायकम ।

जातीफलत्वक- (स) जावपी ।

जातु- (म) कदाचित्, कबहिं ।

जातुधान- (न) राघव ।

जानपनी- (प) स्वरूप ज्ञान ।

जानामि, (न) जागता हूं मैं ।

जानिषी- (स) जातव्यं; जानव,

जानियेगा । [ याग ।

जान- (द) ज्ञान, जीव, सवारी

जानु- (म) } जांच, जेपी,

(म) } जेंवा, घुठना ।

जानी- (द) ज्ञानी, ज्ञी ।

जापक- (स) जाप करेया, जाप

करनेवाला ।

जावालि- (म) क्षुधि विनिय ।

जाग याम- (स, द) पहर ।

जामाह- (म) } जेंवाई, दाना-

जामात- } है ।

जानिह दानिह- (म) जानिह,

रघु, सुयमंभा, पद्म,  
पादरु, पद्मपा, शोको-  
दार।

लामक. (द) पादरु।

लामाता (द) दामातृ।

लामिनि. यामिनी. (म) रात्री,  
रात।

लाम्बुदः (शु) सोमा। [अर्थ  
लाय. (स) पुत्र, कङ्का, पुत्रा,  
लाम्बुनी (स) लम्बु पक्ष पक्षार्थि

का नाम उस को लङ्की,  
गंगा, भागीरथी, लम्बु त  
गया, कहते हैं कि लम्बु  
लम्बु राजा की तप करते  
थे तब गंगा की भारा से  
गंगा कुल हुए तो गंगा की  
सहायकी की पीनये कि  
देवता की के कहने से पीछे  
पेट से निकाल दी, रही  
सिये भागीरथी को लम्बु  
तपसा पर्याप्त लम्बु राजा-  
र्षि की भेटो कहते हैं।  
चोर कहते हैं कि गंगा की  
को राधा भागीरथ, तपसा

करके जग में पृथ्वी पर  
लाया इसी सिये। इनका  
नाम भागीरथी पड़ गया।  
नाम भासा में लिखा है।  
दादा। विष्णुपदो निर्ज-  
रुदी, सदाशक्ति हरि  
रूप। सुरमरि सुरपुनि  
लाम्बुनी, साजन विद्या  
पत्रप ॥ १ ॥ गंगा त्रिभि-  
ल्लोकीक से, पापहारि-  
सुभचारि। तिमि तुप  
विद्यकीरति शक्ति,  
कर पुनोम नर नारि। १॥  
चौर गंगोदक छंद। जैति  
थो लाम्बुनी गंग माहेमरी  
देवि विमोहरी कोल  
सहारनी। विष्णुपदो-  
दकी भीष सु यैतनां सर्व  
मोवोपसेतापह नाथ  
भी ॥ भाष्य नेकुठ पारोह  
भागीरथी विम्व देवधनी  
भोकका पावनी। चह  
रामान को छंद गंगोदक  
गोदक दादयं नाम सदा-

दिगी ॥ १ ॥

लाया [उ] ली, अवसा, पुतो.

एत्यप, जना, गिप्या ।

लार (प) ठार, मव पुरार

दार, सपपति, धंगड़ा,

कमवा, सुवन । [कजू ॥

लारा [ह] कलाया, लारना

लारि [ह] ललहे । [दुष्टागारी

लाभुहा [स] अभिचारिणी,

लाल [ह] भरीवा, भंभरी,

गन, गृहभ, मन्द, भगव,

फन्द, गानस विद्यालगत्,

बिहिवो भूपव, नाया, स

सूद, फन्दा, लाली । पने

कार्यमें लिखा है । दंडा ।

लाल भरीवा लाचगन,

लाच दंगची मंद । लास

फांस विद्या लगत्, निरसि

न तजिजिन मंद ॥ १ ॥

लालितो (स) लीगो ।

लालक (स) लली ।

लावक दावक [ए] महावर

लाकी प्रसता नाम जियन

वासी मधु-रंगावति है ।

लायाली (स) एक वृद्धि का

नाम । [लग्नत है ।

लायन [उ] लीय लाने दधि

लिपाने [ह] बाले ।

लिजिनी [स] लीगनी ।

लिङ्गो [प] गङ्गीठा ।

लिघाहा [उ] पूछना, प्रश्न,

लागने की इच्छा ।

लिघाह [स] पूछनिहार, प्रश्न-

कर्ता, लागने की इच्छा

वाला । [कै ।

लित्वा [स] लीत कै, लयकरि

लिनस [फ] जाति ।

लिनिस [फ] अथ मरु, बीड़ा

लिमि [प] लैमें, लीन तरह ।

लिरु [स] इन्द्र, पत्नि ।

लिहा [स] लीमा लीग,

रसना । [कपटी ।

लिह [स] लगर, पादप, मूर,

लिहगुभोगो [उ] कर्प, व्याघ,

नाम ।

लीर [स] मोचीन पुराना

वृद्धा । [ए] राज ।

लीन [फ] छोड़े के पीठ पर



नंद दास के ही ३१३ । गुणविधि- [न] शीत, चण्ड, दो-

विधि का व्यवहार ।

गुणविधि- गुणविधि- गुणविधि- [प]

रुद्धता, संगी, रुद्धता,

महत्वा, महत्वा ।

गुणविधि- (प) शीत, भगवन्-  
गी, शीत विधि ।

गुणविधि- [न] शीत, रुद्धता, रुद्धता,  
ना, शीत, रुद्धता ।

गुणविधि- [ट] पायसागम, दण्ड  
वत्, रुद्धता । [म] शीत ।

गुणविधि- [द] शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- (द) शीत, शीत, शीत

गुणविधि- गुणविधि- [द. २] गुण-

र. नायक राधाधिवारी ।

गुणविधि- गुणविधि- (द. ३) गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

गुणविधि- (द. ३) गुणविधि, गुणविधि ।

जै. ( द ) भोजन किया, जेव  
नार खाना ।

जोऊ. ( द ) देखना, जीवना ।

जोहा. ( द ) योग अष्टांग योग,  
गिराफ, सत्य, दोनों,  
जोही ।

जोगम. ( स ) जलमेवासे ।

जोगयत. ( द ) परिष्कृत, खबर  
दारोकरना, जतन करना ।

जोजन. ( द ) योगन, चारकोश ।

जोती. ( स ) ज्योति, प्रकाश, २  
सूर्य ।

जोनी ( द ) योनि, कारण,  
जाति ।

जोवा. ( द ) देखा, जीवना, दे-

जोयिता. ( द ) योमित, स्त्री ।

जोहार. ( द ) प्रथम किया, जो  
हारना, प्रथम करना ।

जोही. ( द ) देख कर के, जीव  
कर के ।

जंतु ( स ) पुत्र जीव ।

जंतित. ( द ) जंतित, ताका दे  
दिया ।

जंजी ( द ) वय किया ताका दे

जंबू ( स ) जासुन ।

जंबुक ( स ) सिंधार, गृहांत ।

ज्याय ( द ) जाने, ज्यादा, पा-  
सुमा ।

जोर जोर ( प, द ) { जोर, त-  
जोर जोर- { काग, देखी  
नीरनी ।

जोवना ( द ) राजदेखना, जी-  
वना ।

जोवा. ( द ) देखा, जीवना ।

जोहार जुहार ( द ) गहरा,  
सुख ।

जात ( स ) विदित, ज्ञाना

जातव्य ( स ) जानने के योग्य ।

जाता ( स ) जागो, बुद्धिमान,  
जीवक ।

जाताजात ( वि० कः ) जाना  
दे लाद जगनी ।

जाति ( स ), जाति के योग, प-  
रिष्कृत ।

जान. ( स ) जान के जो हुआ,  
बुद्धि, समुक्त मान, दा-

निग, चक्रित, मर, दा-  
रासार, जानना, दा घासा

विष्कार, कृष्ण, बुद्धि बुद्धि को

पुनः ज्ञानना, या सीनि  
प्रकार, वर्षायम ज्ञान,  
माया जन्म ज्ञान, अनुभव  
स्वरूपाकार ज्ञान इ। मन्त्र-  
प्रोक्तिकां च पाय, बुद्धि, यत्ना ।

ज्ञानरंज. (स) ज्ञान रचित ।

ज्ञानी. (ग) चतुर, बुद्धिमान् ।

दोहा । कीर्तं पुमस्य बो-

विदम पुनि, एन प्रवीन

तिस्ताति । पर विदन्ध

नागर कीज, जानै रस की

पात ॥ १ ॥ [ पादि ।

ज्ञानेन्द्रिय. (भ) मन, बुद्धि, चक्षु

आपक. (घ) प्रचारक, कर्मज्ञ

द्वारा, याज्ञादेनेवासा ज्ञा-

ननेवासा :

ज्ञाननं. (स) ज्ञानविना, प्रका-

शना, ज्ञानाग्रा इष्टिहार

देना ।

ज्ञानानि. (स) ज्ञानिमा तु ।

ज्ञेय. (स) ज्ञानवेद्ये योग्य ज्योन

विषे ।

ज्या. (घ) माता, पृथ्वी, धनुस्

का विज्ञा, पतिज्ञा, कमान

का रीटा ।

ज्येष्ठ. (म) दहा, ज्येष्ठ, प्रधान,

उत्तम, एक गङ्गीने का

नाम ।

ज्येष्ठबंधु. (म) दहाभाई । दो० ।

अमृत पुर्वज ज्येष्ठ युत, गये

स्याम नृपदार । मत गयेष्ट

निपाति युगि, कीन्हे दंत

उत्तार ॥ १ ॥

ज्येष्ठा. (स) बड़ी, ज्येष्ठा, उत्तमा,

१८वां नक्षत्र, गंगा ।

ज्योति. (म) किरण, नक्षत्रगण,

नेत्र, अग्नि, मन्त्र, प्रकाश,

ज्योति । दोहा । ज्योति

मयत गन ज्योति दुष्ट,

ज्योति नेत्र अरु आग ।

ज्योति मन्त्र जो धिर रहै,

रहस्य जगत् शिदि लाग ॥ १ ॥

ज्योतिर्लेख. यत्नवि, (वि० चर्चम)

तारों की पंक्ति का चक्र

है जिस में ।

ज्योतिष्शास्त्रायाङ्गुमरचितानि,

(वि० स्थानानि) तारोंकी

छायांरूपी मूल जड़े ह



जिन भे ।

व्योतिगन्धाः (स) मेथी ।

व्योतिगन्धाः (स) } ज्ञानकोनी ।  
व्योतिगन्धाः (स) } [कगन्धाः

व्योतिगन्धाः (स) नक्षत्रगन्धाः विचार

व्योतिगन्धाः (स) तादा, चमक,

चाग ।

व्योतिगन्धाः (स) चाग्रगन्धि, च  
श्रिता, चाग्रगन्धि ।

व्योतिगन्धाः (स) नाका, तप, वन,

मीडा, मीर, मंताप, श्लेग

भय, दुःखार ।

व्योतिगन्धाः (स) चमि, गन्धा-

भ, तपन, श्लेग ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

व्योतिगन्धाः (स) कन्धागा, भवेकाधे ।

ठादे भये, हरपि वचन

रघुराय ॥ १ ॥

भ

भं (स) वृद्धगति, ईद, मन्द,  
धनि ।

भं (द) वृद्धगति, निरमिरागा,  
पांशु के पागे, मंथेरा ।

भं (स) भं (द) विनावति  
के वृद्ध, विन पत्ते के पेट ।

भं (स) भं (द) विनावति  
के वृद्ध, विन पत्ते के पेट ।

भं (स) भं (द) विनावति  
के वृद्ध, विन पत्ते के पेट ।

भं (स) भं (द) विनावति  
के वृद्ध, विन पत्ते के पेट ।

भं (स) भं (द) विनावति  
के वृद्ध, विन पत्ते के पेट ।

भं (स) भं (द) विनावति  
के वृद्ध, विन पत्ते के पेट ।

भं (स) भं (द) विनावति  
के वृद्ध, विन पत्ते के पेट ।

भं (स) भं (द) विनावति  
के वृद्ध, विन पत्ते के पेट ।

जनजाती । [ इषा ।  
 भोक्तृना (२) विद्विष्टा । क-  
 भोक्तृना (२) संस्कृत में भोक्तृ-  
 कार, भोक्तृ ऐना शब्द,  
 ल परना, ठनठनागा,  
 टुगटुगाना, बजगा, पोर  
 पड़पड़ाना । [ भोक्तृकार ।  
 भोक्तृना (२) विद्विष्टा ।  
 भोक्तृ (२) जलपात्र, झण्डा,  
 घुराई, भोक्तृ ।  
 भोक्तृ (२) जागी, भोक्तृ ।  
 भोक्तृ (२) भोक्तृ, पांथी, भोक्तृ,  
 भोक्तृ मनीत पांथी ।  
 भोक्तृवा (२) पंचडपदम,  
 पांथी ।  
 भोक्तृवा (२) पंचड, भोक्तृ ।  
 भोक्तृ (२) गिरीज, धना, प-  
 ताजा, परपरा, दितु ।  
 भोक्तृनि (२) वही पांथी ।  
 भोक्तृ भोक्तृ [२] नूतनी ।  
 भोक्तृना [२] पत्नी के घनेवा,  
 दुरंगी, पत्नी के घना  
 हण, दासी के घनादिर ।  
 भोक्तृना (२) धूप के हण रं

होना, भोक्तृ के पांथीना,  
 सुखाना । भोक्तृना, धूप  
 के विरचक ।

भोक्तृना (२) । इषा काम  
 करना, निरर्थक काम क-  
 रना, यह कहनायत दूसरे  
 की सहायता पध्यात् इनकाई  
 कताने के लिये बोझा  
 जाता है ।

भोक्तृनी (२) लीनाजानी,  
 भोक्तृ भोक्तृ, खैराखैरी,  
 लूटपाट, भोक्तृना ।  
 लूटपाट, लीनाजानी ।

भोक्तृना (२), बजगा, बजबज  
 करना, विदाप करना,  
 हाय हाय करना ।

भोक्तृ (२) दोहरी, घुंवा, ट-  
 री, दूध दुरंगे की क-  
 टिया, दुरंगे का पाव ।

भोक्तृभोक्तृ (२) भोक्तृभोक्तृ, ल-  
 दाग, लोभना ।

भोक्तृना (२) खाना, लोभ  
 पांथी में भोक्तृ, दनागा,  
 दिताना, भोक्तृ, भोक्तृ



भटके से नारी दुपा, छ-  
पीटा, भीरा, ली छटके से  
नारायण, फाड़ानदा ।

भटवागा (२) भटवा लगाना  
भटपट (-६) भटमे, तुरंत,  
उतावला, ग्रीष्म ।

भटास (२) भटास, दोलार,  
भटि (२) भटाह, दूटा, रुपहा ।

भट (२) भट्टी, तासा विगैव,  
ताले की कल, एसे भरह  
दा ताहा, पाँचन ।

भटन (२) पगल, दली का  
फूल, टरकन, लैसे फल  
पटकार गिरते हैं, दली की  
टेन का फूल ।

भटना (२) गिरना, टरकना,  
बूना, लैसे पीड़ में फल  
सदवा पत्ती, पगल होना,  
निकलना, दलना, नीरत,  
बलना, उदायना ( लैसे,  
नीरत ) । [ समर ।

भटप (२) दहुयाइट, हंगल,  
भटपना (२) सड़ना, भटपटा  
भटपटी करना, सड़ना

भटपी करना, नारायारी  
करना, पला करना, दम-  
का करना ।

भटपा भटपी ( २ ) सड़ना,  
दुपटादुपटी ।

भटपानः (२) सड़ना ।

भट परना (२) सब का सब  
भटना ।

भटवेर ( २ ) लंगसी बैर, बैर  
का पीड़, बैर की भट्टी,  
दुंदरी बैर, भट्ट भट्टी ।

भट्टरी (२) लंगसी बैर ।

भट्टाना (२) भट्टाना ।

भट्टाक, भट्टाका ( २ ) उता-  
वली, फुल्ली, हलदही ।

भट्टास ( २ ) चटपट, धांग  
दोड़ना ।

भट्टाना (२) भट्टा दिसवाना,  
भट्टा फल कराना ।

भट्टी (२) जगातार छटि पीर  
दुपरी माति, जगातार नैर

भट्टना ( २ ) [ समर ।

भट्टीता (२) कलाहि का रंत

भट्ट (२) भट्टा, भट्ट, भट्ट

## 3

तुम न समन (२) विमन, तामि-  
न टीव विमन, निधुन  
विमन।

सहस्र '५' सितार ।

ਸਤਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ॥ ੧ ॥ ਸਤਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ॥  
ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ॥ ੧ ॥

ਨਮੁਨੇ ਦੇ ਬਲਿ ਨੇ ਭਰਾ ਹੈ,  
ਨਮੁਨੇ ਦੇ ਬਲਿ ਹੈ।

टि० वि विद्या, टीका :

२१०. ५. ५५५५ ।

॥ ३० ॥ (१) विष्णुः । विष्णुः ।

[illegible]

५३ (१) ०५.०१, १४५५६।

॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

2015 年 10 月 1 日

[illegible][illegible]

॥ १३ ॥

ग लिया है। दो० । विष्णु  
 नाम मंत्र और नाम, यों  
 राजा छवि हैं । 'मनसं'  
 वसीने नाम ली, मुँह पर  
 मूँदे मेम ॥ १ ॥ और दूसरी  
 एक और भी छोड़ा मविह  
 है । 'काम' विष्णु, वगु ये  
 दूरत, अमल्य मति छवि  
 दिन । 'काम' योग्य मर ना  
 मितो, वदि वदि के वय  
 मेम ॥ २ ॥

## ५

अमे (५) दिनांक ।

५६३ ॥ १ ) अत्र, विष्णुविनीत.

कटः । स्तः न, दिष्टः ।

हस्त ३ ५ ५५ १५१५ १५५

2733: (क) राजन, गान्धारी

ଉତ୍ତର (୩) ବାହାରିଥିବା ଧାନ

કચ્છના કચ્છના (૧) જુદા

की माद्री का जोगविजय

पुस्तकें को नष्ट हो गई। १९५१

॥ १ ॥

अथर्ववेदः (४) विष्णुः, २८३

उत्ताना ।

उत्ति [ट] काट करके, उमना  
काटना । [संज्ञा ।

उत्ताना (द) विहायना, उटा-  
उत्ति (द) ठठा कर के, उट-  
ना, ठगना, उटा-  
भाग । [भेद ।

उत्तरणा (द) नाम रोग गुड़ा  
उटा (द) भाग टा लगाना ।  
उट्टे (प) लसे, लरे, पडे ।  
उत्तर (प) गहवा, विष्टमबी,  
गोना तलाव ।

उत्तर (द) गहवा ।  
उत्तर (द) रासन घसादि,  
विष्टोना, दमोना ।

उत्तरी (द) विष्टाई के, पोष्टाई  
के, विष्टा करके । [वाभा  
हिंदी (म) एक प्रकार का  
हिंदी [म] समुद्रपिन ।  
हिंदी [म] हिंदी ।

हिंदी [प] बोली विष्टा,  
वाभा, एक प्रकार का वाभा ।  
हीना [म] वाखंडे, नुये, वासक,  
नुये ।

हीठा [द] देखा, दृष्ट ।

हीठी [द] दृष्टि, देखी ।

डिक्क [द] डिक्का । [भेद ।

डुमर-डुमर [स] डुमर, गू-  
डो [प] निवास, राग, तन्पू-  
घर, भेगा । [हिंदीना ।

डोना [द] डोना, तना, व,

डोना } [न] करिषमा ।  
डोना }

डोना [प] गन्नामी पासकी,  
गई, गयी, डोना ।

ठ

ठनमनी [द] नोट वा गई,

लुटुन गई, ठनमना लुटु-

दुगना । [टाका ।

ठका [म] बड़ाठाका, ठका,

ठाकर [द] गैला, गदेला, खी-

वडा । [गारा, समीप ।

ठिग [द, निश्चय, नगीच, बि-

ठिग (द) टटीनरी पछी ।

ठेक-ठेक [द] पछी निश्चय मा-

रन, पछी । [विष्टा, डेटा ।

टोटा [द] वासक, लुटुना,

टोना [द] टोका, एक भाग ।

टरी. [ द ] खोजी, उठोना,  
धोना ।

रा

राग [ उ ] सिरसगतो उपा  
[ ण ] रण ।

रां लाहा रां रां लाहा [ ग ]  
मल्ल गदाविद्या ।

त

तद्धितः [ र ] सिरसने रङ्गनेका  
विशेष व्यवस्था, सिरसने  
की वस्तु विशेषः । दो० । उप  
वरुण उपवास मुनि, ऊं-  
दुव कोरे लीय । गुरु त  
विद्या भी उठेनि के, धेदी  
तिष्ठ रसभीष्ट ॥ १ ॥

तल [ म ] मडा ।

तल्लविद्या [ व ] वडिभीरी ।

तल्लविष्टः [ वी ] लटा हथा दूध  
को पानी निचका ।

तल्लरः [ म ] तल्लर ।

तल्लरव [ व ] दोनी तल्लर ।

तल्ल [ व ] लाभ, विचन, छत्र  
विशेष लेखना ।

तल्लपनी [ द ] समूह ।

तल्ल (म) लागी, जागी, लक्ष्य  
ज्ञान, (गद्, बड, घ, ग)  
मल्ल ।

तल्ल [ उ ] किमडा, तीर, कडा-  
रा, गिळट, लयादिक का  
कनार । दो० । कुल पति  
मल्लकठ तल्ल, मल्ली रोषा  
तीर । सोमा मंगा तल्ल  
लसे, लक्ष निगाद लुलीट  
॥ १ ॥ लल्ल मल्लग देवधनी,  
लक्ष्य विद्या । लुलाय ।  
मल्ल नाय मल्लगी लल्ल,  
लोले ललील्ल लल्ल ॥ १ ॥

तल्लगी [ व ] लली, लल्ल ।

तल्लगः [ म ] ललील्ल लल्लग,  
तल्लग { लल्ल लल्लग । दो० ।  
लल्लग लल्लग लल्लग लल्लग }  
मि, लल्लग लल्लग लल्लग ।

तल्लगल्ल लल्लग लल्लग, लली  
लल्ल लल्लग ॥ १ ॥

तद्धित-तद्धित (म) विचनो,  
विचनो, विचनो, लल्लग ।

तद्धित- [ उ ] विचनो ।

तद्धितवर्ग [ व ] लीय, लादल ।

तत्पुत्रः [अ] आनन्द, वृद्धाश्रम,  
आनन्द ।

तत्पुत्रः (अ) तीक्ष्ण, शीघ्रानन्द,  
ईशानानन्द, दीप्त, तर्क,  
वद ।

तत्पुत्रः [अ] शीघ्र ।

तत्पुत्रः [अ] शीघ्र, तुरन्त, एकी  
समय, पौरुष ।

तत्पुत्रः [अ] तिगकी लता, तु  
लसी लता ।

तत्पुत्रः [अ] तद्वत्, तदासक्त, सं-  
वन्, समग्रान्न मन विना  
समाये वृत्त । [यादि ।

तत्पुत्रः [अ] कार वन्तु प्रकृति

तत्पुत्रः [अ] विचार, पद्यतत्त्व,  
आकाश, वायु, तेज, जल,  
पृथ्वी १५३ कारवन्तु, आकाश ।

तत्पुत्रः [अ] समग्रज्ञान यदा  
यं ज्ञान ।

तत्पुत्रः १५३ [अ] गिर,  
दंठ, उदय, उदर, वटि,  
१५३ इति पद्याम् । धावन,  
कुदग, वसन, सकुदग, प-  
सारप ३ ५ ३ इतिवायु ।

शुद्ध, पिपास, आनान्ति,  
आनन्द, मित्रा १५३ इति  
तेजः । १५३ विपः सोद,  
लार, दभिर १५३ इति  
लक्ष । अक्षि, भनि, त्वना,  
रोम, नाही १५३ इतिद्विती ।

तत्पुत्रः [अ] तदादिषु, तर्क, त-  
क्षिण, वद, तर्क ।

तत्पुत्रः [अ] शीघ्र, तत्पुत्र,  
तक्षिण, वद ।

तदा- तदेव [अ] तैमहिं, तीक्ष्ण  
प्रकार, तैवे, तुल्य, पर्ववत्  
समी तरङ्ग, ऐवे ही उभी  
भाति, तैवे ही ।

तदापि [अ] तीक्ष्ण प्रकार भी,  
तीक्ष्णप्रकार निश्चय, तीक्ष्ण ।

तदा- [अ] भव्य, साक्ष ।

तदा- (अ) सङ्कपचाता [तद,  
वद, अ, सागेनेवाला]

तदापि-तदापि [अ] तीक्ष्ण वरप ।

तदनु- (अ) वस हे पीछे ।

तदापि- [अ] तीक्ष्ण ।

तदा- [अ] तीक्ष्ण, तक्षिण् समये  
तिस्र समय, समयत् ।



तदागीम् [स] तव ।

तदापि [स] तदनिघय, तद्गी

तद् [स] तव, तौन, तिष्ठ काच,

पीष्टे, वव ।

तम [स] { गरीर, जेव, चोर,  
[व] { दौ० । तम गरीर  
(विस्तार तम, तम

सूचन तम तात । तम

निरको कोज जगत, पुने

ए हरिहर भाग ॥ १ ॥

तमय [स] पुन, वाक्य, संताप

योकाद्, वेडा ।

तमकाक [स] चोरा भी ।

तमय तमयी [स] पुनो, वा-

निका, वेडी, कन्हा ।

तमतीव [स] गरीरवाक्य ।

तमानु तमोनु [स] विस्तार

करी, विस्तार करमा ।

तनु- (स) विस्तार, गरीर, वृत्त

विरकाशन, तनय योका,

यन्य, दुवना ।

तन्मुक्तानामयः [स] वि० वृत्त

काका । वृत्त को काकी दु-

यासार, विव का वृत्तान

जाधियो मे कटकती दुई ।

तनुवक (स) दासचोनी ।

तनुग (स) पुन, वाक्य ।

तनुमा (स) दुवकापन ।

तनुना (स) वृत्त, वेडी ।

तनुनये (स) काया, गरीर ।

तनुवक तमोवृत्त (स) वृत्त,

वय, तम मे चो जन्मे ।

तनोनु (स) विस्तार करी, जे-

काको विस्तार, कर, जे-

वाधि विस्तार करमा ।

तनु (स) वृत्त, ताग, वाग,

वंग गति, ताग, संताप,

तार, वृत्त ।

तन्मुक्त (स) गरीर ।

तन्मुक्तयः (स) वृत्त ।

तन्मुक्तय (स) वृत्तकाका तन्मुक्त ।

तन्मुक्त (स) वृत्तकाका, नोकीतीव ।

तनु (स) ताग । वृत्त । तम

ताव को तंव वृत्त, विव

चोवचो तंव । तम वृत्त

संताप वृत्त, हरिहर भा

तनु तम ॥ १ ॥

तन्मुक्तः (स) वाक्य ।

तन्दुलाः (२) वाभिरंग ।

तन्दुलीयः (३) चवराईसाग ।

तन्दुलीबीजः (४) चवराईभाज

का बीया ।

तन्दुलीरसः (५) चवराईसाग ।

तन्तः (६) यजीमन्तः, टोटका,

शरका विविध बाजरा ।

तन्त्रिकाः (७) गुरिच, ।

तन्त्रीः (८) बाजाघर, वजन्त्री,

बाघकार, गादन, बीना ।

तन्त्रीतरुः (९) धनद्वय ।

तन्त्रायः (१०) शङ्खर, चमीद ।

तन्त्रायः (११) तिनकी माया ।

तन्त्री (१२) प्रतनी ।

तपः (१३) ताप, सङ्गर, तपस्या ।

तपनः (१४) सूर्य, सङ्कर, गरमी,

ताप ।

तपनीयः (१५) सीन्ध, दुग्ध

तपनीयः (१६) सूर्य ।

तपस्विनी- (१७) सटासुखी ।

तपनी (१८) तपस्वी, योगी, चर्चक ।

तपोधनः (१९) तपस्वी, बाघाघ,

सुनि, ददना ।

तपोधनः (२०) सुन्दरी ।

तपस्यदः (२१) केला ।

तप्तः (२२) तप्ता, तपत, गरम,

उष्णः प्रत्यक्षित खिदातुर

तपाया हुपा, तपा हुपा ।

तपस्विन् (२३) तप करनेवाला

तपस्वी ।

तप्तः (२४) तन्हारा, तत्काल,

(२५) तीनसमय, तत्क्षण,

तपस्वितः (२६) तुम्हारा हित ।

तपाननः (२७) तुम्हारा दुःख ।

तपाः (२८) विलस, भरने की

ठीकरी रोटी, पकाने की

छाँटे की पात ।

तप्तः (२९) उब की ।

तप्तः (३०) दी । "तप्त तानघ

इति राहु तप्त, तमण ति-

मिर तन कोष । तप्त श-

प्राग की उरहु धरि, उर

धरि दीप प्रदीपः ।" पञ्च

कार, चर्चक, गुपतामस,

कोष, राहु, उद्यान, पद्मा-

न, चन्देरा, तनोदुष, च-

तन्त्र ।

तमकि (३१) तपकि, कोष है

मै, कूदि कै, सरोप फाकर  
 है, तमक करके, तमकना ।

तमसरा [स] चम्पारी रासि ।

तमस, (स) चपेरा ।

तमन [स] चंभकार ।

तमना [स] नाम नदी ।

तमनिमी [स] रासि चम्पेरी  
 निमि ।

तमादि [स] धूर्त, चर्च ।

तमाज [स] दक्षिण पश्चिमदेश

द्वारा, द्वाभयचं, चन्दनकी  
 टीका, हयविजय । दो० ।

आज कंच तापीय पुनि,

कंच कंच तमाज । वेडे

रहे कंच काच रज, गू चस

मोहन काच ।

तमाचर [स] मजपात ।

मजका [स] मेरका ।

नमिच [स] चम्पकार ।

तमिच [स] चम्पारी रासि,

तमसरा ।

तमी [स] रासि, निमि, रात

तमीचर [स] निमिचर, वादुर

चादि, राचच ।

तर [स] } अधिक, बहुत, तमे,  
 [प] } गोरे, भीगा, भीका,  
 [फ] } तरे, तन, चत्तन ।

तमोदक [स] रोम, रोवा भीम  
 रीरमे दुपडा । [लि, तन] ।

तरच [स] विचार, चतुभागी

तकि [स] विचारि है ।

तरच [स] लाच । [तकपना]

तरचत [स] तकपता, तरचता,

तरचन [स] कराना, तरना,

कूदा, तरचना, कूदना,

मिम्भकारना । [चंगसी]

तरचनी [स] चंगुठे के दास की

तरचन (स) कूदना, विचारना

तरकारी (स) मतिचार ।

तरके [स] तरपे, फाँटे, भीरे,  
 पकड़ते ।

तरकेच [स] कूदेक, फाँटेक,

कूदा, तरचना, कूदना ।

तरच [स] ठीक लय का, च

हरि, नमक, चहर । दो० ।

मंद तरंग कथोन पुनि,

भीभी तरमि प्रभाक । च

चरो चाच चमादि चन,

कमुना पकरति पाय । (१)

मीर हूँ तो खान पर लिखा  
 है । दो० । हरि विहार  
 यमुना करत, दोषी लख-  
 रि तरंग । हृदयका क-  
 लीम पुनि, चबली हरनी  
 भंग ॥ १४

तरङ्गिणी- (स) नदी, सरिता ।  
 तरङ्गी- (स) समुद्र, जल, दल-  
 वली, वहाववाली ।  
 तरङ्ग- (सु) लल, चालित,  
 बहाव ।

तरङ्गनाद- (स) नदी चालित  
 तरङ्ग नाराज } समझे तरङ्गपत्नी  
 तरङ्ग नाराज } श उगारव, पाद  
 तरङ्ग पीर को नारे ।

तरङ्गि- तरङ्गि- (न, द) सुनि,  
 विहार, हिरण, नाव ।  
 तरङ्गी- (स) नाव, नौका, निवृ-  
 त्तिविन दारिद्र्य में विवृष्ट या  
 तरङ्गी का नाव लिखा है ।  
 खानखान मुह विवृष्ट धीर  
 दान । हे निषाद वेदवर्ज  
 दासी पाम । मासी मोहि-  
 त तरङ्गी हृदयका नाव ।

हृदय पीत तरि गीया  
 वेगदि बाहु ॥ १५ गंग  
 पार छै रघुवर मन समु-  
 दान । नारदाय पुनि भेटे  
 काय प्रदाय ॥ कीन्ह गगन  
 पुनि चानी रघुजुलबंद ।  
 कल हादय पुनि सतं पर-  
 दा छंद ॥ १६ [ पद ।

तरङ्गु- (स) कुत्ता, चूहा, बटुः  
 तरङ्ग- (स) चञ्चल, हुदक,  
 दिकता, तीव्र, चोटा,  
 तरङ्गी, मान्दा का सुनिद,  
 नाचामध्य का दागा पी-  
 भिन, लोच, लोटा, पल्लिर  
 अतिप्रदल ।

तरङ्ग-तरङ्ग- (न) बड़ाहय, नाव ।  
 तरवार- (स) पत्र चक्रविनीय,  
 तलवार । दो० । विविध  
 हुनेह दायजि ली संवत्सरा  
 दरवाज । एह भितो  
 लीतो ली, पदं दारत लत  
 दाग ॥ १७ दारदा ॥  
 बल्लरिह ली वेदल  
 पल्लिर दाग । बंझ-

वाम करवाजदु सङ्गल ।

वाङ्म ।

वाम ॥ अङ्कल य 'मङ्गिमक

तर्जितर्जित- (५) } कदम, धा  
तरजल (६) } दग, ताकल

कटि म वाम द्वाटम मया

कोष, तङ्गवत, शर्ज, तङ्ग-

मया करवा नाम ॥ १ ॥

धता, तरजला, तरजला ।

तरी- तरीच (५) मोखा, नाव

तर्जित (५) } तोङ्गल, तर्जित,

तर्ज (५) उत, वेङ्ग, कण, तर्ज

तरजल (६) } कोष, शर्ज,

वर, द्वाटल ।

भित्तकारल, तरजल, कर्ज,

तदकर (५) नाव, मोखा ।

तरजला, कर्जला ।

तदकर (५) { गुवा, योगल, न  
तदकर (५) } गोत, तदकर, नवा

तर्जित (५) { भित्तकारल,  
धमाकाला, शर्ज  
(६) } ना ।

कवाग की, गुर्जितर्जित ।

तदकर (५) कवाग, गुर्जित

तर्जित (५) { (५) नाम द्वाटल

तर्जित (५) { की. द्वाटल

या, तदकर ।

तदकर (५) युवती, वसती ।

य, द्वाटल के द्वाटल की

कर्जली ।

॥ तर्जित ॥ गुर्जित ॥

तदकर (५) सगुव । [विना

तर्जित (५) { तर्जित की द्वाटल

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तर्जित (५) { तर्जित, तर्जित

तत्प. (ग) मय्या, मीन, मंथ ।  
 तत्प. (ग) देवा । [चोर ।  
 तत्प. (ग) चोरजन, चाकू  
 तत्प. (घ) चोरी, कोचिनी,  
 उक्षेती ।

तत्प. (ग) तिज्जे, तिमन्त्रि  
 तत्प. (ग) तद्वा विजे, तिमन्त्रि  
 तत्प. (ग) तद्वा, वस ठाय ।  
 तत्प. (ग) मर्पराज, मर्प ।  
 ताः (ग) वेष्टिनी । [मतलब ।  
 तात्प. (ग) अभिवाय, चायन,  
 तात. (ग) चोरराज, तातो का  
 यत्न । [द्वे धुने की ।  
 तातो. तातोका. (ग) धुनेट,  
 तातो. (घ) चोराजिद, चोरीद ।  
 तागा. (घ) चोरा, तागा ।

ताटका. (ग) { तरही, वा मिरि  
 ताटका. (घ) { या. या कर्षण  
 ताटका. (घ) { कर्षण, भूषण

मेद यवप शीगण, देडो,  
 दुःख ।

ताटका. (ग) ताटनेदार, मासक  
 ताटका. (ग) निजिचरीविमेष,  
 सुहेतुसगा ।

ताट का नासा. (घ) यत्नकरने

एक नासा है जिसमें राम  
 चंद्र ने ताटका का यमी-  
 टा था ।

ताटका. (घ) कर्षण भूषणविमेष ।  
 ताटका. ताटका. (ग) पीटत,  
 देगावत, भिदकी, पीटता,  
 मारता । [तत्प.दिक् ।

तातः (ग) मर्प, मास्य, पुन्य,  
 तात. (ग) प्यारा, सपना, प्रिय,  
 मित्र, पिता, भाई, हित,  
 पुत्र, हस्त, गरम, गुण. तत  
 ताटका. (ग) तुल्य, समान, दे-  
 साही, तैसा ही तिस के  
 समान । [पण्डित ।

ताटिका. (ग) ताटकाकाटका,  
 ताप. (ग) कर्षण, गरम, तप,  
 स्वर, दुःख, क्षेम, संताप ।  
 तापतय मोचन. (ग) तीगताप  
 के पुद्गलें वाली ।

तापे. (घ) तपे, तापना, तपना ।  
 तापस. (ग) तपस्वी, योगी ।  
 तापसदृशः (ग) ईगुग हस्त ।  
 तापसेट. (ग) पिरवंगी ।

तापकेतुः (घ) चतपौर म. २. १

तुषाः (स) चयौ, द्विसृष्टः ।

तुच्छः (स) शून्य, शून्य, हीन,  
अल्प, नीच ।

तुच्छाः (स) शीघ्र १ अथवा  
इच्छायुषीः । [ रत्नाः ।

तुष्टः (स) क्षोभयन्ती या, च-  
तुष्टकेरी-  
तुष्टाः } (स) कुंठकः ।

तुल्यः (स) तूतिता ।

तुलः (स) तारामण, पीडा ।

तुलः (स) तुल्यकृष ।

तुलरीः (स) सोरठी माटी ।  
रुद्र चक्र २ सरसों का  
भेद, तोरी ।

तुल्यम्-  
तुल्यः } (स) तुल्यको तुल्यः  
तुल्यः } किये ।

तुल्यः (स) तुल्य, शीघ्र, शीघ्र,  
तुल्य, शीघ्र, शीघ्र, शीघ्र ।

तुल्यः (स) तितालीका ।

तुल्यः (स) मीठा लोका ।

तुल्यः (स) तुल्य ।

तुल्यः (स) तुल्य, तुल्य,  
} कटुनयना ।

१. (ग) भिन्नातरकारी ।

तुल्यः (स) घोडा, चक्र, चक्र,  
तुल्यः } दोडा । बाजी बाजन

तरंग इत्य, भेद्य चक्र सं-  
धर्मे २ तरंग तुल्यम लहं  
कचे इत्यसाम्ना नै सर्व ११

तुल्यः (स) घोडा, मगन,  
तुल्यः } मग, दोडा । मगन

तुल्य तुल्य मग, बहुरि  
तुल्य तुल्य । हरि तुल्य  
तुल्य सी, रंग्यो न हरि  
हरि रंग १ १ १

तुल्यम् (स) घोडा, बाजी, चक्र ।

तुल्यः (स) मीघ्र, वेगि, ललदी ।

तुल्यः (स) तुल्य, वेगि, ताड़-  
न, मोरक, मोरक, रंग्यो,  
वेग मे, तोड़करके ।

तुल्यवती (स) वेगवती ।

तुल्यः (स) पाला ।

तुल्यः तुल्यः (स) इन्द्र-  
स्वर्ग पति ।

तुल्य (स) चारिन्द्रा नाचक,  
भीया चक्र लोच को,  
चारवा ।

तुल्यः (स) मिश्रारम ।

तुला (स) पुंल्लिङ्ग, लल्लभेद,  
तराजू, बराबरी, समान-  
ता, ताकड़ो ।

तुल्य (स) समान, बराबर ।

तुल्य (न) भूमा, पचादिक,  
बोहर, बली, धान, चव  
बीभूमी, गीतया प्रवनम ।

तुल्यः तुल्यः तुल्यः (स. प)  
पाषाण, गीत, धीम, हिम,  
नवनम, सरदी, जाड़ ।  
दो । मिट्टिका दिन  
प्रालेप पुनि, पावण्याय  
निहार । तुल्य तुल्य  
मतेत दे, सत नाम बरधारः ।

तुल्यारद्रिः (स) हिमाचल  
पर्वत, हिमाचल पहाड ।

तुल्यद्विजः (स) होड करनी  
को, बराबरी करनी को ।

तुल्यी (स) दोनो तुल्यी ।

तुल्यी (स) गीत, चप, गुम ।

तुल्यी (स) तुल्यद्विज ।

तुल्यः तुल्यः (स. लोतररग,  
तुल्यः तुल्यः) निम्न, माया ।

तुल्यः (स) तुल्यद्विज ।

तुल्य (स) रुई, निर्वीज, बाजा-  
मेद ।

तुल्यः (प) गिजाक, सीरक,  
रजाई. गदना, पद्यात् दद्या  
तुल्य संयुक्त ।

तुल्यी [ स ] धधूरा, तुल्य ।

तुल्यी (स) गीत, भटपट ।

तुल्यी (स) जलदो ।

तुल्यी (स) प्रसन्नता, संतोष ।

तुल्यी (स) सौत, चुपचाप ।

तुल्यी (स) चारि संख्यावाचक ।

तुल्य (स) रुई, निर्वीज,  
तुल्य, बराबर, तुल्यद्विज ।

तुल्यी (स) गीत संयुक्त ।

तुल्यी (स) गीत ।

तुल्यी (स) तुल्यद्विज । [ पाटि ।

तुल्य (स) तिर्यक, पद्य पद्यी

तुल्य (स) घास, पापस, माया  
दा पट, विधि, लल्ला,  
तिनका, रोहित पट ।

तुल्यद्विज (स) बौनी ।

तुल्यद्विज (स) दास ।

तुल्यद्विज (स) गीत दास ।

तुल्यद्विज (स) गीत ।

तुल्य (स) माया ।



लृत्वा (स) प्यास, शोभ ।

लृत्पराज (स) ताड का लृप्त,  
ताडलृप्त, गारिअल ।

लृपिति लृप्ति (स) संतुष्ट, प्र-  
घाते, पाकांक्षा, निटसि

लृपित (स) प्यासा, जलपाइका ।

ते (स) तौन, सब से, ये, तेरा,  
तुमको ।

ते (प) से, तू, तुम्ह ।

तेज (द) तेज, तेज भाषा, कि  
बड़ा घोड़ा तेज है ।

तेज (फ) खज्ज, तलवार ।

तेजः (स) } प्रताप, गर्म, प्राण,  
तेज (फ) } चाखा, चोख,

धागिन हल, पांच, तेजस ।

तेजस (स) रामचर्चा ।

तेजनी (स) चुरनहार ।

तेजवती (स) } तेजवत् ।

तेजवी (स) }

तेजस (स) तेज, प्रकाश, अग्नि  
प्राप, जल प्रस्था ।

तेति (द), ते, प्रति, वे बहुत ।

तेज (स) तेज ।

तेजकार (स) तेजो ।

तेजपार्णिक (स) मृपेदचन्दन ।

तेजपार्णिका (स) गठिपन ।

तोप (फ) बन्दूकविगास,  
बन्दूकगोसादार ।

[ गीतनी ।

तेजस्विनी (स) तेजवत् ।

तेजोद्धा (स) तेजवत् ।

तोप (स) टांवा, तोपना,  
टापना ।

तेज (स) तिमने, तिमनिये ।

तोष्य (प) } टाप्यो, भाप्यो ।

तोष्यो

तोमर (स) बाण, बरछा,  
चण्डग, छन्दभेद, शफ,

विजिय, लोहबंदा, [ससिल ।

तोय (स) जल, पाणी, नीर,

तोयनिधि (द) समुद्र ।

तोयद (स) भेष, बादल ।

तोयमधुसिका (स) जेठोमध ।

तोयोद्धर्गस्तनितमुपरा, (दि०

त्वम्) नेह पोर गरन दे ।

तोयज (प) तोय जल न जल  
तो जल से उत्पन्न हो ।

कामल । दी० पंडरीक  
 पुष्कर भासज, अंज यल यं.  
 भीज । पंक्षल मारत ताम  
 रस, कुपलै कंज मरीज ॥  
 सतपत्नी श्री सप्त दल,  
 पद्म कुमेतयनाम । पंके-  
 सह परचिंद गुण, कषि  
 मलीन तीहि वाम ॥ २ ॥  
 तोरण ( स ) डल, बन्दनवार  
 यमस्यागमोभित, हार की  
 विवहारी, बन्धनवार ।  
 तोरावती ( स ) वेगवाली,  
 वेगवती, त्वरावती ।  
 तोय ( स ) संतोष, ललित, रूपे ।  
 तोयये ( स ) प्रसन्नता निमित्त,  
 प्रसन्नता के सिद्धे ।  
 तोय ( स ) शय का भेद, करे ।  
 तोयार ( स ) शीत या शदनम ।  
 तोयत ( स ) दीध करण ।  
 त्यक्त ( स ) त्याग हुआ ।  
 त्यक्त्य ( स ) त्यागने के योग्य ।  
 त्यक्ता ( स ) त्यागकरि को,  
 हाड़ि को, त्यागी हुआ,  
 छोड़ कर ।

त्याग ( स ) बर्जन, छोड़ना ।  
 त्याग्य ( स ) त्याग योग्य ।  
 त्यज ( स ) त्याग, विनाश,  
 बर्जन, छोड़ ।  
 यपा ( स ) सत्ता, श्रीका गर्भ ।  
 तप ( स ) पुरारामा ।  
 तप ( स ) खीरा ।  
 तपरेषा ( स ) तीतिरेषा ।  
 तपाङ्ग ( स ) सूर्य, दिवाकर ।  
 तय ( स ) तीन ।  
 ययो ( स ) शिवेद, कृष्ण यज्ञ, प,  
 साग ।  
 ययोग्या ( स ) मन्दाकिनी,  
 भागीरथी, भागवती ।  
 ययोदग ( स ) तीर ।  
 तमरेणु ( स ) सुलक्षण के  
 भीतर रंझके द्वारा सुने  
 की प्रभा के जो रज बहता  
 दृष्टि जाता है वह तप  
 रज कहलाता है ।  
 याद ( स ) रक्षा, पावन, रक्षक,  
 पाजक ।  
 यसत् ( स ) डरा हुआ ।

चमिता [म] हृदय, भयमान्,  
हृदा, भय युक्त ।

ता [म] तारयकर्ता, रक्षक  
रक्षाकरनेवाला ।

घातुः [म] रक्षा करो, रक्षा  
करे ।

दायली [म] दायमान ।

दायमान [म] दायमान ।

घातुः [म] } भय, हृद, घात,  
} मर्दा, मर्द ।

दायक [म] दायकाता, कट  
दाता, भयकर, हरावनी ।

घाति (म) रक्षा करो ।

चिन्मयक (म) चिन्तयारी,  
चिन्मय, मित्र ।

त्रिंशः त्रिंशतः (म) तीसवां,  
संख्याविशेष, ३०० [ त्रिंशे

त्रिंशद् (म) सौंठ, पौष, ३० ]

त्रिंशत् (म) त्रिंशती, त्रिंशकार

त्रिंशत् (म) त्रिंशती, त्रिंशकार

त्रिंशत् (म) त्रिंशती, त्रिंशकार

त्रिंशत् (म) त्रिंशती, त्रिंशकार

त्रिंशत् (म) त्रिंशती, त्रिंशकार

मविष्य, यत्तमान, प्रात,  
मध्याह्न, सायम् ।

चिकीर्षक (म) सिंघाड़ा ।

चिकीर्षक (म) भूत, भविष्यत,  
यत्तमान, तीनों का काल  
जानने वाला ।

चिकीर्षक (म) द-  
विहार, घात, मर्दा, मर्द ।

चिकीर्षक (म) द-  
चीनी, तेजपात ।

चिकीर्षक (म) सख, रज, तम,  
तीनदिन, तीन दिन ।

चिकीर्षक (म) तीनदिन, ती  
चिकीर्षक (म) तीनदिन, ती

मर्त्य, पाताल, देवगण,  
मरणात्, असुरगण, ए  
तीनों जीव ह्रादिके दावी  
संविजय यथात् दावा  
गोनिसर्वादि ।

चिकीर्षक (म) दायिष, दायिष,  
मानमिष, तीनदंड ।

चिकीर्षक (म) मास निमिषो  
रात्रि को दावी, चरणी  
रात्रि को दावी, चरणी  
चरणी ।

विष्णुतन्त्र ( स ) इत्यादि, दानदीनी, तेषां ।

विष्णुतन्त्र-[स]मिद, तीन सांख्य-  
वादा ।

विष्णुतन्त्रवृत्तः तद्गुणः ( वि-  
मलात् ) महादेव हे  
मास्तिद्वे ने सोदी हे मि-  
षर जिनही ।

विष्णुतन्त्र विष्णुतन्त्र ( स ) हे-  
वी की दक्षिणा, पापाद  
रक्षण इत्यादि, देवी,  
की लक्ष्मीदिग रोग, वा  
भाग, मोक्ष, कीर्तिदि  
इत्यादि, भवतिष्ठ, की रा-  
दण्ड, की रक्षण, सर्व,  
टिप्पणी, मूय इत्यादि  
की रक्षण करि विष्णु, की  
भवतिष्ठ जानिये ।

विष्णुतन्त्र ( स ) महादेव तद-  
भावे मत्तावर ।

विष्णुतन्त्र [ स ] देवता ।

विष्णुतन्त्रविष्णुतन्त्र-[स]देवता की की

विष्णुतन्त्र ( स ) दक्षिणा, विष्णु-  
रक्षण ।

विष्णुतन्त्र-[ स ] स्युस,  
सूक्त, कारण ।

विष्णुतन्त्र [ स ] तीन प्रकार,  
तीन विधि, तीन तर ।

विष्णुतन्त्र : द ] तीन गयन-  
धारी, मिद, मन्त्र ।

विष्णुतन्त्र [ स ] लक्षाट,  
लक्षाट, दं० । मन्त्रक  
पल्लव लक्षाट पर, वेदी  
रक्षी कराय । नती भात  
ते भाग्य मति, दाहेर,  
मगटी पाय ॥ १ ॥

विष्णुतन्त्र [ स ] पक्षाट ।

विष्णुतन्त्र [ स ] करिष्य ।

विष्णुतन्त्र [ स ] हंसपादी ।

विष्णुद्विभूति- [ स ] संधि-  
नी, सन्दीपिनी, पद्मना-  
दिनी, जीव की परमात्मा  
की मंथि मिश्राई की  
संधिनी । जीव हे  
पक्षर परब्रह्म की पक्षर  
प्रधान करे की सन्दीपिनी,  
जीव हे पक्षर पर-  
मात्मा परमात्मा की प-

સુદાદ કરે સો ચસુદાદિ  
ત્રીવિભૂતિ ।

ત્રિપુટ (સ) સેષારી ।

ત્રિપુટા (પ) જ્ઞાનયત્રી ।

ત્રિપુટો (મ) જ્ઞાતા, જ્ઞાત્રી, જ્ઞાતા,  
જ્ઞાતા, જ્ઞાન, જ્ઞેય,  
ધ્યાતા, ધ્યાન, ધ્યેય,  
ભોક્તા, ભોગ, ભોજ,  
જ્ઞાત્રી, વિષય, દેવતા,  
વિધારા ।

ત્રિપુણ (ચ) નામ ત્રિજ્ઞાન  
ત્રીનિરેશા જ્ઞા, ત્રીજ  
રેશા જ્ઞા ત્રિજ્ઞાન ।

ત્રિપુર (સ) દેવ્યવિષેય, ત્રીનિ  
પુર સંજ્ઞા, મન, નામ દે  
વ્ય દેવ્ય જ્ઞા, જો રાજસ  
રામસ, સ્વાત્મિક, એ ત્રીનિ  
પુર વા જ્ઞાન ।

ત્રિપુરારિ (સ) શિવ, મહાદેવ,  
જ્ઞાનનાગજ દો. । મિંધુ  
જૂલ જલિ પૂત મહિ,  
જાપન કિયો પુરારિ । જ્ઞાત્રી  
ધૂજન વિનતો કરન,  
સાધન સમેત પુરારિ ૩૧૩

જ્ઞાત્રી હરિગીત । શોરંઠ  
જ્ઞાનધ્યન વિમાનો નોજ  
જ્ઞાનિત દેશ્વરં । સર્વજ્ઞ  
સર્વવ્યાપી જ્ઞાનજ્ઞાન  
સંગાધરં ॥ પદપતિ ત્રિ  
જ્ઞાપાત્રં જ્ઞાપર્ણી ધૂરિ જ્ઞાત્રી  
વિગેશ્વરં । શિવ જ્ઞાત્રી  
જ્ઞાન સંજ્ઞા મૂળી જ્ઞાન પદ  
મહેશ્વર ૩૧૩ જ્ઞાનારિ રૂપ  
જ્ઞાનાનુ રૂપા મહાદેવ જ્ઞા  
નાધરં । શિવિ જ્ઞાન પ્રથમ  
જ્ઞાન જ્ઞાપાત્રો જ્ઞાનદેવ દિ  
ગંધરં ॥ જ્ઞાન મીસરં  
નિરોધ જ્ઞાનજ્ઞાન વિગેશ્વર  
વિગેશ્વરં ॥ શિવ ૩૨ ।  
મૂળેય જો રૂપાન શિવિવિદ્ય  
જ્ઞાત્રી ત્રિજ્ઞાનજ્ઞાન । જ્ઞાનારિ  
જ્ઞાન વિરોધનં ॥ શિવિ  
જ્ઞાનજ્ઞાન જ્ઞાત્રીજ્ઞાન  
મૂરતિ જ્ઞાનજ્ઞાન । શિવ ૩૧૩  
જ્ઞાન જ્ઞાન જ્ઞાન વિગેશ્વર  
જ્ઞાન જ્ઞાન જ્ઞાન જ્ઞાન  
જ્ઞાન જ્ઞાન જ્ઞાન જ્ઞાન

गीत एव हरनाम तिरमट  
 राम मत्तः । एत हरिदि-  
 नास निवाम रामानुज  
 पुरी पति सुंदरं । शिव० ४  
 दो० । ज्ञानं नाम पर  
 मन्द रिपु, समा नाम पर  
 नाथ । नाम याग को होत  
 है, तासु तमए पट नाथ ।  
 १३ इनः दो० । गंगापर  
 हर मूरधर, कसिपर  
 गंकर दाग । सर्वेश्वर भव  
 गंभु जिय, भीम ज्ञान रिपु  
 नाम १२३ विजय तिरंग  
 पियर परि, देन बनापति  
 होय । छटिन पिनाकी  
 पसुपति, नीलकंठ शिव  
 सोय १२ । बानदेव सो  
 देव जेहि, राखत दिय मे  
 थोहि । ताको तू कपटी  
 कहति, कदा कदा रहति  
 तोरि १४१

विरली. (म) पैटी, पैट, बदर,  
 तीन वंक्ति । [माया ।  
 प्रियसुपमादि. (म) माय. जीव,  
 विविक्तम. (म) श्रीविन्दु राजा  
 बकिहार दानप्रदय ज्ञाने  
 सति दिगाभक्त होए को  
 तीनि कोक तीनि डेग  
 बिण वा रूप को बिबि-  
 क्तन कहने हैं पर्यात्  
 बिराट रूप ।

द्विविध. ( स ) तीनिप्रकार,  
 सात्विकादि तीन विधि,  
 गग, ज्ञान, वदन ।

विपिधकर्म. [ स ] सद्धित,  
 प्राक्तन्य, क्रियनात, इच्छा,  
 दैहिक, अनिच्छा, दैजिन,  
 परीक्षा, भवतिक, एक  
 पक्ष ।

द्विविधसमीर. [ स ] गीतक,  
 गन्द, सुगन्ध ।

त्रिविधपदा. [ स ] तीनि  
 प्रकार वातना, धन, पुत्र,  
 नारी ।

विषयी. ( स ) विमुहानी,

विष्णु (स) { चंद्र, हरि,  
 विष्णु } रहित ।

विरली (स) तिका, विदुट ।

विभण्टो, तीनिमदी, यज्ञा,  
यमुना, सरस्वती ।

विभण्टो. ( स ) निमोत ।

विभुवन. ( स ) तीनमोव ।

विभ्रम. ( स ) कर्णात्मक भ्रमः ।  
अक, मन्दात्मक ।

विभ्रति. ( स ) डेत, चडेत,  
वगिडाडेत ।

विद्या. विद्य, ( स ) ज्यो, मारी,  
तिरिया ।

विद्यामा. ( स ) रात्रि, रात,  
निमा, यमुना, मीन, वज्रदी ।

विरादि. ( स ) मकारादि  
अर्थात् नमस्कार, विरादि  
कृष्णादि आर्थात् कृष्ण-  
हमी मादीमास ।

विरोध ( स ) मंथ ।

विरोध. विरोध ( स ) अर्थात्  
मार्ग, पाताळ, विभ्रमः ।

विरोध. ( स ) मेवा, वीना,  
आला ।

विरोध ( स ) सोना, चांदी,  
तामा ।

विरोध ( स ) विद्यापद ।

विहत् ( स ) } विधारा ।  
विहत् ।

विहत्. ( स ) नाम-राजा चन्द्र-

सेन का पुत्र जाको पूर्व  
नाम विहत् दीप था  
तीनिमंका होते ते जाको  
नाम विहत् भयो एक थो  
वगिड जू का माप, एक  
मोहत्या, एक थो वगिडजू  
अथ थो विज्ञानिज जू का  
चापुस का विहत् माप  
चास, ताको राजाद  
होते चाकुतक आचार्य  
मार्गमें चौधे मुख भूतक  
है, इतिथीभागवतप्रमाण ।

विशिरा. ( स ) नाम ग्वाहूनव  
के मंथ का निशिरा काति,  
तीनमंकावो । [ विमिष ।

विशूच. ( स ) मिर का पद

विशू. ( स ) तीनी ॥ ।

विषादा. ( स ) चाङ्कद्वय ।

विषादा ( स ) धेरा ।

त्रसन्ध्या. ( स ) प्रभात, मध्य,  
सांभः ।

त्रसन् ( स ) ररे, सौठ, गृह,  
तीनों सम भाग ।

त्रिसुगन्धि. ( स ) इलायची, दार-  
चीनी, तेजपात ।

त्रिसरूप प्राप्तम्, ( स ) इच्छित,  
सुइच्छित, अनिच्छित ।

त्रिघार. ( स ) यथाचार, सोडागा,  
सज्जीघार ।

तुटि. ( स ) चबचड़ा इलायची ।

तुटो. ( स ) टूट, हानि. ग्यूनता ।

तून्. चीन्. ( स ) तरकम, तीर  
का खोस ।

तृक्ष्ण. ( स ) पुण्याञ्जन, सुपेद,  
स्याह, सुरमा ।

त्रियूषण. ( स ) सौठ, पीपर, मिर्च ।

तैलीचन. ( स ) सूर्य, शिव ।

तारम्बक, ( स ) तिनयन, शिव ।

त्वक्. त्वचा. त्वष्ट. ( स ) चर्म.

चमरा. हिनुका. कास,

पास, हथ का बकला,

चमड़ा, बांस, राज पी रूम  
की इन्दी ।

त्वष्टार ( स ) बांस ।

त्वष्टारा. ( स ) बंयसीचन ।

त्वक्सादी. ( स ) दारचीनी ।

त्वक्कुम्भ ( स ) मारंगी ।

त्वक्चीरी ( स ) बंयसीचन ।

त्वष्टिहार ( स ) बांस ।

त्वत्तः ( स ) तुम्ह से ।

त्वत्पयापनुरूपम् ( बि. मार्गम )

तेरे चरने के पनु रूप है जो ।

त्वष्ट. ( स ) चेतुपडवाचक ।

त्वष्टि [ स ] तुम्हारा चरण ।

त्वङ्गीर ध्वनिपु, ( बि. पुष्करपु )

तेरोसी गंभीर है ध्वनि

जिग की ।

त्वष्टिस्तोत्रसितसुधागन्ध

सम्पर्कपुष्पः ( बि. बायुः )

तेरे बरसने से पृथ्वी को

भाप गन्ध से मिश्रकर जो

सुगन्धित है ।

त्वदीय. ( स ) एतुम्हारी, एह

तुम्हारा, तेरा ।

त्वम्. ( स ) जीव, तुम्ह, तु, तुम ।

त्वरयति. ( स ) दृष्टदी चसाता है ।



चन्द्रमा, रवि, खपोत, चज-  
गर, सिंधु, पतङ्ग, कही  
पक्षी. मधुकत कही मधु-  
मन्थी, मज मधुवा कही  
मधु, व्याधा, हरिण, मोन,  
सर्प, पिंगला, कही बेग्या  
कुरर, चमक, कुमारी, गर  
जत, सर्प, नाभि कही कोट,  
मिशकत कही भुङ्गी ।

दधि. [ स ] दही, गीरस ।  
दधिलूविषः [ स ] दधिपोरी,  
मिरनी ।

दधिलत [ स ] कैंत ।  
दधिमण्ड [ स ] मडा ।  
दधिल [ स ] केतकल ।  
दधिसुख [ स ] बानर विगिद ।  
दध [ स ] } दही ।  
दध्यः }

दधो, [ स ] ध्यान किया ।  
दधीव [ स ] एक जटपि का  
नाम राजा रघुवंशी तब  
गूर का के यजि का खाड़े  
तीन मज मन्थो का एक  
दधि धनुष विनाक धनुष

पचय धनुष पाधा गाडीर,  
सुतासुर के मारण हेतु  
जाकी बाती विगद के  
सुतासुरके संति में स्यात ।  
धनुष [ स ] रावस, भिद निशि-  
वर भिद, चसुर, दानव,  
दैत्य । [ कंटक ]

धनुजारी. [ स ] विष्णु । दैत्य,  
दन्त [ स ] दात, दगन, दह,  
दमन ।

दन्तधावान [ स ] दातोन ।  
दन्तधावन [ स ] पयस ।  
दन्तबीज [ स ] चमकल ।  
दन्तगठ [ स ] जंभीरी सेमू-  
दमली, कली, केतकल ।

दन्तिम् [ स ] जायी ।  
दन्ती [ स ] जायी, मज,  
दमोक, तामा नही, बही  
तामा नही, दौ. । दही  
दंति दित्त दित्त, पक्षी  
कारण व्यास । दम कुम्भी  
कुंजर कही, खोबरम मुंहास  
३ ३ ३ मित्रुरने कपिनाम  
अव, मज सुवज मातंग ।

इत नयंद भूमत खरि.  
रंगित नामा रंग ॥ २ ॥

दपट. [प] दीद, दावा, सपंट।

दवकी. [प] घाटी, घात, दाव।

दवडा [द] कुमीन, कुदडा, मूढ़।

दवा. [द] दांव, घात, दवकी।

दम. (स) } दाहर इन्द्रियों  
[फ] की निग्रहण.

माप, ज्ञान्ति, घड़ी, इन्द्रिय

निग्रह, इन्द्रियों का रोकना,

इन्द्रियों का लीतना।

दमक. [प] समक, भक्तक,

दाह, दमकना।

दमन. [स] दाह, नाम, नामन.

दहन, ज्ञानन, पुष्प रक्षिण,

सुर्ग।

दमन [स] } दमना।

दमनक (स) }

दमनीय. [स] तीह्नहार,

नामक, नामनदीय, तीह्न

दावा, दमन के योग्य,

तीह्न के योग्य।

दमन [द] नामकरनेवाला।

ददात् [स] देता है।

दम्पति. [स] स्त्रीपुरुषद्वन्द्व.

लायापति, महापात्र, दि,

स्त्री पुरुष का जोड़ा।

दमा. [स] पड़हार, घमण्ड,

पाखण्ड, कपट, हठ, फरेब।

दमी. [स] पड़हारी, घमण्डी,

पाखण्डी।

दया. [स] कृपा, करुणा, दान,

निहरवानी। दीहा। पनु

लोग करुणा कृपा, दृष्ट पनु

कंपदितुल। माया दाया

पनुपहं कीद राग सुद-

युक्त ॥ १ ॥

दयक. [द] दिया।

दयालु. [स] दयावान, रहीम।

दयावर. [स] दयालु, कृपावन्त।

दयित. [स] दत्तन, सज्जन,

भावता, प्यारा।

दयिता, [स] प्यारी, स्त्री दत्तमा।

दर. [स] } भय, हीरामयि,

[प] भाव, मोल, फीब,

[फ] शंख, ईषत, भीतर,

हार, हर, छिद। पनेकार्य में

सिपा है। दी-दरलु कहत

कवि सङ्ग की, दर ईषत

कृष्ण नमः शिवाय नमः  
शिवाय नमः शिवाय नमः  
॥ १ ॥

$$2 \leq r \leq n$$

११३३ ।      ५      ६४४५

[illegible]

सूचक सं : क०३४७, ५६७१८

६०६, ५ ६०६, ६०६

541 4 75

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

2000 年 12 月 10 日

明 正 統 庚 辰 年 十 月 十 日

[illegible]

४४ ८५५१०१ १११११

[illegible]

ਸਮਝਦਾ, ਖੈ ਤੇ ਸ ਚਾਹਿ।

बाल गुरु भर्त्तृ वर प्रभु

५०' ५०' ५०' ५०'

५१४ ३ ३ ३

द्विष्टः ॥ निर्वैत मूढविमः ।

द्वितीय ( ८ ) प्रश्न प्रश्न ।

अङ्कितः (५) वा. न. वि. वि. वि.

१३. (ग) देव, मित्र, दातृ ।

(क) बर्तकाल, एमएफ,

आत्मद्राघा, क्षात्र, धर्म  
मान, गुरु ।

८ पेश ४ । म ह, म प रे ष ने

॥ ३५ ॥ ३५ व, ३५। ३५ व, ३५ व, ३५ व,

संस्कृत : २० : पत्रिका

आदरम प. न. गुरु जी

१. ५. ११. ॥ पञ्च महावि

न न न नि न न कि न

म न्नं च । ३१ ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ਅਮਰਿੰਦਰ ਸਾਹਿਬ, ਬਾਮਨਾਮਾ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

$$A = \begin{pmatrix} 1 & 0 & 0 \\ 0 & 1 & 0 \\ 0 & 0 & 1 \end{pmatrix}, \quad B = \begin{pmatrix} 1 & 0 & 0 \\ 0 & 1 & 0 \\ 0 & 0 & 1 \end{pmatrix}$$

44 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 104

[illegible]

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ନିର୍ଦ୍ଦୋଷ

6. 2. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 8

1. 2. 3. 4. 5.

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

॥१॥

॥ १ ॥

... ..

11. (b)  $\frac{1}{2}$

1. (4) 441 2 1, 1

दर्भ (न) बुगलद, हाग, हाग,  
कुहा, एक प्रकारका घास,  
मल ।

दर्भु- [ द ] सोम, कुम ।

दर्भैर- [ म ] कावापची ।

दर्भगा [ म ] चमिन्, चसुन्दर ।

दर्भगा- [ न ] चमिया, चसुन्दरी ।

दर्भी [ म ] दही, सोठ, चमची ।

दर्भ- [ म ] कप, दर्भन,  
दर्भ- [ म ] होदार ।

दर्भ- [ म ] मिरीचक, जैत  
हलमाजो । [ म ] होदार ।

दर्भोद- [ म ] दर्भोदोद-

दर्भो- [ म ] देवगहार,  
दर्भो- [ म ] देवगहार ।

दर्भ- [ म ] पणथ होम ।

दर्भ- [ म ] दिवना गु ।

दर्भ- [ म ] दहक, दत, नदुर-  
दत, गान, नदुर, नगाज

दर्भोद, होडा, पना, येना,

गान, चनेरहोने जिवा

दे । होम । दह दहिदे

मुपरी दहक, दहकपनकी

गान । दह दहोने दे दह

सिर, धरे गान चमि-  
राम २१ ४

दर्भ- [ प ] फटना, कमित  
होके, कूद छठना, दर्भ,  
नगीर वीडा । [ नामग ।

दर्भ- [ म ] गान, बातक, नदुर,

दर्भ- [ म ] दिवनावा दपा ।

दर्भितापनीमानी (म) दि- नि-

दिन्यायाः) दिवनादे दे

मंदर कपी नामि जिस ने ।

दर्भ [ व ] नामिने, नामकरने ।

दर्भनो [ व ] पीनहारि, चाप-

छारे, दह मलगा । [ दृढा ।

दर्भित [ प ] दृढे, दारे, नद,

दर्भित- [ म ] दान ।

दर्भो- [ म ] दह, पेश, नदुर ।

दर्भ- [ म ] चाप, पणथ, होमहा,  
[ व ] दहनामि, दह की  
पान ।

दर्भो [ व ] दह ।

दर्भ- [ प ] दिवनि, दहनि ।

दर्भ- ( म ) दह ।

दर्भविदिति, दहो दहो दिवनि ।

दर्भ- [ म ] पान, पणथ ।

दीननाथ ( न ) दुःखितों का  
स्वामी ।

दीप ( न ) दीपक, चराम ।

दीपनम् ( व ) चना का मोन ।

दीपनी ( न ) मीठी ।

दीपान्तरवत् ( व ) चोख चीनी ।

दीपिका. ( व ) चमकीला ।

दीप्त ( व ) प्रज्वलित, प्रकाशित ।

दीर्घ ( व ) बड़ा, लम्बा ।

दीर्घवामा. ( वि० विवामा )

बड़े से पहर चिल है ।

दीर्घोष्ठाग्रम्. ( वि० अग्रम् )

लम्बी से नाथ निम की ।

दीर्घकाल [ न ] बड़ाकाय,

दी० । दुःख मानपर नाथि

दुःख, यावत् नाथ विभाव ।

दीर्घ काल ३५ भरति को

केहि कारण बलि काका ।

दीक्षा ( न ) प्रत्यक्ष मुख मिल

करव, मन्त्रीपदम् ।

दीक्षाप्राप्ति विमिश्र ( व ) विद्या

के देवता ।

दीक्षा ( व ) दीक्षा, दीर्घना ।

दु ( व ) दुःख, बड़ा, पीड़ा ।

दुःखात् ( व ) यथास्त, दुःखमय,  
दुःखित ।

दुःख ( व ) ज्ञेय, बड़ा, पीड़ा,

तत्त्वकीर्त । दी० ।, अद्वय

विद्वत् यथास्त तदा, तदा

प्रत्यक्ष पुनि पादि, । दुःख

जनि दे यत्र ज्ञान है, बात

बेठा यथास्त । १ ।

दुःखदुःख ( व ) दुःख, भारी पीड़ा ।

दुःखकर ( व ) दुःखनाथ, ज्ञेयः

दायक ।

दुःखविधा ( व ) नाथ करि के,

कर्म करि के, पुन पादि

के । १ ।

दुःखविधा [ व ] दुःख, विमिश्र

दी० बड़ा चीन बधुन पुनि,

लव अक्षय पुनि पादि ।

दुःखवि के जो, यत्र, प्रति,

निम काले तोहि, पादि ।

दुःख ( व ) बड़ा, अपका १५ मी,

बड़ा । ( नमः ।

दुःखकीर्त ( व ) बड़ा, बड़ा,

दुःखदाय ( व ) दुःखमिटा ।

दुःखपुत्र [ व ] दुःख का समुद्र ।

दुःमीसः (स) दुष्ट स्वभाव, बदे  
मित्राज । [ लाट ।

दुःसहः [स] पसंद नो सदा न

दुःस्थः [स] सीर, दूध, पयस,

मीद वा दुग्धनाम दी ।

पंच सङ्गदुःसीर हर,

सुत, सीर मग रानि ।

दुग्ध पस्त पय सीर

दुत, दुसस, करवत

पान ॥ १ ॥ मग पावन

पावन सुवत, पद पंगुह

सुव देत ॥ इंदु मज्ज जनु

वैर तज्जि, भिटि भिटि रस

जेत ॥ २ ॥ [मीरनी ।

दुग्धकपिका [स] देनाकरा,

दुग्धिका [स] दुधिया जड़ी ।

दुजः (प) माघाच, भूसुर ।

दुतिः (म) } प्रकाश, दुता,

[प] समक ।

दुधीः [प] संसार, जगत् ।

दुनियो ।

दुन्दुभिः (वी) मगारा, धीखा

[द] देव विदेय, एक

देव का नाम, सुदंग, न-

कारा ।

दुःपधर्मिणी (स) वगभंडा ।

दुर्वसा [स] लल सिरिष ।

दुर्विदे [स] नाम वानर सेना-

पति ।

दुम्वकः (स) दुग्धा भिडा ।

दुरः [स] कु. कठिन, दुरा,

मून, बीब ।

दुरतः [म-द] क्षिपत, सुवत ।

दुरतिकर्म (स) दुष्टार कर्म ।

दुरता [द] क्षिपता, सुवता,

भागता ।

दुरता [स] } दुष्ट, दुःख यत्न,

} यमाता, यत्नही

न, अंतरहित, यत्नविना,

यत्न, हीठ ।

दुरातः [प] यत्न क्षिपाई ।

दुराचार [स] दुष्टाचार, यथा-

स्विक ।

दुराचारो [स] यथाई, दुःमीस ।

दुराका [स] पापी, दुष्ट, यथा-

दुराजन । [पापी ।

दुराजन [स] दुराका दुष्ट,

दुराधर्म [स] मल, सी जी मज्जि

द्वै, मतापी, सखी, तीरो,



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ विष्णु उवाच ॥  
॥ अथ विष्णु उवाच ॥

द्विष्ट- (स) - रोगस्य, कठिन.

१०. दुःसाध्य, दुष्कर, शीघ्र ।  
दुर्लभ-१०(८) गद्य, लेखकारी

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

इतिगः (ग) पाप, होप ।  
इतिगः (ग) पाप, होप ।

मीडिया मंत्रालय, नई दिल्ली

१. हरद्वार सिद्धाचार्य, का.  
धाम हनुमान, ११२ अष्ट

...सुख पाप नी-में रहि  
...ति-द्वारा ...

सप्तमी । पृ. ३६, पृ. ३७  
पृ. ३८, पृ. ३९

दुर्गमः (क) कथाद्वयः  
दुर्गमः (क) कथाद्वयः

... ..

... ..

... ..

दुखदि: (१) (२) दुखदि: वन,  
दुखदि: (३) दुखदि: गाँधी ।

द्वयम् । द्वयम् ।  
द्वयम् (म) निमित्त, यत्परिहित

दुर्वाणा. (स) दुष्टवर्ण, नाकी ।  
दुर्वाणा. (स) कृषि विधेय ।

॥ यत्तु यत्पि वा नाम ।

दुर्भिक्षः (म) दृष्टात्, दृष्टमय  
दृष्टः ।

दुर्ग (घ) बीरन के गध  
विमल, निमंय रंग।

दुर्ग (२) निगिषर बी  
विशेष विधि मग

द्वितीय (२) अध्याय, पृष्ठ ६६

मिशन। [बहा. बट]

दुर्लभः (क) कठिन है प्र

बाबा ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

100-443885-1



दुःख दायक ।

दुष्पण ( म ) दोष, अपर ।

दुष्ट ( म ) पापिष्ट पचम-कुकर्षी

अवलीपवतारनाम दो० ।

द्वेष्ट कसियुग चंत म.

हरि कल्पी पवतार ।

ज्ञानयुग समे शुचं बोधनी

यं नमोयं धेष्टार ॥ १ ॥

कवेया ज्ञेयः । मंनर नगर

हिण्डु नर भुष्टार तावे

दुष्ट बोध पवतार ।

पारक युग पतुवि निगा-

दुष्ट माहम नम नानि

यमि पार । दुर्जन कल

पवतार बोधरुष्ट, दुष्ट वेम

अरिष्टं ज्ञेयः । पवतीष्ट

अव ज्ञेय कवेया बोधन प

विद्याम विचार ॥ १ ॥

दुष्टरितः ( क ) वेद विष्टर कर्म,

पाप, पापी ।

दुष्टार्थः ( क ) शुच्यो, नीच

दुष्टार्थः ( क ) विद्या, वेदविष्टर

कर्म, पापकर्म ।

दुष्तात् ( क ) धेयात्, कुष्ठमय ।

दुष्कृत ( क ) पाप, पातक ।

दुष्टजगत् ( क ) संधीदि नीच ।

दुष्टतर्कः ( क ) कुविचार ।

दुष्टहः दुष्टाह ( क ) नदिधनेष्ट-

योग्यः, अठिन पवतारो

पवतार न नार-दुष्टपाति

अठिन काम, दुष्टाह धी, भी

न पवतार नार ।

दुष्टार ( क ) दुष्ट दायक, पति

दुःख, पचम, दुःख वे भी

न पवतार नार, अठिन कर्म

दुष्टवे भी नदी पारमिसे ।

दुष्टार ( क ) बोध, योग्य,

योग्य, पुकार, नीचार,

पवतार, अपचम ।

दुष्टि ( क ) कामना, दुष्टा ।

दुष्टित ( क ) पुनः दोषोऽपि

अव-दुष्टम पवतार पुनि,

तनुम तनव अष्टि तीत ।

मंनमदने-मोविष्ट धी, न

दुष्ट नदी बोधतार ॥ १ ॥

दुष्टिता- ( क ) बोध, अपा, दरी, ।

दुष्टिः ( क ) दुष्टिता, अपा,





देवद्वि [०] गारुड, देवद्वि,  
अमित, व्यास, देवद्वि  
चत्वारोऽप्यतः ।

देवद्वि [०] पूज्य देवद्वि ।

देवद्वि [०] रौरिसद्वि ।

देवता [०] धर्मा, देव ।

देवता [०] देवता ।

देवतान्त्रि [०] गदाभिरा,  
इसके द्वाभिरा सतावर  
देव देते हैं ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

देवद्वि [०] देवद्वि ।

नाम वधानः । १ ।

देवतापञ्चकर्मद्वि [०] यवप  
का दिमा, त्रिषा का पवन,  
नयन का रवि, निद्राका द-  
ह, नासिका का धर्मिणी  
कुमार १५१ इन्द्रो नाम ।

दो० । गौडरपक खंकरन  
गुन, इन्द्रो धर्मो पसु पाय ।  
त्यो राधा गोधव मिले,  
परम प्रेम दरसाय । १ ।

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव, नूख,  
पदमक ।

देव ( ० ) नूख । [ नूख ।

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव गौर

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव कर्तागुरु ।

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

देवतापञ्चकर्मद्वि ( ० ) यव देव

गुह्य का समराज ॥ ५ ॥

देवदूत ( स ) देवता का दूत या पुत्र ।

देवदूत ( स ) नाम के एक सप्त

का । [ यी ।

देवदूत ( स ) देवता का पुत्र, पुत्र

देवदूत ( स ) देव के आगे

जिस प्रकार कि नाम में

अर्थात् देवदूत ।

देवदूत ( स ) देवता का पुत्र ।

देवदूत ( स ) देवता का पुत्र

अर्थात्, देवता ॥ देवदूत

का नाम देवदूत ॥ ५ ॥

देवदूत, ( स ) देवता का पुत्र,

देवता का पुत्र ।

देवदूत- देवदूत, ( स ) देवता,

- देवदूत, देवता का पुत्र ।

देवदूत ( स ) देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

देवदूत ( स ) देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

अर्थात् देवता का पुत्र

दासदागो ॥ गौरि रुद्रानि  
रुद्राणि वासुंठ वासुंठानी  
ना रसा श्री रुद्रानी ॥ १ ॥  
मंदटा नारसिंही दराही  
निष्ठाः संधि दल्ली मदा  
गुल पागी ॥ योग माया  
अवर्ष ॥ १ ॥ पाचमी मीनका  
देवकी श्री वसुंठानी ॥ देव  
दुर्गा ॥ मधीष्टि ज्वाला-  
गुणी विंध्यवासि मदा-  
मद दामी ॥ मान पंचाम  
माना वष्टि मूलना सात  
रसाग श्री देवी दानी ॥ २ ॥

देव. ( म ) गुजुन हली का  
मंद, मीन, निष्ठा, ज्वाला ।  
देव. वाता ( दिना ॥ देवता ।  
दिगिब )

देव. ( म ) वाता, मीन, निष्ठा,  
वाता । ( वाता ।

देवि. ( म ) दीर्घा, मीन  
दिगिब ( म ) दीर्घ मंद, मनु-  
दासक दीर्घ मंद ।

देवि. ( म ) दीर्घ वाता, मीन  
देवि. ( म ) दीर्घ मीन वाता श्री

देव ( म ) मीन, मी, म ।

देव ( म ) दीर्घ, भाव ।

देवता. ( म ) अक्षयान् पचा-  
मध, दक्षदास ।

दीर्घा. ( म ) दीर्घता ।

दीर्घ. ( म ) दीर्घता अक्षय । दी-  
दासक मनुष्य दीर्घता, दी-  
विष्णु अक्षय अक्षय । माया  
दीर्घा दीर्घ दीर्घ, दीर्घता  
अक्षय ॥ १ ॥

दीर्घा. ( म ) दीर्घता ।

दीर्घ. ( म ) दीर्घ, दीर्घता, दी-  
दीर्घता, दीर्घता, मी-  
नता । ( मदाता ।

दीर्घा. ( म ) दीर्घता, दीर्घता

दीर्घा. ( म ) दीर्घता, दीर्घता

दीर्घा. ( म ) दीर्घता, दीर्घता,  
मीनता ।

दीर्घा. ( म ) दीर्घता, दीर्घता

दीर्घा. ( म ) दीर्घता, दीर्घता अक्ष-  
वाता, वाता दीर्घता । दीर्घा  
दीर्घा । अक्ष दीर्घता दीर्घता अ-  
क्षय, अक्षय दीर्घता दीर्घता ।  
दीर्घा दीर्घता दीर्घता दीर्घता,

दो न भाषिये तीय ॥ १ ॥  
 दोषकः [स] निन्दक, चपराधी ।  
 दोषद [स] छेद, लाजसा  
 गभिणी की, गर्भवती स्त्री  
 से मन की चाह ।

द्योतिम् [स] चमकनेवाला ।  
 द्युतिः (स) प्रकाश, गोभिन,  
 गोभा, मभा, कांति ।

द्युतः (स) लूना, पाशा सेन,  
 धूर्त, प्राचरहित, पाश पाद  
 से दास समानकर खिलना ।

द्रवतः (स) पयकत, घनत  
 छोड़त ।

द्रवन्तीः [स] बहातामानकी ।

द्रविङ्कोः [स] चवचडा दलायकी ।

द्रविणः [स] द्रव्य, कीड़ी ।

द्रवोः द्रवना [प] पचको, कषा  
 करो वा कर टेघराना ।

द्रव्यः [स] कीड़ी, घन, बस्तु  
 मार, होलत । समय वा  
 पंडित वा द्रव्य नाम० ॥

द्रव्यकीलापती— प्रभु  
 तिष्ठक ईशु गुह करि वि-  
 चार चौदर वे देखा समे

नन्द ॥ चरमिय नामै का  
 सल्य कास्य बैठे सिंहासन  
 रामचन्द्र । कृत धीर कठि  
 शन विदुष्य दूर पाचार्य वि  
 लस्य बुद्धिमान ॥ विहाग  
 मभीषो लुब्ध वर्य अभिदप  
 सुधी भी मंथ्यमान ॥ १ ॥  
 दोषत्र विवक्षित दूःदर्श  
 कवि कोविद् पंडित भीष  
 दशि ॥ युध वासनी प्र.श  
 पचीश नाम मन पायकीन  
 अभिप्रेत दर्श ॥ मृद हृद  
 जपाय न विशा पयं वदुष्य  
 दनिन धन बस्तु राशि । व-  
 तिय कन सोनावती घन  
 रघुनाथ कीर्ति कृत हरि  
 विनाम ॥ २४ [हारी ।

द्रव्याधीन (स) कुशिर दूर मं-

द्रव्यो [स] धनीक, कीड़ीवाला ।

द्रव्यसि (स) देखेगा तू ।

द्राविडः [स] लाक्षा मोन, (

कदूर । २ ॥

द्राविजिमः [स] देवदास कप।

टाचा. [स] दास, कृपारा,

|                               |                               |
|-------------------------------|-------------------------------|
| दंगूर, गोमूनी नुनका ।         | टोही- (म) ऐधी, बिरोधी, बैरी । |
| दुन- (स) दुःख, विघ्ना दृषा    | दुन्द- (म) मुख दुःख कषाय      |
| दुद- (स) मोक्ष, जलही, वेग ।   | दुगन, जोड़ा जो पुरुष का       |
| द्री- (म) क्षुधा करी वा घर,   | जोड़ा, लस कर ह पागे ग         |
| द्रवना, टेडरगा । (रखन         | भया कर गहि होयगी,             |
|                               | राग होपादि ।                  |
| दुम- (म) दध, पेड़, रुख तब. द. | दुद- (स) दुग्म, जोड़ा ।       |
| दुरिण- (म) मझा, विरिण ।       | हादम- (म) बारह १२ संख्या      |
| टोह- (म) परिभाष रिघेप ।       | रिघेप ।                       |
| टोच                           | हादगमाम- (म) बारह महीना।      |
| टोचपुष्पो- (म) } गूना ।       |                               |
| टोचकाह- (म) बड़ा बीजा,        | हंदहमी- । एषरायनक             |
| नांतहाक, टो- । टोच            | माग मझा ॥ मार्गमीर्ष          |
| काक दादस करट, पाल             | दख लात न कडा ॥ मुधि           |
| घोष बलभाग । छांच              | कर चरित चीर हरि               |
| पटौपिक पिता, एष दृग           | हरे ॥ दृग मवाह लस सा-         |
| रति प्रभु त्याग ॥ १ ।         | गर मरे ॥ १॥ पोष महस्त्र       |
| सीता लक्ष्मण सहित वन,         | तैय पुनि गयो ॥ हरि की         |
| विनरत करुणःकर ।               | ना पानिगन भयो ॥ दुख-          |
| पवि पगस्तादि, कृपि-           | हा भई सुषट् सर्वरी ॥          |
| भयो दर्म पानद ॥ २ ॥           | पान-पवाधिगनत पन               |
| टोही- (म) निम्न, बैरी ।       | घरी ॥ २॥ माघ तपा पागम         |
| टोह- (स) बैर, बैय, त्याग,     | एष कियो ॥ पाय वमंत            |
| विरोध, अनिष्ट, चिंतन ।        | संश्रया दियो । चंदकादि        |
|                               | देवत पीरई ॥ कांत विदाम        |



कारिणि हरि कर्तृ ॥ १३ ॥ तपस  
 फाल्गुनिक फाल्गुनिक हरी  
 संस चेदि पट राभी करी ॥  
 तासी खेनते खेरंग मरी ॥  
 योग भग्न हमरे कर भरी ॥  
 चैन येविक मधुवन फली ॥  
 फले फले महेछवि भली ॥  
 हरि विन तागद कसुम  
 मनी ॥ विविधि सगीरकास  
 शिवा फली ॥ ५ ॥ गाधव  
 राधविगाछहु भली ॥ वि  
 यग जेता तव भावग भली ॥  
 लपव पाय कृपा करि घनी ॥  
 गोपिन दात लवे पव भली ॥  
 ६ ॥ नेठ मुक्त तप गावत  
 बही ॥ विरहिमंथ धनमज  
 दही ॥ कव देखे मूर्ति गन  
 बही ॥ यवर लेणु यमुना  
 लल मुनी ॥ ७ ॥ मुनि पाप  
 दु विवम मध धना ॥ गुणै  
 भनी यनावन चना ॥ हरि  
 हरि दमक दासिमंवरै ॥  
 हरि विन गाव भीर नहिं  
 धरे ॥ न वन नवन गाव

कने भा ॥ मोभित विविग  
 घरणि रुड घमा ॥ तड़ित  
 विजाम मछ मभ घटा ॥  
 नम ननु प्याम पीत पट  
 ल ॥ ८ ॥ नम समाद्रव  
 म ॥ ९ ॥ रा ॥ ग्रीट पद  
 कावत हरि यदा ॥ नम  
 मभन त्यागी मजधरा ॥  
 बसे गाव कदवा के वरा ॥  
 पाग पन दव पागिन म  
 गो ॥ मभवला दुख भीवन  
 जगा ॥ भीन राग हरि  
 भुज मने ॥ सुगिरत हगत  
 घमारे भजे ॥ ११ ॥ नम  
 कारतिकि कर्तिका नदी ॥  
 दादुल बहल विरह दुख  
 भयो ॥ ग्याति विन्दु नदी  
 चरित मिना ॥ १२ ॥  
 छंद पंचदम कला ॥ १३ ॥  
 छंद ॥ अमव विन्दु वन  
 प्याम, विरहानन कारत  
 मदा ॥ पूनत निग मज  
 काद ॥ मोहक तिथि के  
 टेव यव ॥ १४ ॥



द्विप [मो] द्विप, द्विप, द्विप ।  
द्विपद- (म) द्विप, द्विप  
का, मनुष्य ।

द्विपवत् [म] मदी, करिता,  
दो- । करिता ध्वनी तरं  
मिनी, मटनी द्विपनी होय ।  
धुनी व्यवहारी, भाषणा,  
धीर मोक्ष धर्मिणी होय ॥  
मेवमिनी भाषणा, द्विप-  
वती लक्षणा । नदी नदी  
के बाट में, सीमा बहा है  
बाह ॥२॥

द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु,  
सर्व विशेष ।

द्विपु- (म) द्विप, द्विप, द्विप  
भाषा भाषा, द्विप ।

द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु, द्विपु  
द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु, द्विपु

द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु, द्विपु

द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु, द्विपु  
द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु, द्विपु

द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु, द्विपु  
द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु, द्विपु  
द्विपु- (म) द्विपु, द्विपु, द्विपु

द्विपु, द्विपु, द्विपु  
द्विपु ।

द्विप (म) द्विप, द्विप, द्विप,  
द्विप, द्विप, द्विप ।

द्विप (म) द्विप, द्विप, द्विप,  
द्विप, द्विप, द्विप ।

द्विप (म) द्विप, द्विप, द्विप,  
द्विप, द्विप, द्विप ।

द्विप (म) द्विप, द्विप, द्विप,  
द्विप, द्विप, द्विप ।

## ध

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

ध [म] ध, ध, ध ।

गान दो० अग्नि धर्मं य  
 कृतं कवि, पवन धर्मं य  
 दादि । अर्जुन सहुरि धर्मं  
 दो, कृष्ण सारथी गादि ॥  
 धनदः (स) कुबेर, मर भंडारी,  
 धन दाता । दो० । पुन्य लगे-  
 र धनद यद, पति अक्ष-  
 लावलि होय । दुष्टापति  
 त्वं कसंखा । राजं राज  
 पुनि सोय । १ । गराडग  
 किरर अभिपः दार्याधीम  
 कुबेर । हरि पद पंकज पर-  
 तिष्ठे, पाश नावि न  
 देर । २॥ पुनः कुंडलिदा ।  
 धनदा सो गुरवा नंदेति  
 विष्णु रिक्तेम । गुप्तक्षेम  
 भीतस्तेय, पुनि एक विंग  
 यक्षेम । एक विंग सक्षेम  
 अनुप भर्त्री किन्नर पति  
 राज राज करसखा दुख  
 लन पति अक्षपापति ॥ श्री  
 कुबेर वैश्वदेव नामं योद्धम  
 मुभ वरदा । दोहा सोना  
 नदि छंद कुंडलिदा धन

दा । १३ । [ पाखंडी ।  
 धनधकः (द) दुदगी वासा,  
 धनधारी (स) लक्ष्मी, सिन्धु  
 मुता, कमला ।  
 धनपति, धनवाग्, धनिक,  
 धनी (स) कुबेर, धनराज  
 लाको धन होवे, धनधा-  
 री, धन का जानी पचाए  
 कुबेर लागी, दीकत मंद ।  
 धनहर (स) भण्डोकर ।  
 धनुः खण्ड (स) धनुष का एक  
 भाग ।  
 धनुषटः [स] विरदंजी फल ।  
 धनुषज [स] धानिग हज ।  
 धनुः धनुषः [स] सारङ्ग विष्णु  
 का, गोदीय अर्जुन का,  
 पिनाक शिव का, य तीत  
 धनुषः राजा दधीवि के  
 पंजरा का बना या । १५  
 कमान, चाप दो० बागा-  
 सम कोदण्ड शनि, चाप  
 धनुष धनु धर्म । दार्मुक  
 धन्य कर दिये, रामचन्द्र  
 मग ममे । १॥

राजा को छाड़ि अगत  
 अलग दिखो गी जाय बैठ  
 राजोरानी भय ब्रह्मनाथ  
 गी बिना राजा के रहै  
 जायो कोई काम बिसे कुला  
 बड़ीरानी कामातुर होय  
 भोग राजा सो गीमिं मेकी  
 राजा जे अगली भय की  
 भाती कहलाय भोग  
 यथात् राजा पुन कीने का  
 कायदा को बिना पुन  
 अद्वयता प्रयाग के कहलाय  
 भोगी तद राजा जे पाप  
 देवता के नाम का पाप  
 गमन एक धर्म, वायु, इन्द्र  
 अग्नि, कुमार, वीर  
 दोषी को पाप वीर दे-  
 वता के नाम निरु भक्ति  
 दिखो को राजा काय किने  
 देवताओं का पाप को पुन  
 राजा होइगी। बाहो प्रकाश  
 कुली जे पूरे तोनि भय  
 भय भय दृष्टि वायु तोल  
 री इन्द्रदेवता की विधिपु

धर्म जेपने किंही भा तीनी  
 देवता पाय मंत्राधीन होय  
 अगले जगद्विष्ट करि तोनि  
 पुन दिखो धर्म पुन गी  
 दृष्टि दे तायुन भीम इन्द्र  
 अग्नि ए तोनि पुन गहा-  
 बली गहाधी तेजसो प्रगट  
 कायमान भयो कोई काम  
 बीम राजा वपु नी तोनि  
 पुन गहाप्रतापी बलीगह  
 मानयनि पायवहर  
 दिन बरको रहै भोग  
 निष्ठा ते ब्रह्मनाथ कुली  
 के पाप पापन भयो कुली  
 राजा अति दृष्टि होय  
 का को पुनन करि भय  
 गाय उ भाग्यवी गी तद्वर  
 भय वरमा राजा दृष्टिप्रीती  
 धी कवेरा जामि मादरी  
 अतुराभी जो वाके ल्याति  
 ते मूर्ख का वपु रीक काता  
 पाप वीर का ठी के वपु  
 वर भयवने गमन होय के  
 राजा के प्रियतार कायतव

सुविहीनो भवति ते वीर दिव्यो  
 लक्ष राज्ञो जयन्तम कवी  
 मन्त्र मादरी जयन्त मादरी  
 सुयो जयन्त जयन्त सुय  
 कवी जयन्त राज्ञो वी वी  
 राजा नि जयन्त जयन्त  
 राजा नि जयन्त राजा नि मा-  
 दरी कवी राजा वी वी-  
 तिरुव जयन्त विद्वो दा  
 वी जयन्त राजा नि जयन्त  
 माय वी माय दिव्यराज  
 दन पर जयन्त जयन्त  
 जयन्त राजा नि जयन्त  
 पर जयन्त जयन्त माय  
 मन्त्रराज दिव्य जयन्त  
 मादरी राजा नि वी वी ते  
 जयन्त विद्वो वी वी जयन्त  
 जयन्त मादरी के वी वी ते  
 जयन्त जयन्त माय जयन्त  
 जयन्त ते जयन्त वि राजा  
 सुविद्वो जयन्त पुन १ भीम  
 जयन्त पुन २ जयन्त जयन्त  
 पुन पुनराज्ञो नि विद्वो  
 विद्वो इति महाभारते

१-२६ अथः प्रश्नं यथा ६  
अथः प्रश्नः ॥

[illegible]

धर्मशुद्धि- (क) धर्म, धर्म, धर्म  
 धर्मशुद्धि- (क) धर्म, धर्म, धर्म  
 धर्मशुद्धि- (क) धर्म, धर्म, धर्म  
 धर्मशुद्धि- (क) धर्म, धर्म, धर्म  
 धर्मशुद्धि- (क) धर्म, धर्म, धर्म

पद (५) पद हयः सती,  
पति, मयः । [हयः]

धवज (स) सुपिद र कदपा  
 धवज पाण्डु (म) सुपिद पंहुह।  
 धवजासारिवा (स) सुपिद  
 समस्त।

धरनु (म) दलः सज्जत,  
धरनु (म) दलः सज्जत, सज्जत ।

दो . ॥ यत्न यत्न पादुर  
 विसद, यत्न सित यत्न  
 दात . ॥ यत्न यत्न  
 लक्ष्मि यत्न, यत्न यत्न  
 दात . ॥ यत्न यत्न  
 यत्न यत्न . ॥ यत्न



पदं सो नदि मिच्छते ता-  
 लो अनुमान दारे धरते  
 लाय के पदं करेगा यदा

जाया नमं देता मयागा ।

मंगल होहिं तुम्हरे अनु-

रागा । कापि कर के,

धुनना, कापना, धुन कर

के, काप करके । दो० । नाट

नितद धुनि रव सवट.

खन सुधीय हत राव ।

वह बंसी में कहत पिय, है

मानेछरि दास ॥ १ ॥

धुनी. (म) नदी, सरिता ।

धुनी. (प) कल्याण ।

धुनी. (म) दिलाता दूदा ।

धुनी. [म] धुनी बाल कोड़ा ।

धुनचूत. [म] निव, बादल ।

धुनकेत. [म] निमिषर दिग्दि

केनापति, पति, पंड

कतारा ।

धुन. [म] बोझा, सुख ।

धुति. केत. (म) दूती, दूती ।

धुन. [म] बोझा, धरपहार,

धर हट ।

धुनी. [म] गाड़ी का चक्र का

दण्ड लाके वस देका धु-

मत है ।

धुनी. [म] बोझा धरैया.

धुनी. [म] बोझा धरपहार, बो-

झा धरपहार, ।

धुनरि. [म] रज, गह, रज ।

धुन. (म) दिलाया दूदा ।

धुति. [म] धुति, धपट, धरि

ठग करके, धुतिता करके

धुनना, दहन ।

धुतिना. [म] ठगना, दहन,

धुती ध्यागन् [वि धाम] दि-

लाया है दगीया निवशा ।

धुने. (म) सुगन्धित दूदा ।

धुने. [म] धुनी, रीदा, दूती

धुनी, भाव ।

धुनकेत. धुनकेत, [म] पति,

पाग, पंडकतारा ।

धुनसी. [म] धुनी नदी दूदा ।

धुनिक. [म] रज निमिष ।

धुन. (म) दो० धुव निमिषर धुव

कीमधुनि. धुन धुव पद धुन

ताम । धुन तारी तिदि पटन,



गुन, गुन शीर्षिंद, गोपाल ।

धूरी. धूरि (न) धूम । - टी० ।

धूर धूमरी छिड़ रज,

पाँच संघरा मंद । का पद

पंक्तन रणु की, बाँझा

सकल सगंद ॥३॥

धूर्त [म] नटपट, गठ, ठग

सचका, फरीबी, जुनारी ।

धूम. [स] धूँवाँ, धूँकर, रीसा ।

धूर. [म] धूलि, रज, रेशु ।

धूम बेतु. [स] धूलि, धूँकलतारा

धभी. [स] } रज, खाक ।

धूलि. }

धूट (म) धविनीत-गगलम निर्मल

गिदंय. ठोठ ।

धूसर. [स] धूँध विजिय ।

धूँक. [म] धूँकार, धतिनीच

धूत [म] धारण किया, धारित

धपड़ा दुपा ।

धृति. [म] 'धोरज', गालि,

धैर्य-धारणा. धसिधता,

धृति. धीरता ।

धेनु. [स] गो दधारो, दुग्धवतो,

मेया, धेनु गाय घोड़े दिनी को

विधानी-गज पादि ।

धेनुदुग्ध. [म] गुग्गुली रघोडे

दिनी को विधानी गज

पादि का दुध ।

धेनु धूलि. [म] गाधूली बेदा ।

धेनुमेती. धेनुमति [स] गो

मनी मदी, ..

धैर्य. [स] धतिज्ञा, धातन,

धैर्यमान, धृति धीरता,

धीरज, कठोरता ।

धीरी. (व) सुव्यवैत, धधीरी

सुव्यवैत, ..

धीत, (म) धेत, धजव ।

धीताप. धम. (वि. मधुम)

धेत धे कोर निध धे ।

धीला (म) शुक्त, धजव, ..

ध्याता (म) ध्यानी, ध्यानध ।

धी (द) कि, याधि, ..

ध्यास्यन्ति (स) ध्यान करेगे,

मन मे लावेगे ।

धूर्त. टी० ध्यानी निध्या

कुटिल कत, 'बहमी'

कहत लकीजु । 'कपटी'

काहर कहर की, धिति

कहति मलीजु ॥३॥

ध्रुवः ध्रुव (म). नियमः तस्मै,  
 'हर, गङ्गा, ऐश्वर्य भक्त का  
 नाम। उत्तर देवदूत नाम  
 तारा जाको कथा है, भक्त  
 विधेय गरमद हृष ।

राजा उत्तानपाद बड़े पुत्र  
 राजा स्वयंभु भक्त के धे  
 बाकी हिस्सी बही सुनुती  
 लक्ष्मी पुत्र ध्रुव लू. खीर  
 छोटी स्त्री सुखी जाके  
 पुत्र उत्तमनाम, एक दिनों  
 रागी सुखी लघु स्त्री के  
 पुत्र उत्तमने राजा उत्तान-  
 पाद पिता के लंघा  
 पर बैठा था ध्रुव लू. भी  
 पाय देखि कै बा भी  
 दोसरी लंघा पर राज के  
 पिता अपने भी लागि  
 लाय बैठो, ता काक भी  
 रागी सुखी लघु स्त्री  
 देखि कै राजा को कहि  
 काहे कि बाई पूर्वहिं  
 राजा विधिक देगी धे ध्रुव  
 लू. को लंघा पर ही पिता

के उत्तरवाय भीनी दिगी  
 ध्रुव लू. ने दाही ग्लानि ते  
 पानि बर्य की पयस्या मों  
 माता पिता के पद्यागत  
 राशि की छठि करि वन  
 की तपस्या हेतु सिपारे-  
 मार्ग मांभ श्री नारद लू  
 ते भेंट भयो नारद लू ने  
 पूर्व बहंत फिरे को समु-  
 भाये पयात् नहिं फिरे  
 सत्ता गन्त उपदेश दियो-  
 बा गन्त, उपदेश ते यमुना-  
 घाट मों जाके ही भास  
 भगवान् के गाग पर क-  
 ठिन घोर तपस्या चरमो  
 कियो कि बैकुण्ठ दि लो-  
 काकोक विभुवन कम्पान  
 ही गयो तां उपरान्त श्री  
 विष्णु चतुर्भुज पाय कै  
 दर्शन दे कै वर दियो कि  
 २६००० स्वर्ग स्वर्ग बर्य  
 पृथ्वी की पटल राज करि  
 पयात् धाम स्वर्गों पावनि  
 श्रीर एक पंचजन्य शंख

दियो आके कृषि संता मता  
 यी चारो भेद घट्यायादि  
 चोदरा १४ विद्या के प  
 पित्त होय मूत्र ते बापास  
 भयो तह धृत जू मे चपमो  
 ५ आगनी ते परिपूर्ण होय  
 ६ मगर आके २६००५-मह-  
 सुवर्ग राज-करि देवत दा-  
 लाके भू, भूतारा भयो सब  
 देवता सूर्यादिने येस भया  
 नि चाकाग सो सूर्यादि  
 तारागण जमेगान रहत  
 है, यन वह भू, भू तारा  
 विचल पद पय नने  
 मान् नदि दात है मही  
 ७ के गही सिद्ध यन रहत  
 है १ इति भू, भू चरित्र श्री  
 भागवत उच्छ्रय ८० अध्या-  
 य प्रमाण ।

ध्रुवमन्त्री ( ४ ) अङ्गामन्त्री,  
 ध्रुवमन्त्री :

मन्त्री ( ५ ) दीर्घा विमर्ष, ध्रुवका  
 ध्रुव ( ६ ) दी० ध्रुव पताका  
 रिक्त पुनि, मेरुकी ध्रुव

मेत। कीमती १५ गुण, दे,  
 सोमित मिश्र निवेत ।।  
 ध्रुव ( ७ ) ध्रुव, लीप, माग,  
 दानि ।  
 ध्रुव ( ८ ) ध्रुव, लीप, माग,  
 मास फहरात, पताका ।  
 ध्रुवकीक, ( ९ ) मेरा, दल; चरित्र  
 ध्रुव ( १० ) भूतारा, भूतारा ।  
 ध्रुव ( ११ ) मन्त्र, ध्रुव, ध्रुव  
 ध्रुव ।

ध्रुव ( १२ ) विमर्ष, विमर्ष,  
 ध्रुव तारा मन्त्र ध्रुव ।  
 ध्रुव ( १३ ) ध्रुव मन्त्र ध्रुव  
 ध्रुव ।

ध्रुव ( १४ ) मन्त्र, ध्रुव ।  
 ध्रुव ( १५ ) मन्त्र ध्रुव ।  
 ध्रुव ( १६ ) ध्रुव ध्रुव, ध्रुव,  
 ध्रुव ।

न

मन्त्र ( १७ ) मन्त्र ध्रुव ।  
 मन्त्र ( १८ ) मन्त्र, मन्त्र ध्रुव ।  
 मन्त्र ( १९ ) मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र ।  
 मन्त्र ( २० ) मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र

४ या चाधीनी के जमी-  
न पर नाक रज्जुना,  
नाक पिडना ।

नक्षत्राः सु० विह्विता, सुग-  
ताहा, रिक्ताहा, (लोभो),  
विमला दूरा क्षमाद ही,  
जिम्भनेवाका ।

नक्षत्रीर घूटना नक्षत्रीर दक्ष-  
ना सु० नाक से कोह  
दक्षना, नाक के हृषिक  
दक्षना, नक्षत्रीर नाक  
को नक्षत्रदक्षना दक्ष [ ना  
निका, नाक पीर गिरा,  
नक्षत्र से दक्ष दक्ष दक्ष है ]

नक्षत्राः सु० नाक नक्ष-  
ना, दिव्य दक्षना, ईशान  
दक्षना । नक्षत्र (नाक)  
दक्षनी दक्षना कोह की  
दक्षनी दक्षना कोह की  
छंट के नाक में दक्षनी  
जाती है पीर दक्षनी की  
ही दक्षना छंट की  
दक्षनी है ।

नक्षत्रदक्षना सु० दक्षनी दक्षना,

नक्षत्रीर नाक, दक्षना  
दक्षना, नक्षत्रीर दक्षना,  
दक्षना दक्षना, नक्षत्रीर दक्षना,  
नक्षत्रीर दक्षना ।

नक्षत्र (कोह) दक्षना, दिव्य दक्षना ।

नक्षत्र नक्षत्रीर (स) दक्षनी दक्षना  
दक्षनी दक्षना दक्षनी दक्षनी  
दक्षनी दक्षनी दक्षनी दक्षनी

नक्षत्रीर (स) दक्षनी ।

नक्षत्रीर दिव्य [दक्ष] दक्ष ।

नक्षत्र (स) नक्षत्रीर, नक्षत्रीर,  
दक्षना, नाक, दक्षनीर, स-  
दक्षनीर, नाक एक दक्षनीर  
का नक्षत्रीर ।

नक्षत्र (स) दक्षनी र दक्षना  
दक्षना, नाक नक्षत्रीर ।

नक्षत्र दक्षनी (स) दक्षनी दक्षनी  
नक्षत्रीर (स) दक्षनी ।

नक्षत्रीर [स] दक्षनी, दक्षनी ।

नक्षत्र [स] नक्षत्रीर, नक्षत्रीर  
नक्षत्रीर दक्षनी र दक्षनी  
नक्षत्रीर दक्षनी । नक्षत्रीर पुनर्भव  
नक्षत्रीर नक्षत्रीर, दक्षनी रक्षनी निधि  
दक्षनी । नक्षत्रीर दक्षनी







धरे, नाम, पोय, पोरीय ।  
 गन विमलित यद-हंद ६,  
 कला-जानिदे बीग १ १ ।  
 सरिता, यय, संघत प्रभू,  
 दुःसरिता निरराय ।  
 मुहा-याय परमन यतो,  
 ताहि नियो वरसाय १२ ।

महीग (म) समुद्र । [का हय ।  
 महीकूचहुम (स) मही तीर  
 महीकान्ता (म) काकलवा  
 मही ।  
 महीमल्ल (स) लहुरा ।  
 मनिपौर मनिपौर (म) नानि  
 दाम, नानिक ।

मधु (म) मियद, ठीक, निदल ।  
 मन्दक (स) दून हय ।  
 मन्दन (म) दहकारक, पय  
 सुल दारक । दो० । मन्दन  
 मन्दन की बहन, मन्दन  
 की धनदाता । मंदन ल-  
 रिदे वृषकद, जेदि हयि  
 विहा नाम ॥ १ ॥

मन्दी, मन्दिनी (स) पुत्री,  
 बान्नी ।

मन्दिनी (म) देविका रचनपुर  
 मन्दिन (प) रुद्राक्ष, मित्र  
 दावन । [येन ।  
 मन्दी (स) शिवदूत, समदा  
 मन्दीयाम (म) पुरे विमिय-  
 भद्रमा निकटयो भरतल  
 के तपस्यान ।

मन्दीमुख (स) जेनयाह  
 विमिय, तिसो गोहम ।  
 मन्दीमुखी (म) पागी का पची  
 रिम के मंद पर मौस का  
 मोला बहा हो ।  
 मन्दी हय (स) दून । वेतिपे  
 पीपर २ ।

मन्दीगर (स) महादेव की दा  
 येन, शिवदूत, विमिय ।  
 मन्दी (म) माती, दुहित पुत्र ।  
 मन्दीरी (स) बाता गीद सडगाई,  
 एक बहार का बाता ।

मन्दीन (स) मन्दी, एवीए ।  
 मन्दी (म) पाकाग, म पादय  
 भादन्द, दावपताम,  
 निकट, म, दो० । संम







१. विद्युत्तन्त्र, १८ श्रीमती भद्रावती,  
१८ श्रीमती भद्रावती, १८ श्रीमती  
१८ श्रीमती भद्रावती, १८ श्रीमती

— सप्टेंबर १९४७ मध्ये  
मोठा, ३४० टक्के, २५

‘बटनिरीधन, २६ मण्डो-  
‘नरीन, २६ मण्डविमय,

॥ इति श्री भगवत्पद्मसूत्रे श्री भगवत्पद्मसूत्रे श्री भगवत्पद्मसूत्रे ॥  
॥ इति श्री भगवत्पद्मसूत्रे श्री भगवत्पद्मसूत्रे श्री भगवत्पद्मसूत्रे ॥

ਸਰਕਾਰੀ ( ੪ ) ਸਰਸਿੰਧ ।

अथवा, [४] रचना ।

नरदाहन ( ४ ) कुँवर, पु.  
- भण्डारी ।

ਸਰਬਤ੍ਰਿ ਸਾ ਸਾਧਿਕਾ ਸਾਧਿਕਾ  
 ਸਾਧਿਕਾ, ਸਾਧਿਕਾ ਸਾਧਿਕਾ  
 ਸਾਧਿਕਾ ਸਾਧਿਕਾ ਸਾਧਿਕਾ  
 ਸਾਧਿਕਾ ਸਾਧਿਕਾ ਸਾਧਿਕਾ  
 ਸਾਧਿਕਾ ਸਾਧਿਕਾ ਸਾਧਿਕਾ

अथ इति यत् [ ४ ] राजमासे,  
 चतुर्थः ।

१. **महर्षि दाम (ब) जी गुलमी**  
 २. **दाम जी के सुदृढ़ बलाह**  
 ३. **संग विद्यापी ।**

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मरीच- ( ३ ) पाना, भूषण ।

ਮੀਟੀ ਦੁਬੀਜਾ: ਜੂ. ਗਲਾ ਖੋ.  
'ਯਮਾ.ਏਦੁਬੀ ਖੋਟਮੀ; ਬਿਟੀ  
ਦੁਬੀਆ।

ମହନ୍ତ (ଖ) ଶୁଭାଭିଷେକ (୧୫/୩/୮୮) ।

नगरपालिका { ४ } नट होमि  
वाजा डप ।

|        |        |          |        |
|--------|--------|----------|--------|
| मल्लिक | मल्लिक | } मल्लिक |        |
| मल्लिक | [म]    |          | मल्लिक |
| मल्लिक |        |          | मल्लिक |

ਸ੍ਰ. ਸਤਿਨਾਮੁ ॥

मन्त्रदेवता.(२)नखदेवता ।

नमः । ( सः सुखं, सुख-  
 नमः । सुखं सुखं सुखं,

संश्लेषकः कल्याणदासः ।

[illegible]

कोनो कोन ॥२॥ मनुष्य ।

कुवेर पुत्र नाम, मानव

विशेष लोकभ्राता, लोको

रूप विशेष ।

नमद ( म ) सामञ्ज ।

नमद्वर ( म ) कुवेर के दो बेटे

को नारदमुनि के श्राप से

पेड़ हो गये थे ।

नमनी ( प ) नाम एष ।

( स ) कुही कोर,

बन्ध बाँध को मनु कमल ।

नमिदा ( म ) मनुका ।

नमिना ( म ) कंग, कुमोदिन,

पदम, कमल, पानी, सारस ।

नमिनी ( स ) कमल-भराता ।

कमल की मी, कोई,

कमल का पसांग कुमुदि

नी, कमलिनी, कमलों का

समूह, कमलों से भरा

तलाव ।

नमी ( स ) मनुका ।

नव ( स ) नया, जो संस्था

वाचक, ट, नेतन ।

नवन् [ स ] नी

नवपुत्र विवरण ( स ) कुमा

वर्त ॥१॥ इलावर्त ॥२॥

मन्त्रावर्त ॥३॥ मन्त्रव ॥४॥

वैतु ॥५॥ मन्त्रवर्त ॥६॥ इन्द्र

स्वर्त ॥७॥ विद्वर्त ॥८॥ लोकेट

॥९॥ चोपा ॥१०॥ तन्त्रमुक्त्यावर्त ॥

॥११॥ वार्ता मन्त्रावर्त मन्त्र

पर्वत मन्त्रवर्त इन्द्रस्वर्त

विद्वर्त लोकेटवर्त मन्त्र

मन्त्रवर्त मन्त्रवर्त मन्त्रवर्त

स्वर्त मन्त्रवर्त मन्त्रवर्त

दीवर्त मन्त्रवर्त मन्त्रवर्त

॥१२॥ मन्त्रवर्त ॥१३॥ मन्त्रवर्त

॥१४॥ मन्त्रवर्त ॥१५॥ मन्त्रवर्त

॥१६॥ मन्त्रवर्त ॥१७॥ मन्त्रवर्त

॥१८॥ मन्त्रवर्त ॥१९॥ मन्त्रवर्त

॥२०॥ मन्त्रवर्त ॥२१॥ मन्त्रवर्त

॥२२॥ मन्त्रवर्त ॥२३॥ मन्त्रवर्त

॥२४॥ मन्त्रवर्त ॥२५॥ मन्त्रवर्त

॥२६॥ मन्त्रवर्त ॥२७॥ मन्त्रवर्त

॥२८॥ मन्त्रवर्त ॥२९॥ मन्त्रवर्त

॥३०॥ मन्त्रवर्त ॥३१॥ मन्त्रवर्त

॥३२॥ मन्त्रवर्त ॥३३॥ मन्त्रवर्त

॥३४॥ मन्त्रवर्त ॥३५॥ मन्त्रवर्त

॥३६॥ मन्त्रवर्त ॥३७॥ मन्त्रवर्त

॥३८॥ मन्त्रवर्त ॥३९॥ मन्त्रवर्त

॥४०॥ मन्त्रवर्त ॥४१॥ मन्त्रवर्त

हीराक्षः पद्मः, मातङ्गः, सद्यारः,  
 २ गजः, ३ मर्मवर्, ४ देवः,  
 ५ धारः, ६ गोपः, ७ व्यासः,  
 ८ चाक्षः, ९ इति गवगुण  
 धनम् प्रशंसन् श्रुत्वा ।  
 भद्रतलः (स) वयोः का कृतः,  
 १ प्रमोदः, २ धीमती । ३ ० ०  
 गवधा ( ४ ) नृप प्रशंसन् का ।  
 गवधा मति विवरणः ० ८३—( स )  
 अथ भं, १ कवचम्, २  
 ३ दाक्षः, ४ सखा, ५ मर्मवर्ः  
 ६ अविशेदम्, ७ आरक्षः, ८  
 ९ अक्षयः, १० कीर्तनम्, ११  
 विष्णुः, १२ विष्णुः ० ८४  
 १ धीमती, २ धीमती, ३ अक्षयः  
 ४ आरक्षः, ५ मर्मवर्ः, ६  
 कीर्तनम्, ७ अक्षयः, ८  
 विष्णुः, ९ अक्षयः, १०  
 अक्षयः, ११ अक्षयः, १२  
 अक्षयः, १३ अक्षयः, १४  
 अक्षयः, १५ अक्षयः, १६  
 अक्षयः, १७ अक्षयः, १८  
 अक्षयः, १९ अक्षयः, २०  
 अक्षयः, २१ अक्षयः, २२  
 अक्षयः, २३ अक्षयः, २४  
 अक्षयः, २५ अक्षयः, २६  
 अक्षयः, २७ अक्षयः, २८  
 अक्षयः, २९ अक्षयः, ३०

१ श्री चंद्रः, २ श्री चंद्रः, ३ श्री चंद्रः,  
 ४ श्री चंद्रः, ५ श्री चंद्रः, ६ श्री चंद्रः,  
 ७ श्री चंद्रः, ८ श्री चंद्रः, ९ श्री चंद्रः,  
 १० श्री चंद्रः, ११ श्री चंद्रः, १२ श्री चंद्रः,  
 १३ श्री चंद्रः, १४ श्री चंद्रः, १५ श्री चंद्रः,  
 १६ श्री चंद्रः, १७ श्री चंद्रः, १८ श्री चंद्रः,  
 १९ श्री चंद्रः, २० श्री चंद्रः, २१ श्री चंद्रः,  
 २२ श्री चंद्रः, २३ श्री चंद्रः, २४ श्री चंद्रः,  
 २५ श्री चंद्रः, २६ श्री चंद्रः, २७ श्री चंद्रः,  
 २८ श्री चंद्रः, २९ श्री चंद्रः, ३० श्री चंद्रः,  
 ३१ श्री चंद्रः, ३२ श्री चंद्रः, ३३ श्री चंद्रः,  
 ३४ श्री चंद्रः, ३५ श्री चंद्रः, ३६ श्री चंद्रः,  
 ३७ श्री चंद्रः, ३८ श्री चंद्रः, ३९ श्री चंद्रः,  
 ४० श्री चंद्रः, ४१ श्री चंद्रः, ४२ श्री चंद्रः,  
 ४३ श्री चंद्रः, ४४ श्री चंद्रः, ४५ श्री चंद्रः,  
 ४६ श्री चंद्रः, ४७ श्री चंद्रः, ४८ श्री चंद्रः,  
 ४९ श्री चंद्रः, ५० श्री चंद्रः, ५१ श्री चंद्रः,  
 ५२ श्री चंद्रः, ५३ श्री चंद्रः, ५४ श्री चंद्रः,  
 ५५ श्री चंद्रः, ५६ श्री चंद्रः, ५७ श्री चंद्रः,  
 ५८ श्री चंद्रः, ५९ श्री चंद्रः, ६० श्री चंद्रः,  
 ६१ श्री चंद्रः, ६२ श्री चंद्रः, ६३ श्री चंद्रः,  
 ६४ श्री चंद्रः, ६५ श्री चंद्रः, ६६ श्री चंद्रः,  
 ६७ श्री चंद्रः, ६८ श्री चंद्रः, ६९ श्री चंद्रः,  
 ७० श्री चंद्रः, ७१ श्री चंद्रः, ७२ श्री चंद्रः,  
 ७३ श्री चंद्रः, ७४ श्री चंद्रः, ७५ श्री चंद्रः,  
 ७६ श्री चंद्रः, ७७ श्री चंद्रः, ७८ श्री चंद्रः,  
 ७९ श्री चंद्रः, ८० श्री चंद्रः, ८१ श्री चंद्रः,  
 ८२ श्री चंद्रः, ८३ श्री चंद्रः, ८४ श्री चंद्रः,  
 ८५ श्री चंद्रः, ८६ श्री चंद्रः, ८७ श्री चंद्रः,  
 ८८ श्री चंद्रः, ८९ श्री चंद्रः, ९० श्री चंद्रः,  
 ९१ श्री चंद्रः, ९२ श्री चंद्रः, ९३ श्री चंद्रः,  
 ९४ श्री चंद्रः, ९५ श्री चंद्रः, ९६ श्री चंद्रः,  
 ९७ श्री चंद्रः, ९८ श्री चंद्रः, ९९ श्री चंद्रः,  
 १०० श्री चंद्रः



|                            |                             |
|----------------------------|-----------------------------|
| १ - देवि कीजिये मितास १॥   | ॥१॥ हस्त जोरि मगानं घरं छंद |
| कांत से अभाव येन भीष       | ॥२॥ स्त्रीका ॥ १ ॥ विभंग    |
| लाग कोन एक बात ।           | रस—दोहा ॥ १ ॥               |
| बोस रोम बंदनोष भवं         | कुवलिना पीडहति, रंग         |
| जोष ईश काह काग             | अरि हरि अंत । हरि           |
| ॥३॥ पीति। तनु भूषण कोन     | विन्दु सीमित वदन काय        |
| ॥४॥ देव देव कोन कोन ताप    | ॥५॥ निपाती कंच ॥॥ अहं       |
| ॥६॥ कोन कोन कोन कोन        | रस—दोहा ॥ १ ॥ भूषण          |
| ॥७॥ सुंदर गंध गंध गंध गंध  | अल सुपति कपासा ।            |
| क्याग ॥ १ ॥ कथनका          | अथा कंचर भंडन माता ।        |
| रस—दोहा ॥ १ ॥ लया          | गंध देत अंगल कपी ।          |
| ॥८॥ मित्य मेरी सुनो काह दे | अनु सुंदर तिभावन            |
| काग ॥ कचारी करे दृष्ट      | कपी ॥ १ ॥ मातर—             |
| अथा दको थान ॥ १ ॥          | दर प्रथम । अमर              |
| दोषदा टार वला कटो          | दुखम देह भोगी यथा           |
| पानि ॥ अगान कहे च वि       | अल कंच विरो नाहि            |
| अगो लघु जानि ॥ १ ॥         | तागे अथाना । अह काट         |
| बोवनाम अह जोका ॥ १ ॥       | इगवान अनुभाय वर             |
| काही अगोम वेराट कप-        | भक्ति बंधेन पापान मिम       |
| कदंदाअगान ॥ १ ॥ अगान       | तिनु दाना । विद्या अनु      |
| ॥९॥ राम चरि मरु रोद        | अल कट विग कोन               |
| गूरी निगान ॥ १ ॥ कपी       | तने या यथा नाग चम           |
| अगान कट वेग माग मी         | सुगान । तागे अनुभाय         |
| भीषका ॥ १ ॥ अह कहे         | अगो अनुभाय                  |

कल्पे दहे तनू जसे किगा  
 ना ॥ १ ॥ सखा बन्धु प  
 रिवार भगती पिता  
 माता वामा तमे दास  
 दासी धर्म ॥ सबे द्रव्य  
 साक्षी करे सार्ध मीती  
 गंधर्वा मोह जेतु कहे सर्व  
 मित्री किचे दूत यमराज  
 के तोहि चिहने करो याहि  
 सिबिहा चट्टादि तरे  
 रमाताया को ध्यान कीले  
 सही मान पराजित कर  
 दसासीस वंश ॥ १ ॥  
 नवीन नवीन ( दः सः ) नूतन  
 मधुसूत ( सः ) नव पीर मंगल  
 चर्चात् सीसह विंगार  
 सीसह प्रचार का विंगार  
 सिंगारुहि, मञ्जन, परिक  
 निवसन पहिरनो दासक  
 दमः सवारना, मणि न  
 हन्दुर कमीना, भाषा सीरी

चर्चात् तिलक, विषय  
 परितल बनामी, नदरी  
 समाना, परगना संग ॥  
 समाना, मूयन, पुण्य सुगंध  
 समाना, सुवर्ण, विंदात  
 रंगना, चर्चर रंगि, काजर  
 समाना, विंदात  
 नवली ( सी ) चर्चक, शक्तवर्ष  
 चर्चक, सखि, नवीन  
 सुन्दर, नवीन, जरीम  
 नवमोमिधुते, ( पः ) नव चन्द्रमो  
 चर्चक, चर्चक, चर्चक  
 चर्चक, ( दः ) विंगार, नव  
 नवाय, ( नमः ) नमः, नमः  
 विंगार, नमः, विंगार  
 नमः, ( पः ) नमः, किगा  
 नमः, ( विंगार ) नमः, नमः  
 नमः करना  
 नमः ( सः ) विंगार, विंगारी  
 नमः, नमः, नमः  
 नमः ( पः ) नमः  
 नमः ( पः ) विंगार, विंगार  
 नमः ( पः ) विंगार, विंगार



महोपाय (५) देखना, रंग, मल ।

महर्षीः (६) नव बाटने का  
पक्ष, महर्षी ॥

मनुष्यः मनुष्यः (५) मनुष्यः  
 १. रोग शून्य या भी मृत निव  
 रत है मनुष्य शून्य निवदि  
 मनुष्य भीत है कदाचित्त या  
 शून्य मध्य में दृष्टि काय तं  
 मनुष्य भीत, मनुष्य में मृत  
 या रोग का निवृत्तता है ।

मही, (म, निषेध, मही) ।

महादेव, (५) शर्मा का टुकड़ा,  
बाग का टुकड़ा, झाड़ू, बाग  
पत्तन, विंग का अंकुर,  
बेड़ी काव, ।

लवार्थ ' [ ५ ] मय ।

मङ्गल- (पं) राजा देव विजय  
जा की लता है, एक लक्ष

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

१. कुरुक्षेत्रादि देवतस्य च मुख्यं मे  
 दम्भं हि ज्ञेयं योऽपि ज्ञेयं वा  
 दित्वा दम्भं मे च अभिमानता

— ୧୫୮ —

इससे तो सहस्रानि जू, दत्तात्रय  
देवता के मुख को रत्न के  
पराजय निमित्त समस्त दिव्य  
काम राखनी में रत्न पर  
रोको मिले। तब रत्न में इस  
प्रति जू के विद्वत् को जाने  
में संशय रहने लगा। देवता की  
प्रज्ञा थी संसार में प्रज्ञा के प्रभु  
के परमेश्वर समस्त में विद्वत्  
वाचन बाकी मोटा है। पुनः  
मोति रत्न की को को मोती।  
वा विद्वत् का सादर देव  
कुली रत्न विद्वत् देवकुली वर  
होम काल को जाने वर होम  
कुल में वर हाथ में देवत्त  
दृष्ट हाथ देव वर सादर  
वर में वाचन देव काल  
वर का ललाटे वर। तब  
का रत्न में वा विद्वत् देव  
को विद्वत् जति होम मोती  
महात्मा वा विद्वत् का वर में  
काटि वरत्न कुल में वरत्न  
महात्मा वा वरत्न में वरत्न  
वरत्न वरत्न वरत्न वरत्न वरत्न

धावा । इन्द्र ने चति से कहत ॥  
 पर सब जगद ज निरोम होय  
 मानमरोवर विषे काये मइत  
 ते पछहत्या पाहि की काहु  
 की समर्थ या विषे प्रथम की  
 नहीं है मत सपे का हवे । पर  
 या पछहत्या मानमरोवर के  
 गट परधा के मानमरोवर जल  
 ते गिरने की पथको बन करत  
 रही बि जौन काज गिरने  
 तजान पावो गो । ता उपरान्त  
 यो तजान न इन्द्र की चति स-  
 कहता देख रखा केरि वा  
 तजहत्या की चारि स्याग पर  
 कागद दिया । मरी भूमि मी  
 समर । वृषी मी बादा । १  
 जहा गो । दिन । १ देह मी  
 नारियो है तीनि दिन रजस्रसा  
 कास । पर कामा बाहिये बि  
 पाही सो सपे इन्द्र के मान  
 मरोवर मइत कासमो इन्द्रा-  
 सन मूय देख नइय नामि  
 एक देख इन्द्र के माहो पर जा  
 को दिते सब जगि मनी पादि

को सपेन बगी करि ऐसो  
 कुपाटी संध्या मयो कि सपेने  
 वसिकरि भोति धर्म होम  
 यत् पूजादि सबो को पोहाय  
 कुनीति चलाधी, की कोर को  
 सुनीति धर्म काज भी सुने पर  
 देखे बाको दण करे, या  
 बरिष सधर्म बाकी सान श्री  
 गारद लूरा बि निमीट हेतु  
 बाडे पाप मयो माने नाहि नू  
 को प्रयोग करि ससोन सदित  
 पासने दियी बा नहि बैख्य कछी  
 बि जब सुह इन्द्र पूरा होगी तब  
 मे बैठोगी । वा नी कही बि मे  
 इन्द्रगोही पर बैठे । पू सब  
 हमारी बगी भूत है इन्द्र जीने  
 को सब कहा कसर है नारद  
 जने कहि बि जब तक इन्द्रापी  
 के मय्यापदव न करे तब  
 तक इन्द्र पूरा कहो हो नका  
 ने या की मानि इन्द्रापी से भोग  
 करण के छपयोग बगी हवा ।  
 पर नारदे लूबा की सब कछि  
 इन्द्रापी सी सुरत सब भाती





ਜਾਮਦਲੀ 'ਚਿੰ। ਧੁੰਦਲੇਪੰਨੀ । "

नागपुरी (म) फल छिंदमोती

भा.नि.जी. : (१) 'भा.ग.पुं.जी.' (२)

पान १। १५५

न।संजीवो (ब) धीतरास, नरेकः ।

भा.म.की.सी. [मं] दा.मं.पुं.हो.रौ

**म.नि.प्र.नं.१०७४६ (क) अथवा**

१०-अभयवर्मा

જાહેર (સ) ગોપન્ય કોટા

॥ अथ ॥ १३

साहित्य, [४], नीकना, बहा

माहीतनामक - [य] - कर्मची

**कालः : ..**               **- [समय] :**

ભાગીયાત (૬) જોડણી કોટા

नाम नाशु, (कु) चम, कुल, कुल,

अनाज ।

महर्षि संजय उवाच ॥

1. *For the first time*

[illegible]

সংস্কৃত-বিশ্ব-বিদ্যালয়, কলিকতা

• "बहिर्वाह" यमनामी

• **सिद्धि** •

माह (१) बीबी, मई, मई,

६५३ अहं गोक, चापान, २

आदिष्वेति 'सि' नदी 'सा' नदी ।

नादेयो [सं] भविष्यते १८ न

५५. बेल 'र' कठज, सुनि' इ. ४५

બેંગાળ [સ] , સ્વમેજી, પશ્ચિમ

१ आत्मदण्ड, विविध ३

प्रमाणक ५० [ ५ ] अन्तर्गत

[illegible]

॥ अथ श्रुत्वा विभेदपत्रं ॥

१. प्राथमिक । २। द्वितीय ।

ਸ਼੍ਰੋਮਣੀ ਗੁਰਦੁਆਰਾ [੨] ਜਿਹਾ ਥਾਂ

अवधवा मेवा ३१ १८५

महोदयसुखे[क] आह विने

अथर्ववेदः

जोमे संति मगर कोबी ।

सुखं वा न भवति । इति ।

॥ वा दद श्रव विवर्त भूष

1. *Chlorophyll a* (Chl a) is the primary photosynthetic pigment in most plants and algae. It is a green pigment that absorbs light energy in the blue and red regions of the visible spectrum. Chl a is essential for the light-dependent reactions of photosynthesis, where it converts light energy into chemical energy in the form of ATP and NADPH.

१०. संविधानसभा

॥३॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विद्यमानः कृतः।

प्राप्ति- (न) बंदी, बंदी, बंदी

नाम कपूरी ।

नापितः [म] नाई, हलाम ।

नामः (प) संचा, यम, विख्याति ।

नामन्, (स) नाम ।

नामपरामुखः, [म] नाम, का

लपनी होला ।

नामकरणा, सु० नामो-होना,

नामवर होना, यमी-होना,

विख्यात होना, मसिह

होना, नामादेना ।

नाम रखना, सु० नाम धरना,

नामलेकरना, सु०

दुमरी-मनुष्या के नाम ले

नामो-मामि होना ।

नामलेगो, सु० मरना,

नामो-मामि होना, पसीमर के

नाम लेना, कपूरी-करना,

नामा-फिरना ।

नाम-होना, सु० यम-होना,

यम लेना ।

नाम-होना, सु० यम-होना,

नाम देना, सु० नाम रखना ।

नाम धरना, सु० नाम रखना,

नाम लेना, सु० नाम लेना,

नाम लेना, सु० नाम लेना,

नाम ठहराना, बिस्वी

नाम से प्रकारना, खराद

करके कहना, मुरा नाम

रखना ।

नामनि-नामना, सु० नामो

होना, नाम करना, दोषी

नामो-नामो-करना ।

नामो-नामो-नामो (स) समझ

नामो-नामो, नामो-नामो

समझ ।

नामो (स) नामो-नामो, नामो-नामो

नामो-नामो, सु० नामो-नामो

होना, मसिह-होना,

विख्यात-होना, उजोगर

होना ।

नामो (स) सुविद्यो, विद,

नामो, सरदार, संगुना ।

नामो-नामो (स) कटनी, देनी,

नामो-नामो, हो ।

नामो-नामो (प) सुविद्यो,

नामो-नामो ।

नार (स) लक्ष, नीर

नारकीः नारकीय, (स) नारकी

नामो-नामो, नामो-नामो

नामो-नामो, नामो-नामो

नामो-नामो, नामो-नामो



का, चेत, लयी ।

नि० ( म ) निघ्न, पात,

निघ्नबोधक शब्द ।

निःश्रेयो ( म ) सीढ़ी, निघ्नो

दोः । पारोहन पारोह

पुति, निःश्रेयो भोषाग ।

मनिमय सीढ़ी सखि श्रेयो

सखी न कोष्ठ जान ॥ १ ॥

निरुद्ध ज्ञाना मु० भागजाना,

चक्षा ज्ञाना । [ ज्ञाना

निरुद्ध पद्मना मु० बाहर या

निरुद्धभाषणा, मु० भागजाना,

निरुद्धभाषा, निरुद्धभाषा, मु०

निरुद्धभाषा, बाहर हो

जाया ।

निरुद्धभाषणा मु० बाहरना,

बाहरभाषणा, मुनिज कर

देना ।

निरुद्ध देना मु० दुहादेना

बाहरकरना, पसम कर

देना, दूर करना ।

निरुद्ध ज्ञाना मु० से पाना

वशास्तान ।

निरुद्धदेना मु० सेलेना,

कहाइ लेना, कहा लेना,

हाट लेना ।

निःश्रेयो ( म ) पद्म, पाप

यानु, सखी सांभ ।

निःश्रेयो ( म ) नष्टहीन, पकेला,

चमगा ।

निःश्रेयो ( स ) निरुद्धभाषा, पद्म

का, पद्मधारिता ।

निरुद्ध ( म ) समीप, सखिभि,

पात, नष्टहीन, निरुद्ध

या अपराध नात, ॥ हृद

विपिन तिलका ॥ निरुद्ध

चरुत्तन पासध पद्मासहू ।

तटं मध्यस्थं सामीप पद्मा

सहू ॥ सखिधीनंतरं तीर

पद्म दूरहू । पास मधु

पाय सुयोध सुत भूरहू ॥ १ ॥

दोष अपराध यो पाग

यो मनुं लो । नाय हरि

से मधे राग मधुवंत लो ॥

राग पाप्रा हनुमान कपि

दत्त चक्षा । विपिन तिल-

का सुग वंद विंसत

काता ॥ २ ॥





निगरता [स] रत्नद्व ।  
निगुट् निगुट् [स+द] गहरा,  
गुल्ल गंभीर, दिवादुषा ।  
नमगट, दुर्गम, गुप्त, अठिग  
अतिगुप्त, बहुत दिवा ।  
निघट [स] रोह, दण्ड, वेद,  
रन्ध्र, पशुपादाभाद, दंशन,  
तिरस्कार, रोष ।  
निघटता [प] अतिरमती,  
रोता ।  
निघुल [स] ईश्वर, दृष्ट विमिश्र ।  
निघोक्त [स] वफा, दण्डा,  
दोहा । येन निघोक्त दुष्कृत  
पट, संसृष्ट बास सिधार ।  
पियतन कास जु वसन मे,  
हिरदिन होत अधीर ॥  
निदिंत होमा, कुं बाग  
दूताकरना, निघटागा,  
वे विविध रोगा, पुरातन  
पाता, अदरामराना ।  
निश [स] अगमा, रा, हन्-  
वह, अतन्त्र ।  
निशमति [स] अगमा १२-  
एता, अद-मति ।

निशधर्म [स] दुष्प्रथमं ।  
निशतम्ब (स) स्वतन्त्र,  
स्वामी ।  
निशसंधि (स) आपनहिद्र,  
घोसर, अदर, अपगा-  
हिद्र ।  
निशमुष (स) आलमुष ।  
निशदायी (स) अपगा वदन ।  
निशानन्द [स] अदरानन्द,  
आनन्द ।  
निठ [स] हीरानदि ।  
निठुर (प) अठोर, दहा,  
निहंदा ।  
नित, नितर्क, (म+प) वास्ते नित्त,  
सर्वदा, रुदा, निगिरा ।  
नितगौमी (स) नित्तनमस्कार ।  
नितम्ब (स) चूतह, कंदर,  
सोरा । दिने तूह नीप  
विद अदर मधुमंथ अदर ।  
वेन अहीरिता नी विद्या,  
कीशे नादि विहंदा ॥  
पुनः नृत्त नीप नीपंथ  
कोइ, नदिगामंथ मुदाद ।  
ए अदर ता अदर

नदि, कूटे, छे, दृढ

निदरो, (म) निभंयो, निर्वंभी,

म. द. १॥

पाप रक्षिता ।

गिर, (म) मदा, कदा,  
मुनागम, चनमा, रज्य,  
कमल क. सार, दप न  
दिनाग रक्षित, नित्यकमे,  
छेमे मंथ्या आदि ।

निदान (म) कारण, गेद,  
पोछे, विद्वंभी, चना,  
पाप्म, यदि कारण-का  
यमाच, रोगनिर्णय, पावि  
रकार ।

नितकठे, निमकठ क. गुं  
सदा, निरतर, १ १ १ ग,  
हरीमद हरदम, हं ग  
नितनित, गुं मदा नित  
कठ, निरतर ।

निर्दिस्थिता (म) रिंगी ।  
निदेम निदेमा, (म० द) पुःप्रा,  
अप्रेम, अप्रेम, अप्रा  
नाम—द० वगदेम निर्द  
मगुनि, पाप्मा मसरि लोप  
अप छे अप कानुनि,  
नद प्रीति का कामा । ॥  
पुन, अप्रा मसम देमप,  
पाप्म मिष्ठ निदेम ।  
निदेम अपकाट विदु  
र, म अन वन वम । ॥

निदाव ना नय न . व नः  
नवाति नव, नः पो  
मव, द. ८ ।  
निदावदे छे कोर मे पवन,  
गुं धम के दृढा क००-  
को मे कमा रचना, दृष्ट  
मे पमना ।

निदमकारः (म) पाप्माकारो  
नदा, निदा० म ; निदा,  
निद, अ वाह, नोद,  
नोद ।

निदर (म) दलित, निभेय ।  
निदरना, (म) अनादर करना ।  
निदरि, (म) निदादर करि  
निदादर करके ।

निध 'द' पुत्राणा ।  
निधन [ म ] मरन, मर

निधन, मृत्यु, नाश, मीत ।

निधनाती- [म] कन्द, मर,   
 बह्दाब, मर ।

निधान- (म) घर, स, न, ठाँव,   
 बाधा, पाव, बाधन,   
 दण्ड, कायस्थान, धन,   
 पाना ।

निधि- [म] कन्द, कन्द,   
 बाधा, दण्ड, धान,   
 कन्द, कन्द, कन्द,   
 दि । ८ । कन्द धन,   
 कन्द, कन्द, कन्द,   
 धन ।

निधात- [म] कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधन- [म] निधात, कन्द,   
 कन्द, निधात, कन्द,   
 कन्द ।

निधा [म] कन्द, कन्द,   
 निध, कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द ।

निधि- (म) कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 निधि, (म) निधि, कन्द,   
 कन्द ।

निधात- [म] कन्द, कन्द ।

निधा- [म] निधात, कन्द,   
 निधा- [म] कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 निधात- [म] कन्द, कन्द ।

निधात- [म] कन्द, कन्द ।

निधात- [म] कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- [म] कन्द, कन्द,   
 कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 निधात- (म) कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 निधात- (म) कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

निधात- (म) कन्द, कन्द,   
 कन्द, कन्द, कन्द ।

परमा, चि'स परमा, नियु,  
'कता, ल'डाना, लोडा नरके ।

निर्दिष्टा निर्दिष्टा [ म ] माय,  
विद्याम, खेन, संसार मे  
लूटना । [ पाप रहित ।

निःश पाप, निःपापा (ब० द)

निवेदन [ य ] विनती पार्थना ।

निवेदनपत्र । ( म ) प्रार्थनापत्र ।

निवेदित म चार्पित, म म  
लगी वस्तु, धर्म वस्तु ।

निवेद-निवेदी, [ य ] निवेद,

निरन्तर, निवाह, निवहि

निवेदी [ द ] पुकार, जवान  
की ।

निवेध [ म ] रोकना ।

निवीध [ म ] दुःख, गुण ०५६,  
जानो ।

निम [ म ] मुख्य, समान, मो-  
मिता, प्रत्यक्ष, रहस्य ।

निमृत्, ( म ) एकात्म, चरका ।

निमृचन [ म ] स्नान, ओष ।

निमृच [ म ] निरता, चापराधन

निमि [ म ] पक्ष पालन वा

भाग, रागा विगिप, रागा  
लमक विहा भंगा, लावे  
देह मद्यन ते लमक भयो,  
पक्ष मेव पक्ष वा सर्व धे  
सुखेनत् ।

निमिष, निमीष [ य ] पक्षक  
पक्षकमूर्च्छना, काष्ठ  
विगीप पक्ष, पक्षक देवता  
वापका, काष्ठविगीप,  
पक्षकभाजना ।

निमिषा ( म ) दैत्य, चिन्त, का  
निमीष [ म ] दाय काश विगी  
पक्ष, लंछा ६० भव संख्या  
वापका, निगामी देव ती  
पक्षक लमती के पक्षकार ।

निमीष ( द ) निमीष ।

निमि य चार्प, तल, निमि  
गहरा, निमि न ।

निमृणा ( म ) लक्ष्मी, मरिता ।

निमृत्, ( य ) निमृत् ।

निमृच निमृच ( ब० द ) चापरी  
निमृच ।

निम [ म ] वापि, निमिनीय  
मुख, चापराध ।

निदत्तः [स] निधीत, प्रतिष्ठा-  
योगीकार, स्थापित, ठैरा-  
या दुषा, निदत्त, नित्य,  
जितेन्द्रिय ।

निदत्तवसतिम्. ( वि. स्कन्दम् )  
ठैराया है वसना निगमने ।

निदत्तां. ( स ) पत्नारम्भायी ।

निदत्तः [स] पत्नीकार, वदन रो-  
ति, रीति, 'निदय, प्रतिष्ठा  
योगीकार, पाचार, गरवस ।

निदगन्तः ( स ) पटकाव, ऐक,  
रोक, दवाना, मरणादन्ते  
रखना । [ पास ।

निदरः ( द ) समीप, निकट

निदराईः ( द ) निरुधारो, समी-  
पता, निकटता, निकट  
पहुँचे, निदराना, निकट  
पाना ।

निहतः [स] हिंस्र, दोहाख

नियुक्तः [स] प्रेरित, प्रेषित, प्र-  
विहृत, लोहा दुषा ।

निधीनः } [स, ट] पात्रा, प्रेरणा,  
निधीगा } पात्रा करना ।

निदीरः [द] बोझा हट ।

निरः निः. [स] वदिस, रदित ।

निरधिः [ट] तकि कै, देखिके,

निरीक्ष्य [विगाहर ।

निरंकुगः [स] स्वतन्त्र, स्वामी,

निरञ्जनः [स] पवित्रा रदित,

शुद्ध, रागरदित, निरुपा-

धिकपनाया, [ निरुपंजन ]

अञ्जन रदित, दुःख सुख

रदित ।

निरतः [स] सीत, तत्पर,

पसीन, पतत्पर, समी,

पति प्रीति युक्त ।

निरति [स] कपटी गद ।

निरतिकः [स] शिपटी हुई ।

निरदः [स] बादल, नीच, घटा ।

निरन्तः [स] पत्नारहित,

अपरम्पार, सर्वदा लगा-

तार, नित ।

निरन्तः [स] निषट, समी-

तार, नित छठ पत्नारहित

सर्वदा ।

निरवधिः ( रु ) अवधि रदित ।

निरवधः-निरवधई. ( प ) बीत-

गयो, हो गयो, निवधे,

निवृत्त्या, निवृत्त्या, वृत्त्या ।  
निवृत्त्या न निवृत्त्या वृत्त्या ।

निर्द्वन्द्वः । पृथिव्याः ।

निर्देश (२) बलान्तर, निर्देशना  
निर्देशन गले जगता रचित ।

निरङ्गु (न) निरङ्गुल, विजुलभा.  
जल रक्षित ।

‘विज्ञेय’ (२) अथवा ‘विज्ञान’ ।

निर्देश : प्रत्येक के लक्षण  
के लक्षण :

निर्वाण (०) देवता हैं सब ।

निर्वाण (अ) देवि अ, देव का  
३ निर्वाण ।

निष्ठा, मित्रता, विश्वास, वल्लभता,  
मिथ्या, कठिना, त्रास, वल

• विनायक, कृष्ण, लाल विनायक  
• २० नवंबर १९८८ ।

निःशुल्क (अ) निःशुल्क, बहिष्कार ।

निर्देश (क) : सञ्चयक, मुख्य ।

निर्देश (स): यथा निकलता

fringe in fringe

निदेशक (को निर्देश, कथक,  
+ कथक, कथककथक कोल

● 電 話 〇 〇 〇 〇 〇 〇

નિર્વાચન- ( સ ) માસ વિતી  
મીઠા, માસ મીઠા છે  
રહિત થીતી ।

निराकाश- [ ] धाकड़ रहित  
रूप रहित, ।

निरायाहः [म] यायाह रहित,  
निरावागः [म] रित को याय  
को शोधनता ।

निजीय (ग) विभाग: राजस्व, विभाग  
 गवर्नर, विभाग: शांतिविभाग।

निरीक्ष (क इन्द्रिय निरीक्षण) ।  
निरीक्षण (क) } काल, निरी-  
क्षण (क) } क्षण, यात्री-  
विषय, यथागत ।

निबन्धविधिः । गी । विमलः प्रथमः  
अध्यायः इति । निबन्धविधिः

ਜਿਥੇ ਵੀ ਸਰਕਾਰ ਧਨ ਆਵੇ।

निर्माण ल मय रदिता ।

**निष्कर्ष** — यह कि वही धर्म है :

निर्देश ७३) अथवा १११।

निवृत्तादि ५१६ ॥ १००० ॥

संज्ञा : (क) अथवा (ख) अथवा (ग) अथवा (घ) अथवा (ङ) अथवा (च) अथवा (छ) अथवा (ज) अथवा (झ) अथवा (ञ) अथवा (ट) अथवा (ठ) अथवा (ड) अथवा (ढ) अथवा (ण) अथवा (त) अथवा (थ) अथवा (द) अथवा (ध) अथवा (न) अथवा (प) अथवा (फ) अथवा (ब) अथवा (भ) अथवा (म) अथवा (य) अथवा (र) अथवा (ल) अथवा (व) अथवा (श) अथवा (ष) अथवा (ह) अथवा (ः) अथवा (म्)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

५११ ॥ ५११ ॥ ५११ ॥

|   |  |
|---|--|
| निरुपपन्न (न, द) बस्तार से<br>संज्ञा, निर्गता, पदार्थ ।                   | निर्द्देश (न) भाषा, विभाग,<br>निरुपपन्न, वस्तु, भाषण-<br>उपदेश ।                   |
| निरुद्ध (न) अक्षयिणी ।  | निर्घटि (म) निर्घट, निर्घट ।   |
| निर्गुण (म) मीमांसा का<br>निर्गुण ।                                       | निर्बद्ध (प) कूटिम, निर्बद्ध<br>पाद ।  |
| निर्घन (स) दाहकहित ।  | निर्व्याप्त, निर्व्याप्तपद, निर्वाण-<br>( स, द ) सुख, परमाद,<br>निर्व्याप्त ।      |
| निर्जल (म) सामान्य देवता,<br>अग्नि, पद्म, पद्म, पद्म ।                    | निर्वृत्ति (म) त्याग । [ भाषण ]  |
| निर्जलदी (म) देवता की<br>नदी-पद्मात् गङ्गा ।                              | निर्वृत्ति (स) वैराग्य, त्याग,   |
| निर्जलम, निर्जल (म) नियम ।  | निर्भर (स) शरीर सुपुष्पीन,<br>पूर्ण, पूर्ण, अतिशय,<br>परिपूर्ण ।                   |
| निर्भर (म) भरता, पद्मी,<br>पद्म की भोता, पद्म<br>का भरण ।                 | निर्भरप्रेम (म) निर्भरप्रेम<br>भर पूरे प्रेम जाने को<br>निर्भरप्रेम ।              |
| निर्भर (म) अविद्या रहित,<br>राग रहित, माया रहित,<br>निरुपाधिक, परमात्मा । | निर्भर (म) भरणरहित, दम्भी ।  |
| निर्भर (म) न्याय, शान्ति ।  | निर्भर (म) मनुष्य ।  |
| निर्भर (म) विचार, मनुष्य ।  | निर्भर (स) रचित, निरुपपन्न,<br>उत्पत्ति ।  |
| निर्भर (स) मूल, जिस को<br>उदात्त न हो ।                                   | निर्भर (प) रचित, पद्माद,<br>निर्भरप्रेम, पद्माद, रसा,<br>मन्दिर (स) निर्भर, पद्म । |
| निर्भर (म) विद्यातादृश ।  |  |
| निर्भर (म) निरुपपन्न, दम्भी<br>रहित ।                                     |  |





निवेदी. (य) चुट्टाई, गुणा फी ।

निग्, [म] राग ।

निग्द. (स) निग्द, सन्देश ।

निग्दा. (न) राति, रघनी, रात

इलदी ।

निग्दावर. (स) इन्द्रगा, इन्द्र ।

निग्दाप्या. (स) इन्द्र ।

निग्दागन. (स) राति आगमन ।

निग्दावर. (स) भण्डार राक्षस,

चोर, चण्डादि. नृगात्ता.

सर्प, मन्त्र ।

निग्दान. (स) भण्डा, धन,

विन, नागा ।

निग्दाता. (स) इलदी ।

निग्दि. (स) राति, रात, रघनी,

चट्टेराति, निग्दा, प्रिया नी

को वदन चट्टेराति नाम ।

दी० निम्न निम्न निम्ननिम्न

साहनिम्न, दीन सुगो वध-

रात । दीन वल्ले वधि

सोय रहु, जेही वधि पर-

भात । १४

निग्दिनर. (स) राक्षस, चोर,

चण्डादि ।

निग्दिनरी. (स) राक्षस, निग्दि का

निग्दिगुण (स) संभाषात,

सांभ । रात

निग्दि. (स) चट्टेराति, आधी-

निग्दिग. (स) इन्द्रगा, इन्द्र ।

निग्दि. (स) निग्दि, ठीका,

स्मिर, विद्वान्त, संशयराहित

मान, विग्दास, यदीन ।

निग्दि निग्दावर. (स) राक्षस ।

निग्दि. (स) निग्दि, विद्वा

राति ।

निग्दान, निग्दागन. (स) ग्रास

सास, प्राप वायु ।

निग्दावर, [स] चुपचाप ।

निग्दागन, [स] लम्बी सास ।

निवेदिता. (स) चट्टित, नैवेद्य

दिया ।

निग्दि. (स) तरङ्ग, तूष, नील

दांदा । तूषो तूष निग्दिग

पुनि, चपाभंग तूरीर ।

इषुधि मध्य तनु सपन युग

सोभित ओ पुरीर । १५

निपरादा [स] देठा दुपा ।

निघाणु मा जाति कथा य ।

गोप. ५. १७. १७. १७. १७.

$$E_1 \times E_2 = \prod_{\alpha \in I} E_\alpha$$

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१५५५

निष्पत्तिः ७ = निष्पत्तिः ७ व ७

電器材料部

[illegible]

अथिह १०५ ७७ ७

இந்தியா ௧௮ ௨௦ ௨௧

અર્જુન, કૃષિણ ૧-૫૪

विद्या दूषा लक्ष्मि व'ज्ये.

निष्कर्ष १४ : ३ . .

ନିର୍ଦ୍ଦେଶ : [ ୧୩/୧୩ ]

ମିସ୍ତ୍ରୀ ଡି. ଡ଼ାମ୍ବରୀ ୧୫।

विष्णुलि ( क ) अ० २ व ३ . . .

विद्यार्थः

निर्धार (म/ विच्छेद, आश्रय)

बर्हि बर्हि नै नै नै, नै नै नै

॥ १॥, ॥ २॥, ॥ ३॥, ॥ ४॥, ॥ ५॥, ॥ ६॥, ॥ ७॥, ॥ ८॥, ॥ ९॥, ॥ १०॥, ॥ ११॥, ॥ १२॥, ॥ १३॥, ॥ १४॥, ॥ १५॥, ॥ १६॥, ॥ १७॥, ॥ १८॥, ॥ १९॥, ॥ २०॥, ॥ २१॥, ॥ २२॥, ॥ २३॥, ॥ २४॥, ॥ २५॥, ॥ २६॥, ॥ २७॥, ॥ २८॥, ॥ २९॥, ॥ ३०॥, ॥ ३१॥, ॥ ३२॥, ॥ ३३॥, ॥ ३४॥, ॥ ३५॥, ॥ ३६॥, ॥ ३७॥, ॥ ३८॥, ॥ ३९॥, ॥ ४०॥, ॥ ४१॥, ॥ ४२॥, ॥ ४३॥, ॥ ४४॥, ॥ ४५॥, ॥ ४६॥, ॥ ४७॥, ॥ ४८॥, ॥ ४९॥, ॥ ५०॥, ॥ ५१॥, ॥ ५२॥, ॥ ५३॥, ॥ ५४॥, ॥ ५५॥, ॥ ५६॥, ॥ ५७॥, ॥ ५८॥, ॥ ५९॥, ॥ ६०॥, ॥ ६१॥, ॥ ६२॥, ॥ ६३॥, ॥ ६४॥, ॥ ६५॥, ॥ ६६॥, ॥ ६७॥, ॥ ६८॥, ॥ ६९॥, ॥ ७०॥, ॥ ७१॥, ॥ ७२॥, ॥ ७३॥, ॥ ७४॥, ॥ ७५॥, ॥ ७६॥, ॥ ७७॥, ॥ ७८॥, ॥ ७९॥, ॥ ८०॥, ॥ ८१॥, ॥ ८२॥, ॥ ८३॥, ॥ ८४॥, ॥ ८५॥, ॥ ८६॥, ॥ ८७॥, ॥ ८८॥, ॥ ८९॥, ॥ ९०॥, ॥ ९१॥, ॥ ९२॥, ॥ ९३॥, ॥ ९४॥, ॥ ९५॥, ॥ ९६॥, ॥ ९७॥, ॥ ९८॥, ॥ ९९॥, ॥ १००॥

ମାଧୁକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ମାଧୁକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ

‘नञ्च।ग मः ५/१८/१ ॥३॥’

१. या अक्षर 'न' का अर्थ है ।

ਸਦਾ ॥ ੬ ॥ ਅਦਮਿ: ਯੁਗਿ ਨਿਰੁਭਯੁ: ॥

1992 10 20 10 45 AM,

4. 1. 2. 3.

नमो भगवते वासुदेवाय । १० ।

Digitized by srujanika@gmail.com

4. 6. 1. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 84

、明廷、利、明、'明'等

4

7. 2011 年 4 月 20 日 第 17 次

$\alpha_1 = \beta_1 = 0$ ,  $\alpha_2 = \beta_2 = 1$

$\frac{1}{2} \quad \frac{1}{2} \quad \frac{1}{2}$

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1

41-111

*E. coli* O157:H7

$F_{10} = 10$        $F_{11} = 11$        $F_{12} = 12$

[illegible]

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

[illegible][illegible]

निर्माण क्र०: ४८५७७८

ସଂସ୍କୃତ ସ୍ତୋତ୍ର ଚଉକ, ପାଞ୍ଚାଙ୍ଗ

गगन निगान् । वसुति  
 करिहरि सवधने, सीमित  
 दिविध विमानः । पर्याप्त  
 रङ्ग निधान निम्नन मष्ट  
 का पदभये है वहा मष्ट  
 काते वहे नगारा पादि ।  
 निष्कारणा (द) निष्कासना ।  
 निमित्त निमित्त (स) नि स्तत  
 बोधा, तीया निरुद्धने  
 तीये, पति-बोध-मणीन ।  
 निवेनी-निवेनि (द) कोटी,  
 कोणेन ।  
 निनीत (द) निनासा, संलग्न  
 निनीत, देवस  
 निनीती (घ) निनीत ।  
 निनीत-निनीय, (स) चंद्रमा,  
 निनीत है रीत ।  
 निनीत (घ) वहाट, वृत्ति  
 बाह । [ निनीत ।  
 निनीत (स) साकसाहीन,  
 निनीत (घ) निनीत, निनी-  
 नता ।  
 निनीत निनीत, बाहर  
 होना, वहाता ।

निम्नन (स) नाद, मष्ट ।  
 निम्नार (घ) विनासार का  
 द्रव्य-  
 निम्न (घ) विना संग का ।  
 निम्नार (स) टपटना ।  
 निनीत (घ) देखा; निनीत,   
 निनीत, देखा ।  
 निनीत निनीत, [ स ] निनीत  
 को स्तव, वृत्ति, वृत्ति,  
 पदकार, नाम ।  
 निनीत निनीत- निनीत,   
 निनीत कहर निनीत,   
 निनीत देखा, कुंपरि, मो गत,  
 निनीत पदार्थ ।  
 निनीत (वि, निनीत)  
 निनीत, नाम निनीत का ।  
 निनीत (घ) निनीत को पद, निनीत,  
 बोधा, वृत्ति, निनीत, वृत्ति,  
 निनीत, निनीत, (द) निनीत,  
 वृत्ति ।  
 निनीत (द) वृत्ति, वृत्ति,  
 वृत्ति, वृत्ति ।  
 निनीत (घ) वृत्ति, वृत्ति ।  
 निनीत (घ) वृत्ति, वृत्ति ।

निष्ठाद. (घ) शब्द ।

निष्ठादिन्, (स) शब्दसमान ।

निषेध (स) फेंक, घायी, धरो  
हर ।

निर्भर (स) भरना । [शब्द ।

नीः (स) नियय, निषेधबोधक

नील (घ) सुन्दर, सुवरा,  
धवला ।

नील (स) गहवा, नील, कभीना

नील (स) खीता पत्ती की,  
खीहर, घांसका, बैठक,

वासन । हुपा ।

नील (स) लाया हुपा बिताया

नीति (स) उचित, व्यवहार,  
चक्षण, न्याय ।

नीति धर्म (स) राजनीति के  
अनुसार धर्म ।

नीला [ घ ] बिताकर ।

नीतिर्मत (स) राजनीति के  
अनुसार धर्म ।

नीद नीद (स.प) नीन्द,  
निद्रा, नींद ।

नींद उपाट होना, मु० नींद  
नहीं आना, नींद को

टूटना, नींद नहीं

मिलना सोने की 'चाद न  
होना, खोई नींद' ।

नींद भर सोना, मु० 'गहरी

नींद आना, सोने से सोना ।

नीला ज'वा [म०] नीला  
कमीन, खोटा बड़ा ।

नील [स] कदम्ब फल । कदम्ब  
का भेद कुबजक २ ।

नील [घ] सुन्दर, पर्व, पाधा ।  
[म०]

नीली (स) धारपत्रादि, इदि  
यारी का धार ।

नीर [स] लक्ष, तीव्र, दुग्धपात ।

नीरज [स] लक्ष, उद्विग्न ।

नीरघर (स) बाटन, निद्रा ।

नील (स) गहवा रंग, भीला  
बर्ण, नीला, नाम निधि,

सुन्दर विमल, लावा, नील  
'रंग का द्रव्य' ।

नीलकण्ठ (स) कालाकर्मल ।

नीलकण्ठ (घ) नीलकण्ठवर्णी  
नीलकण्ठवर्णी, नीर, गहवा

रंग, कपोत, दीहा ।

नीलकण्ठ कणकण्ठ सुरु, सातक  
 सक्त भूकोर । भाति भाति  
 नीलकण्ठ विहगा- अयन  
 सुखद- वित- चोर ।  
 पथीत् नीलकण्ठ नयूर वा  
 कपोत; कसकण्ठ कोकिला,  
 सक्त सक्तवा प्यात, नयूर  
 पथी, गिष कालिंजर गिर-  
 बासी, [सिष्ठा ।  
 नीलकण्ठ गिष्ठा (स) मोर-  
 नीलदूर्वा (स) देराद्व ।  
 निलपुष्पा (स) सिन्दुपार ।  
 नीलपुष्प (स) गठिवग ।  
 नीलपुष्पा (स) नील १ सिन्दु-  
 पार २ ।  
 नीलपुष्पी (स) तीक्ष्ण ।  
 नीलवा (स) पुरी, स्थान ।  
 नीलनीहित, (म) ग्राम चरुप-  
 वर्य, रुद्रमंत्रा ।  
 नीलोपक (स) कासा पांड  
 का हरिन ।  
 नीलादि (स) कुशक ।  
 नीलिवा नीलिनी नीली, (स)  
 नील ।

नीलोहवा कतः [स] सफ़ेका ।  
 नीलाम्बर (स) बसभद्र, कृष्ण  
 भ्रातर, नीलरङ्गका कपडा ।  
 नीलोत्पल [स] नीलकमल ।  
 नीलोपल [स] नीलमणि,  
 नीला [स] रुनाइट, मन्दाई ।  
 नीवार [स] तीनी धान ।  
 नीबी, } नाड़ा, छारा ।  
 नीबीबन्ध, }  
 नीबीबन्धोच्छसितप्रियसन्  
 [वि, वासः] नाड़ा खुल  
 जाने से टीला हो गया  
 है जो ।  
 नीसीत [स] खरा  
 नीहार (स) पासा, मिश्रि,  
 शीप । [मिग ।  
 नुत (स) स्तुति किए हुए, प्रसं-  
 नुति (स) स्तुति, स्तव, स्तोत्र;  
 बहाई ।  
 नुदति, [स] बहाता है ।  
 नुदडा (प) गख से पसीट ।  
 नूतन [स] नवीन, गया, युवा ।  
 नूद (म) तूत का हथ ।  
 नूनम्, (स) निचय ।







हस्त को दिखाय मीपदेत ।  
स्याम स्नेत रत्न युक्त जामिने  
प्रयाग ईश्वरं मुकुट । मंध  
चट चोर मुग्ध नाम रात्र

ने कालो विविध छंद ३२ ३

नेचोपमपत्र ( स ) बहाम ।

नेवाभी ( स ) बरंती निवार ।

नेवण, ( म ) वेगलान धर्मकार,  
रत्नभुग ।

नेव ( द स ) नेव, नाव, ता

वेस, तद्विषय, नेम, मंच ।

नेम ( न ) कंतोप चादि निमम,

मीच, डोम, तप, दान,

विद्या पद्यवन, इन्द्रि

निबंध, मग चन्द्रायच,

चादि ।

नेमि [ क ] पद्विचकी पदी । [ न्याय

नेमिय ( स ) कोमपारदेम, गोयं

नेमी, ( व ) तिनिस ।

नेम ( द ) ने जाने मोप ।

नेम ( य ) निमन्य ।

नेम ( क ) चंद्रायच परकण,

रत्नभुग ।

नेवांरच- ( स ) कोड़ापने, रो  
दिस ।

नेयन्ति [ स ] मेजायंगी, बनारि

नेकतकोप ( स ) दक्षिणपि  
कोप ।

नेव- ( स ) खेद, प्रीति । [ बार

वेदाय- ( व ) लैठ चसाइमं हो

नेवाक, ( स ) शिरोमणि, नेवा

की प्रवीच, एक-देय व  
नाम ।

नेपासी- ( व ) नेगविम ।

नेव- ( स ) नाएव, नहिपव ।

नेमिपार ( स ) नीमपारदेम  
तपस्यान विरीय ।

नेम [ क ] गतना ।

नेम ( य ) पर्वत का मनी

नेमिचा ' म ] यकाची, निरा  
चारी ।

नेम ( स ) निमपान, निमि ।

नेव ( य ) मातु पिता ' च,

मठको, कोका निम च

नी ( स ) निमपार्क, धान, मे

हम मव को ।

नेम ( य ) चंद्रायच, मु० बरंती के वने

करना, इमारों से बातें

करना ।

शोकभोक्त, मु० खेंबाखेंबी ।

शोइ-शोइनी (प) होरी, जिनो

दुग्ध दुहन की, गाय के

पाँव बांधनेकी रखी दुरने

के समय ।

शो (स) हम दोनों का (नाव)

शोका (स) गाव, बेहा, शरणी

दी० । उड़ुप पोता शोका

पकव, तरनि बहिरा मच

जान । नाम नावचड़ि भी

एदधि, केते तरे पजोगि ॥१॥

शोकारुड़ (२) ॥ वा रे १८८१ ।

शोनि (स) नमस्कार करता

है, मैं श्रुति करता हूँ

प्रणाम करता हूँ, नमस्कार

करा है ।

शोसांदरदगागा मु० एक तरफ

की छोर दगागा, बिटाना

न्यपोध (स) प्रवनाम, बट

हृष्ट, बंगद ।

न्यपोधा (स) बहो तंगी ३६१

न्यस्त (स) रक्ता हुआ । [मूखे

न्यच (स) मग्न, पतावा,

न्याय (स) धर्म विचार, तर्क-

शास्त्र । [पारी ।

न्यायक (स) विचारक, न्याय-

न्यास (स) स्थिति, बासा,

ठिकान, बिन्दु, शीत ।

न्यून (स) हीन, छोड़ा, किंचित,

पल्प, लग, कम, गर्ह्य ।

न्यूनता (स) पकुलान, छोटाई,

समुगाई ।

## प

पक (स) पका, पोखत, परि-

पत-दिनामाभिमुख, सिंह

पकाइया, पकाइया दूध ।

पकापकाया मु० तयार, पका

हुया ।

पकाव (स) पकाया हुआ अन्न,

पकवान, पकाया पच ।

पकाउग (स) बाजा भेद, सुदृढ़ ।

पकारना (स) धोना, खंघाचना ।

पगु [स] चरब मोड़, पैर,

पाँव, सगना ।

पगपटतार बाजन, मु० नाचने

में पानि से गत बनाना ।

संसारकोशो मे' तथार, पका  
त्रिःश्रुपा ।

यद्वा [स] कोष, पौष, बह्म, ...  
 ...कोष, मिष्टी, च ...  
 ...कोष

१. 'संस्कृत' शब्द का अर्थ है 'संस्कृत'।  
२. 'संस्कृत' शब्द का अर्थ है 'संस्कृत'।

१. यंति, (सु) चकीर'पातो, सत  
२. यंति (म) कर्मच ।

पञ्च (घ) प्रमुञ्चते, अपग वा।  
 गोमि प्रकार पद पञ्च,

सहोदर, सुमति, संग ॥१॥  
सहोदर, सुमति, संग ॥१॥

कलाना, दृष्टिहीनता, पात्र  
देना, किसी का काम पक

देना ।  
 'पद्मी' नामक एक पुस्तक  
 'पद्मी' नामक, मु. पाठ्य

सदस्य। जिनमें से, बहुत  
सदस्य, जिनमें से, बहुत  
सदस्य, जिनमें से, बहुत

पवि. (स) पिंसांके. [पिंठिके,

पञ्चमी 'वसिष्ठ' १० [कोटा  
पञ्चमी 'वसिष्ठ' १० [कोटा

दश (स) पत्र / ११००

[illegible]

पञ्चकोश (म) पौर्वमि, पौवना  
मूल, चर्म, कौशा, चैठ

पानो एक बोले रवेति  
साठि माते ।

पञ्चमी (१) पञ्चमी, पञ्च  
मय, मन्त्रिमय, प्रागम्य,

पानन्दमय ।  
पञ्चमस्य (५) पादभाग, वायु,

७. संस्कृत भाषा, पुष्पा, पत्र,  
पत्रिका ।

अथ दशमेऽध्यायः ॥ अथ दशमेऽध्यायः ॥

१३०६ श्री. ज. वि. म. (१९०६)

१।३) विज्ञान निरूपण ॥ २०७७

१२-३-७६

प्रीति, प्रेम, प्रणय, प्रणय, प्रणय

विश्ववेष्टी (अ) गुरुव दिनेश, पञ्च

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26



ता, सहायता तरकदारी  
पन्थाय ।

पचिम (स) पची, पाण, बिहंगम,  
पन्तह, पन्तमेवाले ज्ञानवर ।

पट [स प] पत्ता, पत्ता, धण  
सप्तठा, मुण्णचोधा, पटमः  
पट्टाक, पट्टा ।

पटपञ्च [स] पताग ।

पटतर [प स] सपमा, गमन  
सप्तम, पाधिक, वरीवर ।

पटसे [स] समूह, टपमा, घन  
पंति । [धारी, गण्डली ।

पटसी [स] पंगति, पङ्क्ति,

पटह (स) गगारा, छोष ।

पटहता [स] टोलरूपन ।

पटिबो पट्टी [स] पयठानीजीध

पट्टीर (स) चन्दन, मन्मभार,

पट्टी गंधनार-निखंड हरि

पट्टी गंधनार-निखंड हरि

पट्टी गंधनार-निखंड हरि

पट्टी गंधनार-निखंड हरि

पट्टी गंधनार-निखंड हरि

पट्टी गंधनार-निखंड हरि

पट्टी गंधनार-निखंड हरि

सुधेपतिवर्त्त हरी श्री

हिमचन्दन । पट्टीर पंग

पौ गंधनार बिभेवर्त्त

मन्मेज पुनिमेवित् सभा

परमाधन । टो० । प

नामानि सजाटके, रक्त

सद्वन चंद । जमन सग

धुनपुनि कस्तूर, तेरह

नन्द ॥१॥

पतङ्ग [स] पाणी, मूर्ध्नि ।

पथ [स] रास्ता ।

पथ्य [स] हिम ।

पथकंत [स] चरकमन ।

पटु [स] प्रवीर, पण्डित,

निपुण, समर्थ, चतुर मुग्ध

तीक्ष्ण, वज्र, पाणीय,

कपाट, विचार, दाहा ।

पटु तीक्ष्ण पटु वज्र बहि,

पटु चारोग्य कहत । पटु

प्रवीर सोई जगत, ज्ञे

पौ रक्तमनिदंत ॥१॥

पटुक [स] परमल ।

पटुवरपौ, - (वि० प्राविभिः)

कुशे स हैं इन्दी प्रिन को

पटुपरी [स] सोका ।  
 पटुपासकी [स] मरीचपासकी,  
 सुन्दर लहाउ पालकी ।  
 पटुबनखाना, सु. पदाङ्क  
 खोना, नीचे गिरना ।  
 पटोर [प] रंगमी-बन, रंगम  
 ताग ।  
 पटोनी [स] परवस ।  
 पहिका [स] रक्त, रूपा ।  
 पड़े रहना, पड़े रहना मु.  
 देखस रहना, सो रहना,  
 सैट रहना ।  
 पठ, पठन [स] पठना ।  
 पढ़ागुप, पढ़ाखिषा मु. पढ़ा  
 दुपा, पणित, परीन,  
 निपुण ।  
 पद [स, प] व्यवहार, कृति,  
 प्रतिष्ठा, होह, दीक्षाणा ।  
 २० कोही, धोनीवार,  
 बरम, पदसा, कल्या  
 विशेष लक्षण, सदै, सदै  
 दिक्क, सून परिमाण मूल्य  
 पद [स] दीक्षाणा ।  
 पद [स] लक्षणा, कृति ।

पणित [स] संतुष्ट, विवेकी ।  
 निपुण, प्रवीण, चतुर, वि-  
 दान, सरदार, संगीना,  
 शक्तिप्र, वयोध्याते, वि-  
 दान । [पद्यात् विद्या ।  
 पण्यली (स) मोक्ष की स्त्री  
 पण्यरीधी [स] बाजार, दुकान ।  
 पत [स] पत्नी, पग, सप्याति,  
 खाभी, बहाई, मावसी ।  
 पतङ्ग पतङ्गा (स, द) मूख्य पत्नी  
 पति, रक्तादिवर्ण, पतिंग,  
 गुडो, गेन्द, काया, पुद्ग-  
 लीय, तम्बूरा बाजा दी ।  
 तरनि पतंग पतंग पग,  
 पावक बहुवि पतंग । सब  
 रंग रंग पतंग की, हरी  
 एकै नव रंग ॥१॥  
 पतन [स] अधोगत, गिरना ।  
 पतवि [स] पत्नी, पंगी ।  
 पतन्ति [स] गिरत हैं, सब  
 पतत हैं हट्ट हट्ट ।  
 पताका (स) ध्वजो मेद की  
 सड़, दण्ड फहरात, रतन  
 होना-विन, मंडी ।



... काको कमे मग वानी ते ।

पतिनिधिः ( २- ) पत्नी श्रीः ।

पतिशतः [ म ] सतीपमा; सुगी

... सुगीः ।

पतिवता [ म ] कुलपत्नीपती ।

सती, पति के बहुकूल,

... पति की सेवा करनेवाली ।

... धर्म से रहनेवाली स्त्री ।

पतिग [ म ] सुहृद्, चन्द्र, सीव,

प्रतिग, गेह, भास्वरग ।

पतिनिधि [ म ] मुनिविशेष,

... योगशास्त्र तथा नरामाष्य

... का कर्ता कृपि । [ क ] लोक

पतिशोकः [ म ] दिगावल, पुरुष

पातवती [ म ] सुगमिनी ।

पत्नी ( २ ) पुत्रवधू, पुत्रीहृद्,

पुत्रवधू ।

पत्नी [ म ] पद्म, राजनारी,

... सद्गुरु, रान्ता । [ म ] श्री ।

पत्नी [ म ] श्री, कामा, धारी,

पद्म, [ म ] पतिग ।

पतिग [ म ] नगर, शहर गांव

पति [ म ] पत्नी, पत्ता, कागज,

... सवादी, साहन, मर, रघु

चित्त, पद्म, विष्टी, दी० ।

पद्म-पात, पद्म परप, दल

... कद कदन पत्ताम । कः प

... कृति रहपति वने, पंचगटी

... सुखरामि ३ १ १ पद्म पद्म

... श्री पद्मरय, वाहन, पद्म सु-

नित । पद्म पद्म विधि महि

... दियो कृति महि-मिलते

... मित ॥ २ ॥ पद्म-परत दल

... परदि हित, देवत लव

तव पात । तुष पागम

भ्रम, पौर्णि पद्म, कृति

... कृति, कतरी लता ॥ १ ॥

पद्म-पद्म-पद्म- [ म ] पत्ता,

तीतपात ।

पद्म- [ म ] तानो मगव ।

पत्ताम [ म ] तरकी इतान ।

पद्म- [ म ] पद्म, परिन्द ।

पद्म- [ म ] पद्म की तरकारी ।

पद्म- [ म ] पुत्रपत्नी ।

पद्म- [ म ] पुत्र, पद्म, कनक,

पाप, दीहा । पद्म

... तव पत्नी कमल, पद्म

... दहरि विहंग । पद्म



मरुतः विजलिमि, द्रुम

मे मरु श्रीरंग ३ १ ३

पञ्चोक्तः ( स ) मीनपञ्चः ।

पञ्च र्वर(स, २)मार्ग, बाट, दग, ३

पञ्च, नक्ष, राप्ता, राट ।

पञ्चगतिपञ्चन [ ४ ] पञ्च मे

ज्ञान मे मरुतः ।

पञ्चादिपञ्च [ ५ ] मेरा,

भौरा मारिगा देवता

मार्गि का इति पञ्च पञ्चि

पञ्च ।

पञ्चि [ ६ ] मरीही ।

पञ्चि ( स ) राटमीर, राट,

मरीही, यार, मरुतिर

पञ्च, मरुताही ।

पञ्चि ( स ) मरुतः ।

पञ्चोक्तः [ ७ ] मरुतः, मरुतः

पञ्चोक्तः ( स ) मरुतः मरुतः । मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः, मरुतः

मरुतः मरुतः । मरुतः मरुतः

मरुतः, मरुतः मरुतः मरुतः

३ । मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः, मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः, मरुतः मरुतः मरुतः

२ । मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः, मरुतः

मरुतः मरुतः । मरुतः मरुतः

२ । मरुतः, मरुतः मरुतः

मरुतः ॥ १ ॥

पञ्चोक्तः मरुतः मरुतः, मरुतः

मरुतः मरुतः, मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः, मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः ।

पञ्चोक्तः मरुतः, मरुतः मरुतः,

मरुतः मरुतः, मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः मरुतः

पञ्चोक्तः मरुतः मरुतः, मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः ।

पञ्चोक्तः मरुतः मरुतः, मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः ।

पञ्चोक्तः मरुतः मरुतः, मरुतः

मरुतः मरुतः मरुतः मरुतः

मरुतः मरुतः, मरुतः मरुतः

पद्य सोना, पटल सोना,  
 पुष्प पद्मा रत्ना, निर्दोष  
 सोना, कठोर बिना सोना ।

पद्य [ स ] रोगी का पदार्थ,  
 दितकारी । [ हरे ।

पद्मा, [ स ] हरहेष्ट, चेतकी,  
 पद्म [ स ] चरण, म्यान, मणिना,

मुक्ति, पद्म, अधिकार,  
 पाँव, बिन्द, शोकका चरण,

दो० । चरण चलन गतिमंद  
 पुति, पद्मि पादपद् पाय ।

पद्म बंदन करि सुहृदरी,  
 हाटी सनमुख लास ।।

पद्म, (स) हीनागति, कण्ठा  
 भूषण गदती । शोक ।

पद्मः कण्ठ भूषण गदती  
 च निगद्यते रत्नमरः ।

पद्मर (स) प्यादा, पैदन ।  
 पद्मार (व) पशु, गो-पादि ।

पद्मारो (व) प्यादा, पैदन ।  
 पद्म (स) कस्तुरी चरण की,

पाँव की चंगुरी । [ लूता ।

पद्माच (स) पनही, पड़ोच,  
 पदपीठ, पदपीठा (स-द)

श्री की, पड़ोच, पाँव रखने  
 की शीशी ।

पदविहार (स) मार्ग, बाट, डगर ।  
 पदवी (स) मार्ग, अधिकार ।

पदाति-स दास, प्यादा, पैदन,  
 मेना । [ पद में भी ।

पदाटपि (स) पदनं नियम कै,  
 पदाट (स) बन्धु, सब बन्धुमत्त,

गद्दार्थ ।

पदिक (स) भीजनमाणा भेद,  
 लासे मुक्ता, हीरा, पद्मरा-

म, पिरोजा ए० तीनि  
 मणि सहित होय, वा ज्ञाते

श्रीशेष ठिग, जाके मणि  
 सहित होय, वा कण्ठा

भूषण गान, वा लड़ाज  
 श्रीकी, योडा, पैदन, पदि-

क, कामचरण, हीरा ।  
 पदिकहार (स) पनही, वा

पद्माच हीरा का हार श्री-  
 सर श्री बल रविर बनमा-

ला । पदिकार भूषण गति  
 लासा । पद्यात् उनसे चर-

न श्रीशेषचिह्न पद्यात्  
 लक्ष्मी वन्दनकरण है और

प्रकाशमान बननासा है  
 और पदिक पद्यात् हीरो

का हार है और मणि



पद्म, पद्मसिन्धु ( ४ ) रेखा.

विष्णुपत्नी : बभ्रुवती :

समस्तस्य ।

पञ्चाङ्ग ( सं ) चंद्र वंश ।

ਦਫ਼ਤਰੀ ( ਸ ) ਦੁਸੰਬਰ ੧੯੮੧ ।

सुभाष ( स ) ब्रह्मचर्येण ।

दक्षिणी. ( मं ) कनकपदार्थग,

२५. बंगाली ।

ਦਸ਼ੀ: (ਜ) ਰੰਧੀ, ਮੇਲ'।

पत्र: [प] बयान, बयानों, बी

... श्री. बांधक मरिजा ।

यन्त्रं. (क) प्रत्यङ्गा, रौद्रा, प्रसिद्धा

विष्णु, धर्मदास मुनि ।

पण. (५) ट. ५।

दलसः (स) दलसः, दलसः दलसः

... ..

१०६

1992-1993

1941. 1. 1. 1941. 1. 1.

पंजाब, दिसम्बर (२) भाषा

[illegible]

‘देवि, सिंहे नति, बहिर, एवम्’

ସମ୍ପାଦକ: ଡା. ସାମୁଏଲ୍ ଗୁପ୍ତା

घाट । ३३ गत ।

पन्थ. [ सं ] सांख्य, 'वदंषो,

पन्था. [सं] नाम्नी, बाट, दिहा

एष १३ १८७८

पन्थी (स) शशी, समुद्र, पाद,

राहु । दो. । धंघी-हिरि-

नी की कहत, पंथी माया

जोय हं पंथी बहुरी देमर

जिदि मय दितु वसु की

पंचग- (स) रुध्र, मीन, मांष

ਦੀ. ਓ. ਚਰਨ ਸਿੰਘ ਦਿੱਤਾ

ॐ ग. विष्णवे नमो सर्व

बहुधा हरि मरी सुप

काकादर गरुडपत्र ३

सागरा विदधर कनिष्ठ

विषयः शुभं वाच्यम् ।  
विषयः शुभं वाच्यम् ।

[illegible]

1950

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सिद्धि सिद्धि सिद्धि

EXHIBIT 3

दयानि. (क) गे. हं. ७

परीक्षा परीक्षा (की) परीक्षा

कीव, सधुव धति क्षीमो ।

का विचकुट मध्य में है ।

पयोडा (३) पयोडेड ।

पयोड (३) बाटव, घन, क्षान ।

पयोडा (३) पयोडा ।

पयोडमाटी (३) निर्मली ।

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा, दुग्ध,

पयोडा, पयोडा (३) पयोडा

पयोडा

पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

पयोडा (३) पयोडा, पयोडा

हैं धर रखने वाला, धर  
रखना देवता है । धरना  
का नाम । दोहा । धरना  
पद्योधि कुव. कहिये, धर  
रखन धर हविरेन । कंचन  
संपुट देवनाग, पूज पुनाई  
नैन ॥ १ ॥

पद्योधि, पद्योधिधि } चौरसा-  
पद्योधिधि (स) धरे, धर-  
रुधि, समुद्र ।

पर (स) धीर, धरे, उपरान्त,  
यतु, गुर, पराया, तत्पर,  
द्रिरोनदि । [ निन्दा ।

परंपरबाद (स) पराये की  
पराई (द) पहना ।

परं (म) येठ, खन ।

परं परम् [स] पीछे ।

परव (स) गाठी, पत्थ ।

परवना (म) परकना, हिंसका ।

परविट्ट (म) इन्दी विट्ट, पराये  
की मन्त्र की बात, पराये  
का दीप ।

परजरा (स) पतिजरा ।

परगत्त (स) पराधीन ।

परदग ।

परतन्तो (म) पराधीनी, पर-  
वन्ती ।

परव (स) निदय, परसीक गी,  
प्रत्यव, धीर जगद ।

परदधिदा (स) दहिनावतं  
पराधूनना ।

परदार (स) पराई स्त्री ।

परदुन्न (स) कल्पपुत्र ।

परदेम (स) विदेम, चेत्यदेम ।

परन्तु (म) चित्तु, पर, वा, धीर

परधाना (द) प्रधान, मुख्य,  
दीवान ।

परगा (द) दुर्ग, पंता ।

परव (स) दुर्गमादि, गीटी,  
सत्तव, चनधाय, पर्व,  
गठि ।

प्रहति (स) खभाव । [ किला ।

परभूत (स) कीरस पची, को-

परम (स) दहे, चराम, प्रति,  
सकृष्ट, ऊँचा, येठ, प्रधान  
कृष्ट ।

परमरम्य (स) पति सुंदर ।

परममति (स) मोक्ष, सकृष्टता ।

परमदुष्टान (स) कल्लन, प्रवीर ।



को धूमि ।

[ त ।

विचारः ।

पराङ्मुखः (स) विमुख, ललित-

पराजय (स) पराजित, हारि,

पराभर, अजय, हार ।

परधीन, (स) पराए दस ।

पराधीन हस्तिः, ( वि० अन्ध-

अवस्था अहम् ) पराए दस

के आजीविका जिस की

परचपवादाः ( ह ) पराद की

निम्ना ।

पराजितः ( ह ) हारा हुआ ।

पराजितः ( प ) भागना, पराजय,

परापरः ( स ) फाकना ।

पर दूर (स) दूर, दि, महुदा

दि, पर चपर ।

पराभार ( स ) आभोग, केव

व भाव का आभार, आभोगी

के आभार के आभोगी के विरु

द्ध विरुद्ध होना ऐसी ह

संभव मुक्ति की दशादि ।

पराभार, को पराभार, निराभार,

पराजय, हार, अजय,

निम्ना, विचार ।

पराजितः ( स ) हारा हुआ, हारि,

पराजयः ( स ) हारा हुआ, हारि ।

पराजय, ( स ) हारा हुआ, अजय,

भोग, भोग, भागना की

जागा, अजय आभार ।

पराभार ( स ) आभोगी के विचार ।

पराजितः ( स ) हारा हुआ, अजय

निम्ना । [ त, हारा हुआ ।

पराजितः ( स ) हारा हुआ, अजय-

पराजयः ( स ) भोग, अजय ।

पराभार ( स ) निराभार, पराजित,

हारा हुआ ।

परि, ( स ) हारा हुआ, परि-

भार, पराभार, अजय,

अजय, आभोगी, आभार ।

परिभार परिभार, ( स ) हारा हुआ,

अजय, अजय, अजय, अजय

परिभार, आभार, अजय-

अजय, अजय, अजय, अजय

अजय । [ अजयः १ ।

परिभारितः, ( स ) हारा हुआ, परि-

अजयः ( स ) हारा हुआ, अजय

परिभारितः, को परिभारितः ।

परिभारितः, को परिभारितः ।



परिघः (स) घोंडा, हारदुरका  
 हारटाठ, मैडा, साठी,  
 छंद—टर दहेन कहेन वि  
 भरहु धाप बिकठ मटरन-  
 मोहरा । सर भाप तीसर  
 सुक्ति मूल लवान परिघ  
 परम भर । प्रभु कीन्द  
 धनुष टंकीर मयन कठोर  
 घोर भयायका । भग बधि  
 व्याकुल लातुधान न  
 ज्ञान तेहि अवसर रहा ।  
 अघात कैसे सुन्दर राज  
 लुगार है कि कीध मे गये  
 घर धरु, ऐसी पाशा कर  
 ल । तीसर, बरहा, भक्ति,  
 छाँ, गुरु काको पहिस  
 भी फल मरली पादि  
 की मोल ना पदलदार  
 जीत, परिघ काठी । हार  
 मैनाठी, मयमेडा । गदा-  
 कार । दीहा । परिघ  
 मय परगत परिघ, घर मय  
 मय विगंध । परिघ दान  
 भम धन मदी, परिघ मर ।

समि मेघ ॥ १ ॥

परिघ, परिचितः (स) परिघ,  
 दिगिज, जात, पहिचान ।

परिचयः (स) जान पड़वान  
 पहिचान, मोति ।

परिचित परीक्षित, (स) पत्र  
 का योगा, परिमन्त्र्यु  
 पुत्र, परिमन्त्र्यु का बेटा

परिचर्या } (स) सेवा, ज'  
 प रचर्या } सन, गुप्तदा  
 परिचर्या } पुनः । [वहेर

परिचार (स) सेवा, चकन, ३  
 परिचारकः (स) टहनु, चाक  
 टाप सेवा देवक, मोहरा

परिचारिकः (स) द भी, सेवा  
 का मान कारिका कौ ।

परिचितभुक्तताभिस्तानाम्,  
 ( १० कोतुहलानाम्  
 जानो है अदृष्टिदी व  
 मरीछ जिहोने ।

परिच्छिन्न (स) पावपे, छात्र  
 घरे, दावा ।

परिच्छिन्न (स) दधिभक्त,  
 परिमित, मोलायक, टे  
 अंश, परिच्छिन्न, दिधः

अध्यापक, घरागया ।

देने वाला ।

परिचयन (स) परिवार, कुटुम्ब,  
प्रजा ।

परितोषः (स) सन्तोष, प्रसन्नता ।

परिस्तर (स) पटुका ।

परिपत (स) झुका हुआ, पड़ा ।

परिधाता (स) रथक, पालक ।

पूरा, दूसरा रूप पाया

परित्राप (स) रक्षा, बचाना ।

हुआ ।

परिदम्भ (स) जला हुआ ।

परिपति (स) पक्षापन ।

परिदेवन (स) विज्ञाप, कल्पना

परिपतयिष्ठ (स) झुकने वाला,  
दराने वाला ।

परिधन परिदधि, परिधि, (स)  
पहिर, पीढ़े वस्त्र, घेर,

मण्डल ।

परिदय (स) विवाहयज्ञ ।

परिधान परिधेय, (स) पहिरे  
का वस्त्र, पहिरना, पहि-  
रना, पहिरावा । [पहना] ।

परिदाम (स) अवस्यन्तर  
प्राप्ति, फल, निवृत्तभाव,  
समाप्ति, अन्त, आखिर,  
पानी, पत्रिका, अंतफल,  
विचार, उत्तरदाता, अं-  
कान ।

परिपाक (स) समाप्ति, अन्त,

परिपाका (स) अंत का फल ।

परिपाटी (स) सत्तन, समुक्तन

परिपाह (स) दीर्घ, बड़ा ।

रौति परम्परा की, बड़ा ।

परिताः (स) चतुर्दिश, चारों  
पोर, आकाशदिश ।

परिदूर्प (स) सम्पूर्ण, भरा,  
समाप्त ।

परिताप (स) दुःख, पीड़ा,  
गोच, क्षेप, अन्ताप, तपन,  
गरनी, हिंस्रता ।

परिपेक्ष (स) केंवटीमोटा ।

परिवेदन (स) पीड़ा, दुःख ।

परिव्याध (स) कर्षिकार न-  
द्वेष्ट ।

परितापी (स) कोरी, मोची,  
लैगी, लैग दाता, दुष्ट

परिभाषा (स) तिरस्कार ।

परिमल । स भवति ।

परिमल । स भवति ।

परिमल । स भवति ।  
साग, सख्या, विमल,  
अन्तः ।

परिमल । स भवति ।  
मन्त्राग मन्त्रित । (फल

परिमल । स भवति ।  
मन्त्राग मन्त्रित । (फल  
मन्त्राग मन्त्रित । (फल

परिमल [म] } कल्याण, मि  
परिमल [म] } सुख, गति ।

परिमल [म, मन्त्राग मन्त्रित]  
परिमल [म] कल्याण, मि  
मेवमत् ।

परिमल (म) कल्याण, मि  
परिमल [म, मन्त्राग मन्त्रित]  
मेव, व क ।

परिमल [म] कल्याण, मि  
परिमल (म) कल्याण, मि  
दूर करमा दूपा ।

परिमल [म] कल्याण, मि  
मेवमत् ।

परिमल [म, मन्त्राग मन्त्रित]

अवस्था अपमान ।

परिमल [म] कल्याण, मि

तदा कमी, कल्याण मन्त्रित

साग विमल तदा, मन्त्रित

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

साग विमल तदा, मन्त्रित

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

मेवमत् ।

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

साग विमल तदा, मन्त्रित

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

परिमल [म] कल्याण, मि

पञ्चाक्षा, पञ्च पक्षी का,

पञ्चाय, पञ्चा, पान ।

पदनिर्वृत्तः (स) पञ्चा का घर ।

पदकारः (न) तंदोली, तया

पतन इत्यादि, का, बारी ।

पदलुग (न) बागर, कस्तुरी पादि ।

पदनालाः (न) पदकुटी, पत्नी

का भवन ।

पदार्थः (न) मोरिपारी ।

पदार्थः (न) धननापर ।

पदार्थः (न) पापर ।

पदार्थः (न) पापर ।

पदार्थः (न) पापर ।

पदार्थः (न) रोटी १ पपरी ।

पदार्थः (न) तिहवर, कलव

वनध्यात, पौर, गांठ, दीग

उत्तर कास के योग ।

पदार्थः (न) भ्रमर, घूमना ।

पदार्थः (न) पलंग, छाट ।

पदार्थः (न) पलायन ।

पदार्थः (न) सुवर्णमीन ।

पदार्थः (न) दास, दूत ।

पदार्थः (न) सीमा, पत्त, तह

रग, परता सिरा, पदधि

रनाति, वहां तह ।

पक्षः (स) मांस, मांस, हत्ता-

न घड़ी का साठवां योग,

६० निमेष, पक्ष, बोड़ा ३

तरह का दोहा । पल

मांस की चरत क्षति,

पक्ष हत्ता पल सोय ।

पक्ष पक्ष हरि दिवसरे

गोपित लुग सत होदः ।

पक्षना [प] फेरना, कष्टना,

वृद्धना ।

पक्षनः (न) मांस, तिल ।

पक्षार्थः (न) पेषात्र ।

पक्षायनः (न) भग्न, भागने,

भागना, भय से त्याग छोड़

भागना ।

पक्षार्थः (न) पक्षार्थ

पक्षार्थः (न) पक्षार्थ, गुण, व,

हरिश्चर ।

पक्षार्थः (न) पक्षार्थ, पराध,

ठाक का दूध ।

दोहा । दाग पोष है

बहुदुग्ध, किंकर पक्ष

पक्षार्थः ३ वृद्ध देखि तुम

राधिका, छांकी मो-

हाम म क र हारव

मः रनाम कदि,

राकेम ररि पनाम

रुमरु मरु रनाम र

रनी क रन रनाम र

पञ्चमः म सुमन्य बान्धव

रु री । एक लमरु रनाम

नः रनाम र र

पञ्चमः । रनाम र

रनाम र

पञ्चमः, रु रनाम र

पञ्चमः म रन, रनाम र

रनाम, रनाम, रनाम

रनाम

पञ्चमः म रनाम र

रनाम, रनाम र

रनाम

पञ्चमः [ म रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

मरु रनाम र

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

रनाम, रु रनाम

पञ्चटालीना सुपीडा ले लेना,  
 लोटा लेना, बैर लेना,  
 बंदूकालीना, बैर सारना ।  
 पवन । [ स ] वायु, सपार, बतार,  
 टोस दाका, कद, जल, दवा ।  
 टी० ॥ कसल सदागति  
 पगिल पुनि, गावत पद  
 कग प्राण । पवन प्रभंजन  
 सिखि पगिल, नभस्मान  
 परमान ॥१॥ तुपतन परि-  
 मन परमि लव, गीतत  
 धीर सनीर । ताकहं बहु  
 सनमान कर, परिरंभ  
 वत हीर ॥२॥ पुनः छेद  
 गीतदा । पद पगिल  
 गावत वायु पृथक् सनी  
 रन नभस्मान । पवनरुग  
 कदग सनीर परिमल  
 सदागति पदमान । हरि  
 बात पामुगमा तरि झा-  
 धनंशय कगप्राण । पुनि  
 पवन पदगनस्य जनहुग  
 मंध डाह बधान । टी० ।  
 नाम रंषिंदत सकल,

सहित प्रभंजन होय । पद  
 विंमत कलगीतका, कदग  
 कवि सब कोय ॥१॥ टी० ।  
 कद मल्ला कद पदग धन,  
 कद सदिसे पुनि धान ॥  
 कद हित मंजूर उपनै,  
 भले न सुंदरस्यान ॥२॥

पवनकुमार । [ भ ] हनुमान,  
 भीम ।

पवनपुत, पवनतनय ।

पवमान् । [ स ] पवन, वायु ।

पवार (२) मारप, लोहने ।

पवारे } [ व ] डारि, छांहे मारि,  
 पवारे } छेद, पवारना, कलना  
 पवि } [ म ] कुलिंग, दल,  
 पवि } हीरा ।

पदिटाही । [ म ] हीरागवि ।

पवित्र । [ म ] शुद्ध, निर्मल,

पापहीन, पाक, साफ ।

पवित्रता । ( म ) शुद्धता, शुद्धार ।

पवित्रा । ( न ) यज्ञोपवीत, कुंग ।

पवित्री । ( म ) पट्टी निमेष ।

पट्ट । ( म ) लल्लु, चौपाया, पट्ट-

पद ।

पञ्चपति । [ स ] महादेव ।

पशुमारः ( प ) मृग्य बाधि को  
मारता ।

पशुमेहनकारिका ( म ) चमसरा ।

पथात्-म प्रीष्टि, पक्षादकीधार ।

पथाताप ( म ) मत्ताप, गोक,

पक्षताया, पक्षसीम ।

पशः ( स ) देख तू ।

पश्यति, ( म ) देखत हैं एक ।

पश्यन्ति ( स ) देखत हैं सब ।

पश्यामि ( स ) देखत हों, हम

एक, में देखता हूं ।

पषातन [ द ] मृदंग ।

पषादे. ( द ) प्रषासन, घोड़े,

पषारना, घोना ।

पषारा' ( द ) पष, पन्द्रहदिन

पषिग. [ स ] प्रतिबीदिक, नि

धर सूर्य चम्रा होता है

पीछे मगरिध । [ मुनार

पशुगोहर. [ स ] गठकटा,

पषाच. [ स ] पत्यर, शिका ।

पषाज. पषाज. [ प ] छपा,

दया, प्रसन्नता, अनुषङ्ग

पषाद ।

पषेव [ प ] पसेना, खेद ।

पक्ष. [ प ] समीप, गोर, सुवेर ।

पक्षकटना. पक्षकटना, मु.

भोर बीना, तडका बीना,

रोयनी-फौजना, - दिन

निकसन ।

पक्षरा देना. मु. जागता रह

ना, चौकस रहना, बीबी

देना, रखरातो करना ।

पक्षराई. [ प ] मित्रमातो

पक्षराई ] सेहमाती ।

पक्षरे में डालना. मु. हवा

में रखना, पक्षरा बी

सीपना । [ में रखना

पक्षरे में पक्षना. मु. हवा

पक्षरावे. [ प ] भूणादि नारा

वा वस्त ।

पक्षिका. [ म ] पक्षिकानी सीप ।

पक्षिकी [ द ] संस्कृत में पक्षिक

पक्षिका की पक्षिकी का, प

संस्कृत देव वा देव पक्षिका

करना । पक्षिकी दृष्टि,

सुभक्तुसुभक्तु गुरुवत्, प्रे

प, सुभक्तुसुभक्तु, सुभक्तु, द

सुभक्तुसुभक्तु । गीरी ( प

से सुदरी, मल्लिप, फल-  
 पुष्पवत् में अंतर है । य-  
 या पहेली—दूढ़े बटे पर  
 चन्द्र नहिं, ज्ञानमवरण हरि  
 नाहिं । नरप मंदारै रंग  
 नहिं, विहरै मुनि जन नाहिं  
 ॥१॥ (२२२) को पावै तो  
 करि-पवेत । बैठत ही पां-  
 धर-करि दैत । छठे दैत  
 नव को दहु पोरा । लाय  
 दुखी करि झुझुधीरा ॥२॥  
 [ पांछ ] एक तामाना देखा  
 मात । नाच छट्ट दे घोड़ा  
 पात ॥३॥ (बना) पादि कटे  
 मैदा हो लाय । नख बटे  
 दह सबै सोहाय । अंत कटे  
 घोड़ा छै लाय । पछित  
 ताकर नाम बताय ॥४॥  
 [ कमल ] एक चुड़ैल घर  
 घर रहे, नाहि रुखि घर  
 लाग । दंडो को रुम पूछि  
 कै, मुँह से चमिने लाग  
 ५ ॥ [ विपामलाई ] फिर  
 छेर दित्तै नहिं पीर ।

राजधरम सब हारी तोर  
 पावै विनु सब दिमा भु-  
 लाय । मुई गोत्र पछित  
 पछिताय ॥ ६ ॥ [ सुन्यक  
 की मूर्ति ] आगे पीछे बलै  
 नहिं, दुइ मूर्ति यदि होय ।  
 लाय, संगार चकीर नहिं,  
 बिरला बूमै होय । ७ ॥  
 [ रिणगाही ] पीर जेय [ शिष्य  
 मिलना ] मिताय, संयोग,  
 एक पसंदार जिस में एक  
 मध्य के बहुत अर्थ होते हैं,  
 जेरे कीकर-पाकर तार,  
 जानन, फलसा जानला ।  
 सेव कदम कचनार, पी-  
 पक्ष रत्ती तून तन ॥१॥  
 इस में बहुत से पेड़ों के  
 नाम पदात् कीकर पा-  
 कर तार । जानन फलसा  
 जामिला सेव कदम कच-  
 नार पीपक्ष रत्ती तून तन  
 देखाई देते हैं पर इसका  
 पद यह है कि परमेश्वर ने  
 जग परलया की कि निम



तो त बाइला की की हो  
 आगिला, मो न कन हो  
 नव नव है री क  
 मिया कर और २५ २  
 प्यारे को एक पल कर ४  
 गत होड । और सक  
 ना मुकुरी मुकुरी के ड ।  
 हे निम कः अर्ग, इतर र  
 ना ना नटना २५ २  
 है और एक तरह का २  
 टा हट को नटना २  
 नटना नागा २ और कम  
 के चार पट २५ २  
 तरह हो २५ २  
 तीन पटो मे रिमा कागा  
 नागा है कि दोक २५ २  
 की थपनी २५ २  
 करती है घर चोरे २५ २  
 नटना की थपनी मरु २  
 पटती है को चप्री मरु २  
 नटना कम पर नटना मरु  
 मकरती है और चिन्ता  
 दूसरी नागा २५ २  
 बजाती है २५ २

बिन बिना चहुं टमि होसे ।  
 आगक जो पनि पियविय  
 कोन ३ मने होय पावै न-  
 'जगह क्यों मवि सज्ज  
 ना मवि मेह ।' और फर  
 बभीवस, एक वेल का  
 नाग के जिमको मनेकेता ।  
 उरु है नमे गलती कोई  
 एक गलत क फिर चप्री  
 नटना और कम मंदर  
 २५ २ फिर कम में है  
 प २ नटना को तो बाकी  
 कि ना रहा इहीम ती  
 नटना नागा है इत्यादि ।  
 नटना २५ २ तरफदारी,  
 ना नागा २५ २  
 निम ३ पविक्त  
 २५ २ ना नागा २५ २, पविक्त  
 २५ २ । निम सकल पवि  
 सकल, २५ २ विद्वय वि-  
 द्यम । निम मुपदती २५  
 २५, पविक्त पतम पतम २५  
 नटना विद्वय पतम भवि,  
 कोमल पतम मुप्रात ।

तुम् पागम पानन्द वन,  
करतेपरस्परदात २ हृद ।

धत्ता ॥ अहं हिम पयो

गङ्गा पतयो पद्मकुंति

नम संगमा ॥ वीपयो तं

गावालि विहंगा विह्नि

विहंग विहंगना । पुनि

यद्यस् पयस्य पतन गगन

पय गवत नान पौ खे

वरं । यद् हृद सुधत्ता

दक्षिण गता विहरनाम

तेह्य करं ॥१॥

पञ्चम् (स) पञ्च ।

पञ्चम् (स) पञ्चदो का अंश ।

पाञ्च (स) विद्यादा, मत्ता ।

पा. (स) पगु, वरप ।

पाण्डु. (स) सारधान ।

पांवर (स) पञ्चम, नीषा ।

पांयु. (स) धूरि, धूसी ।

पांयुपर्वीय (स) पगपापर

पांयुधवन (स) रेहमिष्टी ।

पांङ्गि (स) समीप, निवृत्त ।

पाञ्च (स) रजोई, लोई, पञ्चा,

समुद्र, एह समुद्रका नाम ।

पाक (स) कात्तागोन १ सोवर  
गोग २ ।

पाकी (स) परिपक्व ।

पाकरिपु. (स) इन्द्र, स्वर्गपति,  
पद्मदुट । श्री. काक सं-

मानपाकरिपु रीति । क्ली

नचीन कातहुंन मतीती ॥  
पद्मात् कौवा के समान पा-

खेनामा राजसे काः परि  
को इन्द्र ताकी रीति है

कौ गद्योगता पौ-कतहुं  
मीति नाही गाव राम भ-

कन पर सब मीति करत  
तहंल सारय दिपत हैं ।

पाञ्चवार (स) चंदोचार ।  
पाञ्च (स) पंच, पंख, पन्द्रह

१५ दिन को ।

पाण्ड (स) दंग, दिग्ग ।

पाणि (स) साने, सौने, पागना ।

पाञ्च (स) सख्यादायक,  
पंच दो चीर तीन, इन्द्र

प्रनुप, पंच । श्री. मोर  
दात सब विधिहि मताई ।  
मज्ञा पांच कत कबहु

सहाई ॥ प्रजा पात्र चर्चान  
 पंचायत मा पा का वाक  
 रडा है त्रिम म तुन मर  
 सहाय कर्मि ॥ पात्र च  
 तुल पे पात्र मर मलमान  
 प्रायेसु प विरु दे = सु  
 कानो ॥ चर्चान तुम ॥ ३ ॥  
 कुमार दित मानि के क  
 र्चान् विरो म मानि के  
 पुन ॥ १० ॥ पात्र क म  
 लाने नीका । करद, करमि  
 दिय रामहि टीका ॥  
 चर्चान् पात्रहि पर्वी की ।  
 की तुन पंचन की मर  
 मल सोहाय गो हटन  
 हर्षित करि मनुनाग की  
 टीका करद । पात्र मान  
 मिल कोल काण । कर  
 मने नहीं पावे लाण ॥

पाञ्चाली (स) पोपक ।

पाट (म) (प) शेषम, पटुना,  
 मम, सोहाई ।

पाटमहिपी (म) पाटराची,  
 विवाहीराची ।

पाटच (स) वसविशेष, गुलाब,

देवतक केवल फुलत पर  
 कलमनहि पात्रि । दो०  
 पात्रो पटुना कलमडा,  
 वाग्न म्यामा नाम । पर  
 रण मन्त्रीयमे, पाटच  
 करत प्रनाम । [ वस ।

पाटना (म) मया कसी पांवर  
 पाटकाउ-१ (म) माठो धान ।  
 पाटकाविना मं कठपांडर ।  
 पाटनि म गुलाबोरद ।  
 लाय ।

पाटकी सो कठपांडर टन  
 च/पात्र ।

पात्रिपुत्र (म) पटुनामर  
 पाटोर म मकर वन्दन मू  
 पाटे पं मरी दान मरे ॥  
 रदेना, भरदिया, पाटना  
 मठीन द पहिना, पाठिना म  
 केनी । [ पटुना ।

पाठ (म) पटन, पध्याद मर  
 प. टक (स) पटानेवाग्न । पध्या  
 पक पटानेवान ।

पाठन (स) नायक नाम पट  
 माला, पटानना ।

पाठा पाठिका (स) पाठी ।

पाठिघातिनी (स) रुपेदस्ताण ।

पहाड़ धीराते, सु० लंभीराते,

बड़ो राते, दुख की राते ।

पाँवठठाना वा, बसाना, सु०

भटभट बसना, सलुही

सलुही बसना ।

पाँवउतारना, सु० पाँव का

घोड़ टलना, पाँव गाँठ से

छँदना ।

पाँवकाँचना वा घरघराना, सु०

किसी काम के करने से

हरना ।

पाँवकिसी का उखाड़ना, सु०

किसी को किसी काम पर

लगने नहीं देना ।

पाँवकिसी का गले में डालना,

सु० किसी मनुष्य की उखी

की बातें में प्रसन्न तर्क से

होयी प्रसन्न, प्रसन्नाधी

ठहराना ।

पाँवबस जाना सु० दगमगा-

ना, बसिर होना ।

पाँवससाना सु० दड़, होदे ठह-

रना, मजबूतीसे ठहरना ।

पाँव जमीन पर न ठहरना सु०

बहुत प्रसन्न होना; बहुत खुश

होना, बहुत घमंड करना ।

पाँवसाग सु० घबराहट, व्या-

कुलता, भ्रंश, जंगल,

सीधा पथ से बाहर ।

पाँवहालना सु० किसी बड़े

काम के करने के लिये

तैयार होना, प्रीति से

को शुक्र करना ।

पाँवडिगना, सु० फिसलना,

फिसलना, रपटना, किसी

काम से हिरात या हार

जाना ।

पाँवतलेमचाना, सु० किसी को

दुख देना, पिजाना, स-

ताना, पोड़ा देना, खराब

करना ।

पाँवताँड़ना, सु० किसी के मि-

लने से रुक रहना, किसी

मनुष्य से मित्रने के लिये कई

बार जाना, घबरा जाना ।

पाँवधीधीपीना, सु० बहुत

मानना, किसी का बहुत  
विश्वस करना, बहुत  
सुझावमय बनना

पावनिकालना ३० रगड़ना

सुझावमय बनना, बहुत से  
जानना, किसी से कुछ  
के धारणेसे फिरना किसी  
अपराध के करने से सु  
विश्वस होना ।

पावपकटना, ३० २००

अथवा अधीन में बिलना  
करना, किसी का जाने  
में रोकना, अधीन होना  
ग्रहणलेना ।

पावपकटना, ३० घिसना, ३०

विश्वसिलना, गरीबों से  
बिलती करना, रगड़ना  
करना ।

पावपरपावपकटना, ३० दूसरे

समूह का आश्रय बनना  
३० गड़ना, अथवा लेनेना,  
दूसरे की आश्रय बनना,  
ऐक्यसे उठना, आश्रय से  
बैठना, एक पैर को दूसरे

पैर पर रख कर बैठना

बड़े तलाशा करणों:

३० गड़ना, पार्श्वपार्श्व, ३०

पट्टना, पिनालेपा, पैरी

पाव ३० टना, ३० अधीरता से

पाव पट्टना, धृष्टा ३०

शिशु करना ।

पावपकटना, ३० किसीको ३०

जानना, किसी से बचना,

अपराध रहना, दूर रहना ।

पावपकटना, ३० ३०

अथवा काम का सावधानी

में करना, सुदृष्ट कर

काम करना ।

पावपकटना, ३० सुधी

रहना, पैर से रहना,

रहना, रहना, रहना, रहना

रहना, गिर रहना ।

पाव फेलाना, ३० हठकरना,

अटना ।

पावभरकटना, ३० पाव ठि

ठिनना, पाव से ३०

पावपकटना, ३० धृष्टा ३०

खेत से भटकना, फिर,

धृष्टा ३० करना, मरने के

दुख में होगा ।  
 पाँचसंगना नु० प्रसागकरना,  
 ननस्तारकरना ।  
 पाँचपेपाँचधांधना नु० दिखी  
 है पाँच बँराहर बैठा रह-  
 ना, पदवा किसी की खूर  
 रखवाती करेना ।  
 पाँचपेपाँचमिहाना नु० पास  
 होता । [ जाना ।  
 पाँचसोना नु० पाँच सुन हो  
 दंडेपाँचपाना नु० धीरे से पाना ।  
 पाठीनः ( स ) सहस्रदन्त का  
 मीन, होपारीनछन्नी, रङ्ग  
 पढ़िना, होपारीनीन ।  
 पाठी. [ स ] बीता ।  
 पाठगोत्र [ स ] पठनस्थान,  
 स्कूल, मंदरना, पटसाता ।  
 पाट ( स ) तान्मूष, वस्तु की  
 नाड़ी । [ दूकान ।  
 पादि ( स ) हस्त, घर, हाथ ।  
 पादियहप ( स ) व्याप, विदाह ।  
 दोहा । कर पीहन पानो  
 ग्रहन, सद्यहविहित वि-  
 वाह । सोमिज परिभव

नहिं कहूं दुख देती यनि-  
 नाह ।  
 पादिनो [ स ] सुगीविशेष,  
 व्याकरण सूत्रों का बनाने  
 वाले । [ फीका ।  
 पाण्डा ( स ) पीका, सीठा,  
 पाण्डव ( स ) युधिष्ठिर, भीम,  
 धर्म्युज, गङ्गधर, सहदेव,  
 पाण्डु राजा की पुत्र ।  
 धर्म्युज—दीर्घा । धर्म्युज  
 हेम धर्म्युज धवल, सहसा  
 धर्म्युज तत्त्व । धर्म्युज बहुषो  
 पाण्डुमुत्त, हरि । खेत्ता  
 जिह मत्त । २१ पुनः दी० ।  
 नदी-सर्जो धर्म्युज कर्ण  
 रिंदूद्रूतक मोर । तुम कष्ट  
 देपि राधिका, का दिनु  
 हृदय पधीर । ११ पुनः—  
 हं दीवेदी । गाँधीवि दैत्या-  
 री धर्म्युज कीरीटी धनंजय  
 कपिध्वज गरं खेत बाघी ।  
 कीर्तिव फालगुण गुदाकेम  
 रिपु हयकेन पीदे तवा  
 गम्य पारी । धी कर्मुदी

१. मध्य पीठव विजैरथ वि-  
 होजातने पार्थ यो शब्द  
 २. भेदो ग यो कर्मेमुखो स-  
 ३. दित्तगाम पादव कर्ता-  
 तीसमेव येकद्वी छंद वेदी  
 ४. उद्दिष्टा होहा । यमिधर्मनय  
 ५. कर्तृकृत कर्हि, यमन धर्मनय  
 ६. पादि । भर्जुन बहुविधन-  
 ७. कय, कृष्ण सारथी नादि ।  
 पाण्डुरी (न) पादुका ।  
 पाण्डित्य (स) पण्डिताई, विद्या,  
 विदुषिर्हितहीना ।  
 पाण्डु (स) पीठा, पंडुक प-  
 ८. श्री, हरमा देवकी कन ।  
 पाण्डुच्छायाः (विं. सिन्धुः) पी-  
 ९. छी छविवासी ।  
 पाण्डुच्छायोपवनप्रयतः, (विद्-  
 १०. मायाः) पीछी है बागी की  
 ११. सोम । शिम की ।  
 पाण्डुता (स) पीछापन ।  
 पाण्डुपण्डु (स) कास, धान ।  
 पाण्डुद्रुम (स) कीरिया ।  
 पाण्डुपुत्री (स) शिमुका ।  
 पाण्डुर (स) शक्कन, मुक्त ।

पाण्डुनीगमपथी (स) बनपरिद-  
 पात. (स) पतन, नाग, गिरना  
 पातक. (स) पाप, दोष, बुर-  
 १. राध । २. ११३५, -  
 पातकी (स) पाथी, राध, -  
 पथर्था, दोषी ।  
 पातिम्. (स) गिरनीवाका ।  
 पातञ्जल (स) योगशास्त्र, शा-  
 २. तंनस मुनिप्रणीत । (री ।  
 पातासतदुद्गी. (स) पातासतदु-  
 पातास. (स) नीचे का होहा ।  
 पातु (स) रक्षा करो ।  
 पातुग. (स) पीने की ।  
 पाती. (स) बिट्टी, पत्नी ।  
 पाव (स) दरतन, दासन, पा-  
 ३. धार, योग्य, भाजन ।  
 पाव, पाथी. (स. ६) पल,  
 पागी, नीर ।  
 पायक. (स) बाट, राह ।  
 पायकी (स) मटोही, राही ।  
 पाया. (स. ६) जल ।  
 पायर. (स) पायाप, पत्तर ।  
 ४. होहा । उपस, यमपावन  
 ५. पिशा, पावदमत पायाग

प्रसार घना-पञ्चानु दध,  
पावर नाम वपान ॥३॥

पुनः—दीक्षा १ पापी पञ्च  
पत्तर सपद; पुनि पापान

पति भार। पापी पर पा-  
पन तरे, साहे नाम प

धार ॥३॥

पाठ्य- (क) नामी दा मन्त्र,  
हुसवा, तीला, नामी ने

दाने की सानधी।

पादिदधत्- (स) जिसके पास है  
गामने दाने की सानधी।

पापीन- (स) बगल, पंचनादि।  
पापीह- (स) दीप, पादल।

पापीधि (स) जलमनुद्र।  
पाप- (स) दीप, भाजन, दर्शन।

पाद- (स) परत, पांज, किरत।  
श्रीक बा एह परत, श्रीक बा

श्रीदाई भाग, श्रीदा भाग।  
पादधार- (स) पांवी चलनेवाला।

पादधारी- (स) पदातिक, पा-  
दिक, पादा, दीराहा।

पादताप- (स) पनही, खड़ांत,  
लूना, मोटा। दो- १ पद

पान की पान पुनि, पाद-  
पुठसुभाय। पनहीं मन-

हीं भावती, पानिधरी सु-  
भाय ॥३॥ [ नाथ ने।

पादन्वास- (स) पैर रखना जैसे  
पादन्वासकदितरसना; (वि-

वेद्याः) पांवर रखने में बजती  
है तामही जिन की।

पादप- (स) वृक्ष, पेड़। कपि-  
हार, १ वेत्तिपापीपर २।

पादपीठ- (स) पीड़ा, पदा-  
सन, खड़ांत।

पादमहार- (स) दात, पदा-  
घात। [ एही।

पादमूल- (स) गुल्म, पाखी,  
पादगाम- (स) महाधर।

पादार्पण- (स) पैर देना, प्रवेष्ट।  
पदामन- (स) पादपीठ, पदाधर।

पादिन- (स) कलत्रानु सोस  
धरिपास पादि।

पादो- (स) पयठानीशोध।  
पादुका- पादुभाय- (स) पनही,

दा खड़ांत।

पादयुध- (स) सुगी, लुहट



मृगः सागरतटे अस्मात्पुत्रः  
अस्मादभिप्रायः समन्वयः ।  
दासः वा दूतः पुत्रः, नि पुत्रः  
आदि दूतः वा दूतः ३३

एतन्मन्त्रेणैव यत्ना यत्ना  
साधकः साधकः यत्ना  
यत्ना

पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे

पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे

पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे

जामातो जामातो सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे

पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे  
पानकः सा सागरतटे





रनात, प्रकृत्य करनीवाला ।  
 पारिपट (स) रुद्धवत्, देवधैरा  
 दून ।  
 पारिपट [स] } परासपीपर ।  
 पारिपट  
 पारी [स] दारी, बारी, पासी  
 चवसर, फेंकी, पारना,  
 फेंकना भेंस का बचा ।  
 पारिपट [स] चर्लुनपाण्डव ।  
 पारिपट [स] नूर्तिठाकुर,  
 पारिपट [स] निव, राजा, च  
 ली का, गद्दीका ।  
 पारिपटी, पारिपटी, [स] निव-  
 की नारी, दुर्गा का एक  
 नाम, तीली ।  
 पारिपट [स] रुमीय, पीनर,  
 दंगल, पाम, करीट ।  
 पारिपट [स] परासपीपर ।  
 पारिपट (स) बिदक, दास, टहलु ।  
 पारिपट (स) रचक, भाकी  
 पारिपट [स] दसराम ।  
 पारिपट (स) दसभद्र,  
 पारिपट (स) दशकीशम ।  
 पारिपट (स) दोषद, रदद,

मानन, रचा, दिफालत ।  
 पाशव (स) छार, पता, भासा,  
 पसव ।  
 पासे (स) पसीन ।  
 पासेपडना मु० दूसरे के वस्त्र  
 में पाजामा, छैमें, चो०  
 पाज करके उस का  
 हवासे । परेड कठिन रावण  
 के पासे (मानसरामचरित)  
 पाशवी (स) पासनयोग्य,  
 पासत ।  
 पाशिवी (स) पनिसर ।  
 पावरी (स) दोहा । सुषी रा-  
 मटीनच धवदि, कपोती-  
 ग्री परबास । तुल्य चधर-  
 न सम कहत कहि, एन-  
 हिं सुदुक्त रसास ।  
 पावसकः (स) भरने के पासी  
 के रहने की कगह ।  
 पावक (स) पम्पि, परिस्कार-  
 क, पाग, हंठ, दस-  
 मासरी । पादुपया ज्ञान  
 वेद कोहिताद हदा, क-  
 पि पादु मुददि महादि

आरापति विद्यमान् ।

भीत होय तेनागर पावक

विरण्य रेत आग्न्या कोतन

निपातमभीमग मङ्गलान् ।

क्षण बालोपव्यन धर्मजय

जपोट घानि कर्हि गृह

मिस्त्रीपापापास निपा

वान न शोभि तेमज्जामे

इत्यवाहमे गगो वना

सान विभावमपगो पुन

ना जगाम ३२३ दोहा -

सुवस एमम दत्त भक्त धन

क, दहन नाम बाजीन ।

दग वनापार मेन विन,

गुद कथु वणं वतीस ३२४

पौवके ( म ) विहीना, पाव

रचमे का वपत ।

पावम ( स प ) वविन, जग

जस पौवे मेही । [ मन्द

पौवर ( व ) पामर, नीच, भुङ्क,

पौवरी ( छ ) पादुका, पादुका,

पावली ( म ) मेही, करिता ।

पावध ( द ) वगैर, वप

काच ।

पाग ( स ) वस्यन, कोरी, पाग,

कांसी, कन्दा, चोर, तोर,

पंखडी, ताल, लुहा, (मेहे

बेगवाग बांछीं बां कूँ)

पागो ( स ) वधिका, व्याधो ।

पागुवत. ( स ) वडा मोतसरी ।

पागुल ( स ) कापावची ।

पाप ( व ) पप १५ दिन ।

पापाव ( स ) पत्तर, मित्र,

पसम, पसम, गदार, बतर

पापवमेद ( स ) वटाभीकी ।

पाप ( म प ) जक, नीर,

मिगाद, समीप, पाप

पासवति ( स ) बहवदेवता

पासर ।

पाप्यवि, ( स ) विधिना ल ।

पादन ( म ) वत्तर, पापाव ।

पादकप्रतीती ( द ) विधि

पासे कोकीदास विमो

पादक ।

पावि ( व ) रक्षा करो, पावि

पावी ( व ) पाव, निवट ।

पावम ( स ) पतिवि, पम्पान,

पाव ( व ) पति, जन ।

पि-(स)पागकर्ता, पागःस्थितः ।  
 पिक (स) कीर्तिपथी, परभृत  
 कीर्ति, चानि, । "दो-  
 पिक कुकंठ पापिक हरी,  
 दांतप कस सारंभ । वैन  
 सुधा सम सुगत नग, सुग  
 किमीर, समं ११ । परभृत  
 कलरु-रत्नद्वय, पिक धनि  
 लहं रस पुंग । लघु-पिय  
 कदित निरख तोहि, टेरत  
 वसि वसि कुंग ३१ ।  
 मानसरानपरिष मे सिखा  
 हि । दो । इय गय दो-  
 टिक केकिन्म, पुरपय  
 जोहक मोर । पिक रद्यांग  
 सुख सारिका, सु गरम हंस  
 यहीर ३१ । यदात् हेति  
 पासे दृप, पुर पय खान  
 पादि, पिक कीर्ति,   
 रंदांग चरवा, सुख दृपा,  
 गारिका मेगा ।

पिकरन्ध्रः (स) पानहृत् ।

पिकपैगीः (स) कीर्ति क्लिष्टी  
 दारी ।

पिकरय, (स) पिकसमूह,

पिकवसभः (स) पाग ।

पिङ्ग (स) सूर्यवर्ण, पीतवर्ण;

कपिभ ।

पिङ्गलः (स) सूर्यवर्ण, सूर्य का

मोसादेव, पीत, भौता,

पीठा, मातृविशेष ।

पिङ्गलाः (स) पीतता ।

पिङ्गलाः (स) हिंजोला, भूता ।

पिङ्गलः (स) पनारसुष ।

पिङ्गलः (स) पीता ।

पिङ्गलः (स) खरारागा ।

पिङ्गलः (स) नीलवृक्ष ।

पिङ्गलः (स) नील ।

पिङ्गलः (स) कमरुच

पिङ्गलाः (स) मीनगलंगली ।

पिङ्गलः (स) मीनगलंगली ।

पिङ्गलः (स) मीनगलंगली ।

पिङ्गलः (स) मीनगलंगली ।

पिङ्गलः (स) मीनगलंगली ।

पिङ्गलः (स) मीनगलंगली ।

पिङ्गलः (स) मीनगलंगली ।

पिङ्गलः (स) मीनगलंगली ।

पिङ्गलः (स) मीनगलंगली ।



पित्तसः (स) पीतसं धातुविशेष,  
पीतसं, पीतरा

पित्वाः (स) पीकै, पीनकरि,  
पीन करि

पिनाकः (स) पिबन्वयं, ति  
शून, धन्वा, धेनुयः, नेमा-  
न, महादेव का धनप

पिनादिकः (न) मन्त्रविशेष ।

पुत्रदायका

पिपामाः (स) तृषा, प्यास ।

पिपीनिकाः (स) पुंटी, पिपरी ।

पिप्लवः-पिप्लोः (स) पीपर,

पीपेल, पीपेल का सुव ।

पिप्लोमूकः (स) पिप्लामूक ।

पिपः (स) खासी, मेसी, प्य-

रा, पीतन् । दी, देइता

दंपति ईस पुनि, प्रियमतीरि

सहीय, पिय श्री तो

की दसगा, पीर न देओ

कीम, राखे

पियदसरि (स) राजदेहीपुष्य ।

पियः (प) पति, खासी, प्यारा ।

पियालः (स) पिरीसी, पिरं-

वंधी, कचविनीय ।

पिरीते- (स) पीत, पीतमं, पीति

युता

पिरीजाः (क) नाम, पत्यु, रक्त

यपे, पीरीजा सपि, लंगासी

रंग का, नुवि

पिजुनः पिजुः (स) दुट, बैरी,

निन्दक, जुगुच, जुगुच

दिखानेवाला, देकरा

पिटिकाः (स) हरिदः पादि की

पीसी डूँडे, पीठी ।

पिहितः (स) मांस, प्ये पा

प्रियाच (स) राखस, नाति वि-

पिसाच (द) राखस, बैतान ।

पीठ के पीछे हाथलेना सु०

बहाना, पककरना, रचा

करना । लेना ।

पीठ के पीछे पड़ना सु० गरब

पीठठीटना सु० टाटुम देना,

साहचदेना, हिमंत बांधना ।

पीठदेना, सु० भागदाना, पि-

रगा, डटना, ठसना, प-

प्रमस होकर फिराना ।

पीठपर दाय फेरना सु० पीठ

यवधरना, मासमी देना,



ਟਾਕੁਮ ਟੇਲਾ।

ਟੇਲੇ ਸੇ ਕੁਲਾ।

ਪ ਟਕਿਲਾ ਸੁ- ਖਲਾਜਲਾ

ਪੀ। ਪ ਸ਼ਾਮੀ, ਪਲਿ, ਪਿਧ।

ਪਾਸਲਾ ਫਲਾ।

ਪੀਠ (ਸੀ) ਪਸ਼ਰੀ ਕਾਕਾ ਬਾ-  
ਪੀਠ (ਪੀ) ਦਸੇ ਗਾਮ, ਸੁਲੇਸ

ਪਾਨਲਾ ਸੁ- ਪਾਸਲਾ ਪੁ ਵ

ਵਾਸ, ਆਨ ਪਾਠੀ ਕ।

ਪਿ, ਪਾਸਨ, ਪੀਠਾ, ਫੈਲ

ਪਾਏ ਪਰ ਪਾਸਲਾ।

ਕਿਸੇਧ ਪਿਠਾਠੀ।

ਪੀਠਾਕਲਾ ਸੁ- ਆਟਕਲਾ, ਵ

ਪੀਠਕ (ਲ) ਪੀਠਾ, ਪੈਠਕੀ

ਪਾਟਲਾ ਫੀਠ ਪੀਠਕਲਾ

ਕਾਟਕੀ।

ਪੀਠਾਕਲਾ ਸੁ- ਕਾਟਕਲਾ

ਪੀਠਕ (ਲ) ਵਿਵਾਹਰਧਰ।

ਪੀਠਾਕਲਾ ਕਾਟਕਲਾ

ਪੀਠਕ (ਲ) ਦੁਸ਼ਟ ਟੇਲਾ ਕੀ।

ਪੀਠਾਕਲਾ ਸੁ- ਪੀਠਾਕਲਾ,

ਪੀਠਾ (ਸ) ਕਾਟ, ਕੋਸ, ਫੈਲੀ

ਪਾਸਿ ਲਿਕਖਲਾਸਾ, ਆਸ

ਦ ਫਾ ਕਾਧਾ ਕਿਸੇਧ ਵਿ

ਪਾਟਕਲਾ।

ਫਾਟ (ਪੀਠਾ) ਆਵਿਸਲਾ

ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਸੁ- ਪੀਠੇ ਵਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

ਪਾਸਲਾ ਪੀਠੇ ਵਲਾ ਪਾਸਲਾ

ਪੀਠਾ (ਸ) ਆਸ, ਪਾਸਲਾ, ਪੀਠਾ

पौत्रि हं द सिंहनी तीम  
 पला की ॥ १ ॥ दोहा ।  
 पौत्रत इन्द्रि वज्रांग-  
 ना, मखी बाम हक पाय ।  
 हृदयता ननु धर्म ते ,  
 परदि परी मरभाय ॥ २ ॥  
 हं द मारवती । कीम द-  
 गा तब मादप्रिया । भीम  
 वरी छवराग विदा । काह  
 भं हवि देववती । तीम  
 भगानम मारवती ॥ ३ ॥

पौहित (म) हटी, वल्लभमान ।  
 पीत (म) पीला, बल्लभ, लक्ष्मी ।  
 पीतक (म) हलू, केसर, किं-  
 बिरात ।

पीतवदन (म) पीत वदन ।  
 पीतदाह पीतदु (म) दाह-  
 दहरी ।

पीतम (म) पल्लव ।  
 पीतपुष्प (म) भुरा कीरहा,  
 भौमी । [ दिहदा ।

पीतपुष्पा (म) पिङ्गवा, लक्ष्मी-  
 पीतपत्र (म) पिङ्गवा ।  
 पीतपेद (म) पीता ।  
 पीतपदक (म) पिङ्गवा ।

पीतारक (म) गोमेदगनि ।  
 पीतरीहरी (म) मन्मथ ।  
 पीतरीज (म) मेघी ।  
 पीतहृत् (म) मरक ।  
 पीतसालक (म) पापन ।  
 पीता (म) हरिद्रा, हल्दी,  
 टाकटन्नी, दाघ ।

पीन पीषर (म) पुट, मोटा,  
 यादा, लूण, तुन्देश, गो-  
 दधि ।

पीनष्कन्ध (म) भैमा ।

पीषर (म.प) मामान्यहृत्, हृत्  
 मीद । पीषधि । दो० । पी-  
 का हृत् । गोधरी, तिग्म  
 तुल्यमा होत । बैदेही स्वामा  
 वमा, मुंठी बहिदे सोय । १।  
 यह पीषर हलि भुंगहन,  
 बहम हलुत परवार । यह-  
 ले इतनी करि कुंहरि, प्रो-  
 तम मान अधार । २। दो० ।  
 यहदम पीषर मर्म पल्लव,  
 बंध हृत् पल्लव । पीषर  
 देवतु दाहिने, पीरि दाघ  
 हितमन । ३ । पुनः । दे

समस्त सत्त्वस्य हे धर्म ग-  
लाग्रम साध : हे विष्णु  
कित साधनी, कोजे गो-  
हि प्रबोध ॥१॥

वीपरि (स) लघुवीपरि । [ च ।

वीरगान (स) वीरा काना हु-

वीर्य (स) चमत् अच. दुध  
घृत ।

वीर्य (स) चमत् २ । [ च ।

वीर्यपथि । स १ वृत्त. नरन

वीर (स) जातिविजय दृष्ट,

मीटा । [ सतावर

वीर्यी (स) सविजन, पक्षाही

वृ (स) पुरुष, नर, पमान ।

वृद्धि, (स) पुरुषचिन्त, पुरु

वृद्धि । [ रवी ।

वृद्धी, (स) वृद्ध्या, व्यभिचा-

वृद्ध (स) नर चर्मात् शो नर्वा ।

वृद्धी (स) वीर्यी ।

वृद्ध-वृद्धक (स) सुव्यापी,

वृद्धीकेन } कर्मिणी, सापा

वीर्यी : दोहा : वीटा कुर्मक

वीर्यगुणानि, वृद्धमुपासी पा

वीर्य : परिवार इति संज्ञा

वलि, रंवेक यदि तेन चा-

दि ॥१॥

पुत्रव (स) पक्षी, योष्ट, बड़ा।

पुच्छ (स) पुच्छ, कागुम, दूध

मेडा । [ संसू ।

पुत्र (स) ठेरी, रागि, वीर,

पुट (स) पात्र, गिताव, इव

कारक, घुसाव, दोना, टी-

कने की वस्तु वस्तु की नई

कापसी का ठाकनेवाला

पशा । [ गाठ, पहिरा,

पुटी (स) दोनापात्र, पुष्टि,

पुष्टक (स) माधवी पुष्ट ।

पुष्टरीक (स) साधवा, वृ

पेड कमल ।

पुष्टरियक (स) कुमुदवा ।

पुष्टरी (स) भिन्धनवर ।

पुष्टरीक (स) नागविमेव ।

कमल, दोहा । पुष्टरीक

सायक चरन, पुष्टरीक

पाकाव : पुष्टरीक इति

कमल अहं, तदी चरन

को व स ॥ १॥

पुष्ट (स) मुक्तनयन, कीर्ति,

धर्म, पवित्र, पद्धा काम,  
सुन्दर ।

पुत्रजनः (स) रा. चक्र, सुकृति-  
जन, पुत्रिमान । [छात्री ।

पुत्रिजनः (स) कुवेर, सुभ-  
पुत्रिजनः (स) गौरी, कुवा ।

पुत्रिभूमिः (स) पायावर्त, प-  
नर्भद ।

पुत्रिभूमिः (स) उक्तमद्योक्त,  
नारायण, भागनाम ।

पुत्रिभूमिः (स) दाता, पुत्र-  
नारायण, पवित्र । [मा ।

पुत्रिभूमिः (स) पुत्रि, प्रति-  
पुत्रि (स) पुत्र, एक नरक का

नाम है ब्रह्मा, जो पुत्र-  
नाम नरकासे अपने बाप

को ब्रह्मा, सन्तान, ब्रह्मा-  
बेटा, पवित्रकारी, पातन-

नाम है । दोहा : पायज क-  
कहिये कहिये रंग, पायज

कहिये काम । पायज पुत्र-  
सपुत्र है, मज्जी को सुन्दर

स्वः नरक । [रक्ष ।  
पुत्रि (स) पवित्र, जीवनदा-

पुत्रजनः (स) सन्तान ।

पुत्रिभा (स) पितृवलिभा ।

पुत्रिभा (स) सन्तान । [हिंया ।

पुत्रिभा (स) कन्या, बेटा, गु-

पुत्रि (स) बेटा, कहको, हिंया ।

पुत्रिभा (स) सन्तानार्थयज्ञ ।

पुत्रिभा (स) मरीर, देह ।

पुत्रिभा (स) मरीर, देह ।

पुत्रि (स) पुत्रि, फेर ।

पुत्रि (स) फेर, फेर, ब्रह्मा,

बारम्बार, एक नदी का

नाम ।

पुत्रि (स) फेर ।

पुत्रिभा (स) फेर, फेर, पु-

नः कथन, हिंया, दुवारा

बयान ।

पुत्रिभा (स) नरक, पुत्रिभा ।

पुत्रिभा (स) सुपेद गदहपुर-

वा । [पुत्रि ।

पुत्रिभा (स) नास गदह-

पुत्रिभा (स) गदहपुर ।

पुत्रिभा (स) सुपेद गदहपुर ।

पुत्रि (स) फेर, पुत्रि, ब्रह्मा ।

पुनी-पुनीतः (स) पवित्र,

व्यवह, शुभ ।

पुत्राग [म] केशरीपुत्र । टी० ३

हे केशर मुरवज्जभा, तूरा  
पुत्रय पुत्राग न किने गई  
मीलातरो, जासु अचक  
सीमाग ॥१॥ छंद सुधाम ॥  
दिने सुनि व्यास गई ल  
शिता समभक्त य प्रिया संग  
मी लय पादे । विनोद गु  
पास कर य ॥ नि जन् गोवद  
मी छवि विदुत छंद ॥  
अभी बहुदाय करे शुभमान  
द्वियागण लय निजाम क  
गई ॥ सुनि लजन गजन  
पनि अंत सुधाम सुछंद  
कछी पटिराई ॥१॥

पुत्राट [म] अकवह । [नहीं]

पुमम् [म] नर, अर्थात् स्त्री

पुमान् [म] पुत्रय नर ।

पुत्र (म) — वस्ती जाके पादि

८ घर ते चला १६ घर ,

भरा, पुत्र, देव, नगर,

पुरा, गाँव, गहर पाय,

मरीर, गुम्बज

परपरिचारक (म) परम्पराते

की परिचायी करनिधाने ।

पुत्राय, पुत्रायनी [म] रा-

जा, राणी, विगेष जाओ

कथा अतुल्यकृत श्रीमा

गदत ॥ विदित वि रा

जा पुत्राय के व मन्त्रा ,

अव दानो पुत्रायनी प्रह

ति मन्त्रा अत एक पुत्र

मन्त्रकृत पुत्र देव मी

प्राय को नाना प्रकार के

कोटा करि पद्यात निह

मय, वारी श्री नारद क

मीनों को छवि अपूर्व

मन्त्रा-लक्ष्मी मन्त्रा पद्मिनी

दशा विमलपुत्र पद्मिनी व

व । पानी मन्त्रा पुत्रय मन्त्र

मन्त्रा पाके पुत्रय की व

मन्त्रा, पाके पुत्रयनी मा-

या मन्त्रा देखि के मन्त्र

के भीतर १० दशो प्रचेता

राजा प्राचीन बर्हिष पुत्रो

की अम्बाद किछी है इति

नारदपुत्रय पायायनी

भागवत ४ स्कन्ध अध्याय  
 पादि २६ पर्यन्त २८ प्र-  
 नाय, ताही को पुरंजय  
 पर पुरंजयनी लभोजीव,  
 माया, संज्ञा, पर महा  
 पुत्रय तत्र संज्ञा को उपमा  
 जोमा की थोरा मायुष  
 पयोध्याकाण्ड यो-राम,  
 सत्पण, सीया, वनजात  
 मग गांभ दियो गयो । श्री  
 समय बीच मिय सीमत  
 बैसी । मछा जीव बिच  
 माया लैसी ॥१॥

पुरट. (म) सुवर्ण, स्वर्ण, सोना,  
 सुकट, रचित, कंठन ।

पुरठ. (म) अवनष्ट्री, कर्ण्ड्वी ।  
 पुरा. (म) प्रभाग, भागे ।

पुरा. (स) देशपालक, पीव ।  
 पुरा. (म) इन्द्र, स्वर्गपति ।

पुरा. (म) मत्त आवादि  
 किया ।

पुरा. (म) सामने, पागे ।  
 पुरा. (स) पाद, दात,

फट ।

पुरा. (स) सामने, पाव की  
 पोर ।

पुरा. (म) पूर्वकाल, बड़ा गांव ।  
 पुरा. पागे, पड़ले, तुरंत ।

पुरा. (म) पड़ले, जन्म के  
 कटौत, पड़ले किया गया ।

पुरा. पुराण. (स. द. ग्रन्थविशेष  
 बहु काव्यक, पुराणा, श्री

जगदाया बतार, दी. ॥  
 जैनी मत की वृद्धि दित,

श्रीश्रीश्री प्रबोध ॥ १ ॥ श्री  
 हरिलाल कहत सब, जग-

दाय है, बोध ॥ १ ॥ सुंदर  
 तिलिषा ॥ जग-देत पव-

तार, हरि पाप कीनी ॥  
 जग मन्द, जग-जंतु प्रभु कंठ

कीनी ॥ दयदर्शन दोष  
 सब ताप नामे ॥ रतिलेख

कलकंद चलोस भाषे ॥ १ ॥  
 टी. ॥ यत्तु निर्गमः संसार

दित, प्रगट, किये ॥ गवान ।  
 व्याकृदेव तासी कियो,

पछादम पोरान ॥ १ ॥  
 श्री. ॥ दयदर्शन है



इन्द्रवाचक. मनुष्य. पुर-  
 या. गर्द, [मोघ. पाकम. ]  
 पुष्पाद्य. (स) धर्म. पर्व. काम,  
 पुष्पा. (म) तिलपुष्पी,  
 पुष्पपोतम. (न) नगोत्तम, जा  
 रायद. नरयेष्ट, इन्द्र.  
 पुष्पल. (म) इन्द्र. स्वर्गपति ।  
 पुरा. (स) देववाचक ।  
 पुरोडास. [म] देव भ. ग. जा. को  
 इन्द्र कहते हैं. यज्ञ के  
 निमित्त थी. विपत्ति मोचि  
 को मनु. हि सुनावा. पुरो  
 काम कह रामभ यावा ।  
 यथात् पुरोडास होम करने  
 की खीर को देवताओं  
 का भाग है उसे गढ़वा  
 खाया जाइता है ।  
 पुरोधस. पुरोधा. [म] प्रवीर  
 लम, पुराहित ।  
 पुर. पुनीत. [म] मेतु  
 मांकी. बाध, तट ।  
 पुनह. पुनखावलि. [म] रीनां-  
 वित, पानन्दरूप, इयमान्  
 रीनां ।

पुनक्ति, (म) पानन्दम रीमाच  
 म्ठे हैं जिमके, रीमांचित,  
 रचित, पानन्तित ।  
 पुनमृत्यु. पुन्यप्ति. [म] मृति.  
 विमेष, रावदवितामह ।  
 पुनित. पानन्ती में बाजूका टापू,  
 उपकंठ नाम । की. । कुल  
 पुनित उपकंठतट. निकट  
 व स पथ्याम नीर तोर  
 वलिजाड' वनि, ए पाप  
 विद्य पाम । ॥  
 पुनिन्दा. [म] य) नदीभेद,  
 म. टगी, गाठ, चंढान ।  
 पुष्कर. [म] कमल, नल, समुद्र.  
 पाकाम, गयन्द, तीर्थ,  
 पावहर. कमलदूत, गोवि  
 न्द, पुष्कर मन्द—दीडा  
 पुष्कर नल पुष्कर गंग  
 पुष्कर मुंड गयंद । पुष्  
 तारय पाव हर. पुष्  
 नाम गोविन्द ॥ ॥  
 पुष्करमूल. (म) पुष्करम  
 पुष्करिणी. सानलागद, म



ਪ੍ਰਸ਼ਨ : ਸੰ. ਪੰਜਾਬ ਜੀਵ, ਮਰ.  
ਜਵਾਬ :

१५०६ श्री भीमराव ।

ਪ੍ਰੋ. (ਸ) ਬਾਬੀਦਿਲ ਨਿਬਰ  
ਮੁਘੇ ਨਹੀਂ ਆਨਾ ਹੈ, ਸਭਮ  
ਘੋਲ, ਮੁਘਾ ।

११५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पुस्तक ( १ ) व' कर्ण, पुनःप्राप्तो  
ग' व' ( २ ) पुनःप्राप्तो ।

ପ୍ରଥମ ଶ୍ରୀ ମହାପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ,  
ସାବିତ୍ରୀପୁର ।

पञ्चविंश [अ] पागा, लीका ।

पुष्पिणी (म. मन्त्रालय) मंत्रालय,  
पुष्पिणी (म. मन्त्रालय) मंत्रालय ।

पुस्तक-सं. पुस्तक, निर्देश  
अ.सं. पृ. १

एकतः (४) विज्ञः न भवति ।

ପ୍ରଶ୍ନ (ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାଦାନ)

ପୁରସ୍କାର ( ୩ ) ଶ୍ରୀମତୀ, ବିଜୟନ,  
ବିଜୟନ, ମିତ୍ର, ବିଜୟନ, ପାଣି  
ବିଜୟନ ।

કુલિનો ( ૪ ) ખવતો, ધૂણિ,  
અમીત :

(अ) विद्युत् १

(५) निम्नलिखित :-

प्रश्नका. (अ) हिंगुवर्षः ।

कृतज्ञः- (म) मगरैवा ।

प्रयुक्तानि. [५] - पक्षी  
संश्लेषात् ।

पुष्पगान, [सं] राजा विदेहः

પ્રયત્નશીલ (સ) મજાજી ।

પ્રથમ (અ) મીઠું બચાવ ।

पुण्यशिव ( ४ ) श्रीमदश्वेत ।

ਦਫਤਰੀ : (੧) ਦੁਆ ਮੈਂਬਰ ।

पुष्प. (अ) द्विगुण्यः । (पञ्चमः) ।

पुष्पला- (ग) मसुरेक । विष्णु-

पुण्यः ( ४ ) खाली, दवाकरी,

समवेत, धर्म, नवीनः

ପ୍ରକାଶନ- (କ) ଡିଡ଼ବଲ ।

पृष्ठ- ( अ ) पीठोत्तरा , वि० ॥

श्रीमद्, वसुदेव ; 'वसुदेव' ।

ଶିକ୍ଷା । (ପୃଷ୍ଠା ୧୫)

पृष्ठ- ( अं ) सुविदुः अन्तः १०

पेयूष. (क) पेयूष, ४५ ।

पिंजरापट्ट- (अ) केरिंदीकोडा ।

वेनिङ्गि (५) स्थान । [३५]

ਦਿਵਿਸ਼ੁ- (ਕ) ਤੇਜਸੀ ਤੇ ਗੋਪ,

१६ (ख) चीने के दोस्त नथ ।

काले की वस्तु 'दृश्य' ।

पेगलत. (म) भूंगी, कोट ।

पेय. (स) देखन, कोतक,

तमाशा, प्रेषण, देखना ।

पेटकीयाग, मु. ना बाप

का प्यार, नजान, पीनाट

पेटकीयाग बुझाना, मु.

कुछ खाना भूखे को कुछ

खिलाना ।

पेटकी बातें मु. मन की बातें,

गुप्तबातें, छिपी बातें ।

पेटगड़गड़ाना, मु. पेट गड़-

बहाना, .. पेटझोलना,

पेटरड़बड़ाना ।

पेटगिराना, मु. गर्भगिराना,

एधूरा गिराना, स्त्री के

पेट में बच्चे बच्चे का

गिराना ।

पेटनिरना, मु. गर्भ गिरना,

गर्भगिरना, स्त्री के पेट

में बच्चे बच्चे का गिरना

एधूरा लाना ।

पेटबधना, पेटघटना, मु.

पेट खाना, बहुतखाहा

फिरना, बहुत दस्त होना,

दस्त की बीमारी होना ।

पेटजलना, मु. बहुत भूख

होना ।

पेटदिखाना, मु. पयनी गरीबी

पौर भूख को छताना ।

पेटपालना, मु. पयना

निर्वाह करना, गुजराना

करना, खार्गीराना ।

पेटपीठ एक हाथ, मु. बहुत

दुबला होना ।

पेटपीडना, मु. स्त्री का सव

में पिडका बाधना ।

पेटपोना, मु. खाऊ, पेट,

पेटाई, पेटपालना ।

पेटफूलना, मु. बहुत जंमना,

जंजीबे मारे पीटना, गर्भ

रहना ।

पेटबढ़ाना, मु. बहुत खाना,

दूसरे के दिखी, घर हाथ

बढाना ।

पेटबांधना, मु. भूख से कम

खाना । [ खया है ।

पेटभर, मु. स्त्री का, भरपेट,

पेठभरना, मु० खाता, खातु

करना, पधाना, ह्या होना ।

पेठभरना, मु० खातवात

करना, खापवात करना ।

पेठमेंपेठना, मु० दूसरे का

मेहलेना, खुशामदे को

बातेंकरने मिलवम जाना ।

पेठमेंलेना, मु० सहना,

संतोषरहना ।

पेठरहना, मु० पेठ में होना,

गमिर्ची होना, गमै रहना ।

पेठनगलना, मु० भूखी मरना,

बहुत भूखाहोना ।

पेठनगरहना, मु० बहुत भूखा

होना ।

पेठवाकी, पेठमें, मु० गमिर्ची,

गमैवती ।

पेठवेहोना, मु० गमिर्ची होना,

पेठरहना ।

पेठना करना, मु० खाना लेना ।

पेठकरना, पधाना करना,

पेठना, मु० पेठवना,

बहुतकाड़ाफिरना,

बहुत दस्तहोना, दस्त

की बीमारी होना ।

पेठ का दुख देना, मु० भूखी

मरना ।

पेठ का पानी न दिलना मु०

यह मुहावरा नख खद

होना जाता है बिना

घोडा ऐसी बात बने बि

मगार, दिलेहले नहीं

घोर न किसी तरह का

दुख पावे ।

पेठरहं बहाना, मु० हँस को

बहाना होना ।

पेठ (द) पेठ, पेठवी, प्रतिष्ठा,

प्रथ, वंश, वृत्त ।

पेठार (ग) पेठना । [हलिया

पेना । (द) तीव्र, खींच, बा

पेठार (व) पेठ गति, पहुँच,

प्रवेग, पेठाव, पेठना ।

पेठकरना- मु० पचकरना,

होड़करना, प्रतिष्ठा

करना, बचनपरमा

होना ।

पेठा नडाना- मु० बहुत धन

करना, अंधाधुन्य खर्च  
करना, दूसरे का धन  
चुरालेना या ठगलेना।  
पैसाखाना. मु० पैसा सहागा,  
बहुत खर्च करना, मज-  
दूरी करके पेटभरना.  
रिश्वतलेना, हथार  
जाना, विज्ञासघातकर  
के ले लेना।

पैसा लुबोना. मु० धन गंवाना।  
पैसा हूबना. मु० धन बर्बाद  
होना, रुपया पैसा खोया  
जाना।

पैसेलुगाना. मु० धन खर्च  
करना, धन लुगाना।

पैसेवाना. मु० धनवाना,  
दौलतमंद. एक पैसे का।

पैसों से दरबार बांधना. मु०  
रिश्वत देना, छुसदेना।

पोंगरा. (दा) पुत्र, अंग सख्ता।

पोन. (पेगट, पशुचः पज्ञानी,  
नीच, दुरा, दुःखित।

पोटगल. (म) गरकट।  
पोत. (म. प.) निपट, मिश्र.

नाथ, नौका, लहाज,  
वासर, अनूपवस्तु, हरवा,  
कांथ, वस्तु (क) राना,  
पासन, पोते गद्य—दी०  
पोत कहावे निपटं सिंसु,  
पोतलुवस्तु अनूप। पोत  
नाथ जिमि ललधिमिभि,  
स्याम नाम लुसरूप ॥१॥  
कानगद्य—दीहा। करन  
कहावे रचितगय, करन  
कहत पुनि कान। करन  
नाथ लेहि खेदये, करन  
हार भगवान ॥२॥

पोतक. (म) वासरक, मिश्र, रचा  
पोतकी. (म) पोरसगं।

पोलिका. (स) पोटी।

पोता. (स) पोष, पुत्र के वासरक।

पोषत. (म) पृष्ट करता है,  
पोषण, पोसना, पोषण।

पोसी. (स) पोसी, पोसा, पो-  
सना, पोसना।

पंकरुद. (स) कनेल, कनेज।  
पंगु. (स) कंगड़ा।  
पंचकवलि. (स) पंचपास।

पंचदश ( स ) पट्टरुह ।

पंचसुवद . ( स ) पावसाजल ,

मगाहा पादि ।

पंजर ( स ) पिजरा ।

पंथ ( स ) रस्ता । [ पाथक ।

पोषक . ( स ) पोषणहार , रक्षण ,

पोषण . ( स ) पोषण . भरण ,

रक्षण , पुष्टकरण , पुष्टता ।

पोषे . [ दो पोषे ।

पो [ स . ङ ] मूल पदार्थ ,

लक्षणार्थ पासे में का पना

पोषण . [ स ] किशोरपदव्या ।

पोष्य [ स ] केन्द्रक ।

पोष्यक [ स ] पोषणार्थ ।

पोढ़ा , केतारी ।

पोषिकम् . [ स ] पोषक ।

पोष . [ स ] पोषा वेडा का वेडा ।

पोषा [ स ] पोषणहार , पोषा ,

पोषणकारिता , पोषार्थ वे दो

चार मीट वा नाम मुनिये

गुंता नाम—दो . १ काक-

चिंचिका ज्ञानुषा , गुंताकरत

प्रनाम . मुचट स्वाग कवि

धाम को , सेत नाम चमि ।

रासहार । इमिली नाम दो .

एहा चिंचा तितंडी , चासि-

का चस्त्रोय । मृगपारव

मनी किते , पाव पदापक

भीय ३१३ कजा नाम-

छोरठा ३ एही . करण

करण , मलमास . विष

विष्व तुन । कर्तुं देव

कवि पुन , रति रंभा

मदमीचनी ३ ३ कतकी

नाम । दो . नाक दाम कदि

विनदृसा , देतकि पकत

पाप । लथ पागम पाद

बलि , पेंद्री चम न समार ।

पोर ( सङ ) पुर , भूमि , जल ,

हार । व्याप ।

पोषाधिक [ स ] पोषण वसा

पोष्या [ स ] पोषणवार , हा

पाक ।

पोरी . [ स ] हार पोर हवरी .

पीरय . [ स ] पृथपत्य , परा ,

वच ।

पीचंमासी . [ स ] पूर्णिमा

पीकर . [ स ] पुनकर मूय ।

पीठ. [स] नाग विशेष, पूत ।

प्रणट-[स] स्पट, माफ, दादिर ।

प्रकरण. [२] भूमिका, पाषा-  
य, विभाग, संयन्त्र, प्रमाण ।

प्रकर्ष (स) ग्रह, चतस्रगा.  
प्रधान, उत्कर्ष, एहार्थः ।

प्रकार (म) रीति भेद, मादृश,  
होम, तरङ्ग, तीर ।

पञ्चमः (म) चातप, विजय-  
युक्त, वास्तव, दीप्ति ।

प्रकाशक- ( स ) प्रकाशकरैदा.  
प्रकाशकरैदाता :

प्रकाशित- (म) सजागर, प्रमिष्ट ।

प्रमाण (क) प्रमाणे योग्य,  
प्रमाणे योग्य।

पूजति- ( स ) वसति, गाया,  
स्वभाष, अगत् वा वषा  
दागकारण, स्वभाष. धातु.  
भंझार, भंझार ।

पृष्ठ. (२) पृष्ठान्त, उत्तर.  
मुद्रा, उत्तर, उत्तर, उत्तर

काङ् प्रकाश न इष्टे, तत्त्व  
पैतृश पभान। [पदकाग]

ପ୍ରଶ୍ନ ( ୫ ) ସକଳ, ପାରମ୍ପ

पुस्तिका- (स) पुस्तक, स्वस्त्यग ।

प्रलिट- (स) दुःष, क्षेप, वष्ट ।

प्रखेदः ( स ) पमेता, घान,  
काम संज्ञा ।

पञ्चात- (५) पृतिष्ठित, पृष्ठित,  
विहित, विख्यात, कीर्ति-  
मान् । [ यश ।

प्राज्ञाति- (म) कीर्तिं, पृथग्मा,

पूगल्भ- (स) उत्तम, सामर्थी,  
निहत्, मान्य ने विनयी,

ਠੀਠ, ਫੁਫ, ਬਲਕਾਮੀ,  
ਲਖਮੀ, ਬਿਨਾ ਬਧ ਲੀ

सब जाना जाए । [गिरा ।

ग्रंथः (मै. दुर्घट, पल्लुगूर, तीग)

पुवार. [म] विस्तार, पृथरित,

रोति, लसकार, प्रकाश,  
शोषणा, क्षीण, फैलाव,

ਬਾਗ, ਰਾਜ, ਦਫ਼ਤਰ, ਵਿਭਾਗ

गवारी ( प ) सल्लिकारि के,  
सल्लिकार के ।

मन्त्र- (म) अधिष्ठाता ।

प्रचेता- (ग) वरुणदेवता ।

पञ्चम. (५) सोऽखिलकी

महस- (५) गुप्त, लक्ष्मी ।

प्रजा. (म) मन्त्रालय, राज्य का  
कीर्ण, अर्थात् तत्ता जो  
अस के अधिकार में रहे  
रख्यत ।

प्रजापति (म) राजा, मन्त्रा-  
पिता, ईश्वर । [ २२१ ]

प्रजारी (म) लकाई, भण्डक  
प्रजापति (म) लकापति ।

प्रजापति (म) प्रजा का भी-  
प्रजापति (म) प्रजा का भी-

प्रजंत- [ २२ ] प्रजंत, तत्ता, जा ।  
प्रजंत (म) राजा, मन्त्रा, पिता,  
दत्त प्रजापति—

२२०, अनेककाल दुरिच्छा  
प्रजापति । दत्त प्रजंत भये  
नेहि काका । अर्थात् दत्त  
प्रजंत दत्त प्रजापति ।

प्रजेंटप्रजापति (म) दत्त की  
पुत्री ।

प्रजापतिनामक (म) दिक्-  
पुत्री के नामक ।

प्रज (म) प्रजोक्त, विद्वत्, विद्वान्,  
पुत्रपुत्र, पुत्रपुत्र ।

प्रज (म) प्रजोक्त, विद्वत्, विद्वान्,  
पुत्रपुत्र, पुत्रपुत्र ।

प्रज, प्रज । [ २२२ ]

प्रज्यसित- (म) प्रज्यसितान्,

प्रज- (म) प्रजोक्त, विद्वान्, विद्वान्,  
पुत्र, पुत्र, पुत्र, पुत्र ।

प्रज्य- (म) पुत्र, विद्वान्, विद्वान्,  
प्रज्यपति, विद्वान्, विद्वान्,  
मन्त्र ।

प्रज्यपति- (म) प्रज्यपति ।

प्रजति (म) प्रजति, प्रजति,  
दत्तपति ।

प्रजव (म) प्रजव, प्रजव,  
प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,

प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,  
प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,

प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,  
प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,

प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,  
प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,

प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,  
प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,

प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,  
प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,

प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,  
प्रजव प्रजव, प्रजव प्रजव,

प्रविधानः (स) मनोयोग, उद्योग ।

प्रविषातः (स) दण्डवत्, प्रणाम ।

प्रयोः (स) नगपक्षा, चटसः,  
निर्धारित ।

प्रतप्तः (स) प्राप्ता, प्रतर-  
हामी, तुरीय पक्षका का  
देवता ।

प्रतापनीः (स) गन्धमन्धारनी ।

प्रतापः (स) महिमा, लया,  
ऐश्वर्य, प्रभाव, तेज,  
इकधास ।

प्रतापरविः (स) प्रतापभानु,  
भानुप्रताप, सत्यहेतु नाम  
राजा के पुत्र ।

प्रतापदिनेमाः (स) भानुप्रताप  
बी० । नाम सुप्रकार प्रताप  
दिनेसा । सत्यहेतु तब  
पिता नरेसा । प्रतापभानु  
तुम्हारा नाम है ।

प्रतापसमूहः (स) तेज का  
समूह ।

प्रतापीः (स) प्रतापवान्, तेजस्वी ।

प्रतारकः (स) ठग, बखर,  
धूर्त ।

प्रतारणः (स) ठगारं, बखना ।

प्रतारितः (स) ठगाया, बखित ।

प्रतिः (स) हेतु, तात्पर्य, समुच्च,  
वदथा, एकएक, सब,  
समझा, विरुद्ध, पास ।

प्रतिकार (स) वैर का बदला  
प्रतीकार } अर्थात् भिन्न

ने अपने साथ लैसा अप-  
कार किया हो उस के  
साथ उसी के तुल्य प्रतिकार  
करना ।

प्रतिउपकार (स) प्रत्युपकार,  
उपकार का बदला ।

प्रतिकूलः [स] विघ्न, वैरत्न,  
विरुद्ध, विमुख, उल्टा,  
विपरित, खिलाफ, जैसे  
सगुन पुरुष के बाग भाग  
में प्रसूत होय है ।

प्रतिविंबः प्रतिहार्त्तः (स) प्रति  
छाया, परिहार्त्त ।

प्रतिपदः (स) दानपद, पादान ।

प्रतिघातः (स) मार के बदले  
मार । [ ध्यान ।

प्रतिचिन्तनः (स) पुनः पुनः



प्रतिगम (म) मपेट चकवन ।

प्रतिग्रा (स) गन्ध, वनम, की

कार, गपद्य गिरयय,

चकद्व दूकसार ।

प्रतिपत् प्रतिपद [म] परि-

वातिधि, कृष्टि, बोध,

जात । [ इवेत दिन ।

प्रतिदिनः (म) दिन ३ प्रति ।

प्रतद्व (म) विपद

प्रतिध्वनि (म) प्रतिनाद मूल

गन्ध को अक्षरकार लोटो

द्वर्तु यावान ।

प्रतिनिधि स प्रतिपद सद्गुण,

कामिन, कृपाम, मुखाभ ।

प्रतिपक्ष (म) गुरु, बेरी, रिपु ।

प्रतिपक्षी (म) प्रतिपक्ष,

प्रतिपक्षी गन्ध ।

प्रतिपाद्य (म) सत्य, गुणावाह

धीय, जातिव्यव, वाच्य,

वर्तनयोग्य ।

प्रतिपद प्रतिपादन, (म)

विवाद, अगद्व, विरोधो ।

प्रतिपादी (म) विवर्ती, विवादी

प्रत्यर्थी ।

प्रतिपक्ष (म) परिपक्षी, गाप,

प्रतिपक्ष, छाया, चकद्व ।

प्रतिविम्ब (म) चारसी, दृश्य ।

प्रतिमट (म) बराबर का बीर,

समान बीर । [ ज्योति ।

प्रतिभा (म) समझ, 'दुर्ग',

प्रतिभू (म) कामिनसार,

समीति ।

प्रतिभा (म) मूर्ति, 'द्वि',

पुनश्च, छाया । [ छाया ।

प्रतिभूति (म) प्रतिबंध, परि

प्रतिभासक (म) प्रतिपाद्य, पद ।

प्रतिविमल (म) पतंग ।

प्रतिविष्णुच (म) मृगकृष्णकृष्ण

प्रतिष्ठित (म) प्रतिष्ठापुत्र,

वज्रतवाच, वामन ।

प्रतिपेध (म) निपेध, वटव,

दोष । [ मट ।

प्रतिपत् [म] निराग, पीठ,

पुतिहार । [ म ] चारपावर्ण,

जेवकृषाम ।

प्रतीक [म] चकद्व, पुतिवर्ण,

विचोम, टुवदा, मकुव,

चट्टा ।

पुतिहारः [स] वृद्धा, उपमन  
उपाय ।

पुतीची (म) पदिनदिमा ।

पुतीघा [स] उपेक्षा ।

पुतीति-प्रतिग [स] विग्राम, पुनः  
ज्ञान, स्थाति, इष्ट, सादर ।

पुतीर, [म] तट, विनारा ।

पुतुदा [स] ठोड़ के तोड़कर  
फल आदि के खाने का  
पक्षी ।

पुतुवरी [स] स्नातविधिरी ।  
बड़ा तागा लड़ी ।

पुतीत-हरना, मु० परिचा  
करना, भरीसाकरना ।

पुतुह (म) इन्द्रि, अब अब  
पुतिह ।

पुतुमीह [स] वेगा, दल का  
वृद्धा, वृद्ध ।

पुतुह [म] पुतिदिन, सब  
दिन, विग्र ।

पुतुच [स] सकुच, साक्षात,  
पानि, दृष्टिगोचर, दृष्ट,  
प्रकट, जातिर । [पदेम ।

पुत्यादेम, [स] आघा, दैवी-  
पुत्यामा [स] भरीसा, पासरा ।

पुत्यादा [स] समाधि, दीग-  
विधि ।

पुतुति (स) बाजीगर, जबाब ।

पुतुत (म) बितर्क, अनियत,  
संदेह, अवधारण, विनि-  
यम, विकल्प, पद्यान्तर,  
पद्यवा, किंवा ।

पुतुतार [स] उत्तर का उत्तर,  
उत्तरस्वीकार, जबाब का  
जबाब ।

पुतुवहार [स] वृद्धा उप-  
हार, उपहार का मेल ।

पुतुह (स) उपाधि, विग्र  
विहार, पुंश, रामि, कट,  
दी० । कटित कठिन  
समुक्त कठिन, सोधन  
कठिन विवेक । होर पुपा-  
चर न्याय लो, पुनिपु-  
तुह पुनेह । पदार्थ ज्ञान  
कटने में समझने में सोधन  
में कठिन है और जैसे  
पुन से पक्षपाती पक्षर  
दग जाता है वी कदा-

विज येमे हो दन तीना  
विज म निकले ती 'कर  
य गी यनेन पुन' ज मयो  
विज मदे क' म' ३

पञ्चम म' इवम' ३

पञ्चम (म' पादने वा मुख्य  
आच, आच, पुन' न, येन  
५ म' ३

पञ्चम' ३ म' म' ३ ३ ३ ३  
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३  
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

पञ्चम पुन' म' ३ ३ ३ ३  
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

पञ्चम म' ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३  
पञ्चम म' ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३  
मन्त्रकाकार ,

पञ्चम म' ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

पञ्चम (म) निजाममल दन ,  
मन्त्र, आच, पादने वा  
आना, पादने वा, आच  
आच या का देका।

पञ्चम, (म) मुख्य, मुख्य, मुख्य,  
मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र

मध्यम, (म) मन्त्र, विधे,  
आच, निरुद्धा।

मध्यम, (म) मन्त्र, विरोध, मुख्य,  
मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र

मध्यम, मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र

विधे, मन्त्र, विधे

मध्यम, (म) विधे, मन्त्र

मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र

मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र

मन्त्र, मन्त्र, मन्त्र

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पञ्चममन्त्र, (म) पञ्चम

पुष्पकं निरिहसमे कदा  
गया किं वहांसवे दिन  
पानी वरसतां है ।

पुष्पक, [ स ] भारी, चगम,  
बसवान्, सामर्थ्य, मूंगां, ।

प्रवला, [ स ] दापदुहारा ।

पुष्पक, [ स ] विद्रुनसता, नूना,  
पक्षव, मोती । विद्योत ।

पुष्पक [ स ] धारा, नदी की  
पुष्पादिका, [ स ] पतिसार, पेटचली ।

पुष्पिके, [ प ] घुमे, पैठे । [ या ।

पुष्पिष्ट [ स ] निष्पिष्ट, भीतरग-

पुष्पीष्ट [ स ] पण्डित, ज्ञानी,

चतुर । [ सचेत ।

पुष्पक [ स ] जायत, जागता,

पुष्पक [ स ] भोजनधारम-

करना । [ भोजन ।

पुष्पक, [ स ] पारमकर्त्ता,

प्रबोधमोक्षान, मूर्त्त, चगमता,

चपदेग प्रहट, दुहि, जागरण ।

प्रबोधक, [ स ] बोधकर्त्ता, चप-

देमदाता, जमानेवाला ।

प्रभजन[स]पीन पवन, बायु पैरी-

रूप, समीरयुक्त, वंश ।

प्रभजनजाया [ द ] इदुमान,

शो । सठि बहोरिकीन्दे सि

बहु माया । भीत न जाइ

प्रभजन जाया । प्रभजन

चर्यात् शत्रुमंगन लो पवन

का नाम है उनके पुत्र ।

प्रभव, [ स ] उत्पत्ति, जनकारण

उत्पव. पराक्रम । [ समीष्ट ।

प्रभव, [ स ] मनोरथ, कामना,

प्रभा, [ स ] शीमा, प्रकाश,

चमक, टीसि ।

प्रभाज (ठ) प्रभाष, प्रताप ।

प्रभाकर, [ स ] सूर्य, दिवाकर,

दीप्तिकारी, प्रकाशक, प्रग्नि

चन्द्रमा समुद्र ।

प्रभाकोट [ स ] सुगनी, खद्योत ।

प्रभात, [ स ] प्रातःकाल, भोर,

तड़के, किरिय या सुबह ।

प्रभातो, [ स ] रागिनीविशेष ।

प्रभाव [ स ] साहाय्य, प्रताप,

श्रेष्ठ्य, तैल, शक्ति ।

प्रभावती, [ स ] पातालगङ्गा ।

प्रभासे. [ स ] तीक्ष्णान

विशेष ।

प्रभु [ स ] चरामान् पुरुष,

राजा, स्वामी, गुरु, ईश्वर,

रघुनाथ, गनु, समर्थ, पति

पारा धातु, सप्ताथ ।

प्रभुसूत्र [म] सा.मो ये ।

प्रभुति [क] पुकार, इत्यादि

तदाश्च, यादि वनेरह ।

प्रभय [म] येना, दत्त ।

प्रभृ. [म] वृत्तवाप्री,

की, मीहवाह ।

प्रभा [म] चन्द्रमण, यथायंज्ञान,

भ्रमरहितज्ञान ।

प्रभाष [म] निघण्ण का चारण,

मयीदा, माप्ता, मयवापी,

हेतु, प्रमाता, यथायंज्ञान

प्रमाविह [क] पाद्यद्वय,

योग्य, प्रमा, ज्ञान याज्ञ

वृत्ति ।

प्रमाता [म] प्रमाद्वृत्ता ।

प्रमातामव [म०] प्रमाता ।

प्रमातामही [म०] प्रमानो ।

प्रमाद [म०] लृ. भू. वाद

चन्द्रमणता, लम्पटकी

जाना, कर्तव्य ये निघृणि

की. यथायंज्ञान म वृत्ति, ।

प्रमादी [म०] लम्पट, लम्पट

वहेना ।

प्रमद [म०] वृत्तवाप्री ।

प्रभुदित- [म०] वृत्ति, पान-

दित, वृत्त ।

प्रभेय [म०] प्रमावृत्ति,

लम्पटयोग्य । [ योग ]

प्रभेद [म०] वृत्ति मे का

प्रभेद- (म०) लृ. मी. ती. ।

प्रभेचन- [म०] लृ. वृत्ति, ।

वृत्ति ।

प्रभेद [म०] वृत्ति, पान,

लृ. वृत्ति ।

प्रभेदक [म०] साठी पान ।

प्रभेदनी [म०] योगिनी वृ-

त्ति मी. [ वृ. दित ]

प्रभेदति [म०] प्रभेदक

वृत्ति [म०] प्रभेदक

वृत्ति, साठी वृत्ति

प्रभेद- (म०) लृ. वृत्ति

वृत्ति । [ म० ]

प्रभेद (म०) लृ. वृत्ति

प्रभेद- (म०) वृत्ति, वृत्ति

प्रभेदः (म०) प्रमा वृत्ति

वृत्ति । [ वृ. ]

प्रभेदति (म०) प्रमावृत्ति वृ-

प्रभेदति. [ म० ] प्रमावृत्ति

वृत्ति ।



प्रलेख (घ) योगभादिक लेखन,  
सुनसुत, निपसुत, च-  
नसुत, नसुत, नसुत ।

प्रवर्तक (स) पायापत्र, प्रवर्तक  
निर्देशक, प्रवर्तक  
वाला

संस्कृत, ७५ : अथ महः ।

0344 11 4111

ସଂସ୍କୃତ ଶବ୍ଦ ୩ ଶ ଶ୍ରେଣୀର ଶବ୍ଦ ।

संस्कृत-संज्ञा-सूची

बस, मुझे पता चला यही।

ଅବଧୂତ (୫) ନିମ୍ନ, ମଧୁର, କୁମଳ

क. मिश्रार । [ मध्यम ]

收買時 明 1961年 2月10日

प्रवर्ति (म) इच्छा: समिध न

ਸਰਸੰਗ, ਸਰੋਤਾ, ਸਾਜਿ

अ.सं. अ.प्र. प्र.सं.

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 26

॥ १ ॥

अथ मन्त्रः, शुक्लः ।

अथ च (७) कृतिकारनेवाया

प्रत्यक्षः (अः) प्रत्यक्षः (अः)

अथ, कथम् ।

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 26

*(continued)*

बहारि, आषा, गुण कीर्तन,  
तारीफ, सराहना।

प्रमाण (ग) दमन, २४, १०  
नमः ।

प्रगल्भाः अ) चारुली, योरा,  
भजरा, सक्ता, प्रगल्भा योरा,

जेष्ठ, शिव ।  
 मगध (७) अक्षुब्धता, प्रगंध ।

पुष्प (स) पुष्पाव, जिह्वावा,

पृष्ठ (स) चतुर्थः, पृष्ठ ४।

५३। ५। पोत, चगुना, मका,  
मैदा।

पुस्तक : ४ पाठ्य, अनुगत,

पुनः अ. पुनः अ. पुनः अ. पुनः अ.

विमल, सम्यक् ।  
दण्ड्य (स, दण्डित, दानदित)

निमेष, दयान, भंरु,  
कृतानय, लु॥

सुवर्णशतः । यः १ प्रो. ५।४८  
यथादि ।

प्रसवः, ( स ) पुष्पफल वन्धं सं-  
दंष्ट, गर्भं, कक्षावन्ध, फूल  
वहो, उत्पत्ति ।

प्रसवः, ( स ) रट, रोहि, पकर ।

प्रसविन्, ( स ) उत्पद्य करने-  
वाला, उत्पन्न करनेवाला ।

प्रसीर ( स ) संतिर्गौर ।

प्रसन्नः, ( स ) वैरतर, अष्टा,  
निर्गन्ध बुद्धि, छात्रो, नाम  
रादवपुत्र वा ।

प्रसहा ( स ) ठौर से ठौर करने  
वाले पसी गीध वादि ।

प्रसादः, ( स ) देवता का उच्छिष्ट  
हवा, लूठन, प्रसन्नता, अ-  
मुदह, महरवाणी ।

प्रसादनिवा ( स ) शीनीधान ।

प्रसादी, ( स ) देवता का निवे-  
दिताद ।

प्रसाधन सं दीप्तरचना, सुन्दर  
रचना, साधन ।

प्रसारित् ( स ) बहता हुआ ।

प्रसारणी ( स ) प्रसारवाहिनी ।

प्रसिद्ध ( स ) प्रचारित, प्रस-  
विख्यात, भूदिन, सुप्रसिद्ध ।

प्रसिद्धि, ( स ) विख्याति, प्रचारः ।

प्रसृत ( स ) नहि पमाया हुआ ।

प्रसीट ( स ) प्रसवहीट, हवो  
कर, रक्षा करी, प्रसवही ।

प्रसु, ( स ) माता, पत्नी, जननी ।

प्रसुत, ( स ) उत्पद्य, प्रदारीन,  
माता, उत्पद्यहीनिवाणी,  
उत्पत्ति मन्त्राग ।

प्रसूता प्रसूती, ( स ) उत्पद्य वा-  
रिणी, सादमानवारिणी,  
प्रसूतिवा, प्रसरवारिणी,  
उत्पत्ति ।

प्रसूनः ( स ) पुष्प, फल, सुन्दर,  
लक्ष्मी, पुष्प । [ वाता ।

प्रसूयक ( स ) कति करने-  
प्रसूना ( स ) प्रसूय, सुति, क-  
राहना । [ प्रसूय ।

प्रसूय ( स ) प्रसूय, सुति,  
प्रसूय ( स ) प्रसूय, सुति,  
प्रसूय । [ प्रसूय ।

प्रसूय ( स ) प्रसूय, सुति,  
प्रसूय ( स ) प्रसूय, सुति, ।

प्रसूय ( स ) प्रसूय, सुति,  
प्रसूय ( स ) प्रसूय, सुति, ।



पुष्प (म) १६ पल का १ पुष्प  
वो ४ पैसे भर का १ पल।

पुष्पपुष्प (म) मरुपा।

पुष्पात (म) धागा, बिटा, म  
मल, घर में आना।

पुष्पकी (म) मायिका।

पुष्पित (म) मला दूधा, मला  
दूधा।

पुष्पित (म) केशों में मल  
पुष्पित म पल में पानी  
का भरना। १ दूधा।

पुष्पित, (म) पीटा दूधा, मलाया  
पुष्पितमुरजा (वि० पुष्पात वजन  
के मुद्रा निम म)।

पुष्पित (म) पतियेन हवे।

पुष्पित (म) पुष्प, दिन का  
धीमा भाग।

पुष्पित (पुष्पात दस्त दाय,  
दायक का पुष्प, दायक  
का मेटा, को दायक का  
कड़वासा मांस में मल-  
द्वय दिया है। मके पयस  
पेसे दूर दायकाला दाय  
दाय। कीट २ कहने के

वि भट्टापुर पैठने में म  
ने पुष्पित ही को म  
या। मांसमय दस्त  
काण्ड में दिया है। दस्त  
मिल पुष्पित दस्त करे।  
पुष्प पलपल। देवि।  
होम रागद कहे, मा।  
कहे पुष्पात। यह ही  
हम भीपाहे पर है।  
पुष्प रागद कर मेटा  
पुष्पित दस्त को ही म  
मेटा ३ दायक दस्त म  
बटि पाहे। पुष्पित दस्त म  
पुष्पित दस्त है। दस्त म  
कहे यह ३ दायक दस्त  
ने पुष्पात कि दस्त में को  
है दस्त म के कि द  
पुष्पात दस्त है। दस्त  
म म कहे कि दस्त  
को पुष्पात को पुष्पात  
पुष्पात दस्त का है। दस्त  
ने कहे म कहे का दस्त  
है पुष्पात ने मरी पुष्पात  
मांस काट कोने।  
यही दस्त को दस्त है।

पुहार (म) मारक, चीट, पा-  
घात, इतिहास का चर्चा-  
मा, मार, मारना, मरना  
चलाना ।

पुहारवर्ती- (स) रीतिनी ।

पुहारी- (म) मारक, घातक ।

प्रहित (म) मीठा, प्या, चनाया  
हुआ जैसे हमानहि तीरा ।

प्रहीलिका- (स) पहेली, टटकूट,  
चीट, ठंडा ।

प्रहाड़- (स) ग्रेट पुच चार  
पुचों में हिरण्यकश्यप के  
पीर जाके हिदागुरु स-  
प्यामर्क, हिधाता, मुक्ता-  
चाय, कुच गुरु देखों के  
पुच दे, पत्तानंद, पाह-  
लाद ।

प्राकाम्य- (म) नामसिद्धि ।

प्राज्ञ- (स) भाषा, देयभाषा,  
नीच, समाधिक, चयोम्य,  
भाषा का विचार, साधा-  
रण अनुप, मनुष्य संज्ञा,  
सदानादावसी ।

प्राकृतकदि- (स) प्रदास पादि,  
पण्डित, बुद्धिमान चतुर ।

प्रागल्भ्य, (म) मन्त्र, घमण्ड ।

प्राची- (म) पूर्व दिशा वाचक,  
पूर्व दिशा-पूर्व, गमरिक ।

प्राज्ञ- (म) ज्ञान के स्वरूप की  
प्राप्ति, सुपोति व्यवस्था का  
देवता ।

प्राचीनी (स) पाठी । [ लड़ ।

प्राचीनूल, (स) पूर्वदिशा की

प्राचीन (स) पुराना ।

प्राट- (स) रपा, भरीकास ।

प्राप्त- (स) वायुविशेष, व्यास,  
जीव, वाच प्रचार का देव में  
रहनेवाला, वायु, इन्द्रिय,  
परात्मन ।

प्रापविष्ट (स) सील, पील ।

प्रापनाव (स) पति, स्त्री,  
मांसिक । [ पकायन ।

प्रापमुख- (स) भागजाना,

प्राची (स) प्राप में बना है ।

जीवधारी, जीव, चंतु,

प्रापवाचा, प्राची नाम ।

दोहा । अनु मारी

१. चेतना, अन्तरी प्राप्ति अंतु ।

२. सृष्टि रची विधि अंतुविध.

कीन्ही कृपा अनंत ॥१२॥

प्राणायासः ( स ) ज्वाभ का  
निरोध, योगाग विमप  
प्राणी के रोक्ने का उपाय,  
पूरक कुंभक वैचल ।

प्राणिन्, ( स ) जीवधारो. जीव,  
प्राणी, चेतन, जीवन्तार ।

प्रातः ( स ) भोर, प्रभात, सवेरा,  
तड़कडा ।

प्रातःक्रियः ( स ) सानसध्या  
यादि, गितनियम ।

प्रातर, ( स ) भोर, प्रातः, प्रभात,  
प्रातःकाल, सुबह ।

प्रातःकृत ( स ) सानसध्या यादि ।  
प्रातः ( स ) सीमा ।

प्राप्, ( स ) पाया हुआ ।  
प्राप्योय, ( स ) पानेयोग्य,

प्राप्ति, ( स ) पाया हुआ ।  
प्राप्ति, ( स ) पाया हुआ ।

प्राप्ति, ( स ) पाया हुआ ।  
प्राप्ति, ( स ) पाया हुआ ।

प्राप्ति, ( स ) पाया हुआ ।  
प्राप्ति, ( स ) पाया हुआ ।

प्राप्ति, ( स ) पाया हुआ ।  
प्राप्ति, ( स ) पाया हुआ ।

प्राप्तवानोरमाश्रमः ( विंशम-  
गम)पकड़ा हुआ गरम  
की माया से ।

प्राप्ति ( स ) लब्ध, प्राप्त, मित्र,  
साम, गोडी, दुहि पाण,  
पाकर, पकड़कर ।

प्राप्तः प्राप्तः, ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्रतिभा, प्रतिभा,  
मिडान्त ।

प्राप्तः प्राप्तः ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

प्राप्ति ( स ) प्राप्त, प्राप्त ।

ननहुं माफतके पूरे । ४०  
 घात पावट, पधातु बर्षा के  
 काले घन बाहर पीर गरद  
 के खेत बाहर के मनाग  
 बाहर । कृतकः है दिन कृत  
 १ मिगिरकृत २ वमन्तकृत  
 ३ दीपकृत ४ बर्षाकृत ५  
 गरदकृत ६ ये मर दो  
 टो महीने की हैं, पन न  
 पीप तो दिन कृत । नाव  
 फाल्गुन मिगिरकृत ।  
 चैत्र वैशाख वमन्त कृत ।  
 चदेठ पधाट दीपकृत ।  
 माघ भादों बर्षाकृत ।  
 माघिन कालिक गरद  
 कृत है । १५ दण्ड मत के  
 लिखते हैं । नैप पीर दूध  
 की संक्रांति ये दोनों पीप  
 कृत है । पीर मिथुन बर्ष  
 की संक्रांति की पावट कृत  
 हरिदेव कृतुमे बादलों  
 के समर हाटार है मरोहे  
 की सिधे छोटा बरने भी  
 दह कृतु बर्षा कृतु बा

मेरु है २ सिंधु पीर कन्या  
 की संक्रांति की बर्षा कृतु  
 हरिदेव कृतु पीर बुधिन  
 की संक्रांति की गरद कृतु  
 हरिदेव ४ घन पीर मरु  
 की संक्रांति की हेमन्त कृतु  
 हरिदेव ५ कुंभ पीर मीन  
 की संक्रांति की वमन्त कृतु  
 हरिदेव १६ ।

मानाख (६) पाघ, विष्ठाख ।  
 प्रायः (म) बहुधा, कालीबगी  
 लुगभग ।

माययित (म) पापनामक  
 कर्म, पापघनाय मात  
 विहित मतादि कर्मों का  
 करना ।

मायतु मायमस्त मायेत (७)  
 श्रेय, विस्तार, बहुत  
 करने, बहुधा, माय, दाह  
 ल, बुधिन, पक्षर ।

मायाक (८) हेय, बट ।

माय्य (सोभाय, सिधा, पार-  
 ध, देव, पदमन्द, दिवसे  
 हकीकत कर्म जिनके समा-

शुभ फलभोगने को यह  
 गरीर बना है, किसमत ।  
 प्रारम्भ ( स ) प्रारम्भ, उपक्रम,  
 प्रथम, शुरु, इतिहास ।  
 प्रायेण ( स ) प्रायेणानुसरनेवासा  
 स्तुति करनेवाला, याचक ।  
 प्रायः ( स ) विनती, चाहन,  
 याचना, मागना, याचना,  
 चर्जकरना ।  
 प्रायित ( स ) वाञ्छित, याचा,  
 मांगा ।  
 प्रायश्च प्रारम्भ ( स ) सफाई,  
 भाष्य, चटुष्ट, निष्ठाहृषा,  
 देव, चटुष्ट भेद, पिछले  
 जन्मों के कर्मजिनके शुभा-  
 शुभ फलभोगने को यह  
 गरीर बना है, किसमत ।  
 प्रायेण ( स ) वाचा, तुमार ।  
 प्रायेण ( स ) प्रायेण  
 पहाड़ चर्चा दिमानय ।  
 प्रायत ( स ) टका, ओढ़नी,  
 घुंघट ।  
 प्रायः ( स ) प्रायः, वरसा चटु ।  
 प्रायः ( स ) प्रायः, परिश्रम, चट ।

प्रायः ( स ) पटारी, भरौचा,  
 राजभवन, गहन, भवन ।  
 प्रायः ( स ) दीर्घ, लम्बा ।  
 प्रिय ( स ) प्रिय, चर्चा  
 दान, प्रिया, प्रिय ।  
 प्रिय ( स ) प्रायः ।  
 प्रियकर ( स ) कदम्बहृष ।  
 प्रियदरी ( स ) प्रियदरी की  
 रंगनी ।  
 प्रियदू ( स ) प्रियगु, १ चाप  
 रंग की कोनी २ ।  
 प्रियतम ( स ) सज्जन, पति, प्रीति,  
 प्रिय, बहुत प्रिय, पति,  
 प्रिय अत्यंत प्रिय ।  
 प्रियत ( स ) राजा उताव  
 पाद के सप्त तालों के पुत्र  
 काकी कथा है ।  
 प्रियमी प्रिया ( प. स ) द्रव्य,  
 प्रियाप्रीति । [ निवाकी ।  
 प्रियवादिन ( स ) प्रियवादी की  
 प्रिया ( स ) प्रियगु, प्रिया,  
 चरनी, स्त्री ।  
 प्रियान्न ( स ) निरवनी ।

प्रीति (स) रस, मोह, -तृप्ति,  
 प्रेम, प्रीति, मुहूर्त, दोस्ती  
 प्रीति या सखा या लोक  
 नाम-रस काव्य। कीन्तु मनो  
 हरि प्रेम प्रीति दोहद  
 सनेह हित । दार पणैपनु  
 राग, त्यागि बैरग देत  
 नति । श्रीहृदय सज्जन  
 तवा संकीर्ण को सब । प्रीति  
 हरि के हेतु नाम निग  
 सही लोक भव । ११ भाव  
 भवन संगार विग्रहविष्टप  
 लग संसृति । देत हमे  
 पद योगयोग हीने कुवजा  
 पति । प्रीति न तप उपदेय  
 पाप हरि धरि उदावत ।  
 श्रीबीस मता हृदनाम  
 यद काव्य कहावत । २ ।  
 श्रीहृद । तो प्रीतिर गुंजन  
 लखी, संवरीक पद पाय ।  
 ताकी बोली गोविदा,  
 यदुपति संसृति मुनाय । १  
 प्रीति (द) निग ।  
 प्रीति (प) प्रीतियुग ।

प्रेत (स) शव, सुरदा, लल्युक्त।  
 प्रेतनदी (प) - बैतरणीनदी ।  
 प्रेतनिवास (स) श्मशान, मसान  
 मुहूरिवाट, मुर्दघटी ।  
 प्रेम (स) प्रीति, सख, पियेर  
 साह । [ मुहूर्त, ।  
 प्रेमन् (स) प्रेम, सख, प्रीति  
 प्रेमभक्ति (स) श्री प्रेम ते  
 पंध होके, प्रीति प्रेम के  
 भय, प्रीति प्रेम में पड़ि-  
 रावे, भोजन प्रीति ते प्रीति  
 खिलावे इत्यादिक, जैसे  
 सेनरी प्रेम विदुर जी को  
 फल ।  
 प्रेमी (स) सखी, कीर्ती, गवाह ।  
 प्रेरक (स) पात्राकरैया, भेजना-  
 दार, पात्राकरनेवाला,  
 प्रेरणकरनेवाला ।  
 प्रेरण (स) भेजना, नियोग,  
 पात्रा, प्रवर्तन, प्रवृत्त  
 करना, पात्रादेना ।  
 प्रेरित प्रेरे (स) भेजाहुवा,  
 पठायाहुवा, पात्रापाडे,

प्राज्ञः कियामया, प्रेक्ष, ।  
भेजना, प्राज्ञापाये, पठाया  
भेजा, भेजाना ।

रहना, जो विदेश में हो,  
विदेश गया हुआ, विदेशी,  
प्रकसाया ।

प्रेष्ट (स) वक्ष्य, प्रत्यक्षप्रिय ।  
प्रेष्ट (स) केवल, प्रियादा,  
दृष्ट ।

प्रीतिमा प्रीतिप्रतिष्ठा, प्रीति  
भर्त्ता (स) प्रीतिप्रतिष्ठा  
भर्त्ता, प्रीतिप्रतिष्ठा विष  
का प्रति प्रेष्ट में हो ।

प्रेष्ट, ( ) कहीं जाने के लिए  
प्राज्ञ, देना, भेजना ।

प्रीतिमा प्रीतिप्रतिष्ठा । प्रीति

प्रीतिप्रतिष्ठा । स प्रीतिप्रतिष्ठा  
मनुभाविनी ॥ प्राज्ञप्रति  
कीर्ति प्रीतिप्रतिष्ठा ॥ तब  
ते भई प्रीतिप्रतिष्ठा प्रीतिप्रतिष्ठा  
की ॥ प्रीतिप्रतिष्ठा प्रीतिप्रतिष्ठा  
परे मने भूता ॥ प्रीतिप्रति  
प्रतीति प्रीतिप्रतिष्ठा ॥ ॥

प्रीतिप्रतिष्ठा । प्रीतिप्रतिष्ठा  
प्रीतिप्रतिष्ठा । प्रीतिप्रतिष्ठा  
प्रीतिप्रतिष्ठा । प्रीतिप्रतिष्ठा  
प्रीतिप्रतिष्ठा । प्रीतिप्रतिष्ठा  
प्रीतिप्रतिष्ठा । प्रीतिप्रतिष्ठा  
प्रीतिप्रतिष्ठा । प्रीतिप्रतिष्ठा  
प्रीतिप्रतिष्ठा । प्रीतिप्रतिष्ठा

प्रीष्ट (स) इन्द्रिष्टि ।  
प्रीष्ट (स) प्रीतिप्रतिष्ठा प्रीतिप्रतिष्ठा  
प्रीष्ट ।

प्रीष्ट (स) प्रीतिप्रतिष्ठा, प्रीतिप्रतिष्ठा,  
प्रीष्ट, प्रीष्ट । प्रीष्ट, प्रीष्ट ।  
प्रीष्ट, प्रीष्ट ।

प्रीष्ट (स) कथित, भवित, प्रीष्ट  
कही, कथामया, कथा ।  
प्रीष्ट (स) प्रीतिप्रतिष्ठा, प्रीष्टता,  
प्रीष्ट । । प्रीष्ट ।

प्रीष्ट (स) प्रीतिप्रतिष्ठा प्रीतिप्रतिष्ठा  
प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट,  
प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट

प्रीष्ट (स) कथित, प्रीष्ट ।  
प्रीष्ट (स) प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट

प्रीष्ट (स) प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट,  
प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट, प्रीष्ट

प्रका. (स) लल, मे घेरनेवाले  
पत्नी ।

प्रका. (स) पहर ।

प्रोहमत्तु (स) शर्फीना ।

प्रोहमत्ती (स) होहवेर ।

प्रका. (स) बागर, बन्दर ।

प्रुत. (स) स्वरविशेष, ह्वाव, दृष्ट ।

प्रुति. (स) सहाजना, कूदना,  
फाँदना ।

प्यास बुझाना, मु० प्यास मिटा-  
ना, कुहपीलेना, पानी  
पीलाना ।

प्यासबानना, मु० पादर कर-  
ना, सपान करना, जेह  
हमभना ।

प्यासबानना, मु० प्यासा होना ।

प्यास भरना, मु० बरुंग प्यास  
होना ।

## फ

फण्डो-फण्डिया (स) रसमैठी ।

फाँदमदि. (स) } हाँव का  
फरिमुता- } भीती ।

फरी. (स) } फरदा ।  
फरिमुता- }

फटिक. (प) बिसौर, स्मटिक,  
सज्जत पाचर ।

फटिकमिसां (प) बह गिर  
जो पहाड़ में टूट के गिरी  
हो, पहाड़ का टूटा हुआ  
पत्थर । [ मन्त्रक ]

फण. फन, (सद) सूर्यकापंखोंका  
फणधर. फणिक. फणो. (स) सूर्य,  
नाग, व्यास, साँप ।

फणिक. फनि. (स, द) साँप, सूर्य ।  
फरीन्द. फलीय (स) शिपनाग,  
बासुकी, सूर्यवान ।

फरगा. (प) पावड़ा, कुम्हाड़ी,  
टांगी ।

फरी. (स) टाल, फलक ।

फल. (स) हथ का दण्ड, बन्नी-  
सिंह, निदा, बर्ष, बर्ष,  
बास, मोल, हली का फल,  
बर्ष का फल, लाग,  
नतीला । [ बरिदा ]

फलमिल. (स) बरंका, डर्रे,  
फलप्रक. (स) बिक्री का डर्रे ।  
फलमिल. (स) बरंका, बर  
के बिक्री की ।



कलहः (स) टाल, सलाट की  
रडो ।

कलहसी (स) पखरोट ।

कलह्युन (स) मांसविशेष,  
कलह्युन ।

कलह्युनी (स) किंचित्, थोड़ा ।

कलहद् (स) कलहायक, कलह-  
दाता । [ कलहहार ।

कलहाता कलहायक (स) क-  
लहपिता (स) पुष्प, फूल ।

कलहैराय (स) जो विषय  
त्याग, वाकी पुनि चाहना  
ही न होना ।

कलहड़ा (स) पाटकी ।

कलहा (स) मीठी, समीप्य ।

कलहायक (स) खिरनी ।

कलहनी (स) प्रियङ्गु ।

कलहद् (स) कलहना का मुन ।

कलही (स) चंदाफल ।

कलहामरता, सु० सुहोमर की क-  
लह बार मंड में लेना,  
भूखे रहना ।

कलहोने पड़ने, मु० दिव में दुख  
पाना, मन में चिंता होना,  
दुख पाना ।

कलहो दिव के कोहने, मु० मन  
की चाह पूरी करना ।

कलहती कहना, मु० सुटकुटा  
करना, सुईसकरना,  
जिंसीके पहरावे की हंसी  
करना ।

कलहपाना, मु० भले-दा बुरे  
काम का पलटा मिलना,  
बदला मिलना । [ कलह ।

कलहफूसारी, मु० नागा प्रहार

कलहफूस, मु० वनस्पति ।

कलहनाकलहना, मु० भागवान  
हीन, सुखी हीन ।

कलहस (स) खेद, कद, पाव ।

कलहित (स) कलह समेत, पक्ष  
सहित ।

कलहो देना, मु० गला दवाना,  
मार डालना, फांसी पर  
चढ़ाना या लटकाना ।

कलहोपहना, मु० फांसी दिवा  
जाना, मारा जाना, लट-  
काया जाना ।

कलहो कलहाना, मु० गलाघोट-  
ना, गलादवाना, मार  
डालना ।

फांग खेदना, मु० पक्षीर चहाना  
 होसी खेदना, गादी  
 बहना ।

फादखाना, मु० भगीरुना,  
 सताना, बहुत कीध करना ।

फिटफिट मु० धिलधिल, लीली ।

फिरलाना, मु० पलाना, बहना  
 करना, दानी होना, ऐंठ-  
 ना, बहलाना, टेढ़ा होना ।

फुंके देना, मु० फागलना  
 देना ।

फुंके फुंके कर पाहरना, मु०  
 बहुत चौकवानो से काम  
 करना दोहरना ।

फुट फुट, मु० धुंधला नवाना,  
 विरोध होना ।

फुट फुट कर रोना, मु० समझ  
 नसे कर रोना, बहुत  
 रोना ।

फुट होना, मु० दिछी को सम-  
 तित नहीं मिलना, एक  
 नहीं न होना ।

फुटरना, मु० फटफट होना,  
 जोड़ा न होना ।

फूललाना, मु० मूजे मलाना, प्रसव  
 होना, पानन्दित होना,  
 मोटा होना ।

फूलभड़ना, मु० मुंदरताई से  
 होना, मोठा होना,  
 दोपक्ष ने लले हुए तेल के  
 टपकी का मिलना ।

फूलपड़ना, मु० फाग लगाना,  
 ललवाना ।

फूल बैठना, मु० खूब होना, प्र-  
 सव होना, वर्धित होना,  
 प्रसव होकर बैठना, रंज  
 हो बैठना ।

फूलता फिरना, मु० पल्लव प्र-  
 सव होना, बहुत फूल होना ।

फूलाना करना, मु० लगाना होना,  
 पल्लव पानंदित होना,  
 पानन्द के फूल लगाना ।

फूल में बिजगारी जाटना मु०  
 प्रेमा मलाना मलाना

फेट बाधना, मु० किछी काम कि  
करनेके लिये तैयार होना,  
ठानना, ठहराना, कमर  
बाधना ।

फेर पाना, मु० घुमना, चकर  
खाना, दुख पाना, तब  
की क उठाना ।

फेर देना, मु० उलटानेना,  
पीछा दे देना, पीछा देना ।

फेर पहना, मु० फेर पहना,  
मोम, रङ्गना, नकार पहना,  
दुख होना ।

फेर फार, मु० कल, फेरन, घो-  
षा, दगा, घोषरा घोमरो,  
परस्पर, फेर फेरी ।

फेर फार फेरना, मु० बदल बदल  
फेरना, परिवर्तन करना,  
गलत पट करना, धोखा देना ।

फेर फेरो, मु० धावप म किछी  
जीन, पीछेना पीछे, पीछे  
देना ।

फेर फेर फेरना, मु० फेरना,  
फेर ठगना ।

हाथ फेरना, मु० धार फेरना,  
दुगार, धरना, पीछा फेरना ।

फकी, (स) छल, झूठ, बीसी  
बम्पा फूटना । [ धिदि ।

फकी दय (स) साजा, मासि,  
फले पुण्या (स) गुमा ।

फले बहा (स) पांहा बहा ।

फल्गू (स) पीठा दुधर ।

फापित (स) दावा ।

फहराई (द) फहराई, फहराई ।

फावी, (द) पुष्ट, मजबूत, बालि,

फवी, फवना, सजना ।

सोभना, पी० कुमति दिख

कुभेदता फावी, चमूचवि

वात सूख अनु माही ।

चर्चात सोही भावी, मानी

चम अदिनात की जनाही

हे ।

फाकून (स) माहमेद, नाम  
चर्जत वीहव, मास विघेर,  
फागुन । [ धिदि ।

फुटा (द) सत्य, साध, ठीक,

फुलवाई (प) फूल वा बोग,  
फूलवारी । [ धिदि ।

फुटा (द) साध, सत्य, ठीक,

फिन (द) भाग ।

के. (३) करहीसीस ,

संमुद्र के।

के. (३) केनी मिरनी।

के. (३) केरके, रोठाकट।

व

वंग, वंग (३) वृत्त, वंग, वंग

नाम—दोहा : वंसजनन

संतान, वृत्त, प्रभा प्रत्याय।

गोहय, वर, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

गुरु के पोसा में नहीं

चकत है सो मिरनी

की रंगीये है। गृहों को ब-

नी पितर देवपूजन पर्यात्

नवगादि है। वैयासक कहें

वागमये रीति पतिनी वाग-

मय कदि फेर देती कहना

रहा सो नहीं है सोति

पाठ ममते सय केम वस

वाग हीति है तोति यही

की चारि। वैयासक के

वाद करना।

वंगदूटदीहना, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वंगतामय वृत्त, वृत्त, वृत्त

पाखंडी, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वंगतामय वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त

रूपी धरवा से बचन रुकी  
बाण भी रावण से चलन  
में लेख जानें हैं मनकी  
मानो अपने उचार रुकी  
मंदमो से निकालना जा  
ता है चाप निकालने का  
सावधान नहीं जाना ।

बकी (द) बकुली, चोना फिना  
कम प्रियनाग, कुवाली,  
बकिहि मराहति मान  
मराको । बकुली को हसी  
मान प्रमदा करती है ।

बक (स) बगुलापयो, भक्त, गग  
बकलाव्यव । प । फना का  
बकुला का बक ।

बकरी (द) कुरी, पाजा, यजा  
निगा मळ । दोहा । यजा  
काग माया यजा निदि  
मोहे यजवाम । निगा का  
मिमो कहत कवि, निगा  
हरिद्वीनाम ।

बकरा. (द) बैर, यज मळ ।  
दो० । यजबकरा यज पि  
तामह, यज कविसे पुनि

हैस । यजजीवन भरन  
कहत, यज एके जगदीश  
बकुल (म) मोलसिरीपु  
मोलसिरी, मुरसको, य  
चोंक बकुल कहंततमा  
पाटन यजम पराव रसा  
का । नव पसर कुसुमि  
तह नाता । चंरीक प  
कर गागा । यजोत बकु  
मोमली पाटन गुलाब  
पावरि यजम बट  
रमाल याम चंदरी  
पटली भ्रमर की पति

बका । य बोलता, बकता  
बकता ।

कपनिक, कहनेवाला

बक (म) बाडा, टेका  
बक }

बग (य) कौर, बक, बगुली  
बगदुट । मरपट, पा  
भटपट ।

बगमेल य दो० । पा

बगमेल, बाहू बाहू य  
मभट । कया वि  
बकल, बाहू राबहि



वर्णसिं(स) बलि, वचन ।

वचनचूष, सु० पवित्राभी ।

वचनचोड़ना, सु० वचन तोड़ना ।

वचनमेना, सु० इकरार करना ।

वचनहारना, सु० इकरार करना ।

रसेना, मानसेना ।

वचनतोड़ना, सु० कही हुई

बात से फिर जाना, गर्त

से फिर जाना ।

वचनचूष, सु० कठोरवचन,

असम्भववचन ।

वचनमेना, सु० पक्षाकील

करना, पक्षकरना प्रति-

ष्ठाकरना ।

वचननिभाता या वाकना,

सु० कहे की पूरा करना,

वचनोपासपरवचन करना ।

वचनबंधकरना सु० वचन

झिना, इकरार कराना ।

सु० वचन देना ।

वचनमानना, सु० बातमानना,

वाक्तावाचन करना ।

व० } (व) वृद्ध, वृद्ध, वृद्ध

व० } प्रतिविष्ट, वचन ।

वचन, } (व) दयावाचक,

वचनचूष } वचनचूष दयावान् ।

वचनचोड़ (व) समाजी, वाचक ।

वचन (व) नाम वचनचोड़ना,

चोड़नाचि, चोड़ना नाम

दोहा : निःशंका वृद्ध,

वचन वृद्ध, चोड़ना, वचन ।

वचन । सत्त्ववर्तीय वचननि

वचन, भूव वचन वचन

मेन ३१ ३ गान, वचन व

वचन । वचन । वचन वचन

वचनचोड़, वचनचोड़ वचन

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

वचनचोड़ । वचनचोड़ वचनचोड़

बहुल (म) रंगरस ।  
 बट (म) सागाम्य वृत्त, बहवृत्त,  
 गार, कीड़ी, बट का पेड़ ।  
 बट नाक नाम—दो ।  
 कठिन पटीरसपात बट,  
 कदपि पूतन्य मोध । यह  
 बंसी बट देखु बलि, भव  
 क्षिप्र निरुपध मोध ॥ १ ॥  
 बटाऊ (सो) बटोही, पथिक ।  
 बडाऊगता, सु० दाऊगता ।  
 बड़बोला सु० गेड़ी बघारने  
 वाता ।  
 बड़ाकुवा, सु० नूरा ।  
 बड़पेटा, सु० बहुत खानेवाला ॥  
 बड़ाकरना म० बडागा, चराग  
 को बुझा देना ।  
 बड़ाबोल, सु० घमण्ड की बातें।  
 बड़ेबोल का सिर नीचा, सु०  
 घमण्ड में चराबी होती है ।  
 बड़ा रस्ता पकड़ना, सु० मर  
 जाना ।  
 बड़े पेट वाता होना सु० बंतीपी  
 होना, धीरहोना, घमा-  
 खान होना ।

बहारे करना, बहारे मारना,  
 सु० मराहना, प्रमंसा  
 करना, चुनि करना, घमंड  
 करना, जेड़ी बघारना,  
 होंग मारना, लम्बो कीड़ी  
 कठिना, चपनी मराहना  
 करना ।  
 बटु (म) बिद्यार्थी, तख्तवाही,  
 दानक, माछक छे पुत्र ।  
 बटोही (म) पथिक, चारो ।  
 बड़ (प) हथ विशेष, बरगत,  
 बट, बड़ा, पथिक, मेवाग ।  
 बड़ब (म) चमि, लख भीतर  
 का पाग ।  
 बड़बा (म) चमिनी, घोड़ी ।  
 बड़वानल (म) चमि लख  
 वासी, समुद्र की चमि,  
 बड़बानि, समुद्र की पाग ।  
 बड़सी, बड़िया (प.म) बंसी  
 मीन की, कुलिंग ।  
 बहारे देना, सु० पादरदेना,  
 दज्जत देना ।  
 बड़ी बात नहीं, सु० कुछ कठिन  
 नहीं ।



बटवलेनी, मु० भीठरीना, / बलीनवाला, मु० बराक  
 १० बलिमानी रोना ।

बटवलेनी, मु० भंडाज में बाहर / बलीपेटवा, मु० धाव में बली  
 'बोनी' ।

बटवलेनी (१) अधिक, बड़ा / बलीमीदिवाली, मु० बली  
 २० विभाजित, सुप्यनका

बलिबली (२) बलीबली, बली / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बलिबली मोटाबली गिलाबली ।

बलिबली (३) बलिबली, बली / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बलिबली (३) बलिबली, बली

बली (३) बली बली । / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बलीबली बली बली ।

बली (३) बली बली । / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बली (३) बली बली ।

बली (३) बली बली । / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बली (३) बली बली ।

बली (३) बली बली । / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बली (३) बली बली ।

बली (३) बली बली । / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बली (३) बली बली ।

बली (३) बली बली । / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बली (३) बली बली ।

बली (३) बली बली । / बलीमेवली, (३) बलीबली, बली  
 बली (३) बली बली ।

बदरि-(०) निवे, वैर को हथ,  
 बदरी-(स) करकेषु हथ, वैर  
 का हथ, वैर का पेह.  
 बदरी-नाम-दीहा ।  
 करकेषु, बदरी-डवन,  
 नीलि कोस, नीलीच ।  
 दिने दान, गति, मेम, युत,  
 गवरी, दान, सुगीला ।  
 दानमहाबदरिच ने निष्ठा  
 है । नी । भिन्नदि, विम  
 कर, बदरि, समाना ।  
 पद्यीत, निन को मंगार  
 दाय, निवेरि, समान है ।  
 बदरीवन, (स) प्रयाग ।  
 बदर-पेनिष, बटा, पत्नीकार,  
 पमत्ते । (एव प्राची) ।  
 बदरि-(स) बहन है हम  
 बदरि-(प) बहिनै, भादिकै,  
 बटना, बटना, बह  
 करके । (वाप) ।  
 बदरी-(स) बहन, पतिना  
 बदर-पेनिष, बटा, बदली ।  
 बदर-(स) बह, बाप, रोका  
 बट, निरह, रचित, बंध  
 दया ।

बध-(स) हिंसो, जनन, जलना,  
 जनाय, मारण, मधु, वा  
 बध, नाम-हृद शिषरनी ।  
 मपत्तं पागती पचित  
 मभिवाती, रिपु, परी ।  
 विपत्तं पमिषं दृष्टतपरि  
 पंथी दुख, बरी । ब्रिटं  
 मधु, दस्य, दृष्टत, पर, वैरी  
 दय, मुखं, गिया, खानी  
 ताको कदम, पध, कीर्ती  
 हर, सुखं, निपाती  
 मंदारी जनन दत, वाती  
 बधनती, ब्रिटोना चौ  
 देवा, बापि, सम, भाष्यो  
 पचती, यपुनं, मागानं  
 नगन, नगना, भागन, भुजा ।  
 कृष्णो भोगी, राजा, शिपर  
 निहि, एंटा, सुम, सुभा ।  
 बधिर-(स) व्याधा, बटाल,  
 बटपूर, बहिरिदा ।  
 बधिर-(स) बहीर, जनपूटा,  
 बहिरा, बहारा ।  
 बधुनी-बधु, (स) पत्नी, पध  
 बधु, पत्नी, बधु,  
 विवाहिता स्त्री ।

बधू (स) श्री, पताङ्ग ।

बधूटो (स) नवीनता श्री,

'युवती, छोटी प्रवस्था को  
श्री ।' । योग्य ।

बध्य (स) वननीय, मारने

वन-  
(स) } आगम, जल, पानी.  
(द) }

मोरीटकाक, बाटिका  
समूह मयम बंगा जाको बट

होता है, जंगल, पारण्य

सपवननाम । दीहा । जलती

'भवन' सदाय पुनि, सपवन

कोर आवास । यह उ-

न्दावन नाम तुष, जलु

बलि कहि को धाम ॥ ११

आगम नाम । दीहा ।

आगम द्विविध परम्यवन,

गहन जलु कतिवार ।

'घटवी में दूधसी दई, मो

सम गन्ध कुमार ॥ २३ वन

नाम छंद संकावको । वि-

पिन गहन पारण्य कथ-

वन । कतिवार घटवी दुर्ग

आगम ॥ २४ वन जागु ॥ २५

पति सरि निर्मल । पीठम

कसा छंद पकावलि ॥ २६

वन गन्ध । दीहा । वन

पानी को कहत कहि, वन

वाटिका को जाग । वन

'आगम' ती सुरभी संग, वन

भावत नदसाक ॥ २७ वन

विहार—छंद सुंदर ।

भानुसुता हरि संग किं

वन छीजत कोत वन

कहाई । फल फूलनि फू

फली गगरी मदि का

सता पति सौरा छाई

बलि मुनि परान सुवा

१ करे खन नातिब मो

गिरा सुखदाई । वन

२ वधु चेत गुन भरिये व

सुंदर छन्द सुरीत कहाई ।

वनवध. (द) ठम, लवांर, धूत

समोधान संवध नाम

दीहा । करे हो मो पति

छाँकी, लवटी संव वधा

व्यानि जलप्रो निदगी

हरिहरि चरे ॥ २८ ॥

वनचर. (म) वानरादि वन-  
वासी. वानर, जंगली, वन-  
चर नाम—दोहा । विष  
कूट सेवत प्रभू, वनचर  
व्याध विरात । धानुष  
सुखक प्रवर पुनि, दस्यु  
पुलिंद विरात ॥ १ ॥

वनचरलता. (म) बेगाच, बे  
माच नाम—दो. । कोस  
हस्तिना कपिलता. विष्णु  
त्र्येय सोनाड । कंदु चरति  
ए चंग न, कामन हे  
हस्ति लाउं ॥ १ ॥

वनज. (म) वन भूर, जलभूर,  
कमल चन्द्रमा, जलचर  
गीतादि ।

वनवाहन. (द) नाव ।

वनमाल. वनमाला, (स) फूल  
से बनौमाला पञ्चवस्तु की,  
तलसी, कुन्द, मन्दार फूल  
और पत्ते की माला,  
सरोवर, पाणिनात । ५ ।

वनलवनु. (स, द) कमलवन,  
वनलवन. धी. भारत दुष्ट

परिवाह निजारा । मानहु  
तुहिन वनलवनु मारा ।  
धर्मात् मानो पांसाने कमल  
के वन की माला ।

वनाच. (प) वेप, स्ट्रॉवर, रंवाच ।

वनिच. (स) वनिया, महाजन ।

वनपाना. सु. होसकना, भांग-  
लागना, किछत खुलना ।

वनजागा. सु. होजाना ।

वनपड़ना. सु. सुधरना, भस्मा  
होना, बसा, होसकना,  
सफल होना, सिद्ध होना ।

वनिज. (स) महाजनो, वनि-  
योटी, व्यापार ।

वनिता. (स) स्त्री, नारी, मेहरी ।

वनिच, वपिच. (द. स) वनिया ।

वनी. (स) दुसहिन, नयी मल,  
मजरी का धन ।

वन्दन. वंदन, (स) प्रणाम,  
नमस्कार, देखवत, श्री  
तीन प्रकार के हैं, एक  
सहज भाव निवेदन  
लेखे बाप आदि

वस्तुमी- १॥ चवेनी मी  
कोठ को बडोई हें राजा  
दुयादिच० १ २ ३ तोपरा  
कादमि, निवेग जेगा  
गुद हें किमू दट हें । १ ।  
वस्तुनवार (५) । नव० १ गोर ।  
वस्तुनीय (६) नमस्कार गाय,  
वस्तुभकरले क गाय्य ।  
वस्तुवहे (७) वस्तु हें दि  
॥ १ ॥  
वस्तुगुहे (८) वस्तु हें दम मवा  
वस्तुनी । १ । २ । भाट कवि,  
वस्तुनन । १ । २ । गिरी मयव  
॥ वस्तुन, के० ।  
वस्तु बंध (९) नमस्कार गोव्य ।  
बंधी पदुनारिचामा म०  
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥  
वस्तु (१०) बडोई वस्तुगा  
वस्तु (११) भाई वस्तु, जवन,  
नतेन, लट्ठ, मिच, धाई  
, बांधना, मकधी, मोदा,  
धानी वस्तु निज मयुदित,  
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥  
वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु

१ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥  
बंधुनाग, होंडा, बंधु पगोव  
, वनामि, मो तय, मचोदर  
आत । १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥  
वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु (१०)  
टोपदरिवा, वस्तु, वस्तु वस्तु ।  
बंधु (१०) वस्तु, वस्तु ।  
वस्तु (१०) वस्तु, वस्तु ।  
वस्तु, वस्तु, वस्तु, (१०) वस्तु,  
, वस्तु, वस्तु, वस्तु ।  
वस्तु (१०) वस्तु, वस्तु, वस्तु,  
, वस्तु, वस्तु, वस्तु ।  
वस्तु, (१०) वस्तु, वस्तु ।  
वस्तु (१०) वस्तु, वस्तु, वस्तु,  
, वस्तु, वस्तु, वस्तु ।  
वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु, वस्तु वस्तु  
, वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु ।  
वस्तु वस्तु, वस्तु, वस्तु, वस्तु  
, वस्तु वस्तु, वस्तु, वस्तु ।  
वस्तु वस्तु, वस्तु, वस्तु, वस्तु  
, वस्तु वस्तु, वस्तु, वस्तु ।  
वस्तु वस्तु, वस्तु, वस्तु, वस्तु  
, वस्तु वस्तु, वस्तु, वस्तु ।

वनारहना, सु० ठहरारहना।  
वनारहनीना, सु० भाफ को बंद  
करके गरी में जाने देना।

वनत वनन. (न) बोर, चोख,  
दाटना, रह, बहारि बां-  
टता है. रहदरता है,  
छांटकरन।

वदः वयमः (व) बिहड़म,  
पान, योदन, जातू, पन-  
या, पाहुर्ही, वनित, वैद्य  
वगिया, वयम शब्द —  
दोहा। वयम निहंगम को  
कहत, वयम कहिये पुनि  
काफ। वयस लु जोदन  
जात है; भगने मदम  
गोदान है। काफशब्द —  
श्री० जान चमित बी  
काफ वय, धने राग पुनि  
काफ। काफ व्याम के काफ  
हरि, मोहन मदम गो-  
पाम। २। [ वयन।

वयन. (म, प) राजादिनीय.

वयसः (टी) बैठा।

वयसः (द, स) वरदे वयः।

वयाहः (द) दजाही, मछाननी।

वयार वयारी. (प) पवन, वायु  
हवा।

वये. (द) वीय, वीवा।

वर. (म) जेठ. देवता, प्रेत,  
सुन्दर, दुलहा, संसार,  
कुंकुम, लख्वा, टिकोर,  
पति, तिय, वरदान, वक्त,  
प्राणिप, वरना, जलना,  
जोर, बट हच. कन्या का  
पति, जनात्य, वर शब्द—  
दोहा। वर सुन्दर संसार  
वर, वर लो देवता देता।  
वर कुंकुम वर लख पुनि,  
वर तिय विय हरि खेत॥

वरवमद. (द) पच्छावैश,  
नंदी।

वरवीर. (द) जेठ बीर।

वरबेठा. (द) पति वसी।

वरकर. (स) विस्तार हाथ।

वरन. (म) वर्ण, पचन, जाति  
वर्णन।

वरनी वरणी. (द, म) कही,

माधी, कदिय।



हरिष्ठा- (२) तेजा, समय, बाग।

हरिष्ठा- } (२) बली, तेजस्वी,  
हरिष्ठा- } बलवन्त, प्रतापवान्।

हरिष्ठा- (५) जोरावरी, जबर-  
दस्ती।

हरिष्ठा- } (५) बली, जबर-  
हरिष्ठा- } दस्त, जोरावर।

हरिष्ठा- (म) प्रतिघेष्ठ, प्रति-  
घत्तम्।

हरि- (म) व्याही नारी, दरगा,  
व्याह करना।

वरीशु- (५) हरिष्ठ, वर्ष, वारह  
मास।

वह वह- (२) कटावित्, काट,  
कटन, वल्लि।

वह- (म) बोध विनिय।

वह- } ( स ) कलदेवता,  
वह- } कल, व्याह, हस्त विनिय,

वहन कल- दोहा। वहन

कहत प्रति जोर क, वहन

व्याह बी नाम। वहन

हो तट नन्द जय, हो

पाठ व्याह ॥ १ ॥ वहन

नाम- दोहा ॥ पाठ

व्याह वहन पुनि, हो

प्रचेता नाम। पद्यति

पाभी सहित घट, पवित्र

चासा धाम ॥ २ ॥ पुनः-

दोहा। वहन प्रचेता

पांसुपति, कलवरपति

कलदेव। तेतुपदिय के

पगनतर, निता ठठि घसत

औ सीसा ॥ ३ ॥ वरणा नाम

हो ॥ हुं कुमार वरणा व

वह, तिह गेव हो जेत।

किता हयभामुं कुमारिका,

कल वरणा ममे हित ॥ ४ ॥

वह- वह- पुनि, ( स ) दुप,

कल, वरणा, मुण्ड

वरणा वरी, ( स ) विनी,

विनी, हउा कीट डंसक।

वरी वरणा (स) दोहा राजा

येठ राजा।

वरी (म) वरणा, दुसर का

दोहा, व्याह बी दात, व

वह, वर देहीनी, दुसर

दोहा नाम।

वरी वरणा ( स, द ) दुसर

कावरी, वरणा नामो

हो नाम।



-- को फिरतो है और धनुष ।  
 और दान को फिरतो है ।  
 प्रगट पथ यह कि जीवन  
 की सरणि को अनुभव  
 जो हंसि चिते के हरिनेन  
 है और पुनः यो के अनि  
 को, ज्ञानको को चिते के  
 पथि के हरि लेत है ।  
 होहा । ससग मंजु मुनि  
 मण्डको, मध्य योग पुनः ।  
 ज्ञान, समान, अनु तनु धरे,  
 भक्ति, सच्चिदानन्द । इस  
 होहि ते होनी राम जानको  
 का, पथ प्रगट है ज्ञान स-  
 मान, जो भक्ति रूप ज्ञान-  
 की, सच्चिदानन्द प्रमाथ ।  
 बलकावा (५०) कुदावा, ५५  
 लावा, पेठे की वात ।  
 बलवीर्य, ( स० ) अनुमान,  
 बलरूप, प्रधान बलवर ।  
 बलदाका (६) बल यक गया ।  
 बलदेव (७) बलभद्र, बलराम  
 कथा के बड़े भाई ।  
 मल्लबामुर बध—होहा ।

विपिन-- प्रमद निपात  
 पुनि, कृत कृति बलदेव ।  
 मुमनयि, कर जोरि सुग,  
 विनय करत, दिव, देव ॥  
 बलदेवाय नमः—होहा मा-  
 दूक विनीहीत । जानिंदो  
 भिन्नं प्रसवदमन, मंजुपथ  
 भुवरं । राम वेगव पूर्वतं  
 बल तथा ताताक मोहा-  
 वर । कामपाल बलभुधं  
 सुबलदेवं कीर पारि रसी ।  
 बलद्रव्यत रीतरीमन बंदे  
 रीतिषे मृगशी ॥ ३  
 होहा । नाम बटदग हंड  
 यर, मार्दक सविषं ।  
 मगन मगन जगनं मगन,  
 दमनमन गुरु एत ॥ १॥  
 बलय ( स० ) जदार भाठ ।  
 जध का वाति ।  
 बलराम स० बलभद्र, सुगरी ।  
 बलभय बराक, ( स० ) बगुना ।  
 बकुडा, पथी खेतवर्ष ।  
 बलकाको, बराकी, ( स० ) बगुनी  
 पथिषी ।



वैष्णव, वसन्तजाना, वसन्तजाना ।  
जाना ।

वैष्णव (स) वैष्णव की वसुधा ।

वैष्णव (सु) चपनी बहाई ।

वसन्त (म) प्रिय, सुख ।

वसन्त (स) प्रिय, सुख ।

वसन्त नाम — छन्दधारी ।

वसन्त वसुधा विद्या कांता

इष्टा । प्रिया दयिता

वसन्त की प्रेक्षा । दयिता

वसन्त चतनी प्यासी ।

वसन्त, वसन्त छन्द से

धारी । १ । २

वसन्त (म) वसन्त, वसन्त वसन्त ।

वसन्त (स) सुन्दर वसन्त, वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त ।

वसन्त (स) वसन्त, वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त (स) वसन्त, वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त (स) वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त- (स) पश्चिमी ऋतु ।

वसन्त नाम—दोहा । कु-

सुमाधुर रितुराग मधु,

माधव सुरभि वसन्त ।

नासी ल्यो लीगयत संदा,

याते अधिक ससन्त ॥ १ ॥

पुनः दोहा । मधु माधव

पश्चुराग पुनि, सुरभि-

वसन्त विहार । वन वन

विहार सुदितमन, राधा

नन्द कुमार ॥ १ ॥

वसन्तदुम- (स) पान्चदश ।

वसन्ती- (स) पीतवर्ण, पीला,

पेवही ।

वसन्त फूलना- सु० सरसी के

फूलों का फिलना ।

वांछों में वसन्त फूलना- सु०

तिरमिराना ।

वसन्त के घर की भी खबर है,

सु० यह जानते भी हो

बड़ा होरहा है ।

बहादेना- सु० सजाहना, नाम

करना । [ फिरना ।

बहाफिरना- सु० भटकना

वसति- (स) वसत हो तुम,

तू वसता है ।

वसव- (प) वसवा, वैश्वदेव ।

वसीठ-वसीठी- (स) सुखिया,

दूत, वकील, दरकारा ।

वसु- (स) किरण, पत्नि, पट-

पमर, नीर, धन । वसु

शब्द—दोहा । पटग वसु

है पश्चि वसु, वसु मूरग

वसु नीर । वसु धन, जग

में सी धनी, धन जाके

वन वीर ॥ १ ॥

वसु पटपमर विवरण (स) द्रोण १

माण, २ ध्रुव ३ अर्क कही

सूर्य, ४ अग्नि ५ दीप ६

वसु ७ विभावसु ८ इति

योगानवत, ६ स्कन्ध, ४

पञ्चाय प्रमाण ।

वसुधा-वसुन्धरा-वसुमती- (स) पृ-

थ्वी, भूमि, काष्ठ । काष्ठशब्द—

दो० । काष्ठ काष्ठ या

विसण्ड, काष्ठ पमर पुर

काष्ठ । काष्ठ लु बहुरि

वसुन्धरा । बुद्धिहीन नर

काष्ठ ॥ १ ॥

दशमी- (घ) बनी हुई, या तीज  
 संज्ञा प्यात. एक पुर या  
 पुरी, मगध में पुर को  
 बिगोहा भी कहते हैं ।  
 १ पाग २ मगर या म-  
 गरी, ३ दीहा । दीहादि  
 अष्ट (८) संज्ञा चौदहों हैं,  
 संज्ञा पुर का ज्ञान ।  
 भोदुम ( १६ ) ने पुनि घर  
 गतहि ( १०० ), संख्या  
 याग समाप्त ॥ १४ एक  
 मत ( १०० ) ने घर छहवा  
 ( १०० ) हैं, मगर बिना-  
 रत विष्णु । यह लेखा ने  
 जानिये, समुक्ति गुणावग  
 किम् ॥ २३

वेष्ट (म) कपडा समन ।

४४ ( ५ ) जलमध्यवहना,  
 बहना ।

बहनाय बहनाया, (घ) गति  
 याया पुनि अमपुनि अति,  
 अनटाय देना, अनु अरहे  
 अममनी बिदा ।

बहना (घ) उठाना, ले जाना ।

बहनीका- (घ) अधिक, बहुत ।  
 महिद्वय. ( म ) बाँझसान,  
 दूर देग । [ अचर्मी ।

बहिर्वा ( छ ) धर्मविमुख,  
 बहु ( द ) अधिक, बहुत, अति,  
 अति नाम—दीहा । इह  
 अति से अति भेद अति,  
 अधिकोत्तम अंत । अति  
 सब ते मनि नाहि करुं,  
 गौमत अंत तुरंत । १ ।

बहुकाशीन- } ( म. द ) बहुत  
 बहुकाशीना- } दिन का, बहुत  
 काय का ।

बहुधा ( म ) बहु प्रकार, बहिन  
 बहुत प्रकार से, प्रायः  
 अक्सर, बहुत प्रकार ।

बहुवाक् ( द ) रावण ।

बहुरश्मि, ( द ) किर ।

बहुरि ( द ) किर ।

बहुरमा ( द ) विरमा ।

बहने वाली ॥ हाँसनी, मु-  
 कसतक अवनमाया दश-  
 वई लोक लव अन्ना अमि-  
 करनेना ।

बहुत गइ छोड़ी रही. मु० उमर

पूरी हो चुकी है ।

बहुत ( स, प ) बहुत स्त्री ।

बहुपाद [ स ] प्रमथ नाम,

बट नाम । [ बह प्रकार ।

बहुविध ( स ) अनेक भांति,

बहुमीहि ( म ) अनास दिग्गज,

अनेक धन । [ अपस ।

बहुस्त्री [ स ] अनेक, विविध

बहुला ( स ) इलाची ।

बहुलाम् [ स ] दिग्गज, अधिक ।

बहु [ प ] बहुत, अधिक, स्त्री,

बहु, बहु ।

बहोरी [ द ] बनाव, फिर ।

बहेइ [ म ] बहेड़ा वृक्ष,

बहेरा नाम—दोहा । यह

विभीत कफघातफल,

सर्व भक्त कलिवृक्ष । भूता

हामु बहेर तरु, है लनि-

अधिय सगल ॥ १ ॥ पुनः

नाम—सोरठा । हितुप

मूलावात, यह कलि-

दुम कर्पणल । कही विभी-

तरु पाय, मजगमनी

हित मी गई ॥ १ ॥

बहि [ स ] अग्नि, अगल ।

बह [ स ] गया, जासी ।

बा [ स ] विकल्प, अथवा

प्रधानतर ।

बहुचरण ( स ) तीन और तीन

से अधिक की संख्या के

लिये जमा ।

बाज [ द ] वायु, पवन, बाहरे ।

बांहा [ प ] लुधा, छेदा,

अच्छेद, बल ।

बांग [ क ] मय्य, चाबाज,

बांगा [ धनि, बाच, बाणी,

अपाय । [ फरे वृक्ष ।

बांगा [ प ] सवार, दुट,

बांवां पाव पूवना, मु० पाखंडी

मनुष्य के हस्त और पाखंड

की मानलेना ।

बांमपरचढ़ना, मु० कलही

होना, बदनाम होना ।

बांइ टूटना, मु० कोरे सहायक

न रहना ।

बांइ चढ़ाना, मु० सहारे की

तैयार होना ।

बांइ देना, मु० सहायता देना ।

सहपत्रिका, नं० महागता  
कारना, पत्र कारना, पात्र  
नेता ।

सांस्कृतिक, स्. सहायक, भाषा

॥ इति इति, मू. सहायता अरना ।

ਸਾਂਝੇ ਗੱਦੀ, ਕੀ ਧਾਮ, ਸੁ. ਚੰਦ।  
ਧਰਮ ਧਰਮ ਧਰਮ ਧਰਮ ਧਰਮ।

ਬੁਝੀ ਜਾਨ ਨਹੀਂ ਬਣਦੇ ।

आर्य (अ) का अनुशासनी, भगवत्

महाकवितायाः 'द' लक्षणम् ।

बाबाजी. (स) सगुभी पणिका ।

वसिष्ठः । [सः] मन्त्रः, वाणी,  
मन्त्रः श्रेष्ठः । [भीमः]

संख्या: १८१ अमरावती, अमरावती,

वायुविज्ञान ( अ ) भाग की

नृपति, वाटिका का भूषण

अर्थात् फलन का मूलक.

बन्धन का: गृहमयः ।

बुधवार (५) अक्टोबर, १९५५

अपति, पण्डित, राजा के

ईय, देवदासी ।

वर्धमानः ( न ; लघुवाच्यः )

सामान्य मरिचकी मसाला ( ५ )

2017-18

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

भाष्य-१-(५) व्यापार्यम्, वात का  
वातः ।

वाच ( ४ ) वनज, वापी ।

॥ वस्यति-मः वस्यति, पठितः ।

बुधवार (६) अगस्त, पटना,

• कनकसमर्थी, बलवाही,

सामं ५.५० ।

संख्या ( ४ ) बज्रसूत्र योग ।

बालकः (घ) - पुमान्, बालि,

बाल (क) पक्षी, बालपान वि

वर्ग (४) सहा, सहाई, वाम

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

... (३) ...

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. *Chlorophyll a* (Chl a) is the primary photosynthetic pigment in most plants and algae. It is a green pigment that absorbs light energy in the blue and red regions of the visible spectrum. Chl a is essential for the light-dependent reactions of photosynthesis, where it converts light energy into chemical energy in the form of ATP and NADPH.

[illegible]

समर्थन प्रत्यादि ३३। यत्नः

सहयोगी वृत्तवाङ्मय १४१ पृष्ठ

सहजार्थ, च'दुही, म'...

विषय सूची • १

संज्ञा, संज्ञा ( ५०१ )

41.4

पद, खेस, बर्जित, देगी  
 दध नाम—दीहा । देगी  
 बाजी देहधरि, पायो यदु-  
 पति पाम । तस्य रदन  
 मुग हारि हरि, कीर्त्तौ  
 चसर दिनास । १॥

वाटः (प) नाना, डगर, पय,  
 राह, रास्ता ।

वाटपरे-(प) नट होय, चूल्हा में  
 लाय, बाटगिरै पर्यात्  
 वाटबन्द होय लाय, रीझ-  
 गार लाय ।

वाग छूटना, सु० बेवस होना,  
 बस में न रहना ।

वाहपचनां सु० झिड़ी उतरना,  
 दबजाना, बदावही जा-  
 ना । [ना, बहना ।

वाह में भड़कना, सु० बहबहा  
 वागमोहना, सु० सीतला की  
 टपकाना, घीहे की  
 रोकना, काम से रूटना ।

वाटिका- (प) फूलवारी, चप-  
 ल, सामान्य बगिचा । दाम  
 नाम—दी० । शरी वाटी

वाटिका, बागवनी पा-  
 राम । उपवन सुखद वि-  
 लोकिद्वग, बसे सपन मुनि  
 राम ॥॥ हृदमुक्तहरा ।  
 मुनीयहि लेग मंझीप  
 चणो सुद पाय समीप  
 विनीत प्रनाम । विमोर  
 समै पुनि देखि प्रमोदित  
 सादर साय दियो शुभ  
 घाम । प्रसून बनौ हृद  
 बंधु गये सिय नयन चचारे  
 भये सखि राम । वसू न-  
 गनं यह मुक्तहरा शुभ  
 हृद विनास कछो पभि-  
 राम । २॥ दी० । देखि स-  
 रूप चमूष हवि, लज्ज-  
 सुता हृदसाय । रघुबर दर  
 हित गौरि टिंग, विनय  
 करत भिरनाय । ३॥

वाहपहाना सु० एकछाप  
 बंदूक चसाना ।

वाहभाहना सु० बहुत पोंद-  
 नियों का एक साद बंदूक  
 दागना ।



वाङ्मोक्षन गेह को धार्य तब  
रक्षवारी कीनकरे मु० निच  
पर भरोसा हो जब बड़ी  
पुरासे तब कोई चीज  
महीं बच सकती ।

वाङ्मोक्षनाना मु०, काम पर  
चढ़ाना, तोषाकरण ।

वाङ्मोक्षनाना मु०, कांटी में  
देत को वा बिछो जगह  
को धरना ।

वाङ्मोक्षनाना मु०, तोषाकरण,  
काम पर चढ़ाना ।

वाङ्मो (व) बढनी, बढ्ना,  
तोष, धनुषादि का एक  
बार काटना, हानना ।

वाङ्मो (व) बहितमय, - क्षम,  
हरिपद, पर, तीर मुख, वाच  
रग्या वाचक ५ ।

वाङ्मो (व) व्यापार, लय,  
विजय, तिचारत, छोड़ा,  
गरी । [वाती, वाता ।

वाङ्मो (व) बचन, पर  
वात वात (व) बचन,  
वात वात (व) बचन,

१. वाङ्मोक्ष, कटिवा,

वाच विषय, वाती, बचा  
वाँटे, बचाव । [ भीम ।

वातवात (व) बढ्ना बढा,  
वातव (व) बढाव छेद ।

वातवाताना मु० वातवाताना  
वातवाताना, मु० बोलना, वात  
चीतकरण, बोलना ।

वात वातना, मु० दूरी को  
वात को रद्द करना ।

वात वा बोलना करना, मु०  
कांटी की वात पर बहुत  
बोलना ।

वात की वात, वात } मु० दूर  
की वात में, } ॥ ११ ॥

पक्षभर में, योको को देर में,  
कटिवाट, तुरंत ।

वातवातना, } मु० मतमबकी  
वातवातना, } वातवातना, मु०

ठीकात बोलना, बिभी  
वात की बोलतार बोलना

कर, वातना कि दूरी में  
मत में मत जाय ।

वातवातना मु० बोलना बोलना

धुपरहना, ठहर ठहर का  
बोसना ।

वातबोसना, सु० कुछ कहना  
शुरू करना, वातलेहना ।

वातघोत, सु० दोलना ।

वातटासना, सु० पसल वात  
का उत्तर न देना और  
और दाते करना ।

वातपर वात } सु० लिम  
याद पाती है, } तरफ की  
चर्चा ही उसी तरफ की  
वाते पाप से पाप याद  
पानाती है ।

वात पी जाना, सु० बहुत घबरा  
सहना, रुखी वात सुनना ।

वात फेरना, सु० ठंडा करना,  
वे सीधे दिवारे कीई वात  
बोसना ।

वातफेरना, सु० कहतेर वात  
का मतलब बदल देना ।

वात बढ़ाना, सु० यादकरना  
तकरीरकरना, किसी वात  
की खूब फेरकर कहना  
ता सिधना ।

वात बनाना, सु० मतलब गी-  
ठना, झूठ बहना ।

वातबांधना, सु० झूठीतकी  
करना ।

वातबिगड़ना, सु० काम का  
न होना, भिद खुलना ।

वातबिगाड़ना, सु० मतलब  
करना, बिगाड़करना ।

वातमानना, सु० कहना  
जानना । [ सीना ।

वातरखना, सु० कहना, मान  
वातरहना, सु० इज्जत और  
पावर रहना, प्रतिष्ठा र-  
हना । [ निम्ना करना ।

वात लगाना, सु० बुगशीलाना,  
वातेकरना, सु० इधर उधर  
की चर्चा करना ।

वाते बनाना, सु० कह करना,  
खुशामद करना ।

वातेगारना, सु० झूठी करना  
हीन गारना । [ सहना ।

वाते सुनना, सु० कहनी वात  
वाते सुनना, सु० कहनी वात  
कहना ।

वातो मे चङ्गना मु० हंसी  
पुष्प मे टाङ्गना, ठङ्ग मे  
चङ्गना ।

वातो मे धरसेना, मु० शायक  
करना, पुष्पकरदेना ।

वातो मे कपेटना, मु० वातो मे  
धीखा देना । [ व्याग ।

वातायन- (स) भरीखा, वाता  
वातायु (स) गृह, करिष्य ।

वा त वातो (प) वरी, दीप  
, , की, वरी, वरीना ।

वातुष- वातुष- (द-प) भीड़ाह,  
, , वागल, वारी चङ्गी, भीष्म-

का, चन्द्रपाती ।

वातोधर- (स) धिरको, दूरी ।

वाःसस्य (स) मेवक का दीप  
नहि विचारण, वागल,  
वीसनहार, भीति ।

वाहर- (प) मेघ, घटा ।

वाहरायवि- (स) यकटेव ।  
व्यास पुष्प चङ्गा ।

वाहर- (प) मेघ, घटा ।  
वाहने- (द) वाहल, मेघ ।  
वादि (स) निष्ठा, भीष, पुष्पा,

वाह्या, प्रयोजन, व्यर्थ ।

वादिनी- वादिनी- (स  
विरोधिनी, भीष्मपाने

वकवादकारिणी, भीष्म  
वासी ।

वादी- (स-प) विरोधी, भीष्म  
वाग्लू, विवादी, वरी  
वाता ।

वाधक- (स) दुःखद, वाग्लू ।  
वभायनहार व्याधा, रीष

मेवाका, विष्ट, प्रतिबंधक  
वाधक अधिष्ठा- (द) वाधावर

मेवाला अधिष्ठा ।

वाधा (स) रोक, लेख, दुःख  
भीड़ा, विष्ट ।

वाग वागु (स-प) दम्भ, गति  
वाग्लू, वदीति, वाग्लू,

प्रकृति, वाग्लूवर, वाग्लू,  
रंग, भीष्मा, व्यभाव, वाग्लू

गर, तीर । वाग्लू नाम-  
हृद वंदयत । वर नाराय

यिजीकुष वरी रोषव हृ  
वेम जलव विष्टिद विष्टिद  
रोषव वरव हृ । वरव

॥ अथ वानप्रस्थाय मासक इयु  
जायते ॥ १ ॥ मंथाने मधु  
लंघ्य कृत्वा दायनमप ॥ २ ॥  
पुनः—दीक्षा । हाण  
कदाचि वनितनय, विमिय  
सादि पुनि वान । वान  
कहत कवि रगो को, यो  
हरि पद निर्मान ॥ ३ ॥

वानप्रस्थ (म) मधुवाहय, आ  
यन तीसरा ।

वानप्रस्थायमासक्यो (म) वान-  
पारी को कै दिवाह करना  
पुनि वानप्रस्थ लैई ली  
महिम वन को जाना,  
तपकरना ।

वाना (प) देव, भर्ता, फटना,  
एक हथियार का नाम ।

वानि वानी (प) स्वभाव, पादत ।

वानेत (प) वीणाही जग-  
तेदार, गीतकाहेत, वाना  
केरने वाला, विरदैत ।

वांशव वान्धव (न) नतैत, स-  
न्धन्वी, कुटुम्ब, स्वजन, मित्र,  
परिवार, भाई । [ दीन ।

वापहा (द) वापरी, दलित ।

वापरी (द) वापहा, दीन, क-  
जान । [ वर मानना ।

वापकारा, मु० वाप हं धरा-

वापनेरा, वाप रे वाप, मु०

पचंगा, चौर चौर चौर

उर पादि को जतमाने

वाला मन्द । [ गैर ।

वापनारेका बैर, मु० बड़ा भारी

वाप न मारो पीरही } मु० बड़ा  
देहा तिरन्दाज, } कडा-

गत वहां बोधते हैं जब

किसी के वाप दादे कुछ

योग्य नहीं हो चौर बड़

कुछ बड़कर लिया चाहै

या दिखाया चाहै ।

वापिहा. वापी (द) वापही,

जुमैद ।

वापुरी (द) तुच्छ, छरं रोग

वाला, बपरा । [ माफ ।

वाफ (प) वाप्य, बफारा, धूर्वा,

वाम (म) कुटीर, मित्र, काम

जान, मनोहर, ली, बापा

याम के नाम । दीन वाम

कुटिल को वाम मित्र, वाम

१. काम तम कामः काम  
 २. गतोदर को चङ्क, लोभे  
 सुन्दर काम ३१३ काम के  
 ३. कामः द्यौः । काम भोग  
 अभिलाष पुनि, मन्मथ क.  
 ४. विदे काम ५ काम का  
 ६. कामि मुनि काम, भजिने  
 मग यमिराम ७ ८ ।

कामपंच (५) टेढ़ा ११५५ ।  
 कामपंच (६) टेढ़ पंच, यति  
 विद्वद् मत । १० । तमि  
 नुति पंच कामपंच केही ।  
 बंधन विविध हेतु काम  
 लभही । यथात् वेदपंच  
 को कीर्ति कामपंच यमि  
 पंच मकार मग मकार  
 मकार के कामें ता पंच में  
 यमग के और कनी हेतु  
 दयाय के लभत को कलम  
 के पंच मकार यथा मकि  
 १ मकार २ मग ३ मेटन  
 ४ मुद्रा ५ यम मकार ६  
 मग ७ मृग ८ दृढ़ विमि  
 ९ का कृष्णपण १० मद्र है ।

यामन } (८) माटा, ठिगना,  
 यामन } विष्णु का परिवर्त  
 यामन } चवतार, यामन

यामन । टी० । कुल पंच  
 यामन अष्ट, धारि सक्त  
 दिजेद । १५५ हेतु सपाद  
 यमिनी, समीप यमिनी ।  
 यामन (९) मेकी, पावती, पा-  
 टको, पौ, कटिनी, मनो-  
 चरी । [ यमरता ।  
 यामन (१०) यमर करने, यामन,  
 यामन (११) दरभी, यमरा  
 सीगनचारा ।  
 यामन [१२] यामना यम, यम,  
 मरपी, डाली, मरता ।  
 यामन [१३] यामनीमरिणी,  
 दृष्टता, यमग । [ योपा ।  
 यामन [१४] यामनी, योपा  
 यामन [१५] यमि, यमन ।  
 यामन [१६] याम, याम ।  
 बार [१७] यामि, दिग्, दिग्,  
 समत, पुत, बारमा,  
 रवि, सप्त, देग, देग,  
 बार ।

वारण { १ न } वारण, वरुणा  
वारण { २ क } किसी की सगाई,

गज नाम । छंद मरहटा ।

वारण मातंगल सुंगर

व्यामन दसो दंती व्याला

सुमीतंक्षित हिरद नेदुंभ

गज मतंग सुंदल ३ पदो

हरि सिंधुर दंतावलि करी

धो द्विप नाम नंदद ३

यह नामो चौबीसवसा

उगतिम विदित मरहटा

छंद ३ १ ३ वारण मरु

—छोटा वारण छदिये

वाजिबी, वारण हार म-

गादि । वारण मय धरि

परःछो, वाम दसो कह

छंद ३ २ ३

वारण ( १ ) वारणदोष

कुरिबी, दूरकता,

वारण ।

वारणामा ( २ ) वरुण वरि

जिना, दंदाय रिता ।

वारण वार ( ३ ) नंदकाम,

गोदादि वारण रदा ।

वारण ( ४ ) मरुकापन ।

वारणिते ( ५ ) मरुकापनते ।

वारणमा ( ६ ) वेगमा, पुत-

रिदा ।

वारण ( ७ ) वार, वेर, टफात ।

वारणको ( ८ ) वारुणिको

मिवपुरी ।

वारण ( ९ ) गृधर, गृधर,

वनेजा, वारणवतार—

छोटा । दंती सुंदर बीज

हरि, किट वारा मरुदारी

कोड धृष्टि पोषी सुंदो,

मनुधरि हरिभूवार ।

वारि ( १० ) लम, वारुणिक

की, लट, त्याग, मरुकी

वादि ।

वारि ( ११ ) लमकाय संधी

गोन वादिदि ।

वारुणमा, वृं देवी वरुणा

वारुणवतीमा, वृं वरुण-

मा, विरुणमा, वरुणवती

कीमा, वरुणवती, वरुण-

दा वरुणा ।

वारुण ( १२ ) वारुण, वरुण

वारुण वरुण वरुण वरुण

को इठकरहु मेधवन  
बामा । तो तुम दुख पा  
उद परिनामा ।

वारिपरवतु. ( ग ) कामदेव  
अनन्य, मल्लको का सवार ।

वारिज वारिज. ( घ ) कमला-  
दिश, कमल ।

वारिद. ( ङ ) मित्र, वादक ।

वारिदगाथा. ( च ) गीर्वाणमूढ

वारिदगाद. ( ञ ) मधनाद.

इन्द्रकीर्त, मित्र का मण्ड ।

वारिधर ( ट ) वायक, मित्र ।

वारिध, वारिधि ( द, ध ) अमृत,  
वागर ।

वारि वारी ( ड, ण ) जाति

विमिष टहलू पछिम देग ।

म्याल, प्रभाको अग वयो

पद्मवोपा, कुलवासी, केका

पद्म वापी, जल, वानी,

झाँटी सिद्धावर, वारमा,

अनुर विहारील एक कति

न में लिखा है । अविना—

अनुरविहारी के निजल

वारी वाया वाय माजल

दे पाशु कष्ट उम से दे

इए । गीह कीष्ट फूल से

भीष्टे पछिराह गोती

मग को पातरी हुतास

के पाइए इच्छे से दवा

की भरीयो के बंदि बेदि

एगू-मैल अगाम बकि

चुपतिपति ध्याइए । ग्या

अमुताहने को अतर के

कीष्टे एक एकति विगी

भातिवारी नहीं पाइए ।

वारीस ( व ) अमृत, वागर, वा

रिग ।

वा. वयो } ( ङ ) मदिश, मई  
वा. वयो } पछिम, गंगा, वा.  
वा. वयो } वनी मण्ड—दीहा ।

मग माति अविधे वावनी,

सुग वावनी मास । प

विम दिमि दे वावनी,

अवन अवदि तेदि ठाग ।

वा. ( व ) दाल अवनमा, अवन

कोदि के, वावक, दी

अवन ।

वा. ( व ) दाल अवनमा, अवन

कोदि के, वावक, दी

बाहू (स) लक्ष, गौर, दाहू ।  
 बाहू (स. फ.) देश, बाहूक,  
 मृक, पद्माणी, सूर्य द्वार,  
 बाहू, बाहूक नाम—  
 बंद सुबंद । गिरुनन्दन  
 पीत प्रभा पुष्पकं सुत बा-  
 लक सुतु तनंधय संग्रज ।  
 तनुलं पुनि तात अपत्य  
 तनै पुनि दारक र्भक्त  
 सायक यामन । पुनि  
 बंद पुप उतागः सुबंद  
 विरत नाम पुरान बहा-  
 गत । सुगमं बस है सु  
 बंत दिने सुबंद यं बंद  
 बदीगण गाथा ॥ १ ॥  
 दोहा । बसंत सिरीष  
 विह्वल लव, कुंतल गुटिल  
 सुटार । बहरी लसत  
 लसाट लवु, बंदहि मई  
 द्वार ॥ बंद बस कुवित  
 कुटिल, बाहू विह्वल लव  
 बस पलक गिरुनंदन सुत  
 सं, गिरुनंदन गिर देम ॥ २ ॥  
 पनेबायं न दिखी है ।

दोहा बाहू सिरीष बाहू  
 सिधु, मूक कराये बाहू ।  
 बाहू सोई ऐ लगत ने,  
 बस सुबंद गोपाल ॥ १ ॥  
 बाहूमी (स) दाहू कुशारा ।  
 बाहू (स. प) बाहूमी, लहकी,  
 बहादाय की, ली, बाहू ।  
 बाहू (स) राजाविजय,  
 सुपीव का लोचन, बंद  
 बा पिता, बातर जाति ।  
 बाहूतगय (स) बंद ।  
 बाहूत (स) बंद ।  
 बाहूगोपाल, सु. संधिबासे  
 बाहू बसे ।  
 बाहूबाधी बौद्धी मारना या  
 लहाना, सु. वी लूने निमा-  
 नें ठीक निमान लगाना ।  
 बाहूबासवैरीहीना, सु. हर-  
 एक अपमै पीर पराये  
 मे बैर होना ।  
 बाहू बाहू मल मोती पीरीना,  
 सु. धूर संवारना ।  
 बाहू बसे, सु. संधि बासे ।  
 बाहू बीछा न होना, बाहू



मर्चा न होना, मु० किसी  
तरह का विगाड़ न होना ।

वाचाचांद, मु० नया चांद,  
वाचमोखा, मु० बड़ सड़का  
की छल कपट कुल न

मानता हो,  
वाचिग. (-स. फ) मूछेता,  
घिरहनी, लमोछा ।

वारीग (द) सपुद्गदी० । वाचिउ  
लक्षनिधि नीरनिधि,  
लक्षधि धिंधु वारीस ।  
वाय, तोयनिधि, कंपनिधि,  
सदधि पयोधि नदीस ।  
अर्थात् जलनिधि १ नीर  
निधि २ लक्षधि, ३ धिंधु,

४ वारीस ५ तोयनिधि ६  
कंपनिधि ७ सदधि ८ प  
योधि ९ नदीस नीरयक  
पुछा कि गीत सत्य कर  
वाच किया ।

वानेन्दु वासेन्द (स. द) दूज  
का चान्द ।

वाच (म) इलायची, वाच ।

वाच्य. (स) वाक्यवचन, मङ्गलपत्र ।

वाच (प) बोझ, पवन, चपईय ।

वाचवाधना, मु० पुगामद  
करना ।

वाचवहोना, मु० इलायची ।

वाच के धोड़े पर सवार होना,  
मु० घुमड़ी होना, मँची

करना । [ छीड़ना ]

वाचसुरना, मु० वादना, वच

वाचही. (द) वाचकी, तडाग  
कूप । [ धूँसा ]

वाच्य (स) वाक, वक्ता,

वाच. (द) एक वृत्त, वाच का  
मिद-कागजी १ वाच २

कठवांसी ३ पहरिया वा  
पूवांसा ४ मससूदावादी

५ चहर ६ ।

वास. (स) निवास, वस, गम  
चो० । जहं जहं रातवास

वियासा । तहं तहं करवि  
सर्मम प्रनामा ॥ अर्थात्

वास राति के दो विनाम  
दिनके ठहरिये को ह्याग ।

वासन. (स प) सुगन्ध, निवास,  
माँहा, पाच, बरतन,

खान्दवादि ।

वासुकी. (स) मधुरीकता ।

वासुकी फूलों वास नहीं, परदेमी

वासुकी तेरी वास नहीं,

मु. यह कदावत निवास

होनेपर सोली जाती है ।

वासुकी बड़े न कुत्ता खाए, क-

कुत्ता वासुकी नहीं रहता ।

वासुकी के आलाप, घर के भीत

गायें, ज. अपने सब धरे

रहे पीरदूनों को लाभही ।

वासुकी. (स) इन्द्र, सन्तुर्गति

वासुकी, दोहा—मत्त मत्त-

मत्त मत्त मत्त, संतुर्गति

पुरातः । कोमिक वासुकी

हस्तवा, मधुवा मातकि सुता ।

लिपु पुरंदर वलुधर, वाप-

लुधर रिपु पाह । कोमिक

लह हपानदप, को है इन्द्र

बराह १२१ पुनः लंद भी

देवा । कोमिक मत्तमत्त

मत्तमत्त, सुदमं सुनीपीर

पुरातः करी । मत्तमत्त

होयं गोपीदिगं तुराया

होपीदीमपरी । हपमत

विधाती बलि आराति

इन्द्र चम्पुसगानाद्यपति ।

इय वृद्धत्वर्पावासुदमधवाः

मेववाहनं दिवसपते ११॥

दुयगत-मत्तमत्त रितावत

पति पाहमासनं मत्त-

लता । सुतात पुरंदर. से-

पदमं हरिनाहन लिपु-

गोपीदिगं । भूधरमद-

मोचन मत्तमत्तमोचन-

मत्तमत्त वासुकी वरा ।

वासुकी वरा मत्त वि-

दीना मत्तमत्त पीर-मत्त-

धरा । मीरठा । मत्तम-

मत्तमत्त मत्त, वैवादिग

मत्तमत्तमत्त । दम मत्त

मत्त दिगम, तिरभंगी व-

तिमत्तमत्त । दोहा । गिरि

मत्तमत्त पररिपु वरी, वरा

मत्तमत्त वरा वरा । दिव-

मत्तमत्त पररिपु वरी, नाग

होय कुरातः ११॥ वापुध

ताको वरा है, दुष्ट हप-

मत्तमत्त । वासुकी

यागरावती, नन्दनवन है

शेष ३२ ।

यासर. (स) दिन, दिवस, यासर ।

यासुकी. (स) चर्च, चर्चदो,

कला, विगताकृपा कला-

मन्त्रा, यासा गर भिषते ।

यासुकी नियमें कृत्वा नि-

मितं विष्कम्भेया । इति

कथा वास्तवीक्याम् ।

याह. (स) यात्र, घोडा, याहन ।

याहने [ स ] सागान्य सवारो

रथादिकं, यमचारी, स-

चारी । [ सवारकार ।

याहनी [ स ] येना, दन,

याहित. [ स ] यात्र, याहरी,

याहर मे ।

याहिनी [ स ] याहिनी, येना ।

यो. संख्या भई किरी दोष

याहनी. कमी सवारन निक

निक यमी । यथात् याहनी

चोर यमी दोनों येना का

नाम है घर सुख भेट है ।

याहु. (स) बाहु, भुजा, भुजदंड,

हाथ ।

बाहुज. [ स ] बाहु, बाही ।

बाहुज. [ स ] बाहुतावत,

बाहुज. [ स ] बाहुज. [ स ]

बाहुज. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

हु. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वि. [ स ] बाहुज. बाहुज. बा

वस्त्रादि, ११ प्रकारक दोष,  
 चयमुदी, रिकार, येनुन,  
 काय, चारन । [ रचित ।  
 दिव्यान् [म] प्रकाश, चमक,  
 दिक्कत [स] पराक्रम, रुसा,  
 विद्वान्, पराक्रम, छोर, बच्चा  
 दिव्यान् [स] प्रविष्ट, प्रका-  
 शित, चमकी, दिदिन ।  
 दिग्गत् [स] नाश, त्याग,  
 रहित, छोग, दिग्गत्, वि-  
 शेष नष्ट, विविध भाग ।  
 दिग्गत्विभेद [स] भेद रहित ।  
 दिग्गीना ( २ ) विविधगी ।  
 दिग्गीय ( ५ ) नाश, नष्ट,  
 नामविधे, दिग्गीना, नाम  
 करण ।  
 दिग्गत् ( ५ ) शब्द, अक्षर ।  
 दिग्गत् ( ६ ) बाया, हनुद,  
 रठ, विरोध, दिग्गत्, अ-  
 नष्ट, गरीर, देह, जडाई,  
 फेलाय, प्रकाश ।  
 दिग्गत् ( ७ ) नवीन रचना ।  
 दिग्गत् ( ८ ) तोड़ना, गट-  
 करण, दिग्गत् ।

दिग्गत्, अक्षर, ( ५ ) हनुद,  
 विपरीत । [ किरत ।  
 दिग्गत् ( ६ ) रमत, चमत,  
 दिग्गत् ( ७ ) किरति, चम-  
 ति, किरते छे, विवरण,  
 किरत ।  
 दिग्गत् ( ८ ) प्याग, जाडिर ।  
 दिग्गत् ( ९ ) पलायन, भगीर ।  
 दिग्गत् ( १० ) विविध चतुर्भागा ।  
 दिग्गत् ( ११ ) चन्द्र, सूर्य,  
 चतुर, प्रवीण, पंडित ।  
 दिग्गत् ( १२ ) चारा रहित ।  
 ची० : तात वात, मंद रा-  
 क्त संवारी । मर संवरा  
 सहाय विचारी ॥ १ ॥  
 दिग्गत् ( १३ ) अनेकवर्ण,  
 चायर्थ रूप, अनेक प्रकार  
 का, दिग्गत् ।  
 दिग्गत् ( १४ ) राहु ।  
 दिग्गत् ( १५ ) पगला ।  
 दिग्गत् ( १६ ) विद्योग, भिन्नता ।  
 दिग्गत् ( १७ ) जीत, नाम अर्जुन,  
 पाण्डव, अर्जुन नाम—  
 दो० दिग्गत्, अनेक दिग्गत्

रथ, काला, नकिरीटी होय  
गुहा बमगांडोय कर, पाय  
कपिध्वज होय ॥१॥ भारत  
मति धनुषा यनिव, सम-  
रन भगवत् होय । यर्भुन  
मिमि धनुषर यवध, रवे  
नेहावे भीमगा ॥ द्वार पातक  
विना श्रुय ।

विजय (क) 'विजयभगवत्',

विजयभगवत्, विजयी

विजय (द) विजय, भगवत् ।

विजय (म) भगवत्, कल्याण ।

विजय (न) विजय ज्ञानी, विजय ।

विजय (प) धनुषध विजय,

ज्ञान, विजयज्ञान, विज्ञान

विज्ञानी (क) विजय ज्ञानी ।

विज्ञान विज्ञाना द विज्ञान

विज्ञान, ज्ञान कव भोर

ज्ञान की दानि ।

विट (क) विटवर्ण

विटव (ख) विटवर्ण

भगवत्, विष्टाव, विट, वि-

ट । विटवर्ण - विटव

विटवर्ण - विटव

विटव कवत विष्टाव ।

विटव कव की द्वारमहि,

ठाष्टे मन्दकुमार ॥ १ ॥

विटपायुष (म) युव ॥ वि

यार भिमव ।

विटवी (म) युव, येव ।

विष्टव, विष्टव विष्टव (म) विष्टव,

निन्दित, दुःख, मारव ।

तमो, कव, यवव ।

विष्टवर्ण (म) भिमव, दुःख

दुःख, यववर्ण । [ ठम ।

विष्टवर्ण (म) युवित, युव

विष्टव, (म) विष्टव निर्भय, वि

दाना, विष्टवर्ण भीम ।

विष्टवी } 'य' विष्टवर्ण, भगव

विष्टवि } युव, विष्टवर्ण, वि

तम कवव ।

विष्टवर्ण द विष्टवर्ण ।

विष्टवर्ण (म) भगवत्, विष्टवर्ण,

विष्टवर्ण, भगवत् ।

विष्टवर्ण (म) भगवत्, विष्टव

'विष्टव' (म) भगवत्, विष्टव

कवी भगवत्, विष्टव

भगवत् ।



विदारहि (२) फाड़ने हैं, वि  
दारना, फाड़ना ।

विदित [ व ] ज्ञात, प्रकाश,  
विस्तार, प्रसिद्ध, ज्ञानमय,  
जताया गया, विदित ।

विदिशि [ व ] दिशा का  
विदिशि } चारों ओर, ईशान,  
नेत्रज, वायव्य, दक्षिण ।

विदुष (म) पण्डित, प्रवीण,  
अनुरागम — दाह । कुशल  
विदुष श्रुत अनुरोध, ओ  
प्राणकर्म प्रवीण । विदुष  
विदुष, विचारदा, ओ  
हममुख प्रतिहीन ॥ १ ॥

विदुषव- [ व ] पण्डितायुक्त,  
प्रवीणतायुक्त ।

विदुषव [ व ] पण्डिताई, प्रवीण ।

विदुष (क) निष्कारुण्य ।

विदुषक- [ क ] पण्डितजीन ।

विदुष मन्द का बहुवचन ।

विदुषव (ल) भाँड़, निन्दित,

विदुषव अनाई, निन्दक,

विदुषक ।

विदुषव [ व ] निन्दा, कुपण ।

विदुषहि [ व ] निन्दहि, कुपहि,  
निंदा करते हैं ।

विदुषना [ व ] निंदाकारना ।

विदेव- (य) रागा जलक, देव  
रहित, देव विना, विदेव ।

विद्यामाम् } (म) मौजूद, वा  
विद्यायाम् } तिर, वसाम्  
के, होता, विद्यामान ।

विद्या- [ व ] ईश्वरीमाया, ज्ञान,  
गिद्या आदि १४ । माया  
ज्ञान, रहित । [ वदेया ।

विद्यायी [ व ] ज्ञान, गिद्य,

विद्यायाम्- [ व ] ज्ञानवान्, प-  
ण्डित, विदुष ।

विद्युत- [ व ] विद्युत्, दामिनी ।

विद्युस [ व ] गवाक्षीकता, ईश्वर,  
विद्युत, [ व, विद्युत ।

विद्या- [ व ] विद्यायाम्, पण्डित

विद्य- [ व ] प्रचार, रीति, भाँति ।

विद्यवा- [ व ] मृतपति, की

विद्यवा- [ व ] राग, देवा, ईश्वर

विद्यवा- [ व ] कुपण, ईश्वर

विद्यवा- [ व ] कुपण, ईश्वर

विद्यवा- [ व ] कुपण, ईश्वर

विधात्री. [म] गङ्गा, तीरदेवी  
विधात्री ।

विधापट. [स] सान, विध. दे. ।

विधि. [स] वृद्धा, पदप, कास,  
विधान, रीति, कर्म, यथा,  
दैव, भाग्य, विधि शब्द—  
दोहा ८ विधिकान्त विधि  
देवता, विधि कहिये लो  
विधान ॥ विधि की विधि  
लो हरि रवि, सोई विधि  
गमान ॥ १ ॥

विधिपण्ड. [द] वृद्धाण्ड, वृद्धा  
का पण्ड । [कारक ।

विधिर. [स] दास, विधि.  
विधिपण्ड. [स] लगत् संज्ञा,  
विधि खेति ।

विधिवत्. [स] यथा, योग्य,  
सहित, विहित, जैसा  
चाहिये ।

विधिवाहित. [स] विधि ठग  
अर्थात् विधि प्रयोगे विधि  
ठगा, गिन को । [चन्द्र ।

विधु. (स) विधु, चन्द्रमा, मयी,

विधुतद. (स. द) } राहुपद ।  
विधुतद.

विधुवदनी. विधुमुखी. (स)  
चन्द्र मुखी ।

विधुवेनी. (द) चंद्रवदनी,  
चन्द्रवदनी । सवेया—सां-  
वरे गोरे सखीने सुभाय  
मनोहरता जित सैन सि-  
यो है । बान कमान नि-  
पंग कबे सिर सोई लटा  
मुनि वेप कियो है ॥ संग  
सिये विधुवेनी बधू रति  
को जेहि रंचक रूप दियो  
है । पायन तो पनही  
न पयादेहिं क्यों बसिहैं  
सकुवात दियो है । पर्य  
सांवर गोरे कुंदर सजल  
ही सखीने मनोहरता  
करि काम को लो जीत  
सियो है वा मनोहर  
ताको कामते लीति कै  
सियो है । तीर कमान  
दाय न बाठि काटे न तर-  
कस सिर न लटा सोइत  
है मुनिदेय को बनाये है ।  
संग न विधू दरे सुधांस



दिदि। शुद्धीनाम—दीक्षा ।  
 विवर गुहा दीक्षी देरी,  
 गुफा कंदरा मेख । पुनि  
 पुनि खोजत निज विद्या,  
 रामचन्द्र वन मेख ॥ १ ॥

विवरण (ए) वैदंग, विलग,  
 द्विरियाया, व्याख्या, व  
 व्यान, टोका, कुंमिलान,  
 वरन मट ।

विवरण [४] विवरण ।

विवरण मयव (द) रूपरहित  
 है मय । [ माना ।

विवराया (२) सुभर्त्ता, वल

विवराय (३) चोरपार, विल  
 माई, अतम करना ।

विवरण विवरण (दस) थोद में  
 थोद रंग होना, वा पा  
 तर में मोट मोट ते वा  
 तर होना, तोच क्रांति;  
 छुटव, वेरम वुरा वन  
 छुटा, अचल ।

विवरण (१) अतिवाटि मडका.

विगेव, महुम मडता ।

विनम (२) विनम, विनम, व्या

कुच विगेव वन

विनमगत विनमान (३) सुख

दिवाकर, दिनकर ।

विवाक विवाको. [५] नाय

चय, चदाय । [म्याग ।

विविल, विविलि [६] एकाक,

विविष्य [७] छांटना, वा कू

टना चचादिक ।

विविष्य (८) विगेवमका,

चमीव भाति है ।

विविधि. (९) वेमुण्णनित ।

विमुध- (१०) देवता, मद्या, पंडित ।

विमुधधारी- (११) देवमाया ।

विमुधनदी- (१२) सुरसरी, मद्या

विमुधवम- (१३) मद्यमवागु वाम

म, देववाटिका । भीमारी

विमुध विविध लक्ष कति

कम माई । देखि राम

वन मकल मिहारी

अर्थात् देवता के वन

जहाँ कति कमल में है

अर्थात् वेचरय मंदनादि

आनंद और मधुवनादि जो

भूमि में सो सब वीरामय

का देखि दिहात है वि

इम ऐसे न भए ।  
विद्युधैयः विद्युधैयः ( ४ )

अग्निभोक्तार, देवता के  
द्वेष ।

विद्युधारि ( ५ ) राक्षस, यक्ष ।

विद्युधारी, ( ६ ) राक्षसोन्मादी ।

विद्युधः ( ७ ) यत्, यमत् का  
विचार, सोच, ध्यान ।

विद्युधनिधिस्तम्भा ( ८ ) सुन-  
दला, ललक की स्त्री, स्त्री ।

भीषिन्ना सहि धीर भदि,

सुनह देवि मिदिसेन । को

विद्युधनिधिस्तम्भदि, सुन-

दि सुके दप देस ॥ यद्यत्

विद्युधनिधि सुन ललक को

स्तम्भा यद्यत् पक्षी सुके

कोन सिद्धा सके ।

विद्युधन, ( ९ ) सुन का विचार ।

विद्युधन, ( १० ) नायक, नेवाहा,

नायक, यक्ष ।

विद्युधनी [ ११ ] तोड़नेवाला,

नायक, विधी ।

विद्युधः [ १२ ] विधी, विधी,

विधी, विधी, विधी, विधी

विभक्त, विभाकर- [ १३ ] सुखे,  
भास्कर, दिनकर ।

विभाग, विभाग- ( १४ ) विलग,

विभेद, चाँट, खंड, तुड़ाई,

चटारा, भाग्यहीन, तुच्छ ।

विभाति विभाति ( १५ ) प्रका-

शित, अलिखित होत है

सोचता है ।

विभाषरी ( १६ ) रावि, निष्ठा,

रक्षणी । रक्षणी नाम—

स्त्री । दण्डा दया तम-

क्षणी, गमी तमिया होय ।

निसि श्री सदा विभाषरी,

रावि विज्ञाना सोद ॥ १७

सुखद सोहाई सदा को,

कोही रक्षनि लाति । बहुत

यदि मोहनकाय वे, सत

हैटी यत्न लाति ॥ १८

विभाषरु ( १९ ) सुख, यत्न ।

विभीषण ( २० ) रक्षिताह्व ।

विभू, ( २१ ) विष्णु, देवता,

राज, यक्ष ॥ २२ ॥ दण्ड ।

विभू विभू ( २३ ) दण्डाणां दु-

दण्डाणां, दण्डाणां, दण्डाणां

दण्डाणां, दण्डाणां, दण्डाणां

दण्डाणां, दण्डाणां, दण्डाणां

विभूति विभक्ति (न) ऐश्वर्य,  
भक्तिलिखक, राज, सम्पदा,  
भक्ति ।

विमिद विमिद (न) जूटकरना,  
मनु विचित्रभाव राजनीति  
- विमिद चेतन ।

विमल (न) विमल मतवाला ।

विमल (न) विमल मतवाला,  
भद्रचित्त । [ कवच ] ।

विमल विमल (न) विमल,

विमल (न) देवदत्त, सुरवाचन ।

विमल विमल (न) मेधा-  
मतवाले मे लो देहा । [ मृग ] ।

विमल म कृदाकृपा चमत्कार ।

विमल (न) मंजु, कदाच, मुक्ति ।

विमल (न) विमली, नवानमल ।

विमल म कदाचन, त्यागन ।

विमल म चोद, चमत्कार, मल  
प्रतिविम्ब कृदा

विमल, विमल म मल

विमल म विमल म

विमल म विमल म म

विमल म विमल म म

विमल म विमल म म

विमोघ [ म ] त्याग, मल ।

विमोघमृदा—मृदु मल

राजिता । मधुपुर मल ते

मयाज कियो करी । मल

मर मंगल मल मली करी ।

विमलमल मयो मली

मोचन । मल मल मल

मंजु धुम धुम । १ १ वि-

मोघ मल मल मल—मोघ

मल मल मल मल

मल मल मल मल

मल मल मल मल

मल मल मल मल

विमोघी विमोघी म, मल

मल ।

विमल विमल (न) देहायदी

मोघी मल मल मली,

मोघी ।

विमल (न) देहाय मल

विमल (न) मल मल मल

विमल मल मल मल

विमल विमल म मल

मल मल मल मल

मल मल मल मल

करषा, श्री रसहृन् मे उत्पद्य  
नहीं है। [ पिता ।

विरहि. [म] यक्षा, यज्ञ, यग-

विरत. विरत. [च] तत्पर,  
पाविष्ट, पति प्रीति, शान्त  
निवृत्त, बैरागी, बैराग्य-  
नान्, मुमुक्षु ।

विरति. विरति [च] विज्ञेय  
बैराग्य, निवृत्ति, शान्ति,  
त्याग, पति प्रीति ।

विरय. [स] विदारण, विना  
रय ।

विरद. (क) दास्ये, दम, धीर-  
दाया, क्षुति, स्थाति ।

विरदायको. (स) गुनी को  
प्रसंसा का समूह ।

विरलो. विरली. (स) कय-  
निका, यष्टनिका, विर-  
यता ।

विरल. (ट) विरल, विरल ।

विरय. विरया. (ट) हृष्यदोटा,  
घोषा, गाही, गौहंङ्, बरी-  
होटा पैङ् ।

विरद. (क) विदोष, विदोष,  
मोक्ष मुदाई, विरुद्धता ।

विरहित. (स) विरहित, रहित,  
तल [ अगस्त्य ।

विरदविदार. (स) कामदेव,  
विरहम, ट विरहिणी. विरह  
गुं यद को जो अपनी  
पति से जुदा हो ।

विरदा. (प) विद्योष, घोषी  
की गीत ।

विरहिणी. (स.) पति निर्देश  
रमिनी कामातुरीणी  
आको रात्रि समय एका-  
न्ति भाव में विना पुरुष  
दग्धता से ज्योगि तें प्रीत-  
कता पाए तें अधिष्ठ का-  
नातुर दुःखित होती है ।

विरति. (स) त्याग, नी. ।  
विरति विवेक प्रियम वि-  
श्रान्तः । नी. कदापि वैद  
पुत्रमा ॥ यथा विरति  
त्याग विवेक सत अगस्त्य  
का ज्ञानमा विवेक गम्यता

विज्ञान अंतर्गत विचार वेद  
पुराणी ॥ यथायं बोधः ।

विरहित ( स ) चति रचित ।  
चति छोड़ के, विजेय  
रहित विजेय चति रचित ।

विरही. ( स ) विरहवान् पदय  
गोपी ।

विराग विराग(स) त्याग, विगत  
वमाना वा मोह जगत  
का विराग ।

विराजता. [ स. वि बहुल राज  
शीभता ] ति. अ. शीभता  
गुणशीलता चरता, रैन से  
रचना [ प्रकाशित ।

विराजति. ( स ) भीजति,  
विराजित ( स ) विराजतो है,  
भीजतो है ।

विगाट, विगाट न जगत,  
अधिराज, विरहव ।

विराज ( स ) निश्चितविजेय ।  
विराजता [ स ] गु. वरादा, दृ  
पर का विरजता ।

विरित, विरित ( स ) यो-

वेता, समय, व. ज. वाज,  
वेता, वेरा ।

विरज. विरज. ( स ) रोषहीन,  
निरोधी, रोग गही ।

विरह. ( स ) प्रभुत्व, प्रामुख्य ।

विरहायनि. ( स- य ) यत्न है  
विरहायनी. ताप, प्रशंसापति ।

विरहेत. ( स ) वातावासे वीर ।

विरह-विरह ( स ) विरोध, वैर,  
मनुता, विरोधयुत, वैरयुत ।

विरोधन. ( स ) वन, युद्ध, वन्द,  
द्वैत, मात भूमि । विरो-

धन मन्द-दोषद. वृद्ध  
विरोधन सुरल पुनि, वन्द

विरोधन मात । दृष्टन  
विरोधन धन्य की, जाई

वन्द भी तात है ।

विरोध [ स ] विधीन, विरह,  
जुदाई ।

विरागन [ स ] गु. यो-विरो-  
गिनी, वन्द यो की विरह

ने व्याकुल हो ।

विरोध ( स ) वैरन, मनुता ।

विन्द ( स ) वीर, वीरनयादि,

विट, टिट, भट, रोजन,  
सुराष्ट्र ।

विद्युः (५) वल्लभ, फुरण, च-  
तुलित, म्पारा, वुरा, मान,  
वुष्ट । [ गता ।

विशगमाननाः गुः कुरा मा-  
विही भी लट्ती है तो मुंह  
पर पंजा भरलेली है ह-  
कह नलना चाहिये तो  
दरसे दपना दबाव छो-  
पना चाहिये ।

विशपाताः विशपाति, (२) वि-  
बाध करति, रीती ।

विशीरे विशीरे (२) वदनिहा,  
वदनिहा, दिनमता ।

विशयः (५) वहाष्ट, वन्धित ।

विशपातः (५) वुष्टसरित, व-  
दितामा ।

विशयाम (२) वहाष्ट रीमा,  
हो । वहाष्टर है वहाष्ट  
मुनि, वुष्टसरित विशयाम,  
वहाष्ट विशयाम वहाष्ट  
हो वहाष्ट । [ गता ।

विशयः (२) विशय वहाष्ट,

विशयः (५) विशयः वहाष्ट,  
रोवत, विशयामा, विशा-  
द भीषे वहाष्ट ।

विशयः (२) वहाष्ट ।

विशयतः (५) निम्नोक्त, पहाष्ट  
विशयमोभित ।

विशयः [ म ] वहाष्ट तेदिनी ।

विशी वंभागी वीहा टूटा व-  
वद्योक्त ननुप वी वंभीम  
वे वहा वाम मिला ।

विशयकः (२) वी एक राति-  
वो वा नाम ।

विशयः विशयः, विशयः, वि-  
वाहः ( वहाष्ट ) वहाष्टि,  
विशयः, विशयः, माजीर ।

विशीमाः विशीवना (५) वि-  
शीवना, विशयः वहाष्ट )  
विशीवना, वहाष्ट ।

विशीः ( २ ) वी विशयः,  
विशीवः, एक वहाष्टर वा  
नाम । विशयः नाम—  
वहाष्ट वी वहाष्ट वहाष्ट  
वहाष्ट वहाष्ट, वहाष्टर  
वहाष्ट वहाष्ट विशयः



विश्वोय. (स) नयन, हेतुन ।

विश्व. (स) वेष्ट वृत्त वा फल,

विश्वनाम—दीक्षा । हेतु-  
प्रत्ययान्तस्यै, सूत्र विश्व

नामूर । ॥ ३४४ ॥ तपा

करिदित गदै, पाप सन्तो-

वन मूर । ॥ ३४५ ॥

विश्वोय. (स) कता, प्रताप ।

विश्वद. (स) शुक्लवर्ण, चञ्चल,

सूत्र ।

विश्वव. (स) कष्ट, करवाण ।

विश्वव. (स) कर्त्तिव्य, मित्र

पुत्र ।

विश्वद. (द) शोक ।

विश्वव. (स) हीनवर्ण नयनः

विश्वारद. (स) निपुण, प्रवीण,

चतुर ।

विश्वारद. (द) चतुर । [ चतुरी ।

विश्वारदो. (स) निपुण, प्रवीण

विश्वार. (स) दीर्घ, विस्तार,

चोटा, दिगु, पीडा, बड़ा ।

विश्वोय. (स) वायु वसिष्ठार,

मद, तीर, विश्वरति, चिंता

करती है ।

विश्वोय लयानु(द) पन्निपाप ।

विश्वोय. (स) संयुक्त, लोटा,

सतम, बड़ा ।

विश्वरति. [स] विश्वरता, पता-

विनी, पनादरी । [पवित्र ।

विश्वोय. [स] विश्वोय, शृङ्ग, विश्वोय

विश्वोय. (म) विस्तार, विश्वार,

मीद, लोटे, जाति, उब,

रक्षिष । [ बड़ाई ।

विश्वोय. (स) गुणवाचक,

विश्वोय. (स) शोध, चिंतित,

विश्वोय शोध । [ गन्ध ।

विश्व. (स) अपक्व गांसादिन

विश्वाम. (स) सुगन्ध, रस,

चाराम ।

विश्वोय. (म) विश्वोय. अलग,

विश्वोय, विश्वाम

विश्व. (स) जगत, संसार, राज्य

सर्व जगत्, पदार्थ वा

देवता ।

विश्व. संज्ञक, प्राज्ञ. प्रत्यय १४३

(म) व वाचो अद्वय वा

यन स्वप्न सुषुप्ति-तुरीया व

अभिमानो देवता है ।



विष्णुनागर- [ स ] मुंठी महा

१- धीपथ जगत्पथीय । २-

विष्णुमिषक् ( स ) मुंठी महा

धीपथ । [ जगत्पथीय ।

विष्णुभर. ( स ) जगत्पथीय,

विष्णुभर. ( स ) धरती, जेहिनी ।

विष्णुभर. ( स ) जगत्पथीय, संसार

रूप, सर्व रूप । [ नाग ।

विष्णु ( स ) नागनी का पात्र, कडा,

विष्णुभर [ स ] सुख, दिगम्बर ।

विष्णुमिषक् [ स ] विष्णु संसार

, जगत्पथीय, संसार, मिषक्, धरती

जिस से सब संसार मिल

है । नागनी राजा का बेटा

जो राजकुमार से मद्रपदवि

होगये । कोमिक, कोसिक

शब्द -- दोहा । कोमिक

शुभ, सुख पुनि, कोसिक

धूम नाम । कोसिक

विष्णुमिषक् है, जिन जेहि

यो राम ॥ १॥ [ भरीमा । ]

विष्णु'स [ स ] धरती, धरती, धरती,

विष्णु'स विष्णु'स [ स ] विष्णु

धरती, विष्णु, धरती ।

विष्णु [ स ] धरती, धरती, धरती,

धरती-धरती-विष्णु या कृष्ण

या कठोर या कोमिक, या

माता नाम -- दोहा जता

मंद । रसगान कोमिक

विष्णु काकाधर काकाधर

विष्णुभर धरती । धरती

प्रदीपन छिड़ बुझवत री

छिड़ रस से धीर वन । धी

गन्धर्वतमधर धरि पयो-

धर कृष्ण मदन धरत धरि

धर कृष्ण मदन धरत धरि

दोहा धरत मधर धरत

मि ॥ १॥ धरती कठोर

पदधर धरत धरत धरत

दोहा कोमिक मधर । धरि का

धरत धरत मधर धरत

धरत मधर कोमिक धरत

तिहि धरत धरत धरत

धरत धरत धरत धरत

धरत । धरत धरत धरत

धरत मधर धरत धरत

विष्णुभर धरत । २ । विष्णु

धरत - दोहा धरत धरत

गत चरित, धान कूट रस  
 नांय । रसने विरसन धार  
 दनि, दसिने मनकर नाम  
 विषयसूची [मोमारायन संज्ञा ।  
 विषयक [ग] विषय, गरज ।  
 विषय-विषय [म] विषयदाता,  
 कामदेव, मदेव, मयव, पाक  
 विषयक (द) विषे, विषयदे,  
 दादत ।  
 विषयक [न] नय, दसि, नाम ।  
 विषय [म] मंदाप, युद्ध, भय-  
 कर, पांय १ ५ तीनि १ ३  
 मातु मित भाषयुन, चन-  
 नाम, दोटा दहा ।  
 विषयकान [द] कामदेव सो-  
 चरुति चरुत सोच दसि  
 लेन । प्रमदेव विषयकान  
 भयवेत् ३ चरुत् विषय  
 दान चरुत् पांय दान  
 दाना धीर मदेवी का  
 दहा ।  
 विषयक [म] कामदेव ।  
 विषय [म] दस, धन, दसि-  
 योवर, ना चरुत्पाव,  
 दस, दसि दस, दस,

गन्ध ११३ संसारिक चरु-  
 राग भोगनेवाला ।  
 विषय (म) मी, गरी चरुगा ।  
 विषय (च) संसारी, भोगी,  
 विषय करनेवाला ।  
 विषय (म) विषयामक विषय ।  
 विषय (च) विषयारा, वि-  
 याका, विषयामक ।  
 विषयिक (च) विषयभोगने वाला ।  
 विषय (स) दस, सीग, दान,  
 दादीदान ।  
 विषय (द) दसि । [चरुत ।  
 विषय (म) मीचमेद, चरुति,  
 विषय (स) विषयारा, विषय ।  
 विषय (म) मंदाप, मदीव ।  
 विषय (म) मंदाप, मदीव,  
 दस, नामदस, दसि-  
 च दस—सीवेया । चरुत  
 दानीदर दस विषयक  
 दसदेव मीचिंद । मदीव  
 मदीवदर मदीव दसिदर  
 विषयदेव मदीव १ दे-  
 दसिचिंदर दसिचिंदर  
 केदमिचि विषयारी ।

केगव गारायव हरिजगन्नाथन  
 यन बेकुंठविहारी ॥१॥ सौरी  
 मारंगो कलित विभंगी वन  
 नाभभवंमतं । माधव मधुसूदन  
 विष्णु जगदीश विष्टरयवा  
 यमतं ॥ श्री लक्ष्मि निर्जन जग-  
 मनरंजन विष्णुकव पञ्चदारी ॥  
 केगव ॥ २ ॥ सुरगव यवतंमो  
 यो बलिध्वंमो यो पुनान सु-  
 दयोत्तम । वामन कमलेश्वर  
 कृष्णक गेदाधर कंसराति ज-  
 योत्तम । श्री योय चतुर्भुज यो-  
 य योय जगदीशानाथ सुरगरी ॥  
 केगव ॥ ३ ॥ यनगाम योय  
 विष्णु यमरेकं गदहध्वज गदहा-  
 यन । मंगल विष्णेश्वर पीताम्ब-  
 वरधर राम यदिव्यानाशन ।  
 यलो यदिव्यानाथ यव घटवागी  
 गन्धर्वग यदिव्यानी ॥ केगव ॥ ४ ॥  
 काकोमदमर्दन । केगीसूदन  
 योतिरुग योमेश्वर । यय्यल  
 यदुपं व्यक्त यदुपं गुणातीत  
 यदिव्यानी ॥ सर्वज्ञ यवाह नि-  
 लंनगाह रावन्नाथ धनुषारी ॥

केगव ॥ ५ ॥ नरसिंह  
 यमपं योययजुपं यिवायव  
 कमसेयव । देवदेविहारन य-  
 यमीधारन गरुडीतव यम-  
 यव ॥ ययैत यमीयं यंभू न-  
 दीयं यनमासी दितवागी ॥  
 केगव ॥ ६ ॥ यय्यल यमीय  
 विष्णु यदुपं यव यमीय वर-  
 दानी ॥ यिभुयययतिजामी य-  
 तरनामी योयगात्र यदुवागी  
 योयति योयकं दीगदुवासी ॥  
 य्यावरजनवागी ॥ केगव ॥ ७ ॥  
 यत यधिक यतुर्दम नाम य-  
 धारव नित यमात यतिपीजे  
 ययमं यता दम पुनि ययु हा-  
 दम कंदयोवेया यीजे ॥ यव  
 कंन य्याम यन यंयरीह यव  
 हरिविनास यदिव्यानी ॥ के-  
 गव ॥ ८ ॥ योहा—गिरि सवि-  
 नाम य यवधर, गदह रया य-  
 रईय । देव पापनाशन यवन  
 नाम योय कमलेश्वर ॥१॥ यंय  
 ययजुन यीमुदो, गदा यव  
 यारंग । ययसुदमं यो यदी-  
 गन्धकगुन हरि मंग । २ ॥

विष्णुपटो. (म) गङ्गानदी, नि-  
गङ्गानदी । [ रिभङ्ग ।

विष्णुपटभा. (भ) हरिविद्य, ह-  
विष्णुपटभा. (स) सप्ती, श्री,  
कमला, तुलसी ।

विष्णुपटो. (म) सप्ता, विष्णुपटो ।  
विष्णुपट. (म) विष्णुपट, चतुर,  
प्रवीण, निपुण ।

विष्णुरति. (प) विष्णुकरति,  
श्रीकरति ।

विष्णुरता. (द) विष्णु करना ।  
विष्णुर. (स-क) विष्णु, वि-  
ष्णु, विष्णुवन ।

विष्णुय. (स) श्रीक, कल्याण,  
पादप, चक्रवर्ण, दामोदर-  
सीता तत्त्व वा विष्णुनाम—  
हृदयविष्णुपट । तत्त्व पट्टि  
सहित दंडावत काल सेव  
मगरी । द्विती बहाय  
स्वाम संनारि मातु पाय  
पटरी । लघुचक्रवर्ण  
क्रियो दृष्टि हरि विटपि  
गिराय ह्ये । तासो प्रगट  
धनदसूत विनयी करि

निज शोक गये ॥ १ ॥

श्रीविग कप्यो विना भूक-  
पन पतत ह्यस पस मे ।  
श्रीतुल विष पटी पापयं  
पट्टन नद विष्णु ॥ ४४-  
शानंद सुनु पालाया  
कीदा विष्णु भणा । पाद-  
मङ्गल विष्णु विष्णुपट  
हृद हवीम हृदा ॥ २ ॥

विष्णुरप. (त) विष्णुरप, भूक ।  
विष्णुत. (स) श्रीक, चक्रित,  
चक्रभित, चक्रवर्णयुत ।

विष्णुग. (स) पट्टी विष्णु, चक्र,  
पट्टेक । [ पट्टी, चक्रवर्ण ।

विष्णुवर. विष्णुग. (स) गरुड  
विष्णु. (स) पट्टी, पट्टक, चक्र ।

चक्रप मन्द - दीदा । चक्रप  
विष्णु चक्रप नपतगन  
चक्र केशवक पादि ।  
चक्रप चन्द्र श्रीका चक्र,  
चक्रप गरुड दृष्टि पादि ॥ १ ॥  
चक्रमन्द—दीदा । चक्र  
रवि चक्र सप्त पन पवन,  
चक्र चक्रुद चक्र देव । चक्र

विहङ्ग वरि सुगमसज्ज,

अथ नर मे वरा मेव ३११

विहङ्गवर विहङ्गेन म गच्छतु.

पत्नी पतिम् ।

विहङ्गवत् ३१२ अथ विहङ्ग-

वत्, विहङ्गवत् करमा, पत्नी

करमा, सुगमसज्ज, विहङ्गवत् ।

विहङ्ग विहङ्गवत् म जीह्व,

अथ नर विहङ्ग

विहङ्गवत् विहङ्गवत् (३१३) अथ विहङ्ग-

वत्, विहङ्गवत् करमा, पत्नी

विहङ्ग विहङ्गवत्, अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् विहङ्गवत् (३१४) अथ विहङ्ग-

विहङ्गवत् विहङ्गवत् (३१५) अथ विहङ्ग-

विहङ्गवत् ।

विहङ्गवत् (३१६) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३१७) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३१८) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् ।

विहङ्गवत् (३१९) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३२०) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३२१) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३२२) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् ।

विहङ्गवत् विहङ्गवत् (३२३) अथ विहङ्ग-

विहङ्गवत् (३२४) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३२५) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत्, पत्नी ।

विहङ्गवत् (३२६) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत्, अथ पत्नी ।

विहङ्गवत् (३२७) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३२८) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् ।

विहङ्गवत् (३२९) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत्, अथ पत्नी ।

विहङ्गवत् (३३०) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३३१) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३३२) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३३३) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३३४) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् ।

विहङ्गवत् (३३५) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३३६) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३३७) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३३८) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३३९) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् (३४०) अथ विहङ्गवत्

विहङ्गवत् ।

काम केलिले मदान करना  
हिन्दुस्थान में रीत है कि  
जब किसी सरदार की  
कठिन काम पड़ता है, तो  
यह अपने भीकर चाकरो  
को इच्छा करके उन काम  
को कहता है फिर पञ्च  
पाग का बीड़ा पाद में  
रख कर सब के मागने  
केरा जाता है जो उसको  
उठाकर नदा ले वह काम  
उस के जिम्मे हो जाता  
है।

बीच दिव. (स) घनगविलग।  
बीचि. (स) तारु, कल्लेन।  
बीची. (प) बिहिया, चंगुली पंगु  
भूपण। [पानी।

बीर. (स) नून, नारण, रिया,  
बीर बीरा. (स) दीनबाजा,  
दिपलक, बीजागान—दी-  
तंवी दीना दसवी. बररी  
विपंची पादि। जंघ दला-  
वत सरदरी. बररी बर-  
जति ताहि ॥१॥

बी'त होत. (स) घग्नि, घंगल।  
बीचिन. (स) घांगंग, सङ्गन।  
बीची, बीचीकों. (स) गधी,  
पुण्य प्रतीली. कूषा।

बीन बीना. (स) बाजाभेद, तन्त्री,  
नारद गमन बीण नाम—  
दीहा। सीधे विपंची वल्लकी,  
तंघ यंपी बीन। हरिसंभोप  
गावन सती श्रीदेवदि प्रवीन॥  
बीना. (क) प्रवीण, चतुर, दृष्टि-  
वान्।

बीमा. (प) बड़ा, भाड़ा, पावक।  
बीरघातिनी. (स) गति कही  
सांगी विभीष व्रद्धा की  
दिया, बीर का नाग कर-  
नैवाची।

बीरता. (स) गुरता घीसापन।  
बीर, बीर. (स) गूरमा, भाई,  
भैया; कंपान, स्वर्ज, तप  
आंग, दान वरदान बीर-  
रस कही पापंदेसे के काह  
दृष्ट विभीषकरना अपनेती  
पोकल, रसगोन बीररस-  
युत बीररस—दंड मोहि

कदाम ॥ समे रणभूमि  
 खरे रघुवीर ॥ धरे धनु  
 बान जयाथ तुगीर ॥  
 दगाध्यनिपाति दई गति  
 राम ॥ सुचारि जगाम  
 सुमोक्षिण दाम ॥ १५  
 दानवीर—छंदभूषण ॥ दान  
 विपाद धराहरि सीन्धी ॥  
 बाक कट, तनु तारन  
 कीन्धी ॥ अपि सबे कलि  
 धर्महि राधा ॥ छंद विभा-  
 गन कर्णक भाषा ॥ १ ॥  
 धर्मवीर—छंदकानित ॥  
 कीन्धी महीपगण व्याज  
 दूत की से लोति नारि धन  
 धर्मपूत की ॥ तापे युधि-  
 टिर धर्म नातना ॥ कर्णो  
 जगाम समनेधुना धुना ॥ १॥  
 दयावीर—छंद भुजंगी ॥  
 दिष्टे माण योगी दधीचादिने ।  
 चराये दितं युक्तचमूदाद  
 ने ॥ दयावीर विभ्याग  
 नामे रघो ॥ शिवचंद्र भुजा  
 भी भुजंगी कछो ॥ १ ॥

कलि शब्द—दी०१ कलि  
 यक्षेय कलि सूरमा, कलि  
 निदंय संघाम ॥ कलि  
 कलिजुग यह घोर नलि  
 केवक केयव नाम ॥ १  
 वीरभद्र. (स) शिवगण नाम  
 वीरासन (स) वीर के समान  
 बैठना ।  
 वीरस. (स) संघाम, १ ल  
 धर्म, २ । तप. १ । ज्ञान  
 ४ । दान, ५ । दान वीर  
 रस कही धन, प्राचादि  
 देके काङ्क्ष कट निवेष्ट  
 चारि चागन्द हातप्य ।  
 वीर्ज. (स) चमत्ता दुःख तें  
 भी दुःखित नाहं होय ।  
 वीर्य (स) सामर्थ्य, बल, वीर्य  
 धातु ।  
 वीर्यवान् वीर्यमान्. (स) वी-  
 राक्रमी सामर्थ्य, प्रतापी ।  
 वीर. वीर, ( प ) वीरपंथा  
 वाचक २० ।  
 वीरक (प) विषट्पान, व  
 ठिनभूमि ।

बुद्धि (स) मनीषा, चतुःकरण  
 वृत्ति, विवेक चक्षुः । दो० ।  
 बुद्धिमनीषा मेमुषी, नेवा  
 धियना धीय । मति मी  
 मती कस्त सती, भली  
 विरुद्ध तोय ॥ १ ॥ पुनः ।  
 बुद्धि मनीषी मेमुषी,  
 धियप मीषी धीय । उप्  
 सखी ज्ञा चेतना, प्रेक्षा-  
 संबित मतीय ॥ १ ॥

बुद्धिहा (म.) मदिरा, दोहपी,  
 मद, बुद्धिनाशक ।

बुद्धाई (द) कमभाई, समझ  
 करके, बुद्धाना, समझना ।

बुद्धबुद्ध (म.) बुद्धबुद्धा, दिव्यबुद्धा ।

बुद्ध-बुद्ध (स.) पण्डित, मनी-  
 सुत, बोध चक्षुः, दीया  
 पद, चन्द्रपुत्र, बुद्ध मन्द-  
 दोहा । बुद्ध पंडित को  
 कहत है, बुद्ध सवि सुतदि  
 बलान ॥ बुद्ध हरि को  
 चक्षुः एव, दीध मयी  
 मिदि ज्ञान ॥ १ ॥

बुद्धा (प.) मनीष की दृष्टि ।

बुभुक्षित (स.) क्षुधित, पेटू,  
 भूखा ।

बुद्धा (म.) बुद्धबुद्ध, बुद्धबुद्धा ।

बुद्ध मनीषगना, मु. बुद्धाये मी  
 ज्ञानो की बातें करना ।

बुद्धाया विगदना, मु. बुद्धाये  
 में दुष्ट होना ।

बुद्धादेना, मु. ठगना, छतना ।

बुद्धावदना, मु. निन्दाकरना,  
 बदनामी करना ।

बुद्धाचोतना, मु. बिछी का  
 बिगाड़ पाड़ना, बिछी की  
 दुराई पाड़ना ।

बुद्धा घेटा, खोटा पैसा काम  
 पाता है, मु. चपना घेटा  
 निश्चय भी हो तो भी  
 बिछी समय काम पाता  
 है ।

बुद्धागना, मु. चपलदहीना  
 नाराज होना, नापुमहीना ।

बुद्धा लगना, मु. भला न मा-  
 न्यहीना ।

बुद्धाई पर कमर बांधना, मु.  
 दुराई करने पर तैयार  
 होना ।



मूँदा वादी, मूँ. मेह की थोड़ी  
२ मूँदे गिरना ।

मूँदतरना, मूँ. छूँदतरना ।

मूँदाघाग, मूँदाधराट, मूँ.  
बहुत मूँदा ।

मूँता (प) बल, काहू, जोर ।

मूँद (स.) हुँदार, यन्त्रि, दान-  
नव, देवक, भेड़िया ।

मूँद हुँदार जाकों काहू  
देस में लोग काहू देस में  
भेड़िया कहते हैं ।

मूँकरि (स.) हुँदार, बगलगा ।

मूँता (स.) नहोविशेष ।

मूँद (द) समूह ।

मूँजिन (स.) दु. य. पाव ।

मूँदारकः (द) देवता ।

मूँता (स.) मण्डल, रीति, पद्य ।

मूँताता (न) वासी, विवरण,  
पता ।

मूँति (स.) चित जो जगती,  
चास, व्यवसाय, कोविता

मूँतधारी ( ) मूँतका निवा  
दिनेवाका ।

मूँद (स) पद्यविशेष जो

रन् जो ऐरावत जलो समेत  
निगलनवाया बाहे मान्य हेतु

स देतीनः धनुष दधीनि के  
पंजरा का बसाया, रति ६ ।

पुन्य ६ ८ १० । अध्याय  
योगागवत प्रमाण यह योग-

हाभारत में विगद प्यात  
ताकी विवरण, माण्डोव धनुष

पक्ष - नाम २ - तीति गुण  
कही प्रताप बाहे वैद्यनाथ

शे जाने प्रगट किये श्री वेद-  
नाथ जू पयाए ताकी चरुन

दुन्दपन सन्निव्य, पधिकारी  
भयो ३ ९ ३ दूसरी यन्त्रि काही

वय धनुष पूरा नाम ६ जो  
गुण बाहे दुन्द पधिकारी १९।

तीसरी विनाथ धनुष पूरा  
नाम ७ सप्त गुणः बा ६

श्री शिव जू पधिकारी । चौथा  
पद्य धनुष पूरा नाम ८ गुण

सूयादि देवतन का दिवा  
बाहे यातदममुनि परशुराम

मुनि का पिता पधिकारी ता  
धनुष कर सवित विगद के

दर्शन की श्री रामायण दान-  
 कवि श्री श्रीरामचन्द्र श्री श्री  
 परशुराममुनिजी धनुष्यपर्वमिति  
 करे १३ श्री० । देव एक गुण  
 धनुष्य हमारे । नव गुण परम  
 सुभीत तुम्हारे ॥८१॥ अथ धनुष्य  
 गुण सङ्गित विवरण । ० ॥  
 गुण० नाम देवता गुणद०  
 वार० १ दुर्य०  
 अक्षर० २ इन्द्र०  
 अक्ष० ३ विष्णु०  
 अक्षर० ४ हृदयति०  
 देव० ५  
 धार० ६ वरुण०  
 शेष० ७ अक्षर०  
 काम० ८ कामदेव०  
 कीदाता० ९ दिग्वाक०

८ इति नवगुण ।

हृदयदा (स) इन्द्र, पुरन्दर ।

हृदा (स) निष्ठा, अथवा ।

हृद (स) हृदा, पुराणा, माधोन  
 होकरा ।

हृदयदा (स) दासक, धर्मावति ।

हृदा (स) हृदी, होकरा, बुद्धिया

हृदि (स) अराधयता, हृदी,  
 दाद, हृदी, हृदीती ।

हृद (स) हृद, भुण्ड, समूह,  
 राजि । [गोर्वाण ।

हृदारक (स) देवता, दिवीग,

हृदारका (स) देवधू, अक्षर,  
 देवता । [पाठवी रायि ।

हृदिक [स] विष्णु, बीदाकोट,

हृद, हृदम (स) बैल, वहुक,  
 गेह, काम, सुधर्म, सुर-  
 पति, कर्ण, दूसरी रायि ।

हृद नाम—दी० हृद सुर-  
 पति हृद करम पुनि, हृद

जि हृदम हृद काम ॥ हृद  
 सुधर्म करि करि भगो,

जो चाहो पुष्ट धाम ॥२॥

हृदकेसु [स] गिवण्डर, गहादेव ।

हृदम [स] बैल, गेह ।

हृदम [स] बैल, गीत, विहिनी ।

हृदली [स] गो, गृही, गृहा ।

हृदि [स] वर्पा, धारिप, मेघ,  
 नेह, युद्ध समूह ।

हृदी [स] यदुवंशी । [विपुल ।

हृदत [स] भारी, दहा, स्तूल,



वेहापार होना. सु० दुष्ट से  
 छूटना. सबबादपरीहोना  
 बेगि-बेगी (प) तुलना, मोम ।  
 बेभा। [द] निम्नाना, नाका चिन्ह  
 बेडा। [क] घनादं, चौघडा ।  
 बेद बेड। [न] बांश, हंश, बां  
 सुती. राजा विजय ।  
 बेदी. [म] हली, गद्दी का जंगम,  
 बीठी, हुन्तानिपाट, का  
 बरी नाम दी० १ बेघबेघ  
 बेबी बबरि, दंगपास एवि  
 देन ॥ सात कुंभ के खंभ  
 बनु, नागिन सदरेलेत ॥  
 बंग बंग बांभित लकड़.  
 बरि हयभानुहुनारि ।  
 बसंवार हादम तया,  
 बी घोहन गृहार १२४  
 बेणु (स) सुरली, बांसुरी, बंयो,  
 राजा विजय, बांस ।  
 बेन-विदित-बेत (द-क) हथ  
 विजय, बही, बेत, यही,  
 पाल, पाकाम, मून्ध, (बेत  
 पाल-पाकामे एर तरह की  
 सबदवार बरही। सी० ।

फूलै फूलै न बेत, लदपि  
 सुधा रसहिं जलद । मूरख  
 हृदय न बेत, भी गुन नि-  
 लहिं दिरंदि सम ११३  
 इस मोरठे का लोग पनीस  
 पद करत है परन्तु गिर्य  
 करने से यह निन्द्य दुपा  
 सि बेत जो पाकाम रुपी  
 बृष है सो फून्ता नहीं  
 बाहे बादर राति दिन  
 पस्त बरमा करे क्योकि  
 पाकाम मून्ध है इस तं  
 पमृत ठहरता नहीं कैदे  
 गुन करे ऐना ही मूरख  
 का हृदय मून्ध है मर्या  
 के समान भी गुन हो तो  
 क्या करे पमरकीम में  
 पाकाम का नाम दिदत  
 भी लपटा है बही भाषा  
 में विमल के बेत हो गया  
 १, बी०। जिनि लख निघ-  
 टत सरद पवाये । बिससत  
 बेत सुबनन दिहाये । प-  
 सीत् सैदे नाट जगु के

प्रकाशमे लक्ष घट जाता है  
 येत अर्थात् प्रकाश प्रम-  
 भ होता है और कमल  
 विद्यमान है । येत वृक्ष का  
 नाम । दो० येत करी वि-  
 द्रोहरि, भूत खियारा  
 नीर । वंजुन मंजुन कंन  
 तर, बैठे है कन नीर ॥  
 प्रकाश का नाम दो० ।  
 प्रवर पुष्पः निष्पुण्ड्र, चंत  
 रीष्ट नभ बाध । व्योम  
 प्रमंत विहाय मित्र, सुर-  
 धर्मन प्रकाश ॥१॥ नगन  
 को महमग वनि रत्ने, नेकु  
 चर्चो तनि वीप । देवम  
 नेरी उप जगु, सुर तिय  
 कीर्त भोप ॥ २ ॥

येतपाणि ( ५ ) हाथ में येत  
 लिये कंजुन मणि घटित  
 प्रायः ।

येतप. [ ८ ] येत वृक्ष, प्रामाण्य  
 वृक्ष, प्रकाश । [ १०८ ]

येत । ( ५ ) प्राता विप्र, ज्ञानने  
 येत ( ५ ) येतवृक्ष विगेष, दृक्, ।

यष्टी, समान्य वृक्ष, ताकी  
 प्रमाण कथा श्रीवाल्मीकि ।  
 वेदो कलाकला गद्दी विनि  
 स्त्रिता गगी न्यम्पुद्वि ॥  
 ने सदा सदा विवेचयव  
 पुष्पितं गद्दी । तथा मनु-  
 प्यादि गुरोर्विनिमित्तं ॥  
 विरनि गुरोः समोद्भवेत्  
 तथा दगाव्येः प्रियया वि  
 निमित्तं विनिमित्तं प्रात  
 निरक्षम गतिः ॥ १ ॥

वेद ( ५ ) प्रादि पुष्पक प्रादि,  
 प्रदम्, यजुप्, साम, यद-  
 येष ॥४॥ कथावाचक, १०  
 वाचक, देव यानि मूर्ति  
 पुरुष प्रादि, प्रातव, १०  
 १००० वाचक ॥ ४ ॥ वेद  
 नाम । दो० । धरि द्वि  
 कपु विगतो काल, वेद प्रद  
 सिद्धात ॥ प्रायः नृति  
 प्रायः नृति, प्रायः निगम  
 लतात ॥ १ ॥ पुनः नाम ।  
 दो० । प्रद निगम नृति  
 वेद पुनि, यमो मूल निग

लाम। निगम अगम जाओ  
 कहत, सोइ बलि सुंदर  
 लाम ११५ [वेदपापी।  
 वेदगिरा। (म) पात्राय बापी।  
 वेदगिरा। (स) चुनि रिझिप, धो  
 वेद गिर पर रखे, चुनि  
 रिझिप या झंझा जाओ  
 वेद गिर पर गिरन् धान  
 ते जानना रति । [माझ।  
 वेदाङ्ग। (म) व्याख्यान आदि को  
 वेदान्त। (ग) वेदका अन्तभाग ।  
 वेदिका, वेदी। (ङ) वेदी, अग्नि-  
 होत्र, चौक, बहुतरा, अ-  
 उचित नाम मन्दिर कह्ये-  
 काण्ड, करने के लिये  
 छोटा बहुतरा वेदी पद  
 को देखी । [फांङ।  
 वेध। (उ) हिंदू, हिंदू, साधु,  
 वेधा। (ए) ब्रह्मा, विधाता ।  
 वेग, वेद। (प-स) वांसुरी, वंसी।  
 वेदिया । [पस।  
 वेना। (प) पंखा, बीजना, धन  
 वेनी-वेदी। [प-स-] नदी,  
 देदी, चौटी। सुजानी,

संगम, एण, द्वि, तीणि,  
 चारि, पांच, षो, सात,  
 आठ, नव, दश, इत्यादिक  
 दशार पदांचे मिलिते एण  
 लगट लिङि होय वांकी  
 भी वेनी संज्ञा ।

वेनु-देणु। (प-स) भूपरिधिप  
 सूर्यवंशी जाओ कथा है  
 कि राजा वेनु राजा पञ्च  
 के पुत्र उत्तानपाद के वंश  
 के नाता बाकी पधसौ की  
 पुत्री ताहि पंच यज्ञ करि  
 के पधसौ अंग महा पधम  
 कुपाटी संपन्न भयो कि  
 मोढ़ होती गोर्वा पर मि-  
 कारदरप नग्यो, पिता ते  
 यज्ञ करि राज लेके यज्ञ,  
 दान, व्रत, पूजा आदि सु-  
 धर्म को बाधा भयो, जहाँ  
 वासव होत सुनत तहाँ  
 बाकी दण्ड करत धनवासी  
 का धन लूट लेत ऐसी महा  
 पधम कुपाटी पण्ट भयो  
 कि पृथ्वी घोर पधमार ले

सगस्त डमाडोच भयो, पदभू-  
 चादि निरस भयो, लोभी मवी  
 कामी मोधी लोभी डोत भय,  
 तब चरधियो विचार करि ऐसी  
 अधम के नाशदित यत्र पारंभ  
 युक्त साथ करि हुडार गरण,  
 मन्त्र ते साहुत दियो कि वाकी  
 गरण भयो, पछात् बिना राज-  
 पति के वाहु ते अधिन दण्ड  
 सत्य होने लग्यो, तब कटपी  
 मरौ पुनि विचारहार लखी  
 सत्य, निमित्त राजाविनु मृग  
 के लंघ मयन किए वाते बिभ-  
 कुस मातापत्त पधमं राजसी  
 अय ते पहिले निपादजाति  
 पहिरिया कल्प भयो । पछात्  
 वाहे वाहु की मयन किए पि-  
 तादेव पत्त ते दिव्य एक पु-  
 रष विष्णुसंग अवतार राजा  
 पुय, दोहरौ देवीसंग सुदितो  
 नाम कही राजा पुय की स्त्री  
 कल्प भयो, उस राज ते रा-  
 जकाज प्रथम सुखी धर्मोदि की  
 वृद्धि भकी प्रकारते होने लग्यो ।

वेणुसंग ( ६ ) बान की कोठ.

को० । पदवी ते उर संसद  
 होई । वेणुसंग सुत भवेनि  
 घमोई । पछात् वेणुसंग  
 बान की कोठ मे ते कही  
 वे घमोई दूपा । ( गहाज ।  
 बेरो-बेरो ( ७ ) गोला विगैय,  
 बेन ( ८ ) प) मसुद्रतट, पछात्  
 काग, सता, विश्वकभ.  
 तरङ्ग, युधसंग । बेन-  
 नाम—दोहा । पुनी विन  
 की सदा फल, बेसता  
 मासुर । एनोफन तुप क-  
 चन मम, कडा बडा क  
 दिव्य ।

बेला ( ९ ) महर, ज्वा,  
 समय, राजाभिर, पुष वि-  
 शिष ।

बेदि ( १० ) गागमेकी बार  
 कता नाम—दोहा । रा-  
 याप्रतते बजरी, दिवती  
 बिसती बेलि । बिटवकता  
 बली महित यह नव नाम  
 हमेश ३१३

देहक. (स) मरिचयोपध ।

वेद्य. (स) रूप, दृष्टि, दृष्टा, गोभा ।

वेद्या. (स) मरिचका, कृष्णो,

पतुरिदा । वेद्यागान—

द्वंद्व-हीरका । वारवधु

मरिचका विलोभिनी दामि

दादिदा । दुष्टाधु संभक्षी

रूपश्री वासंजिका । वार-

मुक्तो वेद्या भवै बहभा

वासुधा । दृष्टत रघुनाथ

भभाते दृष्ट वलहीरका ॥१॥

वेद्य (स) मरिच, काना । [मपेटम ।

वेद्यम. (स) पेटन, यरुना, ।

वेद्यित. (स) चारी चोर वे दका

दुष्टा ।

वेद्यर. (द) दनुनाम पदिसवेद्य

द्वाना वृद्ध वदुदा काम

वर ।

वेद्यरि. (प) मृगमरिच नाथ का ।

वेद्या. (स) वर, भवम, काना ।

वेद्य (प) द्रिष्ट, वेद्य, नाथ ।

वेद्यर. (प) दिष्टदाम, दृष्टदर,

पदलोच, काना, रीदृष्ट ।

वेद्य. (स) वरही द्रिष्ट ।

वे. (स. प) निरुप, निर्णय,

स्थिर ठीक, भवस्या ।

वेद्युष्ट. (स) विरुद्धा धाम,

नारायण ।

वेद्यनामा. सु. गिरपङ्कना ।

वेद्यरना. सु. द्रोष्टेना, पास-

तोदना, सुष्टा वीजाना ।

वेद्यत. (स) दूषर, विकार ।

वेद्यानस. (स) तपसी, यती,

संन्यासी ।

वेद्ययतो. (स) माता विमेष ।

दोहा न'पो मापो मूली,

करी दरी कामठ बाण ।

पट्टपट्ट मुक्ता लहां होये,

भी वेद्ययतो नाथ ॥ १ ॥

धमावः वक्त ।

वेद्यरही. (स) प्रत्यक्षी, यम-

हार, नाथ विमेष, दमदुर

ही मदी ।

वेद्यार. (स) वेद्य विमेष ।

वेद्यर (स) हो वेद्य ही रीति

वे ही ।

वेदेही वेदेही. (स) दमकपुत्री,

दुष्टीवर्ति शेषध, होना



बेद्य. (स) बिबिल्लक, भियकवर ।  
 बेरपहता, मु. दुग्गमगोडीजाना ।  
 बेरलेना, मु. बहला लेना ।  
 बेग. बेण (प.स) बंशी बाणो,  
 बचन, बाक् राजा पुयु बेण  
 पुच ।  
 बेननेय (स) गरुड यथो, चंम  
 पति, छगेय, श्री० । ताचं  
 सुवर्ण सुश्रु जित, बेननेय  
 हरिजान । नामांतक  
 चणपति गरुड, उरगरिपु  
 गरुड गान ॥ १ ॥  
 बेमय. (स) वाकन, ऐमय्य,  
 लेकोय्य अन ।  
 बेमात्र (स) सीतेला भाई ।  
 बेयान बेना (स) कन्य, प्रसव,  
 सृष्टि, उत्पन्न. बचन ।  
 बेर. (स) बिरोध, दंभ, मद्रुता ।  
 बेरागो. (स) बीनरागो, कदा  
 मीन ।  
 बेराय्य (स) विषयी का स्थान,  
 चरनि, चरु दा चारि म  
 कार, जेतु बेराय्य ॥ १ ॥  
 ब्यदय बेराय्य ॥ १ ॥ कय-

बेराय्य ॥ १ ॥ पवधि बेरा  
 बेववत. (स) चर्मराज, २  
 कतागत ।  
 बेगन्दर. (स) बद्धि, चमि, १  
 बेगवण (स) कुडेर, सुरभर  
 मीनजन्तु ।  
 बेग्यानर. (स) चमिदिजेय  
 बेपरी. (स) मुख घोर बार  
 बेपायस. (स) बाणप्रव्य ।  
 यमी । [ बेराग  
 बेणय्य. (स) विष्णु कपास  
 बेकन्दर. (स) चमि, चनक  
 बेस (स) बेस, चवव्या ।  
 बेसा. (स) बैठार, स्थिता, वा  
 बैठना ।  
 बेवे [द] बेठे, स्थितभय ।  
 बीठा (स) मझाद, गाभी ।  
 बीटीवाटा फडकना, मु. व  
 बासाक होना ।  
 बीभ्दा निरवर होना, मु. बं  
 कठिन, बासका चानान  
 बीज बाक, मु. बात बीत ।  
 बीबीठासी पुनामा, मु. तात  
 देना ।

बोधः [स] ज्ञान, समझ ।  
 बोधिद्रुमः [स] पीपलवृक्ष ।  
 बोध्यः [स] बोध के योग्य ।  
 बोधना [द] डूबाना । [चरि  
 बोधिः [द] बोधि बड़े बोधाय  
 बोधसिनी [स] सीढ़ें पर  
 नीच ताड़े मनादः  
 बोधनाः सेतुः सि बोधानि  
 बोधसिनीषु च इच्छेत  
 परं शासिनी वर्य इच्छता  
 इति शाल्मीकान् ।  
 बोहितः बोही [प, स] नाव,  
 तरपी, नीचा, प्लव, लहलह ।  
 बोड़ा, बोड़ाहा [प] बटाह,  
 बटाहा ।  
 बोड़ [प] सता, बैल, बाँवर ।  
 बोहः [स] रूपनान्, मरीर,  
 जानी, झड़, खुना ।  
 बोहिः [स] एकता, एकाई, जन ।  
 बोध-बोध (स) विद्वत्, सोमिन्,  
 भूषा भट्टा, बहका ।  
 बोह (स) परिहास, विद्रुप,  
 ठहा, चुति, निन्दा, निधित ।  
 बोधन-बोधन (स) बीजन,

पछा, बंमहेता ।  
 बोधन (स) तरकारी, चायनी ।  
 बोधिरेण (स) पत्तन, भिन्न,  
 फरक । [गतः ।  
 बोधीत (स) बीतगया, डूबा,  
 बोध (स) डीन, नाश ।।  
 बोधा-बोधा (स) पोड़ा, लोभ,  
 दष्ट, दुष्ट ।  
 बोधि (स) बहैलिया ।  
 बोधक (स) सब में प्राप्त ।  
 बोधवान (स) रोकावट, छेक ।  
 बोधसित (स) व्यवहार, घन्टा ।  
 बोधहरिदा-बोधहरिदा (द) प-  
 रसिदा, पोतदार, महा-  
 जन । [नामिनी ।  
 बोधिवारिणी (स) परपति-  
 बोधिवारी (स) लुचा, परती-  
 वगानी ।  
 बोधीक-बोधीक [न] कपट,  
 दण्ड ।  
 बोधन (स) भूषण, कृपाव,  
 दष्ट, मोह, बल्लेमनान—  
 दोहाः विधुर व्यसन लच्छु  
 न जन, न जन लच्छेयु मोह

अमर अट अट अट अट  
विगाहोम अम लोच ॥३३

अमनो, अमनो (न) अमनो,  
अमर, अमरी आदि कु  
पाचो, अमि, अमि ।

अमनो (न) अमन, अमन,  
टीका ।

अमन (न) अम, अमन ।

अमन (न) अमि, अमन,  
अम, अमन, अमि, अमन, अ-  
मन, अम, अम, अम ।

अमनो के अमन अम-  
नो—अमन । अमनो  
अमि, अमि अम, अमि  
अमन अमि । अमनो  
अमन अमनो, अमि  
अमि अमि ॥ ३३ ॥

अमन (न) अमन ।

अमन (न) अमन, अमन ।

अमन, (न) अमि, अमि, अमि ।

अमि, (न) अमि, अमि ।

अमन (न) अमि, अमि, अमि,  
अमन, अमि अमि । अमि

अमन—अमि । अमि

अमन अमि, अमि, अमि

अमि अमि । अमि

अमि अमि अमि, अमि

अमि अमि ॥ ३३ ॥

अमि (न) अमि, अमि-  
अमि ।

अमि (न) अमि, अमि  
अमि, अमि अमि ॥ ३३ ॥

अमि (न) अमि, अमि,  
अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि  
अमि अमि, अमि

अमि, अमि, अमि,  
अमि, अमि ॥ ३३ ॥

अमि (न) अमि अमि—अमि  
अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि । अमि  
अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि  
अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि  
अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि  
अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि  
अमि अमि अमि अमि

सात की बिगाड़ देगा ।

व्याख्याना, सु. दुस्तरन को

दर में लागा ।

पू. (स) कदम हजे, धधि

द, मेना की रचना, नमूदा

सोन. (स) मिह, पाकाग ।

म. (म) गोकुल देग, गति.

प्राप्ति ।

प्रपति. (स) प्राप्ति होत है ।

ममत्. (स) ममत्, वसन,

प्राप्ति ।

ममत्ति. (स) प्राप्त होत है,

जाने-दे, बहुधा पचा ।

म. म. (म. ट) गूढ़ांग, फोड़ा,

हिंद. पाद, जगून ।

म. (स) उपवास, पुण्य कर्म ।

वृत्तती. (स) वृत्ता । अनुरचना

गान—दी. । वृत्तती

विमती, वृत्तती, विमुनी

पदागतान, पनदेति.

निमि नृ. दिव. इति. दे-

पत तपमान ६१ ॥

वृत्तनिराधु. (स) वृत्तनिराधार ।

वृत्ती. (स) वृत्तधारो, नेमी,

रूपिनाम—छंद वंसगति ॥

प्रमित योगी नटसीमिचुन

मुंडी ॥ वृत्ति तपस्वी यती

साधु मुनि देंडी ॥ वृत्ती

तापसी जंपी कृपी निर्वा-

नी । कन्यासी संधीपट

दग जानी ॥ १ ॥ वी. ।

हादग पट कता रचि

ठानी ॥ नाम वंस गति

छंद वषानी ॥ [ छंदा ।

वृत्त. (स) नृ. संधा, रवि

वृत्त. (स) परमात्मा, पादि

वारद, गोव, धेद, विधि,

सदन वृत्त मय—दी. ॥

पृष्ठ वृत्तकुच वृत्त विधि,

वृत्त देव की जीय ॥ वृत्त-

नंद के सदन में, ताहि न

पावति तीव ॥

वृत्तलोच. (स) पञ्चपात ।

वृत्त-कृपि. (स) वृत्तकृति,

भृंग, सोमप, वृत्ति ।

वृत्तगिरा (स) वृत्ता की वाणी ।

वृत्त धाम } (स) वृत्तलीक ।

वृत्त नवन } (स) वृत्तलीक ।

बुधार्थः (स) वेदज्ञानार्थं सुव-  
नयनानंतरं प्रथमं चायम-  
मेव न रक्षित्य ।

बुधमैवारि (र) बुधद्रव ।

बुधार्थार्थमन्त्रोः (स) विद्या-  
मन्त्रेण, दक्ष भोजन, शुच-  
मन्त्रेण च ।

बुधद्रवः (स) बुधार्थं दद्यात्  
बुधार्थं, नाम भद्रम् ।

बुधद्रवः (स) पञ्चमं च ।

बुधार्थः (स) बुधस्य, भूगु-  
णः, भोजन, चरितम् ।

बुधार्थः (स) बुधस्य भोजन, भू-  
गुणः, बुधार्थं नाम कन्द-  
द्रवम् । इति च नमो भोजनम् ।

प्रजापति सत्यं च ।

नाम कन्द परमेश्वर सदा-

नदं दृष्टिं विधाता ॥

आत्म भू भोः स्वयं चतुरा-

गणं चरितम् ॥ अथ योनि

सुरादेष्टं चैव वाहनं देवा-

चरितम् ॥ अथः कर्मफलं

मनस्येष्टं वितामन्त्रं विरचितं

बुधार्थं तदा ॥ यद्वा ददं च-

प्यरोक्षं चतुर्दशं चरितम्  
चरितम् । दौ- । अथ चरितम्

चरितम् विधिं विता, च-

सिद्धिं दद्यात् । अष्टा च-

रामन विपन्न, भीषणं च-

रितम् ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

रितम् चरितम् चरितम्, च-

द्वारासर्वस्वः । (घ) दुरदुर ।

द्वारासर्वस्वः (च) } वभनेठी ।  
द्वारासर्वस्वः (द) }

द्वारासर्वस्वः (च) दुरदुर ।

द्वारासर्वस्वः (द) दुरदुर ।

द्वारासर्वस्वः (च) दुरदुर, विम,

अतप्यादि चार पन्थ वि-

मिष द्वात्रिंश वा दस, वा

दीर्घ वा पीन नाम—हृद

कलहं, दारुण ललाट

विम द्विज द्वात्रिंश ॥ भूसुर

सर्वि मोद भयो भूपति

मन ॥ करि द्याल कुट

व्यत कर व्यपदेया ॥

निम द्वात्रिंश चपट दस दस

चपदेया ॥ १ ॥ महिषाय

कोन तसु दीर्घविमाता ।

गुरु प्राण हृदय आयुत

तसु द्याल ॥ पुनि पीन

पृथु पृथु करि निज

कादा ॥ दसहं हृद

दस दस वसु माया ॥ २ ॥

विषाद (च) दुर, दीर्घ,

दीर्घाता ।

विमिष (द) विटी, दूताविमिष ।

दीर्घा (च) द्याल, संकीर्ण,

माम ।

दीर्घा (च) पनेकप्रकारक धान्य ।

दीर्घा (द) गृहमन्त्रक ।

अ

अ [स] नक्षत्र, पश्चिमी पादि

२७ । भा चमकना, चर,

रामि, शुक्राचार्या नक्षत्र

[नक्षत्र पदं चना वा जाना]

तारा, नक्षत्र २७ हे जेवे

१ चमकी, २ भरणी, ३

कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५

मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पु-

नर्वस, ८ पुष्य, ९ अश्लेषा,

१० मघा, ११ पूर्वाषाढा-

शुक्ल, १२ उत्तराषाढाशुक्ल

१३ ज्येष्ठा, १४ विहा, १५

स्वाती, १६ विमला, १७

अमरावती, १८ ज्येष्ठा, १९

शुक्ल, २० पूर्वाषाढा, २१

उत्तराषाढा, २२ अश्लेषा,

२३ शनिष्ठा, २४ मत्तमिषा,



भजन [ न ] सेवा, गुणवाद,

भक्ति, ध्यान, आराधन,  
तीरना ।

भजन [ उ ] सामर्थ्य, विदारण  
तीरना, नागहरना ।

भजामहे. [ म ] भजत हो हम  
सब, हम सब भजते हैं,  
हम भजते हैं ।

भजामि. ( ङ ) मैं भजतु है, मैं  
भजता हूँ ।

भजी. ( ष ) चङ्कितकीर,  
अंगिकार किया, भजना ।

भजे. ( ष ) धनतरी, मैं भजता हूँ ।

भजन. ( स ) नायक, साधारण,  
अप्यकारक, नाग, नाय-  
करनीवाला ।

भट [ ष ] दोर, नूर, तनूर,  
दीया, बहादुर, सिपाही ।

भटभरे भटभरे [ ष ] कट, दुःख,  
धका खात फिरत, धका  
खाते फिरते हैं, टखन,  
भजनादिक सतसंग होने  
का, पण्डित का विद्वान्  
प्राप्ति करना ताकी भट

भरे करी । [ उपाधिभट ]

भट. [ म ] पण्डित, विद्यावान्,  
भट्टाकी भट्टिया [ म ] बैंगन ।

भट्ट [ म ] निरिक्त ।

भट्टिहार भट्टिहारे ( ट ) स्नान

का अभाव संवत् निरक्त तें

चोरनाई रसोईघर गी

भाई, या गौरी गी-चरतें

संगसभातें गी पीपनी

भोजनसुखीजना, चोरी,

भट्टिहाट दे । धी. । धी.

द्वेष सीध स्नान की नाई ।

इत छत चितर चर्चा भ-

ट्टिहार । पदार्थ भट्टि-

हार चोरी करे चट्टे गान

ट्टिहार चोरी की बुद्धिखल

छादि से कहत है ।

भण्डी भण्डीतकी. [ ष ] मंजीठ ।

भण्डीर [ ष ] सिरिह, चोरीह  
साग ।

भण्डीरी [ ष ] मंजीठ ।

भण्डीश [ म ] निरिक्त ।

भण्ड भण्डे [ ष ] कहत हैं,  
कहने हैं ।



भर्षति. [स] कहत है सब ।

भर्षि भनि [प] कहि के,  
कह करबे ।

भर्षित भषी भनित [स] स-  
यन, कथित, सल, कहा  
हुआ, कहना, कविता ।

भर्ष. मनु. [प] कहो, कहते हो ।

मयहु. [प] कहत हो ।

भर्षे. भनी. [प] कहै ।

भगता. [द] कहते हैं ।

भर्षेय. भर्षेस [स. प] प्रकृति  
प्रत्ययरहित, निन्दित, निष-  
ककारा, खराब, गबारी,  
मंवरजं निदायोग्य ।

भर्षे. [द] मंद ।

भर्ष. (स) कल्याण, मसा, चन्दन,  
भाष्यमानी, सुष्ठुन, मंगस,  
मुष्ट ।

भर्ष. (स) गी ।

भर्षपथी. [स] गन्धार, गंध  
प्रसारिणी, युक्त ।

भर्षमुष्ण. [स] रमसरक्षा ।

भर्षमुष्ण. [स] नागरमीषा ।

भर्षय. [स] इंद्रायय ।

भर्षवती. [स] कायकर ।

भर्षवता. [स] गंधप्रसा(र)णी ।

भर्षयो. [स] मुपेदवन्दन ।

भर्षा. [स] कायकर, चनसुर ।

भर्षेसा. [स] रक्षी. कृताक्षी ।

भनी. [स] कही ।

भर्षनीना. मु. सिर के बाह  
थोर दाढ़ी मूँह की बाह  
मुँहाना ( हिन्दुओं में एक  
रीति है जिसमें कोई मरत  
के तब सद्यवा तीर्थ पर  
बाह मुँहाने है ) ।

भर्ष. [स] जनम, संसार, मर्ज,  
कुल्याण, सुयम, कुदुम्भ,  
परिवार, होय, स्थिति ।

भर्षवाता. [द] भर्ष मर्षादेव  
वामाप्ता, पार्वती, तिरिमा  
येसना ।

भर्षतः [स] दिहोत है ।

भर्षताम् [स] दिहोय ।

भर्षति. [स] एकहोत है ।

भर्षन् भर्षद् [स] एकहोय ।

भर्षन. [स] वर, गृही सदर,  
मान, ममान, गृह ।

भवन् [स] सब होय ।

भवभयदाता [स] संसार के भय  
के हरनेवाले ।

भवक्ति [म] सब होत है ।

भवभोरा [द] संसार का भय ।

भवा भवानो [स] पार्श्वतो,  
गिरिजा ।

भवान् [स] पाप दुष्ट ।

भवाम्बुनाथ [न] संसारमनुष्ट ।

भवाय [स] अन्न, कर्मप्राप्ति ।

भविष्य [स] होनिहार, भवि-  
तव्य, जाने ली होगी ।

भविष्यत् [म] भावीकाल,  
जानेवाला जमानत ।

भवुष्ट [स] कल्याण, मंगल ।

भय [स] दुष्ट, कल्याण,  
भावी, शुभ, सत्य, योग्य ।

भभरता [प] रहनी, घर-  
रावता, फुटपाट होना ।

भरमजाना मु० किसीपर किसी  
बात का संदेह होना ।

भरमखुसना, दा खुसजाना-  
मु० भेद खुसजाना ।

भरमपीलदेना मु० दोरी दास

की प्रगट कर देगा ।

भरतगंवाता मु० अपनी यग  
की बड़ा लगाना, पावर  
खीना ।

भरतनिकलजाता मु० भेद  
खुस जाना । [पासा ।

भसचोड़िया मु० अच्छे बोड़ा-  
भसाकर भसा हीं सोदा कर

गफा हो क० लैसा करेगा  
बैसा पावेगा ।

भनापादमी मु० पच्चा पादमी ।  
भसामानना मु० पदसाग

मानना । [ताना ।  
भलाधेना मु० निरीग मोटा

भलाधगना, मु० पच्चागा-  
नूम होना । [पाये ।

भरीपाये, मु० दहत देर में  
भलाई लेना, मु० सींगी दे साय

पदसाग करना । [ना ।  
भलाई रहना, मु० सुयग रह-

भलाभल्य (य) भलाभास भला  
भल्ये खानेवाला, पखीरी ।

भगर भर, मु० सारी भर ।  
भीमभर, मु० पूरा उब होय ।

शेरभर, मु० घूरा धुंके शेर ।

भयखाना, मु० सरना ।

भभरि. ( प ) घबराइ कै, फुट  
काट कै, घबरा कर के ।

भभरो (इ) घबराया ।

भय. (स) डर, लास, भीति, चोफ.  
भयमनि—दोहा । माध्या  
हर पार्तक भय, भीत भीर  
पुनि नाम । डरत सचरी  
सकच ते, गर्व कंवरि के  
पास ॥१॥ पुनः—छंद मारं-  
ग । पादक भे भीत माध्या  
दर नाम । भीमस को  
कीव सुप्रीव के नाम ॥ छे  
भीर कीन्ही बिने नाव दै-  
त्यारि ॥ मारंग ये छंद त-  
गान है चारि ॥ १ ॥

भयहर. (स) भयानक, भीड़ा,  
डरीना, भय जनक, चोफ-  
नाक, लिस के देखने से  
भय हो । भयहर वा सम  
वा सुभाष नाम छंद दोये ।  
राम व्यास तनु मल वि-

भीमभयकारी ।

भीषण वीर भयंकर भैर  
प्रति मय भयानक डारी  
दद युत करि यंधु दीव  
मिभि चारु राटि के मोरे  
संभ सप्यो सनस्याम कां  
सम सदक सदम तनुवारी  
पुनि सचाग सदम सचरी  
तुल्य सधम समाना ॥ भा  
संचहरि केय गहे नृप  
रधि चटकि दत प्राता  
कांसल प्रजात भीत विषम  
हरि चानिज निमग्न सुभाष  
धाम दियो निज बला  
भीस वसु दीये छंद बचारे  
॥ २ ॥

तिर ।

भयंकर. (स) भय भीत, गंदा-  
भयक (न) सधु भारी की की ।  
भयानक. (स) भयंकर, दै  
विशेष भयानकरा दोहा ।  
निपट विचट नरसिंह वर  
सुगम निचट न कात ।  
कीरि पानि पदकाद तर,  
कीन्द बिने बह भात ।

भयानकः (न) भयदाई ।

भयावहा (म) डानिवाला ।

भयं भय, भयन. (म) पति.

पति, धारण, पोषण.

पातन, भू भवना ।

भरा (द) भीमा, पोषण, पो-  
सना, धारण ।

भरणी. भरणी (म. द) भिक्षाकार

जन्तु संपूर्ण उदरमाग्न,

नक्षत्रविशेष. एक नक्षत्र

का नाम, मधुकुल स्थित

गोत. मूत्र जो जल देग में

पतित है । मीप का भावा,

पक्षी विशेष. देवा, गरुड

मत्त ।

भरत- (म.) खण्डविशेष, राज

जन्तु आता हेतु यो पक्ष ।

भरुडाण. (म.) मृत्ति विशेष ।

भरव- (द) दितावना, काटना.

काटना, दितावक ।

भरि, भारिता (प) पूर्ण, पूरन ।

भम (म) } भिक्षा ।  
भयावहा }

भयंभय- (म) भयनी ।

भयभय- (म) भुपेद सीसव ।

भयट (म) हरिश्चकार ।

भयभय- (म) शिव, गिरीश,

व्योति, तेज, प्रकाश, रो-

जनी । [ लक्ष्मी

भयानि- (म) भयान, पति, पा-

भवना (द) वर ।

भयपंथ (म) गरुडगोत्रा ।

भव- (प) भेषा, हेषा, भया,

संसार, शिव, कला, भय-

गन्ध-दोहा । भव मंदार

संसार भव, भव कहिये

कल्याण ॥ भव मंदार जल

जगत फल, जल भयिषी

भयवान ॥ १ ॥

भयंत (म) पाप की ।

भयंभय (म) पाप का भय ।

भयंभय (म) संसार का फल ।

भयभयिषि (म) संसार की

समुद्र ।

भयन् (म) भय, राय, दार,

[ दार ।

भयंत- (प) मदी, कोष कोद,

भोरा लक्ष्मी भयंत, भयंत

गोत । दौ. ॥ प्रकटि

पधारे हरिश्चकार, लोहे

हरि को यम ॥ पथ सुना-  
वत नियमवति, योगज्ञान  
मार्ग ॥ १ ॥ छंद बाबा ॥  
ज्ञानविज्ञान तप योग-  
धारे ॥ ध्यान सन्धान गुण  
राग नारे ॥ दीन संदेश ये  
नंदलाभा ॥ सत दश गत  
को छंद बाबा ॥ २ ॥

भा (म द) मन्त्रालय, समक  
साभा, भव, दुषा, ।

ਸੰਖਿ ਮਾਤਿ (੧) ਪਾਤਿ ਸਕਲ  
ਕਾਰੀਯਾਰ।

भाह (प) मेम, सेह का लघुप,  
भाह, भावना, सता, कथा

भाग भाष्य (ग) चंग, विद्या,  
मट्टि, पाश्च, नसोब, विभाग,  
एकदेश, विभाग्यगोप्य,  
गुभाग्यसदृश कर्म. प्रा-

રથ, ક્ષિપ્રગ, માગનદમ ।  
 દોષા ॥ માગ ધેય વિધિ

दृष्टिपुनि, देव भाग वम  
कंस ॥ बांधि पठायो राज

निज, सखत भई मति  
कंच ॥ १ ॥

भागसुखम्, भागजानम्  
भाग्यवान् हीनः।

भागभरीसा.भु.धीरज,टा.  
भागनिष्कभना.स.निष्क

सना, भागवतसुभा।

મહામહાશય, સુ. નિહલવ  
મહામહાશય, સુ. નિહલવ

भोगना, पक्षानादीनां  
पक्षानां वरणा ।

भाग: माग, सु० दीक्षादीक्ष  
भाषा: म० वनाग

રૂપાચાર હોના ।

मः म लो भूये विषाद

जो मन्त्री भी राज गौर  
मः से के ल-ए पण मण

बहुत प्यारी है।

भगवद्गोप (म) राजपुत्र विमि  
कपुत्र । । श्री

भा. गोरखी (घ) गङ्गा (नदी) ।  
 १५८ भा. ग. (स. प्र.) कपा ।

ਅੰਤ, ਗਿਣਤੀ :

भाष्यवत्स. (भ) घारव्यी, सज्जी-  
यान्, धनवान्, । [ वाच. ]

भाष्यभाजन. (स) भाष्य का

भाजन. भाष्य. (स-प) वरतन,

भंहा, बाधन, पाप, योग्य।

भाजा. (द) मोटा।

भाजीमारना. दु. रोकदेना।

भाङि. (ग) वरतन, भाङ।

भाणा. (प) बाधन। [ व्यंज. ]

भाया. (स) तरकम, तीर का

भायी. (स) तरकम।

भायी की भरन. दु. बहुत

भारी मेह ओ भायी मे

वरगता है। [ मान्. ]

भाधर. (ग) गोभाधर, गोभा-

भाधु. (स) धैर्य, भास्कर, रवि,

प्रभु, राजा, सूर्य।

भानुवर. (स) सूर्यद्विरल, धूरा

भानुकुल्लैरवधेदु. (द) राम;

योग गति गति वसु हो

वनेदु। देवि भानुकुल्लै-

रवधेदु र वरति भानुकुल्लै

लो कोहो वा वन है ताके

धेदु की राम को देवि है

गति गति है वसु वनेदु

होत है।

भानुपीठ सोम्यसुखी पत्नी।

भानुफला. (स) कोठा, लोहा,

हंसि।

भानुजा. (स) जमुना, रवितनया।

भाध. (स) प्रकृति, चादर, प्रेम।

भावी. (स) रोगवाली।

भाधु. (स) वण्णाथ, मुद्गि, गत।

भामा. (स) ली, नारी, लोभयुक्ता।

भामित. (ग) कोंपी, कोपी।

भामिनी. (स) ली, नारी, क-

हंसा, लड़ाही, लोभयुक्ता

ली। [ विवाह विमेष। ]

भास्वरी. (प) सुमाचट, दिधि-

भाध. (ग) भ्रामा, भाध।

भायन. (प) भावपता, भैरवा।

भायि. (प) भाव, सुन्दर।

भाय. (स) बीज, पांटी, बलही।

भायते. (स) चरसता, बाधो।

भायतोहार. (स) वयोपवीत,

ननेदु।

भायदाज. (स) भायदे वली,

भारदाज मुनि पुत्र।

भारवाह (न) बहार,  
मोटिया, बहंगीटाह ।

भारमही (म) पुष्पो का भार ।

भाइ (म) बभनेठी ।

भारीभरकम मु० गंभीर, भ-  
क्षामानुस, सहनेवाला ।

भारी पत्थर चम } मु० जो  
भार छोड़ देना } काम चपने

न हीसके उसको छोड़  
देना । [ होना ।

भारीहोना मु० बहुत कठिन  
भार (द) भारी ।

भोगी (स) शुक्रवार ।

भोगी (म) भोजा दूध ।

भोगी (स) बभनेठी ।

भोगी (स) स्त्री, पत्नी, मिहरी,  
विवाहिता स्त्री ।

भास (स) सीकाट, सखाट,  
तीर, का फाक, माघ, माघा,

मंदाह । [ बेल, सांग ।

भासा (स) बर्छी जधियार,

भासा (प) बर्छी, बलम के-  
कैत ।

भाय (स. प) प्रेम, भावना,  
जना, सखा, मोल, जगु ।

भावता (स) प्रिय, चारित,  
प्रेमी ।

भावन (स) सोचात, प्रसन्न ।

भावना (स) भावना, सोचात,  
पण्डितमन ।

भावयताना, मु० जीवसावर-  
ना, नाचने में हाथ पैर  
चाँख पाटि पंगी दे,  
गारा करना ।

भावी (स) डींगहार ।

भाय (स) जयन, मान, कर,  
भयना ।

भायण (स) जयन, करना ।

भाषा (स) स्त्री, भाष्यकना,  
बोसना, बोली, बाणी, स-

स्वती, जो संस्कृत नहीं  
है । प्राकृत, मरधी, मर-

वाणी, पट्टदेयवाणी, स्त्रीवा-  
संस्कृत प्राकृतस्यैव मरधी

स भाषणम् । नैवार्थं पाट-  
सस्यैव भाषायां सचवा-

नि पट्ट ३ १ ॥ वाक्य, ज-

मान, कहना, भाषना,  
कहना, भाषा, भाष्यद्वय

दर्द - गोर्वाणवादी नि-  
 पुषी रामसौम्यत सदा ।  
 रामस्तरसती जिज्ञो वृद्धो  
 लोकापसितः ॥ देवदाग-  
 वनागानां भाषामिज्ञां  
 बह्वहः । भूतप्रेत पिशाचा-  
 नां भाषाविद्राघवः प्रभुः ।  
 चण्डान्यदेय भाषामिज्ञा-  
 नैव व्यवहारकः । सर्वत-  
 त्तरी रामः फारसीमपि  
 पठितवान् । कीमानां भा-  
 षया रामः कीमिषुव्यादे-  
 गितः । कृष्णवस पक्षेपु  
 तेषां नीमिस्तदेवमः । या-  
 दंतः फारसीनीचे देव वि-  
 षाचभीवनः । तेषामाचा-  
 वंतां मात्पोरामी दाग्रदि-  
 रुतैः । भाषा बोली जैसे  
 मद्रास में बड़ासा, भीट में  
 भीटिया, मद्रास में मय-  
 पासी, कन्नौर में कन्नौरी  
 पंजाब में पंजाबी, सिन्ध में  
 सिन्धी, गुजरात में गुजराती,  
 राजपुताने में देसगली,

बृज में बृजभाषा, तिरहुत  
 में मैथिली, बुन्देलखण्ड में  
 बुन्देलखण्डी, छत्ते में  
 छत्तिया, तिलंगाने में तैल-  
 गी, पूना सिन्धारी की त-  
 रफ अहमदाबी, कर्नाटक  
 में कर्नाटकी, द्रविड़ में  
 तामली, भिमे 'पन्थ' भी  
 करते हैं बोलियां बोली-  
 काती हैं । इन सब में बृ-  
 जभाषा बहुत प्रसिद्ध और  
 पन्थस्त मंडर कोमल प्यारी  
 और रसीली है, और  
 कितनेही साध्य के पन्थ  
 इस भाषा में कवि लोगो  
 ने बहुत मंदर और गामो  
 रचे हैं । पुरानी पौण्ड्रियों  
 में जो इस भाषा लिखी  
 है पद्योंत पंचगीह और  
 पंचद्राविड़ । पंचगीह में  
 फारसत, शागकुस, गीह  
 मिदिषा और चंडेसा और  
 द्राविड़ में तामल महा-  
 राट् कर्नाट तैलंग और



सुझैरा सो इन में ये जो  
 बोली कान्यकुब्ज में बोली  
 जाती थी वही हिन्दी की  
 लड़ है । प्राचीन समय में  
 यही प्राकृत प्रयोग मा  
 गरी भाषा बोलीजाती  
 थी, बौद्धमत और जैनमत  
 की बहुत बोली इसी भाषा  
 में लिखी हैं ।

भाषित (स) कवित, कहाहु-  
 वा, कहाहुया । [निवाका ।  
 भाषित् (स) बोली, बात कर  
 भाषि (प) कहे, कये, बोले ।  
 भाष्य- (स) टीका, टिप्पणी,  
 प्रवचन ।

भाष्य (स) प्रकाश ।

भाषू- (स) भक्तक, ज्योति ।

भाष्यर- भाष्यत् (स) सूय, दिवा-  
 कर, मय, प्रकाशक, यमि ।

भाष्य (स) निषेधी, दोषिमात्र ।

भिक्षिप- (स) देवकी,   
 जापरचक्र, देवादेवत,  
 विष्णुदेव ।

भित्ति (स) भित्ति, दीवार ।

भिक्षिपाथ- (स)

काता ।

भिक्ष- (स) प्रवच, प्रवचन,

प्रवचन, सुद्ध ।

भिक्षपात्रणी- (स) कलाभोली ।

भिक्ष- (स) व्याधा

भिक्षटा- (स) } भात ।

भिक्षा- (स) }

भिक्षाण्ड- (स) कमलकंद

भिक्षागता- (स) बाक्य

भिक्षा- (स) भात । [भिक्षा]

भिक्षु (स) ताकमयाना, बोली

भिक्षा (स) भीष ।

भिक्षाक-भिक्षु- भिक्षु-

तपस्वी, भिक्षारी

सत्यापी, यति ।

भिक्षावा (स) भीषवि

भिक्षागानाम- (स) भीष

सुद्ध प्रवचन प

वीरकपमकात । इन्द्रमय

देखे विना, देवदत्त वर

जात । ११

भी- (स, क) भीर, विर, ती

भय ।

भीड़भाड़. सु० ठठ. भीड़ ।

भीड़भाड़वा. सु० बहुत से पा-

दमियों का दण्डा होना ।

भीत (प० मी) भित्ति, दिवार, डर ।

भीति (प० प) भय, डर, गह्रा,

तास, डीकार, भित्ति ।

भीम (स) हेरीना, भयंकर,

रोगविमोद, पांडव वायुपुत्र

पाथी कहा है । भीममेग

नाम—होहा । कीचल गढ़,

प्रकोट, पुदुचिपु वायु

कुमार । भीममेग भेटे

हरद, अरुणकुमुत बहु-

दाय । १ । महे भेति प

कूरपति, मधुपुर दरि

मि पाय । एकर पांख

तन ही बड़े, बहुत बड़े

समस्याय । २ । होरता ।

दुदुपति भक्ति प्रनिष्ट, य

अथ बड़े सिध्यामना । ३-

हमिहि कवनिहि, तट

वदन निहदार पर । ४ ।

भीर (स) काल, करिब, बीना,

(स) धूम धाम ।

भीरा (स) बीना, भीड़, कर ।

भीर { (स) करण, भयंकर,  
भीर { कादर, बी, डरपी-

कना, कातर ।

भीर (स) बलाही मनावर ।

भीरप (स) बलाही ।

भुमादा (स) बागा ।

भुज (स) भुजा, बाँझ, दण्ड

पसुरा—सूँद । हर गोम

बर भुज पदन, जहं गहं

कर्म महि परत । पदीन्

भुज पसुरा कर पदुना ।

हंग विमान भुज पसुरा

कामे बिजावठ पीर कर

कामे सुदरी वटन दादि ।

भुंदावा (स) ताजाव दा भेट,

दुन से कई एक माय है ।

१—भीजावदिदा, २ कन-

रह, ३ कमीचिदा ४ मने-

दिदा, ५ दौनवा ६ नका-

अथ ७ बीमापदार ८

बिजवार ९ बीनन १०

दण्डवार ११ पदपदिदा

१२ डेदिदा १३ मिहो-

दिदा १४ देरवार १५

मरदनी १६ बीनकिदा १७

१६ मेरुवरिया १७ धेवरानी  
 १८ बोरिडा १९ दोधव-  
 दत २० लघवरिया २१  
 मोरानि २२ खेनियार २३  
 पदलवार २४ भडान २५  
 गारहाजी २६ पदरच २७  
 सरवे २८ चडवार २९  
 लनीवार ३० चकवार ३१  
 परदावे ३२ लाभी ३३  
 सुपारगनी ३४ खेरयुषार  
 ३५ कलेचनिया ३६ । च-  
 ष्यगीती ३७ ।

भुजबीडा ( ६ ) बीसीभना  
 बाका, बावन । यहाँ  
 बीसा मे बीडा बना है ।

भुजङ्ग ( स ) भय, व्यास,  
 भुपङ्ग ( स ) चदि, साप ।

भुजङ्गनागिनी ( स ) नागिनी ।

भुजङ्ग ( स ) बीसा धातु ।

भुजङ्गनाय ( स ) शिव, गङ्गा ।

भुजङ्गाची ( स ) नाई ।

भुजवसी ( स ) लज्जुवा, पञ्चा ।

भुजवस. भुजविनामा ( स ) १।  
 दुवस ।

भुजव ( प ) भोग करेगा ।

भुरची छानगा. सु. काटू पे दस  
 मे करलेगा । [ छानगा ]

भुजाचोरेना, सु. बीसादेना,  
 भुज ( स ) क्षमा, धर्म, पा-  
 धाम । [ बीसा ]

भुजङ्ग ( स ) नाग, भुजङ्ग,  
 भुजङ्गिनी भुजङ्गिनी ( दृष्ट )  
 नागिनी, सापिनी ।

भुजव ( स ) गगण, पृथिवी,  
 लक्ष, विभुवन नावक,  
 मन्दिर, जगत्, पासाय,  
 गगुण, मङ्गादि ।

भुजविचार ( स ) शोक ।

भुज्यागत कीटोनी बीसा  
 नागामितमृगा । सप्त वस-  
 तगायतचलतापादपमृ-

ता ॥ १३ मयोदादय कीटि-  
 पक्ष कीटि वनानि च ।

पुरवहन्यासायद्विगति  
 बीटवः ॥ २४ इति वज्रुमान

नाटक प्रताप ।



भूतिषः (स) रोहिण, यमिषा

गुरः । मिहोडा ।

भूगः । म । बहेडावण

भूगः ( स ) भूगः भूमि

य गाम, पुष्पिगाम, य मी

म, भूगः गुरः । ( गिण ।

भूगः (स), भूगः, भूगः, भूगः

भूगः (स) यमिषागुरः ।

भूगः (स) बहेडावण ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूगः (स) भूगः ।

भूमिपुत्रः (स) ब्रूयन् ।

भूमिसह-भूमोसह- (म.ट) भुंरस-

भूम्यामनाती- (स) भुंरचयरा ।

भूयः (स) वारम्बार, पुनः केर ।

भूयोभूयः- (स) पुनः पुनः और

और केर केर ।

भूर- (म) विस्तार, दान, द-

क्षिणा, पहाड़ ।

भूरि. भूरी- (म, द) चाफाग,

विद्यार, कम्बू, चधक,

दहृत । अनंतकान-दो-

चमिता नैक चधिकं नरिम,

चति अनंत भूयिष्ठ । ब-

हन भूरि गामृत मर, प-

प्लव विप्लव बहिष्ठ ॥ १ ॥

भूरिगान. (म) बड़ाभाष्य ।

भूरि. (स) सरहीसीन ।

भूर्ज, भूय्ये- (द-म) लाव, भो-

कपचहृष्ट, भूय्यगान-दो-

एही चर्मी गृदुत्वचा,

भूय्य गहान पदित । देखी

परी कहू मन प्रिया, कासु

सिंमार दिवित ॥ १ ॥

भूर्जपत्र- (स) भोजपत्र ।

भूर्जतण- (स) भोजपत्रका हृष्ट ।

भूनाविमरा- } सु० भटकाह-  
भूनाभटका. } चा, राखा भू-

स्तकर इधर उधर फिर-

नेवाला ।

भूय- (स) चक्रहार, श्रीमा ।

भूषण- (स) चलंकार, श्रीमा,

गहना, जेवर । भूषण वा

दर्पणनाम—छंदचंदरीक ।

सोभित रमणीक कुंजफूले

तर समन पुंन लेत गंध

अन्न गुंन विपिन गहरी ।

सित सुगंध पवन मंद

सुधा वैग शकुन हृन्द चर-

गण युग पुष्पचंद्र मंद गर्व-

री ॥ मंद मिगार चिम वसंत

प्रोषण वरपा बंदत घट

कृत गुप कवि अनंत रास

निमिकारी ॥ ऐसी कष्टि

दनविहार समग समग

मन उदार कीर्तिसुता

एवि निहारि मोद गह्व-

री ॥ १ ॥ कुसुमनि भूषण

समारि मंदन प्रो कसं-

किरि चमरेंचो चौ परिष्कार  
 विरचि मित्र चरो ।  
 राधे के चंगधारि किन्हे  
 घोडग सिंगार नय शिप  
 को सब प्रकार रूप ना-  
 गरी । देख्यो प्रतिबिम्ब सु-  
 कर देवेंच पादेंच सुवर  
 तिभुवन दुति सैवि निवर  
 काठली धरो । हादग हा-  
 दग तिवार मसुकन पुनि  
 अंत धारि हरिविस्तार  
 छंद सोर निच चंचरी ॥२॥  
 हादग भयवनाम—हंद  
 बोला । गोलसाज कोभाग  
 मधुर बीननि तनु कोभन ।  
 बेनीमैम चंटाचमंद विहं  
 मन वपु निर्मल ॥ वति  
 से प्रीति चमक्य यहुरि  
 कोड़ा दंतो गति । यह  
 हादग चामरन छंदोका  
 बोलीम मत ॥ १ ॥ गहनी  
 के नाम—चमकट, चं-  
 पा, पाक पावली, जगनी,  
 चंगुटी, चमूटा चमूना,

कंगना, कचमी, चम-  
 लच, कंटवा, कंटिया, क-  
 टेसरी, कुंडल, कड़ा, कंडा,  
 कंठी, कचकल, का-  
 करचमी, कंसकी, चविना,  
 गहुपा, सुटिया, चोविना,  
 गंजरिया, गुनरी, गुन-  
 चरी, गुनूचन्द, गोव, दुहा,  
 घुंघरू, गुग्गी, चमूना,  
 चमूना, चमूना, चमूना, चमूना,  
 चोटी, चूको, चोली, चम-  
 दना, चंगनू, चाप, चमूना,  
 चमूना, जवा, चुगनू, जमी,  
 जोगन, जहांगीरी, कीरु,  
 चुम्क, भूमर, भांसा, भू-  
 गल, भाविया, भासा, भि-  
 म्भिमिया, भुग्गी, भि-  
 य, टीका, टीक,  
 कडा, कचकोवा, कचको-  
 नेती, तिकरी, तीका, त-  
 तरिवन, (तप्योना) तीक-  
 तावीज, दोहरिया, दुहा,  
 री, दस्तबन्द, धुंघरू,  
 दुनी, नविया, नविया,

गोगगा: (नवरत्न) नूपुर.  
 नेहरा, नादपत्नी. नक्षत्र-  
 गर, पायस, पाजिब, पोरि-  
 दा, पाग, पगवान, पैजमी,  
 पटुपा, पटिना, पटुचारी,  
 पटुनी, पतामी, पता, पी  
 परपता, पैरो. पटा, पं-  
 जलरो, पटुनी, पसीलम,  
 पुडुहरी, बाजू. बरीपी, ब-  
 हुंटा, बांक, दाहुसा, दि-  
 कादठ, दम्पी, विद्विद,  
 डेसर, दासा, बारो, (दासी)  
 दिङ्गी, दडी, बुलाक, हं-  
 गुरी. बंधनी. भुजबन्दा, मो-  
 दनमाला, माला. मंदार-  
 नादा, मोती. मोरभंवर,  
 मोतीकहा, मझी, संग  
 टोका (टीका) टंघ, (जंतर)  
 रद्दास, रावटी, रद्दु कर  
 क, रथ्या, रसंग, रिरदरां.  
 (रुहा) मोनफूल, मुरज-  
 मुषी, मोनसर, मिहरी,  
 सहक, रेष्टी: सतलरी,

रेकल. हुमेर, हंसमी,  
 हाथपान, दास ।

भूषित. (म) भूषणयुक्त, गोभा-  
 दाना, मोभित ।

भूषण. (र) दूधप, गद्दीसर ।  
 भुडुटी. भुडुटि. (स) भौंर, भु,  
 सुडकी ।

भुडुटीभंग. (स) भौंर का फेरगा  
 भुग. (स) कन्दसा. गूड. ठांग,  
 गुनि विमिय, गुलदार ।

भुगुरायम. भुगुदेव. (स. ट) एष  
 तीर्थेस्थान लो जिना गा-  
 लीपुर मे पीर परगना. द  
 निदा मे है । ददरीगाम  
 भी भुगुदेव का है ।

भुगुभवा. (म) बभगीठी ।

भुगुनाथ. भुगुपति. (स) परसु-  
 राग विप्र । [ भौरा ।

भृङ्ग. (स) भ र कीट, भ्रगर,

भृङ्ग. (स) मध, तल मिहराज ।

भृङ्गरा. } (स) भेगराज ।  
 भृङ्गराज. }

भृङ्गी. (स) झुझारी कीट विमिय,  
 विप्र, दूत विमिय, मोरी,  
 मरादेव का गर ।



मृति- (स) क्षमीर्ह, मज्जुरो, वेगन  
भूय (ग) दाम मेत्रय, चोक्क,  
चेक्क, छिदमतगार, मृथ-  
गाम, टो० । विधिकरकिं-  
कर दाम पुनि, पमुवर  
अमुगम दत्त । मृथकिरत  
लहं मैगवे, क्वदि घेरनी  
नहिं जात ॥३॥ [ चेत्तो ।

भृश (स) दासी, चाकरणी,  
भृश (स) वारव्या, चविक, ।  
भृशकधी. (स) भृशकोरडा ।  
भे-भये. (स) भिषो, इषा ।  
भे. (स) भीमा, तरे, भेया,  
इषा, गीकी, भिगाया,  
भेना, भिगोना ।

मि. (प) मिड, गैस, जूटाई, फूट  
आपना मोहना, ममी.

ਮੇਥ (ਸ) ਮੰਦਰ, ਅੰਗ ਬੇਥ,  
ਭਾਦਰ, ਮਿਥੁਰਾ, ਮੇਥੁਰਾ ।

मिटमेट (दूध) मेट्रो, बाली,  
नगरपालिका, मन्थली, काठमाडौं ।

मैण्ड (स) मैण्ड ।

मिद (म) निवभाष, भव, गुण  
की बात, मे, मे, मी, तो  
इत्यादि देहाभिधान, मोक्ष

राजमोति विमेष, दुःखमा  
भक्त, प्रेम्, अभिप्रेत  
कर्क, मे अग्रद मे देवो ।

मैत्रवद्वायाः (४) मैत्रवद्वाया १७

मदसेनाः सु० द्वितीयां पुराणां  
को मासेन कदमः ।

गोदधरना, मु. छिपाते जीव  
बाग को कहतेना।

मेहखोबना: मु. विपीरात  
को पगट करना।

मिथुनस्य ग. म. अंशोऽर्धे

मेडिकल कलेज, मु. नर नाथ  
 ११ जे. एम. सो. ए. ए. ए. ए.

आसो है, संभ जमी। सोई

आदमी ये समझें कि

कोटि वसति ई सर्व धर्म,  
महामा कोला यता ई।

मि. क. (स) अन्तर्गत, पो. ११११

मिरी स. वा. वा. द्वितीय, दि. २५

नारा, वहा मुंबईसा शिंदे  
महा बाबा ।

|                                |                              |
|--------------------------------|------------------------------|
| ( प ) मेद, गम, लुटारि,         | भीरा भीला (द) दीप, सुधा ।    |
| नर्म, फूट करग, तोड़ना ।        | भीरे (द) भूलवेगो, प्रातकात । |
| २. भेम (स) स्वरूप, चास,        | भीरि भीरी भीसी (प) भूनी,     |
| होस, हवि, । [ दीपधि ]          | बावरी, सीधी, भूतना ।         |
| पन. ( प ) दीपध, द्यारि,        | भीरहीना, मु० विद्यान हीना    |
| दन (द) दीपध ।                  | भोलागाय, मु० महादेव, शिर ।   |
| । (द) भेया, दुपा ।             | भोलाभासा, मु० सदा ।          |
| रय (म) भदागल, एरदेव ।          | भोसी बातें, मु० सीधी बातें,  |
| री (न) भिर, महादेव, रो         | बे कपट बातें ।               |
| मझीधनवाचक ।                    | भी. (म-द) भीति, भय, डर,      |
| भोग (स) मुष्ट । [ मर्दनगरी ।   | चास, भेया, दुपा ।            |
| भोदधती भोगावती, भोगा (स)       | भीतिक (प) भूल कत कत्यात ।    |
| भोगन (स) पदन, पादन, सी-        | भोग (स) मज्जकदार, पद         |
| नता, पाता, भोगन नाम—           | विशेष, संयसय ।               |
| दीडा । पदन पदन भोगन            | भोगलस (स) } इसीबी का         |
| पमल, मदन भोग पदार ।            | भोगासः (स) } पानी ।          |
| नंदनंदन दित रो रसी म-          | भो पदाना, मु० दुष्काहीना ।   |
| धुवर की दितनारि । ।            | भोटेडाकरना, मु० लोरी         |
| भोगनभुविधि ( स ) बाटना,        | पड़ाना । [ दाना ।            |
| धुमना, बीमावला, बीमा ।         | भीडे लागना, मु० लोरी प-      |
| भोगनखानी (द) रमोरे का          | भ्यास (म) छाधन, दितन ।       |
| दा घर ।                        | भंश. } ( स ) घर, नाग,        |
| भोग (स) मुष्ट, पदन ।           | भय. }                        |
| भीर (प) भूल, दूध, मुष्ट, नात । |                              |



सप्तहरण ॥ गहन सवन  
गह गहन सवन संज्ञा-  
रता रहस्य हरणद्वय गम-  
धर ॥ जलमयन गल-  
लक्षण जलहरद लज्जत  
वदन हस्त भक्त शन-  
धर ॥ मदनकदन मद्  
हरण सदन जग सवन  
दशन कर जग सवन  
हर ॥ भक्त भक्त सवन  
वधन जग सवन कहत  
गहन जग रहतन यन  
हर ॥ ॥ दोहा ॥ गोपिन  
मंडल बांधि हरि, नृत्यत  
चति पुराण ॥ धारि  
सुधा धरि दासुरी, भक्त  
सप्तपुर राग ॥ १ ॥

अष्ट (म) पतित, अधर्मी.  
गिपिह, नष्ट ।  
आनरीकव (स) माधवी ।  
आमर (स) गहत ।  
आज (स) गोमा, सलित ।  
आज्ञा-आना } (स-द) मोनित,  
आज्ञा }  
सरित्तान्, सीमना ।

आष्ट (म) सरोवर भारी ।  
आता (स) वन्यु, भारी, दोटे  
भारी को अनुज कहते हैं ।  
अनुजनाम—दोहा । संग  
ममु सोद सवन्यता, मीय  
कनीय कनिष्ठ ॥ यद्योयान-  
धति मायनं, पवरन अनु-  
ल यद्विष्ट ॥ १ ॥

आन्त आन्ति (स) भूज,  
चूक, जम, सुता, भगप,  
चयवार्धन ।

मिंही (म) सुपेदवटसरैया ।  
भुङ्कटी. (स) भौं, गया ।

भूपरसुता (भू.पृथ्वी धर, धृ  
धरनेवाला, सुता, पृथ्वी  
पद्मात् पारयती ) स्त्री०  
गिरिजा, हिमगिरिसुता,  
गमाए शोक । दामोद्री च-  
विभाति भूपरसुता देवा-  
पगामस्तुते । भालेवाल-  
विधुगले च गरमं यज्योर-  
सिध्याचराट । सोयं भूति  
दिभ्यः सुरवरस्तर्वाधिपः  
सर्वदा । सर्वःसर्वगतः

मित्र, मित्रिणिभः श्रीश्रीव-  
र पालमा । अर्थात् जिन  
मन्दर मन्दादाज के पासगीन  
में भूधरमुनि अर्थात् पा-  
वन्ती की विजय माभाय-  
मान है और मन्दाकरी  
मन्दा और मन्दाकरी में वा-  
मविष्णु अर्थात् लयाचारी  
और मन्दा में विष्णु और  
मन्दा में मन्दा मन्दा विष्णु  
करिक भूविष्णु और देवता  
में मन्दा और मन्दा के शास्त्री  
और मन्दा अर्थात् मन्दा कव  
मन्दा और मन्दा अर्थात्  
मन्दा मन्दा और मन्दा  
मन्दा मन्दा और मन्दा  
मन्दा मन्दा और मन्दा  
मन्दा मन्दा और मन्दा

४५ मी. ६, १०५, ५६५।

म

ਅੰਤਰਿ ਭਾਗਿ ਭਾਗਿ ਭਾਗਿ ਭਾਗਿ ਭਾਗਿ  
ਭਾਗਿ ਭਾਗਿ ਭਾਗਿ ਭਾਗਿ ਭਾਗਿ

姓名: 王 强 性别: 男 年龄: 25 岁  
 职业: 教师 单位: 某某中学

मकरः ( ग ) मकर, मयूर, वि  
मोहाया ॥ कं का गं हं  
जाता है ऐसे लोक, का  
मकर, साग, यादि विवि  
विजय, मोम, मकर, म  
कस्तु, समुद्र, वसुधादि  
दुर्गद्वारि, मयूरी, म  
यादि, मयूर ।

मकरवादी ( म ), कोमुदी  
मकर की वादी, मकर  
वादीनाम - दी. १. म  
तिनाम पुनि कोमुदी,  
मकरवादी नाम - को  
की परति बदलते, दो  
द्विदि नाम काव' इ. इ.

महर्षिज (स) कालदेव, १।  
महर्षिज (स) कालदेव, १।

सं.सं. (४) धृ.सं. १९११

मकली, ममरी- } (प)री  
मकड़ी- } इय<sup>१६</sup>।

गिर, गान्धी का दण्ड  
 गिर, गान्धी का दण्ड  
 गिर, गान्धी का दण्ड  
 गिर, गान्धी का दण्ड

सभा नी चप्पारही देपि  
के हंसवे हारण की दुर्ग-  
मा मुनि के आप तें मकर  
की ली मयी, इति पुनए  
मसिह । मकरोनाम—हो-

घुषा सुता मकंटक, तं-  
वाय तंतुवाय । धर्म नाम  
पुन लग यथा, पद्मनाभ  
गुदनाय ॥ १ ॥ ह्यत्र  
विज्ज हरि हरत पुनि,  
जयनि पुनि संसार । पं-  
चतत्त्व मय नीय रुद्र, वि-  
रचत हारंवार ॥ २ ॥ पुनः  
हो । सुता सुता मकरट  
हरी, धर्म नामि पुनि होय  
लनु रुद्र मकरी पुन हरी,  
पकरी दिव्य सोय ॥ ३ ॥

मकुट ( क ) विहरी, मुकुट,  
मीर, चिरीट, ताज ।

मकुट ( क ) पारसी, दपेद, मुंड  
देवते का पारिमर, दपेद ।

मकुट ( क ) तागाकही ।

मकुट ( क ) निरंजी ।

मख. ( स ) यज्ञ, याग, चप्पर ।

मंघमंग ( स ) यज्ञकामंगलोगा ।

मग मगु. ( स ) मगह देम, म-  
गध, शोट, मार्ग, रस्ता ।

मंखी-डाना सु. बिसोकी खु-

मामद या गुतामीकरना

मंगनी देना, सु. उधार देना ।

मन्तीबूष, सु. कंछूत, सुग,  
हपष ।

मन्ती मारना, सु. मुष्टा बैठा

रहना, बिहारबैठारहना ।

मगध ( स ) मगह, देमविजय ।

मगन. ( स ) चामन्द, मसल,  
लवलीन, इबित, ललबु-  
हप, हूडा, खुम ।

मगर. ( स ) हुन्नीर, मगर  
मसल, पाद ।

मम. ( स ) मुदित, मसल,  
लरदूब, लद, लीन,  
हूडाना । [ बांसेद ।

ममवा. ममवान्. ( स ) इन्द्र,

मम ( स ) ममर विदेव ।

ममहिं ( द ) ममाने हो ।

मंगलद्रव्य ( स ) दुआदि ।

शिवः शक्तिनिभः श्रीशैव-  
रः पातुमी । अर्थात् जिन  
महेश्वर महाराज के सामान  
में भूधरसुता अर्थात् पा-  
वैती जो विजय शोभा-  
मान है चौर मण्डप में  
गङ्गा चौर कलाट में वा-  
सविष्णु अर्थात् नयाचाट  
चौर गङ्गा में जिन चौर  
चर ग शिव साई विभूति  
करिके भूविज चौर देवती  
में शिव चौर सब के स्वामी  
चौर सर्व अर्थात् सर्व रूप  
मय चौर सर्वमत अर्थात्  
सब के भिन्न चौर शिव  
कल्याणरूप चौर चन्द्रमा  
के समान शिव के श्री म-  
हेश्वर महाशक्ति रक्षा करें ।  
॥ (म) श्री, श्री, श्री, श्री ।

म

महेश्वर महेश्वर (म) माता का  
चर, देव ।

महेश्वर (म) कदाचित् व  
वचन वचन

मन्त्र (स) मन्त्र, मायः, रि-  
त्योभाषा में वचन जो  
जाता है ऐसे वाक्य, वाक्य,  
वाक्य, वाक्य, वाक्य । विधि  
विधि, मोन, मन्त्र वच-  
न, मन्त्र, दमरादि, वि-  
दमरादि, मन्त्र, मो-  
चादि, मन्त्र ।

मन्त्रवादी (म) श्रीमन्त्रो-  
मन्त्र की वादी, मन्त्र-  
वादी नाम - श्री । म-  
न्त्रवादी पुनः श्रीमन्त्रो, म-  
न्त्रवादी नाम । श्री-  
की परति बदलते, श्री-  
द्वि बलि नाम ।

मन्त्रधन (स) मातृदेव, श्री-  
मानपुत्र । पुत्र का वचन

मन्त्रधन (स) पुत्रदेव, वचन

मन्त्री, मन्त्री (प) श्री-  
मन्त्री

शिव, गानो का वचन श्री-  
मन्त्री, वचन मन्त्र के  
की वचन वचन के वचन  
वचन है । वचन वचन

समि मंघी नदन, मंघी  
साग प्रचंड । मंघी बहरी  
राहु है, को हरि कर विच  
गुण्ड ॥ १ ॥

मंघ. (द) मघ : मिदाही को  
गुसहाग पत्तनाग—दो.  
दरम वेद देवद पण, रं  
चम मंदम हाकु। तब विच  
सहवरि तन चिते, मुच  
की कुंपरि तनाकु ॥ १ ॥

मंघसाधार. ( स ) गोलाधार,  
कुण्डली ।

मण्डली. ( स ) समूह, सम,  
घोष, गुरीय । [राजा ।

मंघनिक } ( स ) मण्डलेसर  
मण्डलीक }

मण्डुपपत्ती. ( स ) मीनपत्ता ।

मण्डुपपत्ती. ( स ) मजीठ, दरगो ।

मण्डुषा. ( स ) दरमी ।

मण्डूर. ( स ) सोहनिदान ।

मण्डित. ( स ) लहित, मूषग,  
मोमिल ।

मण्डावर. ( स ) मण्डिका पानि ।

मंत. ( स ) मति, रीति, धर्म,  
देहाह ।

मत्तगक. ( स ) मत्तवारा चापी ।

मत्तंग. ( स ) एक क्षपि का

गान यया चो. रिपि म.

तंग मदिमा गुग भापी ।

लोव परावर रस सुखा.

री । ययात् क्षपि मत्तंग

को चायोबाद ने बहा के

जानेवाली को दुख नहीं

रहता, चापी, गातक,

इस्त्री ।

मत्तंग. [ स ] चापी ।

मता [ स ] सपदेश, विचार ।

मति [ स ] बुद्धि, सेवा, मनो.

या, ज्ञान, इच्छा, स्मृति ।

मतिवृत्ति. [ स ] बुद्धि का ठहरना,

बुद्धि का ज्ञान ।

मतिवृत्ती. [ स ] बुद्धि का बंदवर

देना ।

मतेम. [ स ] मत्तवारा चापी ।

मत्त [ स ] मत्तक, मत्तवाए,

चनमत्त, चनकी, पागल.

मयानी. ( द ) छेदरि जिम ने दरी

मदि है की निदानते है ।

मत्तशामिनी. [ स ] युवा स्त्री ।



मसमेटहीना, मु० मटहीना ।

मसरचना, मु० मरजागा ।

मटमारना, मु० सुपरचना ।

मस्रन (स.) धान, मोच ।

मस्रम (स) धंवेत, चठोर,  
गुमर ।

मस्रादि (स) बिचार, बिजा ।

मस्रिठा (स) मजीठ ।

मस्रो मंजिर (स) बिबुधा,  
वाद्भुवच निमेष, पायजव  
यादि ।

मस्रोरा (स) भांभ, मजीरा ।

मस्रु (स) वज्रस, मोती, घ  
न्दर, मोभावमान, मनो  
चर, मोमच ।

मस्रुच (स) मोमक, देतमच न  
न्दर, मनोचर, बिदि ।

मस्रुदनि मस्रमनि, (स) मस्र  
मुद्रा, वाचराज ।

मस्रु (स) मोच, मोमिल, मु  
न्दर, वाचिता, वज्रस, म, मो ।

मस्रु १४ बिटारी, कटुक दो ।

मस्रु २० व. ५५०८ ।

मसि-मसी- (स) जीरादि, १४  
सर्पादि, सागण्य मसि-  
द्वि, गुतादि रस ।

मसिबन्ध, (स) पदुचा, वाचकी ।

मसिमय (स) समुद्र, चात्र ।

मसिधा (स) माता का दाना ।

मसिबिठा (स) मोदा तद्विष  
मं वैद्यक मं चतावर ।

मसिमय (स) वैद्यानीन ।

मसिवारा (स) मसिदुग क  
विमेष ।

मसिचर (स) जीरासि ।

मसी (स) कर्पू मसिद्वार ।

मस्र (स) मसि, मसिनी  
मानी । [ ५५० ]

मस्रक (स) मोदीरोटी, मस्र

मस्रम (स) भुवच, मोमिल,  
मस्रार, मस्रार ।

मस्रक (स) वाचराज, मोच  
मस्रक, मोरस, मस्र ।

मस्रक मस्रक (स) मस्रक  
मुद्रा ।

मस्रो (स) मासदेव, मस्रक

ससि मंघी मदन, मंघी  
गाम प्रचंड । मंघी बहुरी  
रोहरी, लो हरि कर विष  
मण्ड ६ १ ६

मंदप. (८) पत्त । प्रिवाणी लो  
नुसवान पत्तनाम—दो  
दस वेप देपद पत्त, रं  
पद मंदप दाकुातव पिय  
सहहरि तन दिते, मुकु  
पी कुंहरि तनाकु ॥ १ ॥

मंडलादार. ( स ) गोलादार,  
कुलली ।

मण्डली. ( स ) समूह, सम,  
दोष, गुरीर । [राजा ।

मंडलिक. } ( स ) मण्डलीय  
मण्डलीक. }

मण्डूबदरी. ( स ) मोनपत्ता ।

मण्डूबदरी. ( स ) मज्जीठ, दरमी ।

मण्डूरा. ( स ) दरमी ।

मण्डूर. ( स ) लोहनिदान ।

मण्डित. ( स ) लहित, मूषण,  
मोनित ।

मण्डितर ( स ) मण्डिका पानि ।

मंत. ( स ) मति, रीति, धर्म.

मन्दाह ।

मतंग. ( स ) मतभारा दापी ।

मतंग. ( स ) एक कृपि का  
नाम यथा लो. रिपि म.  
तंग मज्जिमा गुन भारी ।

लोव परावर रसत सुभा-  
री । यथात् कृपि मतंग  
को पायोबाहू वे वडा के  
लानेवासे को दुख नहीं  
रहता, दापी, नातल,  
रहती ।

मतंगज. [ स ] दापी ।

मना [ स ] चरदेश, विचार ।

मति [ स ] बुद्धि, सेवा, मनो-  
मा, ज्ञान, इच्छा, कृति ।

मतियुति. [ स ] बुद्धि का ठहरना,  
बुद्धि का नाग ।

मतियंती. [ स ] बुद्धि का मंदहर  
देना ।

मतेम. [ स ] मतभारा दापी ।

मता [ स ] मतद, मतवाला,  
चमनरा, चमली, मागल.

मयानी (८) रोहरि निम मंदरी  
मज्जि, लो निमानते

मत्तकाग्रिनी. [ स ] गुना लो

मत्स्य. [स] मीन, मछली ।

मत्सर. (स) ईर्ष्या, चोड़, डाइ,  
हैय, लज्जन, डोइ, पाइ,  
परऐखयँ का न सहना,  
पराई संपत्ति की देखकर  
लज्जना, क्रोध, लपप. डाइ  
खाना, न सहना मत्स्य  
रता—दंड तारका । हरि  
गोविन मीति प्रतीति-  
भुजानी । करि करि  
दरी कुबला पटरानी ।  
तजि हंसिनि हंस पकी  
मन मानी । सगनं चतुरं  
गुरु रीत पणानी ॥१॥

मत्स्य [स] मीन, मछली,  
मच्छ, मत्स्यापतार —  
होहा । मंथ मारि सै वेद  
धरि, भक्त बर नाम प-  
कीच । माछी सब बिधि  
दुखसता, उजासा बहुत  
बीम ॥१॥ मीन नाम—  
दंड उजासा । तिमि तिमि  
पति मीनल मकर भव  
पहरिमा चटणीनया ।

यैनारिण चित्तिविमः ।

गरा सरस्व दंड पा

नयो । राजीव माकु

हो गडक प्रकुल मिष

मल मीनयो । याही ।

मारि रोहित सफरि

स्य उल्लो मीनयो ॥

मत्स्याघ्न [स] मछुवा, मीन

तक । [ कलपीवर

मत्स्यागन्धः (स) होइयेर, मछी

मत्स्यागर्भः [स] मछलीका सं

मत्स्यानिद्रुदनः [स] बीलुइका

मत्स्यापिताः [स] कुटो ।

मत्स्याण्डः [स] मछली का बं

मत्स्यालीः [स] चतर । [ हो

मत्स्यादनीः [स] कलपीवर, म

मत्स्यालीः (स) याइर दू

गदेहो । [ मत्स्यः

मदितः (स) महादुषा इत्य

मदः (स) मदिरा, मराव, बुरा

चहंकार, भडिमान, निम

या चट प्रकार ॥८॥ माति

मदः, कुचमदः, कपमदः

मन्द. धनमद. प्रिया-  
द. ध्यानमद. ज्ञानमद ।

(स) मगरा ।

मदन (स) रस का घर ।

(स) कामदेव, दत्त, मै-

नमद, काम, सुरा, धतूरा ।

मारी (द) मडादेव ।

मदनो. मन. मदनारि (स) शिव

गिरीश ।

मदहर. (स) बंसी, हाथी ।

मदनमती (स) मद के मतवाली ।

मदनमती (स) मत्तिका ।

मदादिह (स) अभिमान पा-

दिह ।

मदिग (स) दाह, बिरोता, ।

मद्य, मराव ।

मदीष्टी (स) रावट की स्त्री ।

मदीष्ट्या. (स) निदा, तदभाव

न मतावर ।

मदीक (स) नीम ।

मदगुरु. (स) नांगुर मल्लो ।

मद नयः (स) सुरा, मदिरा,

मदयोग, मराव ।

मद्यप. (स) सुगन्धी, मदपित्रेया ।

मधु (स) वैजनाथ, मदिरा, ।

मदद, मध, मल, पय, सुधा,

राष्ट्रम, पुष्करस, वसन्त

मदु. दुम, मदनपुत्र. मा-

मदेवपुत्रनाम लो स्त्री के

प्रेम में रती पर मधु उभो

नाता पुत्रवसित है पर

कामदेव पुरुष प्रग में व-

सित है । कथा वेदन्त ।

मदनमधुसूत परिशरपद्धति

हृदय मारुलीदय हरम् ।

प्रसाद इति श्रीभागवत् ५

स्तम् । श्रीर मद्य, मक-

रंद, मूत्र का रस एव दैत्य

का नाग । अमृत का नाग

ही. । नीम सुधा पीयूष

मधु, पगट राग सुनीत ।

अमृत जहां कान्दर बया,

मते रदत सब लोग ॥ ४

पुनः रदता श्रीर अमृत

नाम दं. रघुन रघुना

मिड हरि, पूरित अमृत

पीयूष । सुधा पत्नी सुर

भाग मधु, दद्यान्मार्गिन

दूध ॥ १ ॥ पुनः पनेहा

मै हो । मधु बसंत मधु  
चैत्र दुस, मधु मदिरा म-  
करद । मधु कर मधु पय  
मधु सुधा, मधु सुदन गो-  
विन्द ॥ १ ॥ नाममात्रा में

हो । माधव मधु द्रुम मधु  
मधु, मधुष्टीव, गुहफल ।

एज मधुक के फल बलि,  
कहु तुम गहुनी तू ॥ १ ॥

मधुक (स) जेठोमध ।

मधुकपूष (स) गहपा ।

मधुककटो (स) मधुकाचरी ।

मधुकर (स) भौरकीट, अमर,

भौरा, मधुमयिका, अम-

रगाम—दीक । मधुकर

अंतर द्विरेफ चलि, बहर

चिलीमुन भूत । चंचरीक

रोमं व यनि, कीला से सा-

दंग ॥ १ ॥ मधुपम मधुवृत

मधुरमिक, मधु वावण व-

गपोर । अमर बिना के-

तकी न कहु, केतलि बिना

मधुकरो (स) दू

पतियो को

मधुलत (स) मधुनाली

मधुकैटभ (स) चमो राच

मेय, निमिचरमेद ।

मधुकीप (स) गहद का

मधुगंधिवा (स) मोसवरा

मधुकरदा (स)

मधुपूष (स) मोस

मधुचोर (स)

मधुदुत (स) रवाचन

मधुका

महिसा (स) गमाव

मधुद्रुम (स) मधुवाच

मधुदूत (स) चाम

मधुदूतो (स) पाचर

मधुधातु (स)

मधुप (स) चमरकीट

भौर, भौरा

मधुपक (स) मधु

यह, निमिचर, एव

काग के चार में

को मंहुवा

के विधि

पादुग सोगीं की मान  
सनीमान कान मो हाद  
पांय पुनयाय के पुर्णे मः  
धुदहं विताद पयात् पान  
गनाज्ञ देत है वा पयित  
देग की रीति है ।

मधुपर्किका (म) नीक ।  
मधुपर्किक (म) सुदर्म ।  
मधुपर्क (म) गम्भार ।  
मधुपर्क (म) दहा रसीलांमक  
मधुपर्क (स) गदुपा ।  
मधुपर्क (स) भगव, भंवर ।  
मधुपर्क (म) गदिरा, सुता,  
गय [ रीक ।  
मधुपर्क (म) भगव कीट, रंवर  
मधुपर्क (स) सोनामक, री,  
गली का सुदत ।  
मधुपर्क (म) नीठारक, धीय, उ-  
न्दर, खाद, गिरर ।  
मधुपर्क (स) नीठा मय ।  
मधुपर्क (म) मधुपर्करी ।  
मधुपर्क (स) जीवक सदाय  
मि विहाईल ।  
मधुपर्क (स) दानदुपार,

गम्भार, धुरपहार ।  
मधुपर्क (म) भगव, पति ।  
मधुपर्क (स) रीक ।  
मधुपर्क (म) सोनामक ।  
मधुपर्क (म) नीठी, रसीली,  
सदावनी ।  
मधुपर्क (स) गदिरा  
मधुपर्क (म) गदुपा ।  
मधुपर्क (म) गधु का दहर  
धीनी की दामनी ।  
मधुपर्क (स) मुंगरा ।  
मधुपर्क (स) गोम । हय ।  
मधुपर्क मधुपर्क (स) मधुपर्क  
मधुपर्क (स) पुनहार ।  
मधुपर्क (स) मधुपर्क ।  
मधुपर्क (स) गोम ।  
मधुपर्क (स) नीदनी ।  
मधुपर्क { (स) मधुपर्क ।  
मधुपर्क { (स) मधुपर्क ।  
मधुपर्क (स) भगव, रादक-  
गामक, विष्ट ।  
मधुपर्क (स) दाना मधुपर्क  
वा मयक ।  
मधुपर्क (स) धुरपहार ।

मधुली. [स] सुपिंड गौहम ।

मध्य [स] मांझ, बीच, में, मध

मत्तार, बीचकै, मत्तारंतरी ।

मध्यगति. [स] उदासीन ।

मध्यदिवस [स] दोपहरदिन ।

मध्यम. (स) उदासीन, बिचवैत ।

मध्यस्थ. [स] साची, बीचमान,

बीचवाला, मध्यस्थायी,

बीच का, साक्षि ।

मध्याह्न [स] मध्यकाळ, द्विप-

हरदिन, दुपहर ।

मध्याह्निक. [स] दुपहरिया ।

मध्याधार. [स] मोर्त ।

मधवालुक. (स) मकरकांड ।

मन [स] चित्त, हृदय, ध्याना,

ध्यानाग्रंथ—दीक्षा । मन

बुद्धि चित्त सुभाव तन, धर्म

जीव चरुकार । मन को

कहिऐ यातमा, परमात-

मा आधार ४१३ विभिन्न

जाति अंतःकरण, मन

ध्याना कर चेत । अग्रचित्त

मानस हृदय, हृत धाकून

चचेत । २ ।

मनन, मननांत. } [स] काम

मनसिद्धि. }

मनन. (स) परामर्श, ध्याना

अर्थ, विचार ।

मनस. (स) ज्ञानेन्द्रियविषय

मन, दिक्ष ।

मनलस. (स) मानस, विचार

मनमय. [स] कामदेव, चमत्,

मदन, मनोज्ञात । [स] काम

मनमाया. (प) मनकोषा, मन

मनगिष्ठा. (स) मननमिल ।

मनमिष्ट (द) कामदेव, चमत् ।

मनमारी. (द) उदास ।

मनसहि. (द) मन ।

मनसा. (स) हृत्, मन ।

मनाक् मनाय् (स) धारणा,

अल्प, थोडा सा । चो. ।

तद्वि मनाक मनहिं नहि

पीरा । अर्थात् मनाक

किंचित नहीं है मन में

पीरा । [सो. ]

मनागवि. (स) अल्पमी, थोडा

मनाय् (स) अल्प, मृत्त, थोडा ।

नदिः (स) सूर्य हे मित्र न की-

की नदि, मित्रीनदि ।

नदिपारा (द) नदियुत ।

नदीदा (न) नदी, सुधी, दुहि-

दकृष ।

ननु (स) सायकपादी चोदक,

कृति, तीक्ष्ण करीर कृतकठ

साय पाठ करक द्यं की

राष्ट्रं वरे. सायंभूगु १

एतन २ सारोपिष ३

तानन ४ रिदत ५ सा-

दय ६ सायंतेष ७ सायदि

पदयःदि ८ गङ्गासा-

दि ९ धर्मसायदि ११

दृष्टसायदि १० देवसा-

यदि ११ दृष्टसायदिननु

१४ सायदी १५ ननु नी

सायंभूपादि चारि ननु

पादि वं नदि मुष्ट वं

नदि ते दृष्ट एहि भाव की

भयधान वं सायदी दृष्ट

दे १ दृष्ट १ सायंभूपादे

दुरो दंतीदं विस्तराष्ट्रः

दक्षिण दक्षिण ननु-

नद्यान्वदसतः १११ सा-

रोविषी द्वितीयनु ननु-

रन्नेःसुताभवत् । सुमनु

मेवरोविषत् प्रमुषाष्ट्रः

सायनः १२१ वृतीय वृत्तमी

गान मिदवत् सुती ननुः ।

एवमःएवयोदः दीता

सायानुतादः १३१ वृत्तयं

एतन भूता, ननुर्गता च

ताननः । दृष्टसायतिनः

केतुरित्याद्याः दय तक्रताः

१४१ इति श्रीभागवत स-

हम एवमेव मनाद ।

सायंभूगु १ सारोपिष २

एतनननु ३ ताननननु ४

दी० । सायंभू एतन सा,

रोविषु तानन नान । ए

सारो ननु पादि वं, ना

गवत वरे मनाद १११

मनरातः (स) वदात, एवम,

एवम ।

मनरात (द) मनराता, रो० ।

एव दिवेव एव देहिं दि-

धाता । ननु तदि दीव



गुणहिं मनराताः प्रथम—

गुण तं मनराता प्रथम  
प्रीति करे।

मनुज. मनुष्य. (स) मानुष्य.  
नर, मानव, मर्त्य, मनुष्य  
मात्र, पुत्रपुत्री, मानव,  
ईमान, पादगोचरनाम।  
होहा — मानुष परमपवित्र  
वपु, मानुज मनुष्य प्रमाण।  
नर जनि जागहु मंदसुत.  
हरि ईश्वर भगवाने ॥ १ ॥  
मानुषवाचक मन्द के. प्राणि  
परि वाचक, मन्द-रूपने  
से दनुज वाचक का बोध  
होता है।

मनुजाद. (न) राजस, देख।

मनुजाद। (द) मनुजाद, जो०।

सविपात जन्मसि दुर्दादा।

भवेसि कालवस सठ मनु-

जाद। प्रथम से मनुज

के पानेवाले तें सविपात

तें कालवस होकर दुर्पेचन

कहता है। [वीरविजय।

मनुजाद। (न) निमिषर मन्द (स) मनेवर बाह, मंद

मनुषाई- (दे) पुरुषाई।

मनोभवे (स) कर्मदेव, मा  
मनोभव- (स) सिद्ध, प्रती

मनोभवे (स) धिर, मनोहर

मनोभवे (स) सुन्दर, सुख्य, १

मनोभवे (स) मनुषी वेंतारी

मनोभवे (स) मयनमिवा।

मनोभव मनोभूत, (स) चत

मनमय, कामदेव।

मनोरथ- (स) इच्छा, वाचना

मनोरथ- (स) कामना, मनप्रमिषावा

मनोरथ- (स) सुन्दर, सुख

मनोरथ- (स) मनरहित।

मनोवच (न) मन की सुधी

मनोवच (स) सुमाना, सुन्दर

मनोवच, मनोवच, धरि

मनोवच (स) उपदेश, सुभा

मनोवच (स) यदि मंद

उपदेश। [ ४१६ ]

मनोरथ (स) राग तारज

मनोरथ (स) मनो, माना

मनोरथ- (स) [केन्द्री की]

मनोरथ (स) नाम चेरी राव

मनोरथ (स) मनेवर बाह, मंद

हृदये नमोभव नमोभव  
मनसि नमः । पंचपाग

सुमुनेषु समन्वयेन सत्वरं

शुभं संवत्सरि । नैम म-

ਮੀਰ ਦਸੰਗ ਘਰ ਹੁਮਾਯੂੰ  
ਦਿਲਾਸ ਦਰਵੇਸ਼ ਸੀ

धनुषी काम हवेक श्री  
इतिपति

प्रहस्य पातम् रतिपतिं

दास नाम ॥ श्री ॥

इस नामग पर विष्णु धरे,

ज्ञान इनापति

सुखं भवति ॥ १ ॥

हरिपद हृद वधान ! !

(स) तासठ, प्रमदं

(स) तासठ, घनप

नमः (स) ससता. मेरा ।

समझोड़ी (द) ने० निंदक

नगता (म) मोर, छेद, र

माया, हर्ष, अहंकार

मन्त्रः ।  
मन्त्रः ।

समस्त (च) ननता, य  
म) दलीन भय

સા. (સ.) વહીવટી મથક  
સા. મથક. મુખ્ય

नव ( ४ ) प्रधान,  
हिन्दि, गिला,

विज्ञेय, गिला,

गुणविं मनराताः चयं—  
गुण मे मनराता चयं  
मोति करे ।

मनुज. मनुष्य. ( म ) मानुष,  
गर, मानव, मर्त्य, मनुष्य  
मात्र. पुत्रप छो. मानव,  
इमान, चाटनी नरनाम ।  
दीहा - मानुष परम पवित्र  
वपु, मानक मनुज प्रमाण ।  
मर जनि मानव जन्मसुत  
कृति ईश्वर भगवान् ३ १ ३  
• मानुषवाचक शब्द की भाषा  
परि वाचक, शब्द रचने  
में मनुज वाचक का बोध  
धीना है ।

मनुजाय ( म ) राजस, देव्य ।  
मनुजायः ४ मनुजाय, पो० ।  
मनुजायः मनुष्यमि दुर्गाय ।  
मनुष्य कालवस वत मनु  
जायः । यथा गे मनुज  
क मानवान् तै मनुष्यान्  
म कालवस वाक्य दुर्गाय  
वदन्तः । [ १०१ ]

मनुजायः ५ मनुष्य मनु ( म ) मनुष्य, मनु

मनुष्योऽपि ( म ) मनुष्य, मनु  
मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,  
मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य,

मुनिविशेष, दानविशेष ।  
 शारीर सन्धिष, रूप,  
 -शरीर, बहुत, प्रकृत्य, म-  
 धान, चक्षुरविशेष, हेतु ।

मयङ् ( च ) गगो, चन्द्रमा,  
 सोमः, चन्द्रः नामाणि चन्द्र-  
 मन्मथरत्न । चन्द्रमा मृगाक्षि  
 पट्ट चन्द्रम राशेय इदु चानि  
 मान् कुमुदबधु विष्णु मयं-  
 रीम दे । विमलर श्री  
 शुभाग्र रमा मधु श्री हि-  
 माग्र गारापति श्री सुभाग्र  
 गगो क्षामिनीश्वर दे ।  
 कक्षाजिधी सुभाग्ररः गग  
 धर कक्षाग्ररः कक्षाग्रर  
 निगाग्ररः हरि श्रीपधीम  
 दे । हितरात्र श्री विभाग्र  
 श्री गगाक्ष सीमराशि म-  
 र्जः चन्द्र चरित्रिमात्र मयं  
 नाम तीम दे । टी० ।  
 मय चन्द्रमय चन्द्रमय,  
 मय मय चन्द्रमय ।

[illegible]

मयहवादिता (५)  
ममगमया [५]  
मयमुता [५]  
चर्चात् मन्त्रोदरो  
मयमो [५] मिश्रता  
मयदानव [५] देव  
विशेष लो कथा  
केटि को १५  
वे राज धर्म  
ममग [५]

॥ १॥



મિત્રપુત્રકાદય અદિમયો,

મધુર અભાષો સોય ૩૨૩

મહત મધુર અદન અદે,

અતદિ ૩૪ અનદ : નિ-

અદિત્ય અનદ રવત, નવ

નવદ મહત્ત્વ ૩૨૩

મધુરક. (૪) { વિરવિરો રત્ન  
મધુરક. } તિયા.

મધુરાવદ્ધા (૫) માવિકા.

મધુરગિતા (૫) મોરગિતા.

મ. ૧૫૫૫

મધુરક (૬) કાનર, અનુર,

અધો અનન મહત્ત્વ મામ.

વૈદા : અદિમાન્યોમુગ અ

નિમુગ અન રવતનમુદ :

વૈદા અદર નાવિયર,

દુરો વિનાગા કુરાડા.

મધુરક (૭) મધુરવિયર

અમા ૧૫, વકાન, વચ

અદિત્ય અદિ (૩) ૩

મધુરક (૮) અદિત્ય અદિ (૩) ૩

અદિત્ય અદિ (૩) ૩

અન

મધુરક (૯) અદિત્ય અદિ (૩) ૩

અદિત્ય : અન : મધુર અદિ

અનુ માહુર દેદી :

મધુરક (૧૦) મામકા, અધિકા.

મધુરક (૧૧) અનુ, મામ, મોગ.

મધુરક (૧૨) અનુ અદિ દિવ

મામ અદિત્ય ૧ : અન :

અદિત્ય અદિ તુમ મોરમા

અધિકા : અન અદિ કોડિ

અનનવચ પ્રાવચ અધિકા

અધિકા અદિ ૧ : અન :

મામ અદિત્ય ૧ : અન :

મધુરક (૧૩) અનવચ, અનુ,

અધિકા અદિ ૧ :

મધુરક (૧૪) અધિકા :

મધુરક (૧૫) અધિકા :

અધિકા અન (૧) અધિકા :

મધુરક (૧૬) અધિકા અધિકા :

મધુરક (૧૭) અધિકા અધિકા :

અધિકા અધિકા : { અધિકા :

મધુરક (૧૮) અધિકા અધિકા :

અધિકા

અધિકા : અધિકા અધિકા :

અધિકા અધિકા : અધિકા :

અધિકા અધિકા : અધિકા :

महसुभाष (स) गेवार सुरई ।  
 मह (स) निर्मलदेय, सुखसुख,  
 लसुर ।  
 महत् (स) मायु, पवन, ४८, पुंस्वा ।  
 मह (स) देगविमेष ।  
 महसुभाष (स) महनयन, महपा ।  
 महट्टवदन (स) रंदावदन,  
 श्री । महट्टवदन मह-  
 कर देही । देवत पुदय  
 लोभ भा तेही ॥ महट्ट वं-  
 दार वदन सुष महकर देही  
 उरायन देह ।  
 महट्ट-महट्ट (स) बानर, बन्दर,  
 मकड़ी, सारस पक्षी ।  
 महट्टतिलुष (स) महरतेदु ।  
 महट्टास (स) पानदा ।  
 महट्टी (स) बन्दरी, महरी  
 कौट, बन्नाच, चराच, ब-  
 नाच, विविरी ।  
 महर् (स) मूग, वृषा ।  
 महर्गिरि (स) विद्या, विदार ।  
 महर् कर् (स) मातुष, नर,  
 मनुष, वन्दुलीक ।  
 महर्ग (स) नायकरके ।

महि [ट] महकरके ।  
 महर्न [स] महन, रन्ध्र, दहन,  
 नाय, नायक, पीसना, प-  
 यंष, सुखेन, देवप, विठना  
 महना ।  
 महर्ना [स] महर्ना, रगहना ।  
 महर् [प] महर्के, रगर्के ।  
 महर्महिर् [द] रगर्क रगर्के ।  
 महर् [स-द] महर्, श्रीक, पुदय  
 कठोर, प्रात, समाचार,  
 कोक, गूवा, चम्पे ।  
 महर्ग-महर्ग (स) प्रात, मा-  
 रग, महर्, चतुर ।  
 महर्ग-महर्ग (स) महर्, महर्,  
 मात, सीमा, पत, चरधि,  
 हर । [ लपय ।  
 महर् (स) महर्, पात, विद्या,  
 महर् (स) पक्षी विमेष ।  
 महर्ग-महर्ग (स) श्रीक, महर्,  
 महर्, महर्गिरि,  
 चन्दन, सुपेद चन्दन ।  
 महर्ग (स) कौठा दुखर ।  
 महर्ग-महर्ग (स) महर्, महर्,  
 महर्, महर्ग, महर् ।





महर्षी (द) कुरगियों की पदवी  
 है, कुरगियों के कई एक  
 भेद हैं जथा—पद्मप्रिया,  
 पद्मनाभतः, पीङ्गवर्णा,  
 सरस्वती, खीरवर्णा, पुन-  
 र्वक्ता, समस्तवार, जेष्ठवार,  
 चण्डीया ।

महा (क) थोड़ा, उत्तम, बड़ा,  
 निपट, गढ़ ।

महाकुमारी (ख) देवकीकुल ।

महाकुसुदिता (ग) गम्भार ।

महाक्षीमातकी (घ) जेठवा ।

महाक्षीधून (ङ) बड़ गोधूना ।

महाजम्बू (च) फलेदा कामुग ।

महाजालि (ज) खेवठा ।

महानोय (झ) मुलुन ।

महापावा (ड) मानवन्द ।

महाकम्पा (ढ) बड़ा धनाहन,  
 फलेगा कामुग, जेठवा ।

महाताप (ण) बीड़ा, यमाजि ।

महासुन्द (त) देवाय भुंग ।

महासुखतिता (थ) बड़ी  
 भुङ्खी ।

महादुःख (द) बड़े दुःख ।

महामुनिप्रानी (स) वगिट,  
 वामदेव, जावानि, गौ-  
 तम पादि । बी० । पाए  
 सखस महामुनि प्रानी ।  
 पर्यान् सब पाए ऊपर  
 लिखित मुनि ।

महागद (स) बड़ा रोग ।

महाजन (स) थोटजन, वेद  
 माख में जिसकी थडा हो,  
 बनिया ।

महाजन (स) महात्मा, महा-  
 गय, जिसका उत्तम स-  
 भाव हो ।

महाग-महागु, (स) थोठता,  
 बिपु, बड़ा, महत्त्व ।

महागद (स) गद विगिय था-  
 गर, समुद्र ।

महानिमि (स) पड़ेराति ।

महापद्म-महापद्म, (स) निधि  
 विगिय, समुद्र ।

महावत (द) हाथीवाम, मज-  
 प्रेरक, महावतनाम, दी० ।

महावस मज निधन करि,  
 पुनि चंडटनिपाद । नेता

यन्तादृशपी, प्रतिदृष्टि

यथा यत्नः ॥ १३ ॥

महापुरुषः (स) साधु, सत्त्वः ।

महापुरुषः (स) समस्त सत्त्वः

का मां ।

महापुरुषः महापुरुषः (द) सत्त्वविशेषः ।

महापुरुषः नाम—दीर्घः ।

पौर्णमासी महापुरुषः ।

मानवस्य महापुरुषः । महापुरुषः

गुरुः पुरुषः, प्रियः ।

महापुरुषः ॥ १४ ॥

महापुरुषः (स) तत्त्व

महापुरुषः, यथाप्राप्तः

महापुरुषः, यथाप्राप्तः

महापुरुषः, यथाप्राप्तः

महापुरुषः ॥ १५ ॥

महापुरुषः (स) नेवारमुद्रः ।

महापुरुषः (स) यथाप्राप्तः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः,

महापुरुषः । महापुरुषः स-

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) पौरः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

कृषी ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

महापुरुषः (स) महापुरुषः ।

ते स्त्रीगण को नख रंगित  
होत है, साखी, साख का  
रंग ।

महासिद्धि. (स) कल्याण, गत ।

महाहि. [स] जेपनाग, पहीय ।

महि. [स] पूछी, कोन । कोन

द्रोन मन्द - दोहा । कोन

मही पर कोन दिख, गृ-

ह अंतर कहि कोन । द्रोन

काक पर द्रोन गिर, कर

कहि वारिज द्रोन ॥ १ ॥

महिपाटे. [द] पूछी ते गिरा

दिया । [सस ।

महिपेय. [स] महिपासुर रा-

महिभार. [स] पूछी का भार ।

महिबास. [स] संगस, मङ्गलवार ।

महिगा. [स] नामसिद्धि, प्रा-

क्तम, बड़ाई, प्रभाव ।

महिचा. [स] स्त्री, नारी, मेहरी

बारारानी अर्थात् पूछी ।

महिपास-महीपास. [स] राधा ।

महिदेव. [स] शास्त्र ।

महिप. [स] भैंसा, धर्म, यम,

देव्य विषेय, भैंस महिपासुर ।

महिपासुर. [स] देव्यसंग्रह, रा-

सस विषेय ।

महिपी. [स] भैंसी, धर्मराज,

राजपक्षी, पटरानी ।

महिपेय. महिपेस. (स) परणा

भैंसा, यमराज, यमराजन,

महिपासुर का ईश, महि-

पासुर । चो. । तेज छाया-

तु रोप महिपेया । अथ

अवगुण धन धनिक धनेया ।

अर्थात् अग्नि का सा है

जिन का तेज दित और

अनदित के उलाने में और

महिपेय अर्थात् यम का

सा है रोप पाप और अव-

गुण के धन के धनी कुबेर

के सम है । [पढ़ा ।

महिखवेज. (द) पूछी ते गिरा

महिचावृद्ध. (स) प्रियङ्गु ।

महिपमस्तक (स) साधधान ।

महिपास (स) गुलुस ।

मही. (स) पूछी, भरती, दाह,

भूमि, गी, जमीन, गाय, रसा

मन्द - दोहा । इसा मही



सत्त्व, महोच्छी ।

महोदधि (स) गद्दीविशेष,  
विद्यास उदधि ।

महोदधि (स) सप्तसुत, सौठ ।

महोदधि (स) गद्दीकी वरंभी ।

महोदधि (स) निगिपर बीर  
विशेष । [ शेष ]

महोदधि-महोदधि (स) पची बि-

महोदधि (स) सुम्मे, हम की ।

महोदधि (स) मांछी, मांछी ।

महोदधि (स) एक राजा का नाम

जिस के नाम पर बनारस

में महोदधि है ।

महोदधि (स) सप्ती, श्री, निवेद  
बापक, नहीं ।

महोदधि (स) सुम्मे की, माता । माता

नाम—दो-पंचा सावित्री

प्रभु, जननी माता भान ।

जननी राधा कुंपरि की,

बेटी नंगस धान १ १ १

महोदधि (द) पावस का प्रथम

प्रथम जिसने नक्षत्री बहुत

द्वित होता है ।

मांगध (म) संगत जनसमूह,  
बंग के प्रशास करनेवाला ।

मांछी (प) खिरगया, ख्यात भौ ।

माई (द) माता, माया करने

वाली । बी. विविध भांति

होइहि पहुनाई । प्रिय न

काहि पस सापुर माई ॥

माई है माई वा माया क-

रने वाधा सापुर । बी. ।

तब तब बदल पैठिहीं

पाई । सत्य नहीं मोहि

मान दे माई ॥ माई के

ग्रन्थ में माया सम्यक कराने

का प्रयोजन है सत्य के

साथ में प्रत्यक्ष प्रमाण महा-

बीर का है ।

माये (द) लोहित कुण ।

माइश (प) माता ।

माइ (द) लोथ, सौदा, सप-

टाई, भज्जा, समाना ।

माइ (द) दो-पंचा यथा । बी. ।

देखित पाद श्री कृष्ण कपि

भाषा । तुम्हरे सांग न

रोय न माया ॥ प्रधान

अपि हनुमान्जी जो कह्यु  
भाया तुम्हारा सभाय कहा  
सो सगुमें पाइ चपने नेत्रों  
सो देख्यो कि न तुम्हारे  
साज हैं न रोप न लोधी  
सभाय हैं न माखी-चपमा-  
मादि कारखो पांइ तुम्हारे  
मन में ईर्ष्या नहीं पावत ।

माखी (१) माखी ।

माखी (२) कितियागा ।

मागध (३) गमह देय विजय ।

भाट, बंगकी मगस करन  
वाला ।

मागधी (४) एक भाषा, पुष्प

सुही कसु पीपल, पीपल ।

मागन (५) मगन, मगनारी ।

मागसा (६) माखीर मग मगु ।

माह (७) कनोड़ी, कपटाई

कचन, कगन कपने, कपने

दर्या, क्रीड ।

माखा (८) मख, पाट, पखट ।

माखी (९) प्रविष्ट, फेन रही,

पाट ।

माखा (१०) नदीन दखे मग

का फेन, दाखे पाए

मर जात है । (१०)

सजस तग बरघर व

माखी पाइ भीन

माखी । चर्पातू पा

पाइ भरि पाए, पी

करि के घरघर को

माखी माखा पाए

दारी माखी नवीन

के लख परने कबहुं

माखा एक रोग हो

का बहुत पाइ दारे

में जी फेन कपल हो

ताकी माखा कत

माखी (११) राह, पीर, पू

माखी (१२) चपल हाड़ ।

माखी (१३) नवीन रखा

का फेन ।

माखी दोबीन, माखी राखी

माखी (१४) मख का म

माखी, माखी मखी

माखी (१५) क कपल म

माखी माखी मखी

माखी माखी मखी

मातङ्ग-(स) बायी, मुनिविशेष ।

मातङ्गकरना, मु० बाजो जीतना ।

मापाठनकरना, सु० बिची  
जान के बिगाड़ने का  
हाथ पड़ने से मालूम हो  
जाना ।

माया रगड़ना, मु० बहुत गरीबी  
से प्रायैना करना, या देव-  
ता, पयसा राधा से गरी-  
बी से साय मांगना, बहुत  
निश्चयत करना ।

मायेपरबड़ना, सु० अन्याय  
करना, जूस करना, मजा  
को बहुत दुख देना, स-  
ताना ।

मातरिखा. (स) वायु, पान ।

मातलि. (स) नाम रन्ध्रे का  
सारथी । [को.]

मातहि. (द) मतवारा वा माता

मातसिद्ध. (स) पुरन्दर, रन्ध्रे ।

मातुच. (स) मानो, रन्ध्रे का  
सारथी, धतूरा ।

माळ. (स) माता ।

मातुङ्ग. (स) बिभीरा लेखू ।

मादनी. (स) भाग ।

माधीक. (स) संहत ।

मात. (स) परिमाण, पन्दाज,  
सखस, पयधारप, पस्य,  
वही भर, उतनाही ।

माधा. (स) गुण, लोख, खर ।

मासक. (स) ईर्ष्या वाच, ईर्ष्यक,  
हेयी, डाही ।

मास्य. (स) डाह, ईर्ष्या, जलन,  
मास्यनाम । दो० वासन्ती  
पुण्यांक सोह, सुकृत सता  
पुनि नाच । इत माधविषा  
वरत तन, नेकु बितै बलि  
जात । १ ।

माधव. (स) वैष्णवमास, विष्णु,  
मधुसूत, योक्त्यवन्द जी  
का एक नाम ।

माधविका-माधवी. (स) मधुरी  
सता, बराहीखन्द, खांड ।

माधुरी. माधुर्य. (स) मीठी,  
सुन्दर, सुन्दरता, मिठास  
मिठासबचन को समृत  
अस जानना । [को.]

माध्वी. (स) मदिरा, सुरामद्वे





बाहुरहिंसा पर बिना  
रा ससका बाहरवाची वा  
दूदो एह हिंसा स्यात  
हे, मध्य मास संघा ने हंस  
रहत हे, पर मास संघा  
मोहंसनी सदा दिवारासि  
रहती हे, मास संघा नाभि  
हंसनी कबहु नही जाती  
हे, राबिबास हंस ने  
पपने स्याम ने हंसनी के  
स्याम मास संघा मो  
घायत हे ।

नप्रद(स) मानके देनेवाला ।

मानसिक.(ए) मनद्वारा विमेष,  
नन सम्बंधी ।

नायता (स) पूर्यता, योग्यता ।

नामिक. (द) लवाहीर, लास ।

नापनाप (द) परिमाण,

नाप, पूर्य, व्याप्त, व्यापा,

मापना, व्यापना । शी० ।

तलप्रत विपन मोह नन

माया । मोहा मनह मोन

कहु व्यापा पदार्त् नापा

दहे व्याप माया मदा

वरपा से लस के फेन  
कहत हे ।

मापी. (द) मतवाली, मोहा  
मानभिरघय(स) मो को र  
करहे ।

माया. (स) लस, दाया, जरा

नेह, मोहनी, मानना,

विगुपमति, कपट, पविद्या,

धी० । जिन्ह के कपट दंग

नहिं माया । तिन्ह के प्र-

दय बसहु रसुराया पवति

इहां माया का नाम पवि-

द्या सेना दी० । नाया खस

मायादि यह, याया नेह

कहत । माया मोहनसाध

की, जिन मोहे सब सतगुरु

पुनः दी० नाया दया जरा

धना, धनु ऊपन धनु कोस

कदना कहि कदना निजे,

दिमा करहि तनिरासुरेह

मायावी. (स) लसी, कपटी,

प्रकारक, माया घानने

वाहा ।

मायापति. (स) ईश्वर, मादिक,

मायाकरनेवाणा रोमचंद्र ।  
 मायाकपी (च) रायस, यपुर ।  
 मायिक (च) निष्ठा, भूत,  
 ऐन्द्रनामिक, छेकी, माया  
 करनेवाणा, मायाकस्वंधी ।  
 माय (च. छ) - विष्णु, विष्णु,  
 कामदेव, चतिपमृत, छयं,  
 नाग, मारणा, मारमय—  
 दो. : मार विष्णु विष्णु  
 मार पुनि, मार कहावे  
 काम : मार पमृत भू त  
 पमृत, पुष्टर निरधर  
 नाम ३३३

मारण (च) भाष्ये, वाट । मा-  
 र्मनाय—छंदमाओः विष्णु  
 टिरत नि ३ भुनदगद्वयना ।  
 यद्ववाट करिण यद्वीष्टन  
 यद्वना : मय भाष्ये वयं  
 यद्वना यी यद्व : यद्व  
 यावो यद्व यना यम यद्व  
 यद्व ३३३

मारकुटी मू. मारणा यो  
 कुपयना, मारणा

मारणा मारणा मू.  
 विष्णु मू.

मारगिराणा मू. यवा  
 पटवदेना

मारकाचना मू. जीनिना  
 मायसेना, सीसेना ।

मारकेना मू. मारणा, विष्णु  
 मारपकुना मू. विष्णु

याना । ( रणा, यो  
 मारपीटा मू. मारकुमा,

मारमरणा मू. यद्व वात  
 रणा, याना यना यना

यद्वारि म यो यो वा  
 मरणा । [ विष्णु

मारसेना मू. मारणा, यो  
 मारकाणा मू. मू. यद्वना

मारवटाना मू. यो यो  
 मारण यो विष्णु

मारमय मारमय ( यो  
 याना यना, याना, यो

यद्व, यद्व यना ।  
 मारमय मारमय ( यो

विष्णु मू. यद्व यना यो  
 यो यद्व यना यो यो

यद्व यना यो यो  
 यो यद्व यना यो यो

यो यद्व यना यो यो  
 यो यद्व यना यो यो

नाराज्य (म) हिंस्रक, घात-  
क, वधिक, लुब्धपीत ।

नारायणः सु० नारायणा ।

नारानाराकिरनाः सु० मट्टकता

किरना, डोंशकोलकिरना,

इधरउधरकिरना ।

नारानारीः सु० पापस न मार

पीट, धीरधन्या, घातकुडी ।

मारित् (म) नर्सी दोनी ।

मारीचः (स) पु० नामराचस

रावप का नाना (च

मरना वा मारना) एक

राचस का नाना, लो तार-

का राचसी का पेठा और

राचप का लोकर या निच

की लो रामचंद्र ने नारा,

दैत्य विमेष, लंभीक ।

मादतः मादतिः (म) वायु,

मनीर, हनुमान, पवनपुत्र

पवन, ववा, भीमवेन ।

मारुः (स) रागविमेष ।

मादतमृतः मादतिः (चद) महा-

धीर, श्री हनुमान लो,

भीमवेन ।

मारी (पव्यय) से, मारप, नि-

मित्त, जैसे गरमो से मारी

ध्याकुध होगये ।

मार्द्धिणीः (म) खेकसा ।

मार्द्धिः (म) भेगराज ।

मार्गः मार्गेः (स) पय, सहक,

बाट, रास्ता । मार्गनाम—

दो० । यमं च ध्या मार्गं

पय, संवर पदह विहार ।

नय देखत तो पदं गइ,

मोहन नंदकुमार ॥१॥

मार्गः (स) इयु. तोमर, वाप ।

मार्गगीर्षः मार्गः } (स) पग-

गिर. मार्गगीर्षः } हनुनास,

मंघसर, मंगधिर । द्युग-

धिरा एक नक्षत्र का नाम,

इस महीने में पूरा चांद

इस नक्षत्र के पास रहता

है और इस महीने की

पूर्वेनामी के दिन यह

नक्षत्र होता है ।

मार्जनः (स) परित्कारकरप, पुः

द्विकरण, मारणा, मोहारना ।

माञ्जरिः माञ्जरिः (स) बिछाड़,

विज्ञा, मानु, विज्ञाव, विज्ञी।

माजीर (द) बनविज्ञार।

माजीयंविज्ञा (घ) बनसंग।

माजीय (घ) दिनकर, सुख।

माप (द) मर्मा दोनी।

माप (घ) समुद्र, बीरजन,

मह, माका, कुम्भीबाज, बार।

मापक (घ) देग सजक, माप-

वादेग। [ व्यवसायो।

माकाकार (घ) माकी, पुण-

माका (घ) समुद्र, बार पुण्या-

दिक, पोवी, पंगति, पल्लि,

माका, बार, माकागाम-

सी०। सीता गमन मराक,

बार में स्रग बीगण वती।

दाम बार स्रगमाक, राम

कंठ मेसी हरवि १११ दो०।

माका यक स्रग गुन पति

दि, अर्जुन नामको दाम।

नी नर यह कंठदि रखे,

मटर दे कवि धाम १२३

मासिका (घ) माका, बार।

माका (घ) विश्वद्वय। [दि।

माका (घ) समुद्र, बार पुण्या-

मासवन (घ) नाममंडो।

के पिता का, मा-

माता का पिता।

रावण का नाम।

मास, (घ) बीरजन-

माप (द) घ) लोध-

वेका पय।

मापी (घ)

मासा (घ) मास,

मास, मास (घ)

चक, वा भावीय बार

बाचक १, १२।

मासकय (घ) महल-

मास (घ) मास,

मास नाम दोहा।

पेयि चामिप

पसकपक मास।

भचदमाप

निदेत विद्याप १।

मासरस (घ) मास

मासरीविणो-

मास विद्या (घ)

अनूप एह दो

मास दे। [

मासगुट टक (घ)



मुंह देख कर बात करना मुं०  
खुशामद करना, ऐसी बात  
करना जो सुननेवाले का  
मन भाये ।

मुंहदेखना मुं० मद्द खादना,  
सहायता मांगना, किसी  
का बहुत पाठर मन्थान  
करना, बहसाना, या बिसस  
होना ।

मुंह का फूटड़ मुं० बुरी बात  
बोलीनेवाला, बद्'जबान,  
निन्दक । [ पनाहर, बुरा ।

मुंहसाफा मुं० कलंक, अपमान,  
मुंह काफा करना मुं० कलंक  
खमाना, दाग खमाना,  
बावर्जतारना, सफादेना ।

मुंह से कोई वज्रतानी मुं० उदास  
दिखाने देना, व्याकुल  
दिखाने देना ।

मुंहसाफना मुं० गापीदेना,  
निन्दाकरना ।

मुंहचटाना, मुं० दिक्कमिन्न  
जाना मरनागन सामना  
करना मरनागन ।

मुंहचटा, मुं० खाटना, या काटा  
खादना, जैसे घोड़ा ।

मुंहचोर, मुं० गरमीचा, सजीचा,  
हपिकना ।

मुंहचोरी, मुं० काज, गरम ।  
मुंहमंगा, मुं० जैसा चाहा वैसा  
हो, जैसा मुंह में लागे  
वैसा हो ।

मुंहमोरना, मुं० चुपकरना,  
जीभपकड़ना, मुंह बन्द  
करना, काटना ।

मुंह में पानी पाना या भरना  
किसी चीज को बहुत पाने  
देना, किसी चीज से किसी  
मन बहुत संसधाना ।

मुंहमोड़ना, मुं० फिर जान  
चलाना, किसी बात से  
करने से दब जाना ।

मुंहलगाना, मुं० मिरिच खादि  
चररोचीकसे मुंहलगाना,  
या चरपराना, दिक्क  
जाना, मुसाबिब  
पका दोहा होना ।

मुंहलगाना, मुं० पीटे



साय सुत नाम । मुक्ता  
बदनधार ततः, सोमिता  
सुन्दर धाम ॥ १ ॥

सुतावली-सुता } (म ही मीती  
बल सुतावली } )

का हाफ मीती ।

मुक्ति ( स ) पालितिक दृष्ट

निर्वाण, तन्त्रानन्दमामि,

काममरणादि संसार बधन

॥ १ ॥ व मीती नाम - टी०

मुक्ति अमिव कैवल्य पद,

अपुन गर्भ अपवर्ग । नि-

जे न निर्वाण सुख, महा

विष पर जग ॥ १ ॥ मुक्ति

नी नार प्रकार की, नहि

देवता जग भोग । ने दृष्ट-

मान भुवाज कि पावत

मानव लो । ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

मुख- (स) देवता, बदन, ॥

पारंभ, उपाय, यहीरा

यव, विग्रह, मंद-की

आनन आस्य अपन, ॥

बल लुप्त छवि भीत ।

नभुंछप इमिका गरी, ॥

मुख पमदितपीत ॥ १ ॥

मुख वा तांछु नाम ॥

कमलपुष्पक । मुख-मी

कीन सजाय सरीस, ॥

गसिधारि विष्णुविष्णु

बदन । मुख आनन वा

मंतुंछप आस्य छवि, ॥

नाम युत अपन भवने

मणि माणिक्य आनन

अतिथे अवि मंडन, ॥

नताहु तंछु छवि । ॥ १ ॥

महापुष्पक छवि छवि, ॥

समान नव कीन, मुखम

न व कबी ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥



मंथ, बाक पची, बहूत ।  
मोचना ।

सुखरत्न. ( स ) गाद बाजा,  
मंथ । [ खात ।

मुखागर. ( स ) कुवागो, मु  
मुष्ण. ( स ) प्रमान, मुखिया,  
पडिला ।

मुग्दपटक. ( स ) मुंग का बारा ।

मुग्दपटी. ( स ) मुंगबरी ।

मुषकुन्द. ( स ) मुषकुन्द फूल ।

मुष्ट. मुष्टातक. ( स ) सरको ।

मुंड. ( स ) मुंड, कपार । चौ.

कोटिंग रुंड मुंड । बिग

होसहिं । सीस पर मदि

कय कय कोनहि । बिना

गिर के रुंड दोहते हैं और

उनके कटे हुए रुंड जीता

कोती होसते हैं ।

मुण्डो. ( स ) कोटी मुंडनी.

बिना सिंहा का हरिम ।

मुण्डोतिहा. ( स ) कोटी मुंडनी ।

मुग्ध. ( स ) मूर्ख, पचानी, सुन्दर

नूढ़ । [ सुन्दरी ।

मुग्धा. ( स ) कन्या, कुमारी,

मुग्धा. ( स ) निष्कर्म, गिण्या ।

मुठिमे. मुठिमेरी. मुठिमेरो. मु०

मुठिभिराघ. समुच्च, गगीच

से छात, जुटजाना, गिच्छट

से ।

मुठिका. ( स ) मुछ ।

मुठिमेहि, मु० साम्गगाहीगा,

गिच्छजाना ।

मुग्धे बाधना, मुग्धे चढ़ना मु०

हाथ पीठपीछे बाधना,

जकड़ना ।

मुग्धोति. मुद. मुदा. ( स ) इमे,

पानेंद, पछाद ।

मुद्रा. ( स ) प्रत्यवकारचौ, मुष्टर,

टाप, बिग, इच्छाचर,

रुपया ।

मुद्रित. ( स ) इयित, निहास,

बामोदित, मुग्ध ।

मुद्रिर. ( स ) नेच, बादस ।

मुद्रिका. ( स ) सुन्दरी, पंगुठी ।

मुद्रित. ( स ) चिह्नित, चिह्नित ।

मुद्रिता. ( स ) प्रसवता, चौ ।

मुद्रिता गनपद प्रीति

अनाया । अर्थात् प्रसवता  
 योः मेरे पद मे कपट  
 रहित मोति ।

सुधा (स) लिप्यः, भूत भूता ।  
 मुनि व चट प तपस्यो सत  
 भद्रा, लिख विन, रासादि  
 रहित जन ।

मुनिना (स) मुनिरुच्यः ।  
 मुनिपट (स) यत्काल मे कप  
 टा, वाचन को कपटा,  
 वक्ष्यतादि ।

मुनिपुष्प (स) यमसा फल ।  
 मुनि भूषण (स) गुणगो कस  
 साधन म. सा द ।

मुनिभूषण (स) गुणगो ।  
 मुनिपुष्प (स) यमसा फल ।  
 मुनिद्रुम (स) यमसा फल ।  
 मुनिनाभेन (स) विन्दन  
 मुनिपुष्प (स) यमसा फल ।

मुनिपुष्प (स) यमसा फल ।  
 मुनिपुष्प (स) यमसा फल ।

मुनिपुष्प (स) यमसा फल ।

मुनिपुष्प (स) यमसा फल ।

मुनीचोर (स) भोज पत्र ।

मुनीन्द्र (स) मुनीन्द्र, विन ।

मुनीम (स) मुनिप्रधान, सवि-

मुन्दा मुन्दी (स) कट्टा, चंगूती

मसापी ।

मुन्दिचा (स) चंगूती, मसापी ।

मुमुक्षु (स) मुमुक्षु, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

भौसेना मुन्, विन ।

तमुन्, विन ।

मुन्मन् (स) मुन्मन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

मुन् (स) मुन्, विन ।

रुप, मूलन्यायिक राम

॥ १॥ पद रंजक नदी पुप

करे, कत देती मिय लेत ।

हरि हसपद है बीर की

जीत बढ़ाई देत ॥ १॥

रुप (१) बाह, मुखा ।

मम (२) पूषा, मूय ।

मम (३) कठण्डर ।

हि, मुष्टिक, मुष्टिका- ( १ )

मुदी, मूठी मुखा, मुडी ।

चिह्न (२) मुखा ।

रुप (३) गोधा ।

रुप (४) ।

रुप (५) देवती मीमा ।

रुप (६) ( १ ) ( २ )

रुप (७) देवी, पदर की धी-

रुप (८) ( १ ) देवमय, दी

रुप (९) ( १ ) ( २ )

रुप (१०) ( १ ) ( २ )

रुप (११) ( १ ) ( २ )

रुप (१२) ( १ ) ( २ )

रुप (१३) ( १ ) ( २ )

रुप (१४) ( १ ) ( २ )

रुप (१५) ( १ ) ( २ )

रुप (१६) ( १ ) ( २ )

॥ २॥ घाननूय ॥ ४ ॥

मूक (१) मूक, मूक, घाननी,

घान, घानक । मूकनाम—

लंद बागद ॥ मूक मूक

संठ घान मूक मुष्टि कीन

॥ १ ॥ घी लंड विद्वितं

कुमाद ने दधीन ॥ २ ॥ मंद

मूक संकगाध बीर कीन

बावरी ॥ सतमंथ पंतदीप

वीर लंद बागरी ॥ ३ ॥

मूक (४) घेमाव ।

मूक (५) पुरनहार ।

मूक (६) सग्रीव, मया ।

मूक (७) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (८) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (९) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१०) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (११) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१२) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१३) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१४) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१५) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१६) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१७) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१८) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (१९) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )

मूक (२०) ( १ ) ( २ ) ( ३ ) ( ४ )



सुगे हरिना : सुरभी पृ  
 यन बनाय हरि बात पय  
 भुवरना : पन कुरंग  
 विद्योकि प्रभु धाये धनु  
 धरिजे : इति दममुष  
 कीता हरी कष्ट वेय हरि  
 के : : : यदा साग कीजेय  
 खा नंदत मृद पाता :  
 सारनेय कुडर परीगति  
 पतिततकाता : प्रान विं  
 हरि भाग जिन सुरत से  
 पटादी : तेरहदम कचुंद  
 दह मोहनोदहादी : २ :  
 सुखी को पनवाः हट कुरंग  
 मान—दी० । ऐन हरिन  
 बातप प्रयद, हरि सा-  
 रंग सो पाय । सुगनि  
 केने दे मसी, चली घोर  
 पनवाय : १ ।

सुगनाभी. सुगनद-(स) कजरी  
 सुगदध, सुगदया. (स) धूप  
 में प्रच धांति, सुगदया,  
 नरीबिका, निजंब देय मे  
 रतली जमह पर सुदेकी

द्वितीय ने ज्ञानार्थ सुगो  
 को प्रचको भवन-हीना  
 हीर कस्त न निचना ।

सुगयति-(स) सिंह, सुगराम,  
 सुमेष्ट ।

सुगडाच-(स) कनक की डांडी ।  
 सुगनत-(स) कजरी, सुगंधवनु ।  
 सुगनाका-(स) सुगंध, सुगंधुखे ।

सुगया-(स) पाखेट, पहेर,

मिहार, व्याधकर्म । मगट  
 की कि छोटी पीर यही  
 बिड़ियों के पनेक प्रकारों  
 में जिन जिन प्रकार की  
 जिन २ बिड़ियों की प्रायः  
 सोम मिहार कर के खाते  
 हैं उन से १०० बिड़ियों  
 के नाम बहुत खोज के पीर  
 इस देय के मिहारियों ने  
 पूछ कर जममः लिखे  
 साते हैं । जानना चाहिये  
 कि यद्यपि इन नामों में  
 बहुत फरक पाया जाता  
 है पीर प्रायः खाते में भी

२१ महाकांत २२ मुग्ध

२३ मय्य २४ तथा २५००

एतामुद्रा चतुर्विंशति प्रद-

धितं जाये ।

मूर्ति (स) बूटो, जड़ी, चभी-

पिपीलिन बूटो, चभीवन जड़ी,

मूल, जलो, चो जमानुष ।

मूर्तिमाधार वरसना, सु-चक्र

जीव के जेह वरसना ।

मूर्ति (स) पिपीलिन, जमानुष,

चमकड़योय, चमकपट्टे-

योग्य, सुन्वद्वय बंगवत,

चताही, मूठ, विषादि

मूर्तिगाम—दी० । मूठ

मूठ अउ मूठ नर, चय

चक्र वद मंठा मूर्ति जग

आने कडा, मनि जेमे जापि

कठ १२० [ मुग्ध ।

मूर्तिचपीतिका (स) जेवाभी

मूर्ति (स) मुक्कचक्र बाजा ।

मूर्ति मांसाया, धरुप, पतिमा-

दुतली देह, दूतता तम

बीर । [ मूर्तिमान्

मूर्तिमान् । स । मांसाया,

मूर्ति (स) शिर, माया, भा

मूर्ति (स) पादि, मूर्ति

अर, धंय, लुप, धंजी,

कारन ।

मूर्ति (स) मूर्ति, मूर्ति, मूर्ति

चो-जिन के द्यय

चक्र फूटे । उर चा

मूर्ति हल दूटे । पद

जिन के दीत, कारन

फूट मये ह ।

मूर्ति (स) मोक्ष, भाव, नि

वर कीमत, रतन ।

मूर्ति, मूर्ति (स) वृद्ध, मूर्ति

मुपिक, मूर्ति, बीर । [ प

मूर्ति बाइन (स) गहिम, ग

मूर्ति (स) चोरी कर, हल

मूर्ति (स) मूर्ति, बीर, मूर्ति

वन्धा ।

मूर्ति, मूर्ति (स) हरिष, हरिषी

कमूर चोवाया, पदमा,

हरिष, पशु । मूर्ति मान

नाम—कंदमोहिनी । मो

विवध मरीच वपुं चोरी



कहीं किसी चिह्नियों की खाते हैं और कहीं भस्म छोड़ें दूसरी को, पर यहाँ वही नाम लिखे गये हैं निम्न को इस मोलाने नाम खातेवाले प्रतिष्ठित लोग (ब्राह्मण, और, चण्डिय, ) भी खाते हैं, और नाम भी यद्यपि ब्रह्मा, छन्द, यज्ञ, वास्य, आप, म, सु पर ज्यों के त्यों वही लिखे गये हैं जो यज्ञ के बड़े निये और मोरमिहार पुकारते हैं क्योंकि दूध के मुख्य जलधार वही लोग हैं । पानी में तेरने वाली प्रधान पनिर या सु-गंधी—गंधवाह, भैंसा, बतक-गमीरी, बतमीगुलपा, बत-भीनिपा, सुरमाव, दिघउष, साजगर (डूंगर), निचमज, महिय, मकटा, रेव, मेज, मंछार, कर्को, चधेगा, येजला, मिथही, पदन, मसुका, धोन-वाह, गिरा, बानवे, गंधिया, घोडा, जोडा, लोको (पनमुष्ण) करमा, टिकवा

(किर्सेरार), धोहेर, विपुला, मेसुगि, भिन्नी, बड़ी-पोर सेवे पेरवासी यथात् गीझरी—गैवर्न, मंसेक, कुलन, तुंरनी कुलन, करधरा, कंस (हंसाने), जोविह, जमसंग, चौविह, टंटाई, गीझरी के छोटी क-योंत् सहराई—दाविह, मंरुं करकिंन, कीवार, गीझरी पोर सहराई के विपार बह वही जो पानी में चरती है । साजग, खैर, बाक, मोमी बह, पनचकचर्ज । चाहा के म-कार । गीरवाह, सरंग, मयव, धोटेरा, मर्को (दोभवा), पुपुषा, मंसुकेडा, सुरमा, पाज, चाफेन, करिवाइटे, दुदुता, हमुनी, सांभी, नपरका, बटाक, करवानक (बटिचिरी) बह, यानकयडा । बग में पोर ३५ पर रहनेवाली—सां, तोते, चासा, तोतरनीरिया, तीतर, केर, तीतर कीठिया, बकीर, बटेर, लता बहा बहाई









सूत्रादयः- (२) सुगच्छि मत्ता,  
सुगच्छा ।

मृगदन्तोः (५) कङ्को हनःकन ।

सहाय्य—(ख) मकी, बम्बई ।

जुवाहीन (स. मन्त्रालय, सिन्धु)

ਜੁਗਾਦਸ (ੳ) ਤਮਾਸ਼, ਕਲਾਸ਼,  
ਧਰਮਾਸ਼ - ਜਿ. ਭਗਵਾਨ ।

अथाचो । स । अग्नौही, वही  
 अग्नौ । स । वही वहीही,  
 अग्नौ । स । वही वहीही ।

सुगैन्द्र. (अ) मृदुहास, चिह्न ।

નૃહાંસો-સિનિરિચા, વાચ્યેતી ।

सुशाय मे कमल हाट, कमल  
के लह रंग के धारी,  
भरोडे । [ चन्द ।

सुषारससूत्र ( ५ ) जलस्य वा  
मृत्-पत्रः स मीरटी गच्छी ।

ਸੁਖਨ      ਸ      ਮੇਰਤੀ ਮਿਠੀ ।

नृदण्डः 'सो' इत्युक्तः ।

ਸਰਕਾਰੀ ਪ੍ਰਾ. ਖਬਰੀ

सदस्य, म. सि. रिस.

सूची क्र. १००

संख्या ८५३५/१९८५

सुद्धि-५: मौनज्ञः यः

सु. सु. (सु) गव.

સરા, મુખા, નિર્જીર :

सुन्दर ।

संज्ञिकः ( ३ ) विधि

महोदय: (मुद्रांश) महोदय

—62—

**CONCLUSIONS**

संयुक्त (न) मन्त्र, १५

44 44, 4123.

ସଂସ୍କୃତ (ସ) ବାସା ନହି !

सू.सू. (७) प्रस्तावना, ३२

बहलम १. —

सुदु सुदुव (सु) सोमव, ५

. मन्त्र, नरन, याज्ञः

ਬੁਢੀ ਫਾਟਾ (੨) ਨਾਮ ਰੁਝਾਨ

सूत्र (६) पुनः, संपादन ।

सूचा- (ब) निष्ठा, धान, म

बुद्धि, चक्षुः ।

ने (जो) उन्हें हींसा ।

सि.सं.सं. (सं) २५३३/१३३

एतन्मित्रमिह

संस्कृत (स) एवम् अत्रि

नेक वंशैव सुतां (स) } नर्मदा  
 मेघनमुता । } नदी जा  
 मेघनमुता । } निदिगिव

सिद्ध पथिख होत है, मन्त्रा,  
 धी०, सुसुदिसुदिसुदिस दिन  
 खरक्या। नेक वंशुता गोदा  
 परि धन्याः सव सर भिधु  
 नदी नद नागा। मंदा  
 द्विनि कर करहिं ब्रह्मना।  
 पदात्त श्री मंगा सरस्वती  
 लमुना नर्मदा गोदावरी  
 को धन्या है श्री मध पर  
 मान सर पादि श्री समुद्र  
 सोती पने ६ गरी श्री नद  
 मोन। द्विदि ते मंदाचिनी  
 कर वषाण खरग है ।

नेक वंश (स) } नर्मदा  
 मेघनमुता । } नदी जा  
 मेघनमुता । } निदिगिव

नेक वंश (स) } नर्मदा  
 मेघनमुता । } नदी जा  
 मेघनमुता । } निदिगिव

नेक वंश (स) } नर्मदा  
 मेघनमुता । } नदी जा  
 मेघनमुता । } निदिगिव

वर्षे वंश कोत, चौरे, कटि  
 धा मेपता नान—दी न  
 कनक योषि कटि मेपता,  
 सुदंष्टिका नालर रसना  
 हानी (कांक्षिनी, सतति  
 सुप विनाय ११११

नेक वंश (स) टाटि, पेट्टी, पंगाड ।  
 मेघ ( स ) बंटा, पम्प विमेष,  
 लय रव । बांदन, दी० ।  
 धाराधर लोचधर जेकद,  
 जोगीपन जीमूत । मुदिर  
 वन्ताइक तदितपति, पर  
 जंत जेय पुपूग ॥ १११॥  
 पन विदुरी जो बोजी,  
 रही पनन नति होय ।  
 न तादि देवग भासिगी,  
 कइ पथि करन सोद ॥ ११॥  
 पुनः छंद गोपान । नेक  
 घमघन बारिद होय ।  
 धन जीमूत वन्ताइक जीव  
 धमनोनि धाराधरमान ।  
 पम्पमुच परदेव्यपमान ।  
 पम्प मुदिर धममुचन  
 बाह । नचधर पद सो

मृगयावशः (स) मृगकोत्पत्तिः,  
मृगयया ।

मृगान्तो- (स) बड़ी इगलन ।

सुभाष..(५) ममी, बज्र ।

नृवाधीनः (स) मन्त्रराज, सिंह ।

भूगोल (अ) उत्तरांचल, उत्तरांचल,

८ - अक्षय्या १८८ विद्वत्सभ ।

मृगाक्षी- ( स ) मृगजैनी, बड़ी

ਸ਼੍ਰਮੀ. ( ਭ ਵ ) ਭਰਮੀ, ਭਰਿਣੀ,

बनसरी, रोग विशेष ।

सुग्रीव. (स) सुगरात्र, सिंह ।

मृदु। श्री. (स) निरिजा, पार्वती ।

ਸ੍ਰੀ ੴ (ਸ) ਕਮਰ ਛਾਟ, ਪਗਲ

को गड, रजत की दुण्डो,

મહાદેવ ।                      [ અગ્નિ ।

मृणाशमूत्र ( ४ ) पदार्थ का

मृदाशर्कः (स) भीरुटी मही ।

गृहस्थः । (प्र) भैरवी मिष्टी ।

महर्षदः (घ) प्रकरोवा ।

ਸਟੁਡੈਂਟ (ਸ) ਪਤਰ ।

गृहपत्य (भ) मिरिध

मन्त्रोक्तं (पु) ऐक्यम् ।

ਸਾਹਿਬਾਨ ਸਾਹਿਬਾਨੀ ਸਾਹਿਬਾਨ ।

सुदिता-(स) मोनका या दास

सूतः सूतः (स) गव, सुदीय

• અરા, સુષા, નિર્ભીક ગરીબ

- - शुद्ध ।

સાધિકા: ( સ ) સિદ્ધી સાંતી

अत्यु. (स) भीम. माण्ड. भा. १०

प्राप्तिसिद्ध

44

मृत्युञ्जय (स) मन्दार, मित्र

સુશીલાબેન, વાલિયા

सू. २३. (स) ब० अ० १०५ ।

સૂદન- (૬) જલ્મીયા, વડવાળ,

वाशिम ।

મહુ મહુલ-(સ) ખોમસ, પોમ,

॥ भस्त्र, गरम, याभत । ॥

मृही ५१९० (स) दाय पु ५१९१ ।

मृध (स) युद्ध, संघर्ष ।

सूच. (म) मिथ्या, स्वा. न, भू. ३,

बुद्धि, यमस्य ।

नि. (म) सुभे, योषा ।

विषय- (ग) राजस्वप्रविष्टि, १९७७-७८

पञ्चतन्त्रेण विज्ञेयम् ।

॥ कर्मयोग ॥ (अ) पञ्चमः विोधः ।

निकल गै न सुता (स) } नन्ददा  
निकल गै न सुता } नदी जा  
निकल गै न सुता } विदेशिव

चित्र पक्षि हो ग है, गङ्गा,  
भी. सु. सरिसरस द दिन  
कर कन्या । निकल सुता गोदा  
परि धन्या । सप्त गङ्ग भिषु  
नदी नद जागा । मंदा  
विनि कर कंठि बजागा ।  
सद्यो यो मंगा सरसती  
लमुना नन्ददा गोदापती  
जो धन्या । हुं ही सप्त पर  
मान सर सादि भी समुद्र  
भीनी भनी नदी यो नद  
मोन पद्मादि ते मंदाचिनी  
धर मङ्गल मङ्गल है ।

निकल (स) } कृष्णाय भी  
निकली. ६ } भी, जन्माधमी  
निकल (स) } भी, जन्माधमी  
निकली (स) } भी, जन्माधमी

निकल (स) } चन्द्र, गीत,  
रागा, कटिगुण, करवनी  
किटिनी, कटिगुण,  
भीभीना करवनी दया,  
भुट्टिचि, जने, गुण

भभी यज्ञ कोस, भी, कटि  
या मेघता नाम—दी दाय  
कनक योषि कटि मेघता,  
भुट्टिचि को जाल रसना  
कोनी किंकिनी, घतति  
भुट्टिचि ॥ १ ॥  
निकली (स) टटि, पट्टी, पंजाड ।  
मेघ (स) पंटा, पंजा विमेष,  
जय रय । यादव, दी. ।  
धाराधर जैनधर जैनद,  
जैनभीन जैनमूर्त । मुदिर  
पन्नाडक लङ्गितपति, पर  
जैन जय भुट्टि ॥ १ ॥  
पन विट्टिनी ज्यो भीमनी,  
रही पनस जति दीय ।  
स तादि देवता मोमेनी,  
कह पति कोरमे मोय ॥ २ ॥  
पुनः एद गोपान । जय  
धनपन बारिद दीय ।  
पन जोमून बन्नाड दीय  
भुट्टिचि धाराधरमान ।  
भुट्टिचि धाराधरमान ।  
भुट्टिचि भुट्टिचि भुट्टिचि  
दाद । भुट्टिचि भुट्टिचि

सुगमायक- (स) सुगमायक,  
सुगमायक ।

ਅਗਾਢਗੋ- (ੳ) ਬਝੀ ਫੁਮਾਰਨ ।

सुगन्धः (घ) ममी, चन्दन ।

सुभाषी ग. (स) सुभाष, सिंह ।

सृगानुय (स) उपवन, सुसुखा,

संस्कृत १०० वि. इमाद्वय ।

મૃગાચી ( સ ) મૃગનૈની, ઢફી

मृगो. ( स प ) हरगी, हरिणी,

बनसरी, रोग विज्ञाप ।

मृगेन्द्रः (स) मृगराज, सिंध ।

मृङ्गायोः (स) निरिशां, पाज्यती ।

શ્રુતિ. (૬) કમંદુ જાટિ, જમજ

को जड़, कमल की हथुड़ी,

भाषीडे । [ कन्द ।

नृपासमुत्त (सं) चमत्त का

मृतः सद्यः (स) सोरटी मही ।

सुषमः (स) मेरठो मिही ।

नटप्युक्तः (स) यत्करोति ।

सद्व्यवस्था (२) मन्त्र ।

४७४९५- (म) मिडिह ।

ਸਰਕਾਰੀ: (ਸ) ਟਿ-ਸਟ

आदसा (२) मल्लिकार्जुन तन्त्रः ।

सुदृढा- (स) मोनका या दास ।

मृतः मृतश्च (स) मय, मुहीन,

‘मरा, सुखं, निर्भीकं करोत,

- सुएक ।

अभिषेकः ( म ) मिहो मारी.

सत्य- ( स ) गीत. गण. भाष.

संस्कृत-विश्वकोष

\_\_\_\_\_

मुख्य (स) मन्त्री, विषय

एक भाग, बसुब्रह्म ।

सू. २५. (स) व. प्रा. भेद ।

મુદ્રાન- (૪) વસ્ત્રાના, ઉપચાર,

यद्विशमः ।

मृदु मृदुलः (स) श्रीमत्. धीमति,

८ नमः, मरम, यान्त ।

मृहीबार (से) दाय दुशरा।

મુખ (મ) યુદ્ધ, સંપાદન ।

सूत्रा. (म) मिथ्या, व्य(ज, भंड,

दुःखि, अपत्य ।

मि. (स) मंथे. गोडा ।

प्रेमस्य (सु) रसमयादिभिर्गोष.

महर्षिः श्रुत्वा ।

विष्णुसूक्तैः (२) कर्माणि विहितानि ।



नैकसं गेन सुता (म) } नर्मदा  
नैकसं गेन सुता } नदी या  
नैकसं गेन सुता } विदिमिव

सिद्ध पश्चिम दीन है, मन्त्रा,

बी०। सुसिद्धिचरित् दिग

करदन्त्या नैकसं गेन सुता गोदा

परि धन्या उ सव मर मिधु

नदी नद नागा । मंदा

विनिदर करहिं दन्त्याना

पयोत् यी गंगा मरस्यती

लमुगा नर्मदा गोदायती

को धन्या है दी सव पर

मान मर पादिं भी नमुद

योनी पनेद गभी यो नद

कोना द्वादि ते मंदाचिनी

का मन्त्रा नैकसं गेन सुता

नैकसं गेन सुता (म) } नर्मदा

नैकसं गेन सुता } नदी, नर्मदायती

नैकसं गेन सुता } को नर्मदायती

नैकसं गेन सुता (म) नैकसं गेन सुता

नैकसं गेन सुता } नदी या

नैकसं गेन सुता (न) पादुग, देवा,

नर्मदा, कटिमुख, करवनी

विदिमिव, कटिमुख

कोपाभा नरसम वसा,

सुदृष्टिषा, लनेव, लम

नर्मदा नर्मदा, नर्मदा, कटि

वा मेषता नाम—दी १५

नर्मदा योषि कटि मेषता,

सुदृष्टिषा नालव रचना

कोनी विदिमिव, सतति

सुत विदिमिव १११

नैकसं गेन सुता (म) टाटि, पट्टी, पंजाड ।

नैक ( म ) वटा, पन्त विदिमिव,

कल रव । वादेत, दी० ।

धाराधर लोनाधर लोनाधर,

लगाधीन जीमूत । सुदिर

वन्तादेक तदितपति, पर

लन लन्य सुपूग ॥ ११॥

यन विदिमिव जीवी बीजुनी,

रही पनल मनि बीय ।

नैकसं गेन सुता मनि बीय,

कटिपति नारम कोय ॥ ११॥

पुनः द्वादि गोपाम । नैक

धमयन वारिद कोय ।

यन लोनाधर वन्तादेक कोय

धमयनि धाराधर लोनाधर ।

पन्तसुत गदनेन द्वादि ॥ ११॥

यन सुदिर लन्य सुदिर

वादि । नर्मदा नर्मदा को

ममङ्ग याचि चट्ट ८ प्रकार  
भाव, चवण, १ ममङ्ग, २  
कीर्त्तन, ३ विनायन, ४ बात  
वहाना, ५ इङ्गमङ्गल, ६  
यत, ७ माति ८ ।

मैना. (गू. प.) नामघोरी राजा  
दिनायक, मारिका गघो  
विशेष, पापंती को माता  
का नाम । [ नाम ।

मैना. (स) एक पद्येन, का  
मैना. (पु) मर्यादा ।

मैनाकूटग, म० निर्मल करण  
साफ करना ।

मैनाकूटग. म० माकूटकरना,  
धोना, निर्मलकरना ।

मैनाकरना, म० मंदाकरना  
प्रकाशकरना, उपविष्ट  
करना । [ मंदना ।

मैना कुचेना म० मैना, मंदा,

मैनाहोना, म० मंदाहोना  
मंदनाहोना, मंदनाहोना ।

मैना. (स) मैना, मैना ।

मौरी. (प) मौरी, मौना, मौना ।

मप छोरी । कलक देवमात्र  
जति मोई ४ पद्योत्तु घो  
मोळ फयो ग्रम के मम  
मो. मर. पो कल देवमात्र  
मो माया मे मो. मति को  
मोरी । [ मर ।

मोच. (स) विषय, कथा, लय,

मोच. (स) पांडुरा ।

मोच. (स) कवच, कपड, मच

मोच. (स) गुमना ।

मोचन. (म) माया, चहा, चहा

हरण, होरना ।

मोचनिय्यास. (प) मोचन

मोचन. (म) मोचन

मोच. (म) विषय, कथा ।

मोचक. (म) मेमर का मु

गना, मेना का मुमका

मोनायाय. (म) मोचन

मोचका. (म) मोचका मचका

मोती को मो पावकत का, म०

वेद्यत होना, विषी का

चपमान होना, चनावर

होना ।

मौरी । मोग मोग यम यम । मोतीकूटकर भरने, म० मू

मोतीपिरोन : ( यश  
 सुझारवा पांख के त्रिवे  
 घोषा जाता है ) =  
 मोतीपिरोन, मु० मोती गूँवना,  
 निहास के साथ बीचना,  
 रोना ।  
 मोदः (स) आनन्द, हर्ष अन्त-  
 क्तरपकर्तव्य, सुखी ।  
 मोदकः (स) हर्षद्वारा, सद्द  
 विनिष ।  
 मोदनीः (स) बहुर ।  
 मोदितः (स) हर्षयुत, हर्षित ।  
 मोदः (स) घुरनहार ।  
 मोदः (स) फट्टा हुआ दूध ।  
 मोदकः (स) राजा विनिष,  
 धनीगूर ।  
 मोदकः (स) मोर की पांख ।  
 मोदकः (स) हतरी पीर से,  
 नेरी पीर से ।  
 मोदकः (स) नेयो ।  
 मोदः (स) नायादिपे आपन-  
 पी नानना, मञ्जान ।  
 मोदकः भागा, मु० अपने मिल  
 पचवा प्यारी के पचानका  
 निघने से प्रचित होमाना ।

मोदकीना, मु० भिन्नाना, बिची  
 का मन अपनी पीर में न  
 लेना, लुभाना, पच करना,  
 मंथ फेंकना ।  
 मोदकः (स) मञ्जन, मनीहर,  
 मित्र, मुखापनहार ।  
 मोदनीः (स) मुखापनहारी  
 मोदनी ।  
 मोदकः (स) भूठा । [ खाना ]  
 मोदकः (स) वेयो, मृज्ज,  
 मोदकहारी (स) मोद का  
 नागिका ।  
 मोदितः (स) मुदित, प्रचित,  
 जीवुषा । [ मटपत्रो ]  
 मोदनीः (स) वेया, रूपवती  
 मोचः (स) मुक्ति, सुगत,  
 निम्न, मोचा । प्रपदगै,  
 संसारविमोक्ष, परब्रह्म  
 प्राप्ति । मोच नाग—दी०  
 मोच मुक्ति प्रपदगै पुनि,  
 क्रमत् यव निर्वाण । हरि  
 पद गति कैवल्य युत,  
 प्रसनि दीर्घ भगवान् ॥१॥  
 मोचकः (स) मोचा ।

मोषातः (८) मरु, भाम ।

यजम- (यज्-यजमा) पु० म

मोक्षित म मातो ।

यज, पूजा ।

मोक्ष (५) क्षय, मृग, तुष्णीम्  
क्षयना, तुष्णी ।

यज्-यज (६) नेत्र, दीप्ति

यजमान् (५०) यज्-यजमा ।

मोक्षि (५) मक्षि, मरु, मं  
मक्षि, मक्षि, मक्षि, मक्षि,  
मक्षि, मक्षि, मक्षि, मक्षि,  
मक्षि, मक्षि, मक्षि, मक्षि,  
मक्षि, मक्षि, मक्षि, मक्षि, ।

यज करना/ पु० यज कर

यज करती, यज करती

यज करती, यज करती

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यजः (५०) यज्-यजमा

यज, मक्षि, मक्षि, मक्षि

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यज (५०) यज्-यजमा

यज करती, यज करती

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यज करती, यज करती

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यज, यज (५०) यज्-यजमा

यज करती, यज करती

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यज, यज (५०) यज्-यजमा

यज करती, यज करती

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यज, यज (५०) यज्-यजमा

यज करती, यज करती

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यज, यज (५०) यज्-यजमा

यज करती, यज करती

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यज, यज (५०) यज्-यजमा

यज करती, यज करती

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

मोक्षि (५) मक्षि, मक्षि, मक्षि

यज, यज (५०) यज्-यजमा

यज करती, यज करती

छरु के सधीवन मन्त्र जानत  
 रहे पर सन्नीवनी बिया  
 नाहीं । पर देवजानी नाने  
 गुणावाये की पुत्री बारह  
 वर्ष की अवस्था वा भी एक  
 पटमास कष के साथ पढ़ती  
 रही । सोई साथ युवा कोर ते  
 कष तें देवजानी ने भोग की  
 इच्छा किया । परन्तु याने गुरु  
 पुत्री जानि नहीं मानेउ । तद  
 देवजानी माप दिई कि हमारी  
 आमा ऐसी भंग किया तेने तूं  
 जनारी पिता कि बिद्या पढ़ाई  
 विजृत हो जाइगे । तद कष  
 भी माप बाकी दियो कि जो  
 तुम को बारह भोग का भी तौ  
 तुमि खत्री पति पाँदगी । एक  
 माप देवजानी को याही रह्यो ।  
 सोर दूसरो प्रसंग जानी बाहिये  
 कि एक दिन राजा हयवर्ष  
 देव बानानुर का आता ताकी  
 पुत्री मन्दिटा सहचिनी सहित  
 सोर देवजानी गुणावाये की  
 पुत्री को सहने नदी की बझ

जाहि जाहि श्री सभाष सान  
 कोदायुत करत रही । संयोगात्  
 यो नारद जू को भावत देखि  
 सबी कष ते निसरि प्रति  
 सजित पातुर होय बझ प्रहण  
 करप लग्यो याही कान बझ  
 मन्दिटा का देवजानी तें उचटि  
 पचटि बहत भयो । मयात्  
 स्मिर हुए मन्दिटा ने वझ  
 अपनी देवजानी के गरीर में  
 देखी दोनों तें परस्पर दुर्वाद  
 बझवाद् नीच जंघ होने लग्यो  
 कि पूर्वे मन्दिटा ने खत्री कि  
 तेरो पिता मेरो द्वार का भिक्षु  
 है । तकि जनारी बझ प्रहण का  
 कड़ा जगद हो तूं ने पड़पी  
 किया । भयो तौ तू को राज-  
 पुत्री का बझ भाया तौ तूं राज  
 पत्नी होयगी या माप दिई ।  
 देवजानी को याही ऐसी कहि  
 माप दियो कि हे राजपुत्री हम  
 तुम्हारे पिता के गुरुपुत्री हूं जो  
 कदाचित् बझ प्रहण में पोया  
 हो गइ तो ऐसी कथा पद-

चित्त दसोवत् बिबेचन कहै  
 तू भो दासो भाव को माति  
 होइगी । या माप सुमत मभिष्टा  
 ने मोगो मोगे पावत पात को  
 धिग बहा सब दासो बिनाय  
 कप माहि दियो भिराय । अब  
 सब चपने कहै कियो को खाइ  
 के कहै ते कर्मित को ताड़न  
 करि घर चलो गइ । बाके  
 दोहरी दिन राजा यजाति ने  
 बाहोदिया मिहार करत कब  
 हुत वा कप पर भाके भीतर  
 बाके एव कन्या दिगम्बरी धनि  
 कपवन्तो देखि दवायुक्त दासो  
 पाग बख चपनी गिराय सोही  
 बाकी ऊपर होत दास पकरि  
 ऊपर खेचि लियो, ऊपर होय  
 बानी दया भट पाति की बातें  
 पुरते गए उन्ही ने चपनी परि  
 कप गुलाबायि की पुत्री चब  
 भिष्टा की कुवासी राजा त  
 बियो चब कहै कि  
 भी हम कुमारी को होय तू ने  
 पर चबिगी, तौ चब दोहरी

ते पावि  
 चको पिता को चपने हम  
 भाय तुझारी पती होय  
 का यम यदा  
 पुत्री जानि हमारा  
 परतु कहोने नहीं  
 ने राजा के चपने माय  
 को चप कि, तब दिवस  
 वा को पिता पाव के  
 गुलाबायि ने सब बातें  
 करि बति  
 कपवन्ती को माप भज  
 कन्या तब कपवन्ती  
 की पीर कीर यतन ते  
 नहीं पायो, परतु कब  
 बायि ने देय भानी चपनी  
 के कहने रा की पुत्री मन्दिरा  
 का दासो होय चरने पुत्री  
 जानी के मायदायी बड़ी की  
 जाने कन्या, तब राजा कप  
 वन्ती ने चपन जान माय राज  
 पाट रखा हेतु भाइ एव पुत्री  
 का उठाय बचन जानि मन्दिरा  
 पुत्री को चपने चरते निहायि

देवजानी के साथ करि दियो।  
 तब गुलापाय्य ने राजा याया-  
 त्त को देवजानी को बिवाह  
 करि बिना कियो दोर मन्दिटा  
 को पाय करि वा पर छुट्टि  
 काए तें राजा को बजित करि  
 दियो, राजा जब देवजानी  
 मन्दिटा सहित अपने घर  
 पायो, कोई बात दिने राजा  
 ने मन्दिटा को देवजानी ते भी  
 पति रूपवन्ती रही कामातुर  
 लोकीन बापर होय देवजानी  
 ते मोत छेह दाढ़ि दियो, तब  
 देवजानी ने राजा को पति  
 विषयी की रीति देपि अपने  
 पिता के पास जा रही, गुला-  
 पाय्यवृत्तिवाराना को पाकरछ  
 कही सुनि बाकी माप दियो,  
 वा युवा अपनी ही प्रहृत नों  
 हवभाव को प्राप्त भयो, कोई  
 बात छेरि सीते कोई पाकरों  
 कि देया अपूर्व रूपवन्ती राजा  
 के समी नों जा रही हे राजा  
 ने बाहर भावते वा पर पति

लोकीन होय-पम्पहार गति  
 दृढायका ते विषय हो रहा,  
 पद्यात् पूर्ण यदुनाम छेठ पुत्र  
 ने अपने युवावस्था प्राप्ति  
 कियो वा न नयो, तब वा को  
 राजा ने यायराजकीन बंग का  
 दियो, पद्यात् पुत्र छुट्ट पुत्र तें  
 बाहना कियो, वा ने पिता  
 याया मागि अपनी युवावस्था  
 तत्काय संबध करि पापु छह  
 पयसा को प्राप्त होर रहा,  
 पद राजा ने वा दिनीते अपने  
 कामातुर होय प्रथम को  
 नामा प्रचार करितपर रहा,  
 एष दिन अपनेरा मन्दते यो  
 बन्दिजुओं कही कि हम सदैव  
 सुपुर आने को चाहत हैं,  
 श्रीबन्दिजुने वा पायल्य जाती  
 सुनि अन्त्यान्तर पर टाछ दिए,  
 तबराजाने श्रीविद्यामित्रगुरुदेव  
 ने अपने कल्पना अपनी कही  
 तब विद्यामित्र ने ज्ञान दृष्टि  
 करि नन्व पावाहन करिराजा  
 को पाचाय मार्ग को सदैव

यथाया, निकट सुरपुर  
 जात देवताओं के विचार कवि  
 चायर्थ जाति सुरपुर की  
 मर्यादा मानि सपने यमने  
 तनों के प्रताप राखा को  
 सुरपुर जाने की मोक्षे मर्या  
 कोक में गिरा दियो सुर-  
 पुर की जाने न दियो ।  
 यजन- (स) पूजन, चाराधन,  
 यज्ञ । [ विनियोग ]  
 यजुर्वेद- (स) दृष्टा वेद, वेद  
 यज्ञ- (स) मध, याग, बलिदान,  
 मण्ड, सज ।  
 यज्ञभूषण- (स) कुम्भ ।  
 यज्ञवृक्ष- (स) खंटा ।  
 यज्ञाहु- (स) गुरुभूषण ।  
 यज्ञीय- (स) यज्ञर वृक्ष ।  
 यमपायन- (स) पवित्रयम ।  
 यमभूत, यमोपवीत- (स) पुं-  
 विज मेष, जनेत्र, जयोप-  
 वित, खंठभूषण, जगीत ।  
 यतन- (स) स्थान, उपाय, यत्न  
 यतन ।  
 यतराज- (स) नाराज, विमुख ।

यति, यती- (स) यत जतन  
 करना मुक्ति के लिये ) पुं-  
 तपस्वी, भिक्षारी, संन्या-  
 सी, वैरागी, जैतियों का  
 भिक्षारी ।  
 यमुत्तपण- (स) पगला गीत ।  
 यत्- (स) जैतिक, जहातेक ।  
 यत् (स) यत् जतन करना । पुं-  
 उपाय, यतन, उद्योग,  
 प्रबन्ध, तद्बीर, कोशिस,  
 निहनन, साधनामी, जतन ।  
 यत्र- (स) यद् जो वि० वि० )  
 जहाँ विधि, जिस स्थानों,  
 जहाँ, जहाँ, जिस जगह ।  
 यत्रतत्र- (स) जहाँ तहाँ ।  
 यथा- (स) यद् जो वि० वि० )  
 वही, जैसा, जिस रीति,  
 जैसे, सादृश्य, ऐसे प्रकार,  
 जिस प्रकार से, जिस रीति  
 से, बराबर, तुल्य ।  
 यथाक्रम- (स) परियाटो से,  
 जैसा, जाको मर्याद ।  
 यथातथा- (स) जैसा, तेरा,  
 वही, वही ।



यथायोग्य (स० यथा जैसा योग्य  
ठीक ) क्रि० वि० । जैसा  
चचित, जैसा चाहिये, ठीक  
से, यथाचित ।

यथायं (स० यथा जैसा, यद्यं  
अभिप्राय, जतसह ) पु०  
क्रि० वि० । सच, सरे, सांज,  
सत्य यथायोग्य, ठीकठीक,  
जैसा, चाहिये ।

यथाचित (स) यद्विसे, जैसे ।

यथावत (स) सनात, संपूर्ण,  
सह । [ यथायोग्य ।

यथाविधि (स) विधिपूर्वक,  
यथानुक्ति (स० यथा जैसा या  
अनुसार, गति बंध ) क्रि०  
वि० । जैसी सामर्थ्य हो,  
यथोक्त से अनुसार, अति  
तना हो सके ।

यथोपाय (स) उपायानुसार ।

यथावयव (स) जैसा हीने  
का योग्य ।

यथाचित (स) जैसा का जैसा,  
यथोपाय । [ यथा ।

यथोक्त (स) यथा वक्ति, जैसी

यथोक्त (स) जैसी कही गयी ।

यथाचित (स० यथा + चचित)

क्रि० वि० । यथायोग्य, जैसा  
चचित, जैसा चाहिये,  
यथायोग्य ।

यद् (स) जब, क्योंकि । [ लेख ।

यद्यपि (स) जब से, कहां से,

यदा (स० यद् + अ) क्रि० वि० । जब

जिस समय में, कब जगि,

जखिनू जानै । [ भी ।

यदापि (स) यद् नियम, यद्

यदि (स० यद् + अ) क्रि० वि० । जो

कदापि, जैसा, क्षि,

पश्चात्तर, विचार, प्रव ।

यद् (स) पु० एक राजा का

नाम जो राजा ययाति का

बड़ा बेटा और योद्धा

का पुरदा और बन्धुवंधी

राजाओं से पाँचवाँ राजा

था ।

यदुक्त (स) पु० यद् राजा का

बुराना, यदुक्त ।

यदुनाय यदुनाय (यद् यदुक्त

जिसे का, नाय दा पति

मालिक ) पु० श्रीकृष्ण,  
वासुदेव ।

यदुवम० (स) पु०। यदुकुल, यदु-

एव राजा का घराना ।

यदुवमो (स० यदुर्वम) पु०। यदु-

वि वंश के लोग, यादव ।

यद्- (स) कब, क्यों ।

यद्यपि- यद्यपि- (स) यद्यपि-

जो भी, जो निश्चय, यदिच,

यद्यपि, जो भी, जो ।

यद्वा (स) वाणा, कब, डाढ़-

का, किंवा ।

यद्यपि- (स) ताका वा अजीव

कदाहीदि, कृपुक ।

यद्यपि- (स) ताका यद्यपि तुली-

सी वत् । [ यमराट् ।

यत् । स० यत् । ताका यत् ।

यत्, (स) यत् । ताका, यत्, पुन,

अन्तम, यद्यपि निम्ना का

देवता ।

यमक (स) यमराट्, यमक ।

यमकराट् (स) यम की देना ।

यमद्वय (स) यमराट् का

विलासक ।

यमराट्- (स) यमराट् ।

यमराट्- (स) यमराट्, यम-

कृष्ण ।

यमराट् यम- } (स) यमराट्,  
राट् यमराट्- } यम, यम

राट् । यद्, तोटक । यम-

राट् यमराट् तथा यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

यमराट् यमराट् यमराट् ।

आच छटांत सन, धर्म  
 राव होपंत । ते सुच पिय  
 सुम नाम सुनि, वर वर  
 वर आपंत ॥ २ ॥

यमहाष्टक- ( स ) नाम द्वितीयं  
 वा हय श्री वे कुवेर वरमं-  
 जारो वा द्विपुत्र एव नच  
 धडा, दोसडा सोडा दुप  
 सुंदर नारद जू के नःपते  
 दोनो हय श्रीवा हो वे  
 श्रीकुवपान नं श्रीनन्द  
 जू के हारे स्थित भए श्री  
 छरावतार होने ने जखर  
 वे धडा आनि वे वरार  
 वरी वा दुपा ।

यमानुषः (न) यनुनामदी ।  
 यलोवे (प) संदनी वेने ।  
 यमुन, यमुना- (स) नदी विमेष ।  
 यमुनाकाता (ध) आच, यम,  
 धर्मराज ।

यदा- (उ) भांग । [ वष ।  
 यव- (रु) श्री यव विमेष, इन्द्र-  
 यवहरदीट- (द) पुन ।  
 यवनक्षेत्र- (म) विष्टारव ।

यवनेट (स) देवाय, यवसुन ।  
 यवरोटिषा- (म) यवकी रोटी ।  
 यवमल- (न) यव का मनुष्य ।  
 यवमोह- (रु) यवपा ।  
 यवमाजदा- (म) यवराज ।  
 यवचार- (स) यवचार ।  
 यवापन- (म) यवापार ।  
 यवानिवा- (स) यवराज ।  
 यवान- (म) यवमा ।  
 यम- (म) श्रीरि, दुष्ट, पति ।  
 यदी- (रु) जेठोनध ।  
 यदीपुष- (स) विर्ताविया ।  
 यदीनध- (स) जेठोनध ।  
 यम- (रु) जेमा ।  
 यमद (स) यस्ताधाम ।  
 यमिन्- (रु) यमिर्विषे, निमनी ।  
 यहां वा यही, मु० ठीक इसी  
 प्रगट ।  
 यमपावन- (रु) पवित्रयोग ।  
 यम- (म) यमराज, देवजाति  
 विमेष, पूजन, दान ।  
 यवदूष- (स) यव ।  
 यववर्ति, यवगाट- (स) कुवेर,  
 वरमंजारी ।

सप्तम्युक्- (न) युग ।  
 सप्तम्युक् (न) कण्टारि ।  
 सप्तम्युक् (न) मूलकण ।  
 सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक् पञ्चास  
 उक्त ।

सप्तम्युक् (न) सप्त, मेघ ।  
 सप्तम्युक् (न) सप्तम्युक् मिश्रक,  
 ममता, मिश्रारी, ममिने  
 वाचा । [ एक ।

सप्तम्युक् (न) पुराणिता, सप्तम्युक्  
 सप्तम्युक् (न) सप्तम्युक् वा कर्म ।

सप्तम्युक् (न) सप्त, मेघ ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक् विविध ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, सप्त  
 कर्मिहाव ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक् सप्तम्युक्  
 सप्तम्युक् सप्तम्युक् सप्तम्युक्

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, सप्तम्युक्  
 सप्तम्युक् सप्तम्युक् सप्तम्युक्

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, सप्तम्युक्  
 सप्तम्युक् सप्तम्युक् सप्तम्युक्

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, सप्तम्युक्  
 सप्तम्युक् सप्तम्युक् सप्तम्युक्

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, सप्तम्युक्  
 सप्तम्युक् सप्तम्युक् सप्तम्युक्

सप्तम्युक् एकद भी होदि  
 तो भी नाय करीया भातु  
 भात कुन धि नाग की  
 सप्तम्युक् करीयो ।

सप्तम्युक्- (न) तीर्थ, तीर्थ, सप्तम्युक्,  
 सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) तीर्थ, सप्तम्युक्,  
 सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक्,  
 सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक्,  
 सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक्,  
 सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक्,  
 सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक्,  
 सप्तम्युक् ।

सप्तम्युक्- (न) सप्तम्युक्, तीर्थ, सप्तम्युक्,  
 सप्तम्युक् ।

यावक. (स) चापो, चाक्षवर्ण,  
नशावर, चारत ।

यावकमस. (स) दृपरियापुष्य ।

यावत्, यावद्. (स) जवन्नमि,  
जवताई, भितना, जव नक,  
जवांभी ।

यावानादी. (स) मुर्जा ।

याव. (स) ज्ञानी ।

यावयूढ. (स) जवाखार ।

यास. (स) जयाना । [ सटा ।

युक्त (स) चरित, उपाय, योग, सन ।

युद्धारमा. (स) रासना ।

युक्ति. (स) प्रवीचता, द्यौटी,  
न्याय, अनुमान, दलील ।

युग (स) द्विसंख्या वाचक,  
छोड़ा, सत्य, त्रैगादि  
चार, पारस दई, दीपुज्ज ।

युगपचक. (स) कचनार ।

युगपत. (स) एकेवार, एकत्र,  
एक जाल ।

युगच. (स) दी, युग्म, युग,  
छोड़ा, दी० । मिरधरि  
रत्न गुरु पाद युग, युगच  
यनल यन दीय । युग्मवैत

मियुनं उभे. बंद द्विते युत  
सीय ॥१॥ गुरु बिरंज-गुरु  
नध्वरो, गुरु शरेय गुरुर्मसु ।  
हरिबिन्दास सिर नाय पद  
कीन्ध मन्त्र पारंभ ॥२॥ शुक्त  
शुक्त पुनि शुक्त युत; -रवि  
तियि हप तिमिरारि ।  
अपि शुक्त भव शुक्त निधि,  
नृ युत बयं उदार ॥३॥ रागा-  
नुभ पद इट-निज, रामानुज  
पुर धाम । रागान्त्वय मो  
लन्य निज, हरिबिन्दास  
निज नाम ॥ ४ ॥

युग्म. (स) छोड़ा, युग, दी० ।

युत. (स) भिन्ना, विगिठ, सटा,  
जड़ित ।

युयिका. (स) युयो, पुष्य विग्रेप

युद्ध. (स) रप, धंषाग, सड़ाई ।

यौ० युद्ध बिरुद्ध द्वाद-दोठ  
बन्दर । राजपताप मुनि-  
रिचर अंतर ॥ युद्धविरुद्ध  
अर्थात् युद्ध नै विग्रेप पद-  
भि गये ॥

युधिष्ठिर. (स) कुन्तीपुत्री पांडव ।



मती भोगादं द्वे पदसो ।  
 योगनिद्रा ( म ) काश्चिद्रा,  
 जागता । [ ग्राही ।  
 योगिनी ( त ) भूतिनी, पि-  
 योगो- ( म ) तपस्वी, योग साधक ।  
 योगेश्वर ( भ ) योगीश्वर, सिद्ध,  
 दीक्षा । सन्ध्याभो बर व्याज  
 पति, कटनी मुंछी होय ।  
 दंष्ट्र बाह भगवान् सन,  
 निर्वाणी पद्य सोय ॥ १ ॥  
 रिपि शिष्यकृतापन ० पी,  
 जतो तपी मुनि पादि ।  
 योगी जगत्तन्त्रिगणकति  
 नितही खीतत तादि ॥ २ ॥  
 योगेश्वर नव विवरण ८ ( म )  
 कवि, हति, चत्तरीच, प्र-  
 बुद्ध, पिप्पलायन, पावि-  
 होत्र, द्रुमिल, पमस, कर-  
 भाजन, एते नव योगेश्वर  
 योग ( स ) उचित, सुप्रव, उग्र-  
 युद्ध, दायक ।  
 योगनक्षत्री ( न ) मज्जीठ ।  
 योधा ( स ) युद्धकर्त्ता, वीर,  
 समामर्द ।

योनि ( न ) भग, उपज स्थान ।  
 योनिचोराभी लक्षविवरण ( स )  
 स्थावर वीर्य २० रुच,  
 लक्षणव ८ रुच क्षुब्ध  
 एगाद ११ रुच, पक्षी  
 दग १० रुच, पशु तीक्ष्ण  
 २० रुच, नर पारि  
 रुच । ८४०००० ।

योपा ( स ) स्त्री ।

योपित, योपिता ( स ) स्त्री,  
 पवला, नारी, पुतली ।

योपिलिप्त ( स ) हस्तदो ।

योसिमोसि ( स ) जो तूं रे सो  
 तूं रे, जैसे तेमै ।

योष्ठ ( भ ) योष्ठ योष्ठ वा मूंगा  
 नाम । सोरठा ॥ रष्टपट्ट-  
 दंता वास, पथर योष्ठ  
 नंदलाल द्वे । करत विंश  
 मदनान, धी प्रवाल  
 दिट्टन सहित ५५ ॥ १ ॥  
 नामनाला । दीक्षा । बानि  
 योष्ठ पुनि रदन कद,  
 पथर मधुर एदि गाय ।  
 नाम लिखित नामो मरज

विशेषः कथं योऽपि ज्ञायते ॥ १३ ॥  
योगसूत्रं योऽपि [ १३ ] इति, न हि यः  
यत्किञ्च [ १३ ] तादात्म्यः ।

र

रत्नकोटिना, सु० धरणा, रत्नना,  
वचनाः ।

रत्नतेना, सु० धरणा, रत्न-  
कोटिना वचनाः ।

रत्नतेना, सु० लेखेना ।

रत्नभागादपि सु० धरणा, रत्नना,  
वचनाः । [ विषयः ]

रत्नं रत्नं [ १३ ] रत्ननामा

रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं  
नाम रत्नं, नाम रत्नं, रत्नं, रत्नं  
रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्ननामा रत्नं, रत्नं, रत्नं, रत्नं

रत्नं भवति भव, योग  
नियमनामा ॥ १३ ॥

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।

रत्ननामा [ १३ ] नामनामा ।



रत्नरीमः [न] रीठा ।

रत्नदीपा (स) पिंदुरिपा ।

रत्नयानिः (स) सान्न धान ।

रत्नप्रागः [न] सान्नचन्दन,

यतन, पथर छत्त ।

रत्नाङ्गः [न] केसर, सान्न

चन्दन, समझा गुच्छी ।

रत्नाङ्गीः [म] मज्जीठ ।

रत्नाङ्गीः [म] सान्न चन्दन ।

रत्नाङ्गुः [न] सान्न ।

रत्निष्ठाः [म] सान्नचन्दन ।

रत्नः [म-प] गिरा, गाडी, नक्ष ।

रत्नः [स] गुन संज्ञा, जीवसंज्ञा,

सुर्यवंशो, राजादिसौव वा

पुत्र । [के राजा ।

रत्नराई, रत्नरावः (प) रत्नकुच

रत्नकुचधरो मदिननायकः [स]

रत्नकुच मक्ष के सूर्य ।

रत्नगतिसेवकः [स] सुपोव ।

रत्नकुचमक्षपतंगः [द] राज,

रत्नकुच के पतंग चर्चात

सूर्य कुच वा प्रशामककर्ता ।

रत्नकुचकेतुः [द] राजचन्द्र ।

रत्नराजः [म] दशरथजी,

रत्ननाथः [म] राजचन्द्रजी ।

रत्न [स] दासिह, निधन, हरिद्र,

कंगाल ।

रत्नः [स] भरमर, गीमा, सति

हरिद्र, सान्न पीठाभादि,

सुरारांग । रंगनाम सान्न,

पीठा नीला, गुस्तापी,

सान्न, पीठा, धुंधला, हरा,

पञ्जनी, वैजनी, सोसनी,

नारंगी, वनफली, कासनी,

भूरा, सुगहरा, नाफरंभागी,

संदरी, नाफरानी, मिटिया,

पञ्चासी, बीतसी, पिस्तई,

सुरमई, ककरिनी, काजी,

धानी, जसुरई, जंगली,

मुंगिया, पियाली, सान्नवर्दी,

तूची, फालवई, गंधकी,

कपूरी, चन्दाही परगना,

गोरा, पगरई, चम्पाई,

बादाही, बघंतो, चमोपा,

जदा, पथरंगा, दकरंगा,

कुसुमी, मसागीरी ।

रंगसंगता सु- रंग चटाना;

अगड़ा चटाना, बघेड़ा

मसाना ।

जोड़पुर पादि हैं । राजपूतों  
 (चविही) में कहे एक भेड़ का  
 घर। घर नाम लिखा जाता  
 है—सूर्यवंशी १ चन्द्रवंश २  
 भृगुवंश ३ वसुदेववंश, ४ सोम-  
 वंशी ५ सोम वंशी ६ मिथो  
 दिवा ७ कछवार ८ हाठीर ९  
 सोहान १० हाडा ११ पम्मार  
 (पम्मार, पम्मार, पम्मार) १२ पम्मार  
 १३ बागुल्य १४ मन्वरिया,  
 बैय्य १५ तिमोचकही मैय्य १६  
 लोमी बैय्य १७ अतिटानपुरी  
 बैय्य, १८ कपिला १९ पदेस २०  
 चिनवार २१ मन्वरिया २२  
 मन्वरिया २३ सोमल २४ चमि  
 ठिया २५ ठिटिठा (ठिटिठा  
 २६ मन्वरिया २७ मन्वरिया २८  
 सोवरिया २९ पाल ३० बड़  
 मन्वरिया ३१ धिरमल ३२ कान  
 पार ३३ पुरवार ३४ विजेल  
 ३५ बैय्य ३६ मन्वरिया ३७ मिथो  
 ३८ मन्वरिया ३९ सोमल ४० मन्वरिया  
 ४१ मन्वरिया ४२ मन्वरिया ४३  
 ४४ सोमल (सोमल)

४५ सोमलमन्वरिया ४६ मन्वरिया  
 (सोमलमन्वरिया) ४७  
 ४८ भूतवा ४९ मन्वरिया ५०  
 ५१ मन्वरिया ५२ मन्वरिया  
 ५३ राजपूत ५४ मन्वरिया  
 ५५ मन्वरिया ५६ मन्वरिया  
 ५७ मन्वरिया ५८ मन्वरिया  
 ५९ मन्वरिया ६० मन्वरिया  
 ६१ मन्वरिया ६२ मन्वरिया  
 ६३ मन्वरिया ६४ मन्वरिया  
 ६५ मन्वरिया ६६ मन्वरिया  
 ६७ मन्वरिया ६८ मन्वरिया  
 ६९ मन्वरिया ७० मन्वरिया  
 ७१ मन्वरिया ७२ मन्वरिया  
 ७३ मन्वरिया ७४ मन्वरिया  
 ७५ मन्वरिया ७६ मन्वरिया  
 ७७ मन्वरिया ७८ मन्वरिया  
 ७९ मन्वरिया ८० मन्वरिया  
 ८१ मन्वरिया ८२ मन्वरिया  
 ८३ मन्वरिया ८४ मन्वरिया  
 ८५ मन्वरिया ८६ मन्वरिया  
 ८७ मन्वरिया ८८ मन्वरिया  
 ८९ मन्वरिया ९० मन्वरिया  
 ९१ मन्वरिया ९२ मन्वरिया  
 ९३ मन्वरिया ९४ मन्वरिया  
 ९५ मन्वरिया ९६ मन्वरिया  
 ९७ मन्वरिया ९८ मन्वरिया  
 ९९ मन्वरिया १०० मन्वरिया

निहं ८५ मरये ८६ रोहिते ८७  
 चमूपायने ८८ नैमिषा ८९ धन  
 ९० काट ९१ रैषरा ९२ कैल  
 ९३ सोनवान ९४ शीघ्रित  
 ९५ वसुतिदा ९६ विषया ९७  
 पनटेया ९८ रदिदा ९९ चीनक  
 १०० कनकन १०१ धनवत्  
 १०२ शीघ्रं खन १०३ निनि  
 १०४ चरदास १०५  
 बहरे विद्या १०६ नमवत् १०७  
 कृपिवंश १०८ मनवत् १०९ रज  
 ११० भरी गुजर १११  
 विभेदिया ११२ सोमं ११३  
 पटिनी (पटीनी) ११४ चयम्  
 ११५ मोरहर्षिदा ११६  
 घरघर ११७ डोर ११८ गरव  
 ११९ विसृष्टिया १२०  
 १२१ सुदुर्गमी १२२  
 विभरिदा १२३ गये यां गये  
 १२४ डोरी यां डोरी १२५  
 १२६ मयरिदा वा  
 १२७ वमनिया ना वन  
 १२८ विसृष्टिया १२९ धनिच  
 १३० चयोर १३१ रोरा १३२

१३३ भलः पुनतन १३४ वि-  
 १३५ निवार १३६ विमिषिदा १३७  
 १३८ शीमत् १३९ बहिरिदा १४०  
 १४१ विरदिय १४२ चक्रपाद  
 १४३ दुषता हंनो १४४ क-  
 १४५ नेवतुरवा १४६ कडवा  
 १४७ दंमत् १४८ विमिषिदा  
 १४९ विमिषिदा १५० चक्रपाद  
 १५१ नावक १५२ टीडा  
 १५३ रजाई रजायम् (प) पात्रो  
 १५४ रजायम् (प) पात्रो  
 १५५ राजय, ऐषय, भीम  
 १५६ रजायम् (प) पात्रो  
 १५७ रजायम् (प) पात्रो  
 १५८ रजायम् (प) पात्रो  
 १५९ रजायम् (प) पात्रो  
 १६० रजायम् (प) पात्रो  
 १६१ रजायम् (प) पात्रो  
 १६२ रजायम् (प) पात्रो  
 १६३ रजायम् (प) पात्रो  
 १६४ रजायम् (प) पात्रो  
 १६५ रजायम् (प) पात्रो  
 १६६ रजायम् (प) पात्रो  
 १६७ रजायम् (प) पात्रो  
 १६८ रजायम् (प) पात्रो  
 १६९ रजायम् (प) पात्रो  
 १७० रजायम् (प) पात्रो

रघुन- ( छ ) चामरदाता,  
 पासन, रत्न, योभा, रमावट,  
 विषकारी : [ चरमा :  
 रट- रटन- ( झ ) बीसभा, ली-  
 रण ( ञ ) गुह; मंषाम, चकार,  
 मय्य, धनि । [ रचित ।  
 रचरहा- ( ञ ) रचयिते चति  
 रचित ( ञ ) मय्य, धनि, मुहित,  
 लडित ।  
 रचिवाम ( ञ ) रगमरुत, राची  
 स्याम, राचीमरुत, बीगाई  
 का भवन ।

इ.स. (सु. वि.सं.सं.सं.)

रतः (घ) मैथुन, पाविष्ट, तत्परः ।  
धीनः, वासदेवः ।

१. १००० (१) १०००, १०००, १०००  
 २. १००० (२) १०००, १०००, १०००  
 ३. १००० (३) १०००, १०००, १०००

इति- (७) मैथिल, खीरा, प्याज,  
पोल, कामदेव की पत्नी ।

૧૭૦ ( ૪ ) જામદેવ જો છો,  
 ધન : હૃદ - યોગી સહ-  
 યજ્ઞ મહે પતિ પતિ સુ-  
 નત રતિ મુકિત મયો :

रीदिति वदति वदु मांति  
 अहयाः अरति मंकरः पं  
 मयी ॥ अति प्रेम, कति  
 विनती किमिध विविजोति  
 कर, अमुक, रको । प्रमु  
 अमृताय, ज्ञानाय मित्र अ  
 वया निरधि बोधे मयी ।  
 अर्थात्, रति काम की, को  
 पति कीर्ति अर्थात्, काम  
 का मरय पुन के मूर्द्धित  
 होनरे ओर रंती, ओर  
 पति के वताप की वदति  
 अर्थात्, अहनी मंकर के  
 निवृत्त गे पातुतां, अ.  
 अदो वसव बोधेवाले ।  
 दाहा । अब ते रति तव  
 नाम अर, होरुहि नाम  
 अनङ्ग । विन वदु मयापि  
 अवहि पुनि, अति निज  
 मिश्रण प्रवृत्त । अर्थात्,  
 अब के ते रति तेरे रति  
 का नाम अनङ्ग अर्थात्,  
 अङ्गवहित होना ओर वर  
 न विना वदु अर्थात् विना

यरी र व्यास रईगा यच सुन  
 उस को सुन्देह हुआ कि  
 इस से नीरा प्रयोजन क्या  
 तब शंकर ने कहा कि प-  
 पने पति के मिलने का  
 भी प्रसन्न सुन। श्री०। अब  
 लक्ष्मण लक्ष्मण अवतारा।  
 होइहि हरन मदा मदि  
 भारा। लक्ष्मण नय होइहि  
 पति तोरा। यवन पन्थया  
 होइ न मोरा। अर्थात्  
 लक्ष्मणनय पद्मसुख की  
 काम के अवतार हैं।

रती वमकना सु०। बड़ना,  
 फलन। फूलना, भाग्यवान  
 होना।

रतिनाथ (स) कामदेव, श्री०।  
 सून कुलिन पति अगव-  
 निहारे। ते रतिनाथ  
 सुनन सर मारे। अर्थात्  
 त्रियुक्त वचन तरवार पादि  
 के संगवनिहारे सहने वाले  
 को काम ने फूलवान से  
 मार दिया।

रतीपति (स) कामदेव, पतञ्ज।  
 रतीवन्त (स) धनयन्त, भाग्य-  
 वान, प्राक्तव्यी।

रत्न (स) मणि, मुक्तादि, क-  
 पुतली, मणिमुक्तादि यैष्ठ-  
 वस्तु, मोती पादि कवा-  
 हिर। दी०। श्री मणि  
 रत्ना वाक्प्री, यतो यंछ  
 गजराजं। कल्पद्रुम ग्रीष्मी  
 विष धनुष, धन्वन्तरि धेनु  
 वाज ॥ १॥ अर्थात् मणि  
 यी, रंभा, वाक्प्री, यमो,  
 यंछ, गजराज, कल्पद्रुम,  
 धनुष, धेनु, ग्रीष्मी, विष,  
 वाक्प्री, धन्वन्तरि ॥ १४ ॥

रत्नसाल (प) सुमेध पर्वत।

रत्नाक्ष (स) गङ्गीदधि, सागर,  
 समुद्र।

रघु (स) चार पैरों की गाड़ी,  
 अभिलाष, समूह, कुंभार  
 का चाक, चक्र। चक्र शब्द—  
 दी०। चक्र प्रजन रथ चक्र  
 गग, चक्र विहंग विदेव।  
 चक्रमुदगोन कृत्य श्री चक्र



पक्ष रन्धो रगपीठः (च) सोनाधुत, सुन्दर,  
 ततः भूमि जलोहर, गोमायसुप्त ।  
 तम राम रमतः (स) खेतत, कोतुव,  
 विहारत ।  
 रमाः (स) खली, विष्णु, पत्नी,  
 रमानां मयी जानकी जू  
 वे तापनी प्रादि न दे ।  
 रमापतिः रमाः (प) विष्णु ।  
 निवासः रमेशः (स) विष्णु ।  
 रमाविनायकः (स) त्रिधातु जगत्  
 सुदिनः सुन्दर ।  
 रमाः (स) गोभित, यकागित,  
 रमाः (स) कदली, बेला, केरा,  
 गोपी प्रपूजना, वेला, सुगं  
 की वेला, केलावृक्ष । क-  
 दली नाम—दोहा रंभा सो  
 की जगद्वरा, तं वसिया सु-  
 कुमार । ए कदली लिन मे  
 कदली संव पनुडार ।।।  
 पुनः—दोहा । रंभा पुनि  
 वानर वसा, कदली पुनि  
 काटीक । बहिरि संसु मत  
 फल गदून, कनक खंभ गणि  
 मोस ।। रंभा मष्ट—दो-

रंभा कहिये अपसरार, रंभा  
 कहती नाम रंभा मोक्ष  
 भी वधु, जिन मोड़े घन  
 व्यास । १३ [ योग्य ।  
 रस्य (म) मन्दर, मनोहर, रसक  
 रस्यक (म) पलक का कण ।  
 रय (म) रोग, गल्लो ।  
 रये रय (द) रंगी, मोड़े ।  
 रन (द) पक्षि, बिम्बार ।  
 रन (स) गन्ध, नाद ध्वनि,  
 बीज, भाग्य, दोर, रोग, वचन,  
 आवाज । [ दोरधूपके ।  
 रविक (प) बीलिके, भाग्यटिके,  
 रवि स त, रस, चक्रवर्त ।  
 रविप्रय (म) तामा धातु ।  
 रविपीत (स) दूरदूर । [ वच ।  
 रगन स किङ्किनी कहि भु  
 रगन स मगन कहिये  
 रस [म] विषय, बीर, नर  
 पुन, चमन, विष साह,  
 पाग, मार, वच, रोग, बीर,  
 मधुगदि, नृपादि ।  
 रसगन्ध—दोहा । रसक  
 रसक पुनरस चमन ।

रस विषय चक्र नीर  
 रसकर को रस प्रेम रस  
 काहे रस वच बीर । १ ।  
 रसक [म] अपरिपा ।  
 रसगम [स] रसवत ।  
 रसधातु [म] पाव ।  
 रगना रचना [म] बिम्ब, भीम  
 काचो, बंगी का मोर, रा  
 सना, चोपधोविम्व, रसक  
 किङ्किनी । दो । रसक  
 काचो किङ्किनी, पुनरसक  
 काच पुनरसक मग्न रोग  
 मग्न, वंशो मन्दन भाग । १ ।  
 रसना गन्ध—दोहा । र  
 सना काचो चक्रवर्त कहि,  
 रसना वधु की दाम । रसना  
 कोभ्या भाग्यकी, को न म  
 कहि कहि नाग । २ ।

रसाच, यो मोरे बीर, वच जेह बीर ।  
 रसमार [म] चमन, विष ।  
 रसा [म] मेदिनी, वरती,  
 पुत्री, पाद, पावना, चोपरी  
 विम्व । [ मग्न ।  
 रसाना (म) पावना, चक्र



छ) रसमय, पाम-  
 वा झूठे झूठे दोनो,  
 ईश, नीठा पान  
 पेड़, रसासय। श्री-  
 य देखदहि बिटप  
 बवासा। पावति संतु  
 रसासय तमासा। पर्वति  
 संतु प्रादुन, रसासय पान  
 तनास प्रवृत्त भूनि मे इसी  
 नाम से प्रसिद्ध है। पान  
 नाम—दो०। के सङ्कार  
 रसासय है, पान पूत पिब  
 प्रीय। पति शोरन बह  
 तुन खड़ी, - राधाजीवन  
 चीर ॥ १॥ पिब संतु  
 कानाय पुनि, नदद्रुतपय  
 सङ्कार। यह रसासय की  
 नाम बहि, नैज रानी पत्र  
 भार ॥ २॥ रसासय पर्वति  
 पान का भेद—दोनों ॥  
 नासदृश (यह देस भेद से  
 है) बिजु (रिया से श्री  
 हस्तक ही) २ चिन्तुरिया  
 (चिन्तुरिया) ३ लीपवा

१ गोपी ६ रोडिपोव  
 (श्री रोडिपो मयूह में  
 एक प्राय) ५ भद्रपत्र  
 (श्री भाटीनजीनातक रई)  
 ६ बरहमसिया (श्री बारही  
 मजोना ही) ७ एक पान  
 चतर नैजसता है। ८ चतु-  
 रपत्र (श्री चतुसा होता  
 है) ९ चोरिया (चिन्तका  
 सादृश्य न ही, चोर लो  
 कुछ पावक का सादृश्य  
 ता ही) १० लीपवा (श्री  
 प्रसन्न लीटा होता है)  
 ११ संयुद्ध (यह एक सात  
 भी इस का लड़ा साता  
 पत्रक में काभीपुर में संन-  
 का एक भेद है, श्री प्रसिद्ध  
 है इसी से सादृश्य ठंग  
 पर श्री होता है संयुद्ध से  
 नाम से प्रसिद्ध है) १२  
 लीपवा (चिन्तका पासार  
 बसा सा होता है) १३  
 रसमय (स) पुब।  
 रसासय (स) नमोठ, गुदिय।



रचक, रचकः [नट] पाचक,  
ज्ञानी, रचशर, रचा चरने  
याता ।

रचकः [ध] पाचन, योमच,  
भवाय, रचा ।

रचक, राचकः (न) निघाचर,  
भुत, गायत्रीचिंश, छाति  
विशेष, राचक नाम—द्वंद्व  
रच भीमाह । राचक कीपच  
नैकत भुवै । ज्ञानाद  
रचक राचिचर । पुष्प  
नागिदमाज्जनामराय-  
गधान विमितावन निचर-  
पेनी रचन भवा कचरा  
कर । पादि पाचिचर नामत  
रचकः । भुत विमोचय  
विनै निघा हर । रचक  
पुनि रच तिष्य हर ।

रचा, (स) रचा, पाचन, वाच,  
परिचाय, चिफाजत ।

रचितः [उ] चिफाजत किया  
इषा ।

राचः [द] राचा नृप, राचिजा ।

राचः [द] राचाः नृप, नृपति ।

राचतः [ट] सरदा, चैठ,  
मदती, राचा ।

राउरः [द] पाप, पाप का,  
इलूर, नद्योदयाचक,  
महल, राजमन्दिर, राउर  
कड़े मंदिर, राजमहल ।

राजः [द] राजा, नृप, नृपति ।

राप (प) राजा, राचा, राजपूत ।

राए राजानः (प) राजों में  
गधान ।

राखा (स) दीर्घतासी, पूर्णिमा,  
पूर्णिमासी, गारद पूर्ण ।

राखे } (न, चंद्रमा, पूर्णचंद्र ।  
राखेच }

राखायति, राजाजयी (स) दीर्घ-  
नासी का चन्द्रमा ।

राख (प) विभूति, राजा, भभूत ।

रागः (न) रागना, खेड, गान,  
खीय, प्यार, पोति, अनुगान ।  
खीय, पोच संख्या वाचक ।

राग रागिनी गान—द्वंद्व  
दीपमः च । भैरव गिरी  
नेव द्वितीया दीपक तथा  
नाच कीचोपटं राग की

|                            |                               |
|----------------------------|-------------------------------|
| गान ॥ टोकी- कलंगडा         | रागी-(म) मायक, पिया, कोपी ।   |
| मिसावस अलेया चक्षित        | राचा (प) समा, रचना, राचना     |
| सिधु पासावरीभैरवीजान       | सगना ।                        |
| गाऊनट मूंगरी मुचकसो        | राजकवेर (स) बड़ा बदेर ।       |
| गौड सारंग पीनू कुमुद       | राजकुमार (प) राजाका पुत्र ।   |
| धीनि यातना । गौरो          | राजकोशातकी (म) भीगी ।         |
| विहारा भुपासो यज्ञ देम     | राजजम्बू [छ] जलेंदा प्रासुन । |
| सोरठ धनाश्रीम खंभाच        | राजत (न) प्रकाशित, भीमित,     |
| कल्याण ॥ १ ॥ जे जेवती      | सोदता, सोमना, राजना,          |
| कादरा भी विहारी तथा        | सोदना ।                       |
| एततरागिनीतीमपधान ।         | राजम् (स) रूप, राजा ।         |
| मैसारि वंगास माध्वो भं     | राजति (स) मचागति भीम-         |
| भीटो पटं संगला भास         | मान् होत छे, सोदती है ।       |
| सिद्ध मूलभानि । राभी       | राजत्व (म) राजभाव, राजा       |
| भाने स'इभी पुरवी खाफी      | का काम, प्रभुता ।             |
| वरना सदाना इमोरं महित      | राजधर (व) मन्त्रो, सचीव ।     |
| आन । नपरागिभी म दशं        | राज्य (स) खिरगी ।             |
| मायकनि कीन्ह चानीम         | राजधानी (म) राजपुरी, राज      |
| खसदद ये दीव मालाम ॥        | आन, राजभाम, राजा              |
| रागदाना. मु. रंग रंभ होना, | का निवास स्थान ।              |
| गाना यजानाहोना, गान        | राजध्वनिचा (स) राज            |
| मिनाना ।                   | देवी पुण्य ।                  |
| रंग. मु. गाना यजाना ।      | राजनीति (म) राजनियम ।         |
| गही (स) गान नेह, तास       | राजनय ) जानून । राज           |

करने को पाल या पारि  
प्रकार धान, दान, दण्ड,  
विभेद : ॥ १ ॥ धान बाड़ी  
हे जो सय जीवन्त का ल-  
भाव बनता सब जीवन्त  
पर रहना बैर नीति काष्ठ  
पर नहीं ॥ १ ॥ दान बाड़ी  
हे जो दण्ड, दायो, घोड़ा,  
पयदर, रथ, चतुराही मेना ।  
घोष पायुध पनेकद करि  
को भीरु कोई राजा का धन  
धान, इत्यादि नीति लेनी ।  
किंतु कोई दोहरी राजा  
जवरदन्त पपने ते पपने  
राज्य में पाये, बाको द्रव्य  
देके पपनी राज्य को रक्षा  
करना ॥ २ ॥ किंतु द्रव्यदेके  
पर राज्य को कै लियो हे.  
तहां दान जो राज्यनीति  
हे, ताको गुण करि कै  
कोई प्रकार नीति लेनी, ३  
दण्ड, बाड़ी हे जो पनीति  
कारकों को गाम्भी देनी ॥ ३ ॥  
विभेद, बाको हे जो भीरी

कोई राजा का कामकाजी  
नम्रो पादि वा भःता वा  
पुन इत्यादि कद को फौरि  
कै बहिषाव लेनी ॥ ४ ॥  
राजपत्नी (न) राणी, महिषी ।  
राजपुत्र (स) मासदही भाग ।  
राजपुरुष (स) राजा का पादमी ।  
राजपुत्रिका (स) बनेसी ।  
राजपुत्री (स) रेनुका ।  
राजमाय (न) दोनो रोड़ा ।  
राजराज (न) कुबेर, सुरभण्डारी ।  
राजनीति (स) पीतल ।  
राजमन्त्र (स) गन्धमसारिणी ।  
राजवती (न) राजबन्नी नाम  
दो । धंभ अष्ट गज वादनी  
राजमहिषा पादि ।  
तुमहि देसी फूनी जुवधि  
रंभक एहि तन पादि ॥ ५ ॥  
राजपुत्र (न) अनन्तताप ।  
राजमायन (न) राजाका दण्ड ।  
राजगिम्भी (स) धरमिया ।  
राजा (स) प्रजामन्त्र, कामी,  
भूषण । राजा नाम—  
लंद खंजा ॥ राजा

मभू नाथ भर्ता विभू  
 ईगता इष्ट इव ईमान  
 महीमतो ॥ धर्मिण देवदेव  
 नृपति भूष कामो मनुष  
 न न तदर्थे वायुन धर्मिण  
 मरुपता ॥ सुते धर्मिण  
 चैव श्रीकृष्ण के श्रीकृष्ण के  
 राकृष्ण मे मनु सभे । गा  
 १, २ गा ३ वृत्ताय धर्मिण  
 उ १ २ ३ मभू भर्ता नृप  
 दुपे भर्ता मभू ॥ १ २ ३ ४ ५ ॥  
 श्रीकृष्ण मभू ॥ १ २ ३ ४ ५ ॥

राजी, राजि (म) पति,  
 येजी, कीर्ति राजि, पंग  
 मभू, मीमांस ।  
 राजीन (स) मभू, सु  
 मीन, मभी, धर्मिण, न  
 राजीवमभू राजी । राज  
 मभूराजिधर्मिण, राज  
 मभू मीन ॥ राजि  
 नाति श्रीकृष्ण श्री, ध  
 राजि मभू मीन ॥ १  
 मभू १ वृत्ता का धर्मिण  
 राजि (य) मभू, धर्मि, धान  
 मभू ।

१ २ ३ ४ ५ ॥  
 १ २ ३ ४ ५ ॥

राजीवमभू (य) मभूराजि-मभूरा  
 मभू (१) धर्मिण, मीमांस  
 राजीना (१) राजी, मभूरा,  
 १ २ ३ ४ ५ ॥

राजीवमभू (य) मभूराजि-मभूरा  
 राजिण (स) मीमांस ।  
 राजिना (१) राजी, मभूरा  
 राजिना (१) राजी, मभूरा  
 राजिना (१) राजी, मभूरा

मभू, मीमांस ।  
 राज मीमांस श्रीकृष्ण मभू  
 मभूराजि मभू मभू मीमांस  
 मभूराजि मभू मभू मीमांस  
 मभूराजि मभू मभू मीमांस

श्री श्रीर वदुत पधेरी ।  
रात, दु. रात ही में ।

(म) निना, यामिनी,  
रात, रादिनाम—दंड  
बंगला ॥ तभीविधा मा-  
रतनी निनीघनी ॥ तम-  
यनीरादिनिगाइ यामिनी ।  
दवाइ म्याना सुख दाइ  
मर्वरी ॥ सुनाइ दोपाव-  
पदादि भावरी ॥ १ ॥ दोहा ।  
पौडनमाननि तार धरे,  
नाम होत है धरे ॥ भगन  
तमन भगन रगन, बंग-  
स्यान पद छंद ॥ १ ॥ धर  
धारे ते धानिने, धीर  
निगावर नात । गधु गद  
ते गयन नधि, कहत मेद  
बुधि याम ॥ १ ॥  
रात्रिपर-रात्रिपर (म) रात्रिपर,  
मेत, मत्त, धीर ।  
राह (म) धीर, नात्रि सुंद-  
राह (म) निरुद, सुधीर, दंड  
ही धानि ।

राधपुत्र (स) बड़हीपुत्र,  
बनार बघा, ।  
राधा (म) समीप, भीष, चांगी,  
दुपभानुपुता, ठाकमिदा,  
बड़हिभी. । [ कुमार ।  
राधेय. (स) पवन, ठाक, कपी  
राम. (स) सुन्दरामपद दमरप  
नन्दन. परमुरात, यधि-  
रात, धिमंस्यादापद ।  
मेनी यमन ( सुसप्रमाण  
दिलीदाप ) धंभ १८८  
म हुय है धनेधार्ध नाम-  
नाला इहुत सुंदरधंय रषा  
ही राम मद्दार्ध । कविता ।  
रिष नम पदधम नैदधनु  
परनुन धंभी देवसिंह  
धन्यसिंह गुच्छ धानिने ।  
हुन्दुनी मंवर गठ धमिनि  
नूर धध धध धम कोनक  
कहाभीत धित ठानिने ।  
कीध बासुदेव रिष मरद  
नदियदाध त्रिधो धी  
मोतीनाक धधधुधानि-  
ही, दध धनि धंभ

नरमति लिखा नदी धित  
 ग १ गुन छट रहिमाण  
 मानिये ॥ १ ॥ पुनः छंद  
 मदनहरा--मदनधनु खंडन  
 रघुकुलमंडन दक्ष चक्रवर्तन  
 भेद परे घर बाप घरे ।  
 काकुला मनोहर राम-  
 द्विषाघर ध्यात निगाघर  
 नाग की सुर गोक घरे ।  
 मनमिल मदनमान मर-  
 धिनभीषण विभुवन वीरन  
 देवगती जेभीषमगो । दम-  
 वदननिर्जदुनधनु रघुनमन  
 कवन निबदन कामपती  
 बिदि छरफती ॥ १॥ रायव  
 रघुवंशी कुल चरतंशी विभु  
 चरन कीदृष्टदृष्टेभूमिगत  
 कनक नभ नभ कायक की  
 निज मायक भोतामायक  
 वाद महे रति चरक कही ।  
 रघुनाथ दुता कर भवता-  
 यत्र हरि दासदही मर  
 लोचन दृष्ट दुष्ट प्रद ॥  
 दद नान वहीमें दक्ष

चाधीयं जेदाधीयं मद्रा  
 करस विधास कर ॥ १ ॥  
 रामजन. (स) मल्ल, सता, साधु  
 रामनभी. (स) भक्तिनी, सज्ज-  
 नी, वेगदा, नीवी, कचनी  
 रामरस. (स) सनध, नक्ष, नून ।  
 राममर. (स) राम बाप, मरकट,  
 लूचविगीय ।  
 रामायन. (स) राम की कथा,  
 रामपरिच ।  
 रामाचार (स) राम का सदा  
 रामायुध. (स) धनुषमाय ।  
 राध. (स) राधकृष्ण, राधा,  
 कथाधि विगीय, धन ।  
 रावि. रावण (स) भवरा, विगारा ।  
 राम. रावद, (स) राजा, मृग,  
 मरकट । [ वसु ।  
 रावकी (स) धारणाही, भोग्य ।  
 राठ (स) मयनकन ।  
 रावण. (स) बापवोरे चोद की  
 वीरवै निजिचर (स) मर,  
 कहेम ।  
 रावणारि (स) रावण का हरि,  
 श्रीरामरस. १५०.७



रामठ (स) डींग ।

रामदूतिभा (स) नामपुष्पी ।

रामफली. (स) कमरख ।

रामसेनक (स) बिरैता ।

राम (स) धूना ।

रामराम, सु० सत्ताम, प्रपान,  
गमस्कार, (गंवार लोग  
सत्ताम की खगड़ राम  
राम कहते हैं) ।

रामलवु भाई (द) भरत,  
भो० । देकविमुपन योग  
कम जोई । अनुर बिरंछि  
दीन नोहि सोई ॥ दगरय  
तनय रामलवुभाई ।  
दीन नोहि बिधि बादि  
यहाई ॥ पर्यात् भरत की  
कहतें हैं कि यह तो बिरंछि  
की बतुराई यवार्थ है  
कि धन में जो कैचें हैं वे  
पुत्र होने का योग मुक्ति  
दिया परन्तु दगरय का  
पुत्र और राम का डोटा  
भाई कर के मुक्ति बिधि ने  
धर्म रक्षाई दी और अपने

की अविधि करछाना ।

रामबलभा (स) संगत, शोक ।

उद्भव स्थिति मंदारकादि-  
षोक्लेशहरिणी सर्वत्र य  
स्तरि सीतां नतीह राम  
यलभां ॥ पर्यात् उत्पत्ति  
घोर पावन घोर प्रलय  
की करनेवाली घोर लीग  
की करनेवाली घोर संपूर्ण  
वस्था की देनेवाली श्री  
रामबलभा सीता को मे  
प्रपान करता हूं ।

रामगिरि [स] बिजकूट, का-  
मदनाय, भो० । पटनुराम  
गिरि वन तापस यल ।  
यमनु यमिय सम कंदमूल  
फल ॥ पर्यात् श्रीगम के  
गिरि भी वन भी तपस्विन  
के घर का पटन कहे  
फिरना ।

रामेयर (ध) रामचंद्र का स्था-  
पित गिय चिंज । भो० ।  
श्री रामेयर दरभन हरि  
है । सो तन गजि गन

धाम निधरिहै ॥ चर्वात  
रामेयर मन्द का चत्वीन्य  
भयं होता है रामस्य ईयर  
मा रामः ईयरौ यष्य यही  
मगडा भाष है ।

रामचरित { [१] कायन्द नाय,  
रामचरित } होहा । राम मेस  
स'भा निरिह, भरत कृदय  
चतिमेस । तावस ताप-  
कनपा । जि'म, सुपी  
निहामे नेम ३१३ राम  
मेस चर्वात कायन्द नाय  
की गोना देव ।

रामचरित [१] म' वही लकी  
वान, लखी कय, रामायण  
रायमुनि [१], लखनाम यकी  
हैद भय क'भाचन्द म'  
कुन्द इन्द क'भाचन्द म'  
म'म मनी 'म'म इन्द 'व'द ।  
रख यम लखी क'भाचन्द म'  
हैद विनी । म'म मुनन  
वैरिहं व'मं क'भाचन्द म'  
दु'म'मि म'म लकी । क'भाचन्द  
कामन राम च'म' क'भाचन्द

बहु गोना लकी । सिरमडा  
मुकुट म'मन विच' विच'  
भति म'मोहर रामचरित ।  
जगु भीन गिरि परत  
पटल म'मेस क'भाचन्द म'  
हो । भुज दण्ड म'म की  
मेरत ब'भिर क'भाचन्द म'  
वने । जगु रायमुनि म'  
साध पर मैठी विपुष म'  
चापम । चर्वात—नीह  
गिरि खान म' रघुनाथ  
का म'रोर के पीर  
खान म' रघुनाथ पीर  
लकी खान म' बाकी की  
चम'चनि है पीर तारा  
खान म' पाकी की प'मि है  
यो रघुनाथ भी क'भाचन्द म'  
म' तमाल कुल म' चम'म  
म'म के पीर क'भाचन्द म'  
मे विपुष क'भाचन्द म'  
जम र'हं है म'म की क'  
म' म'मकी विपुष है म'  
म'मकी तमाल कुल पर म'  
मु'म'मि चर्वात कायन्द म'

पनेष सुपपर्थक वैठ रहे हूँ ।

रामि (स) ठेरो, निषादि वारण,

धान्यादि समूह ठेरो, नैष

सपभादि दादम रागि ।

राट्ट (स) बसाहुवादेन ।

राट्टिबा (स) बगभाटा ।

रास (स) लोडा, व्याज, वाग ।

रासा (स) रासना ।

रासभा (स) भर, गदडा पछ,

गधेभ, गधो । रास पंचा-

धायो—दीडा, पूरु चन्द्र

निमि गदै सपि, मांय

विदिन धनैदान : धादि

मुधापर पांभुरी, टेर दरे

युगयाम ॥ १२

रासी (प) गधन, ऐला बैला ।

राह (स) दाठवांघण, घडविमि ।

रासन (स) घसुर, कोयप, का-

तिपिमिप, गारिडिंसक ।

रांड का सांड सु- विधवा

लुगाई का विगडा हुपा

सडडा ।

रिह (स) रुच, खादी, रीता,

वन, दरिह, मुष्ट, रडिता ।

रिज. (स) दुट, गत्रु, बैरो, परि

दुममन् ।

रिपुषन, रिपुचदन (स) गडुग,

चक्रुडन ।

रितुरास-रतुराश (द-स) बसंत ।

रिपुपास (स) इन्द्र, पुरन्दर,

हुट, घसुर ।

रिपुषन (स) गत्रु से ।

रिपि, चपि (द-स) चूचूम दर्मी ।

रिपिगायक } (द-स) चपि

चपिनायक } चपि, बगिट-

रिपिगायक } सुनि ।

रिट (स) इपित, जनन्दिग, छुम ।

रिस (स) कोष, कोष ।

रिसानो (द) कोष, छुमई ।

रिसाना ।

रीते (द) चानी, छूँड ।

रीछ (द) गाल, गालुक, ।

रिचिम (द) गानयन ।

रितिहुतु (स) अस्त्र ।

रीति (स) सास चयन, प्रचार,

जननीना, सागाव, तरइ ।

रुच रुच (प-स) रीछ, चवि-

चाइट, छुँय का गडान ।





वक्त्र- ( स ) रुगाधातु, चर्दो.  
सवर्ण, सोमा ।

वृष्ट ( ज ) तत्प, मरणी, मन्मुष,  
मज्जर, दया, क्षोभ, दया दृष्टि ।

वपन ( स ) सोष ( मोन ) २  
- विजो गलेभू ।

ववि ( मो ) प्रकाशमूर्त्यादि वचा-  
व, वाड, चतुर्गण, मृडा,  
गोभा, भूष । [ वाहमान् ।

वविमन् ( स ) प्रकाशमान्,

वविर- ( स ) वविगरा, सुन्दर,  
मनोहर, मधुर ।

वव ( न ) रोग, घाव, गूहा,  
व्याधि, पेशा, भीमारी ।

वट- ( स ) ताम्र, क्षोभ, क्षीप ।

कठो ( न ) क्षोभित ।

वज्रमेघ स गदित मट, दाह ।

वयस ( द ) क्षीटा वा पक्षि ।

वण्ड- ( स ) मध्यधर, धङ्क, कवन्त्र,  
देवविनामिर, पशु, विना

मिर बी लोच, चर ।

वदन- ( प. म ) रोदन, वलवाई ।

वत- वटवाहो- ( स ) छेडा, वक्र ।

वटका, वन्दा ।

वट्ट- ( स ) गिर, एकादशमेष्वा  
वाचक- १२ ।

वषामूषा, सु०, सारा, मेष्वाद्  
खाना, कड़ा, कठोर वात ।

रद्राचो- ( न ) गिरिजा, पार्श्वती ।

वदित ( द ) रोना ।

वधिर- ( न ) लेहू, भीहू, कडू,  
खोहू, खून ।

वप्य- ( स ) चर्दो ।

ववू- ( स ) मुपेदेण्ड ।

वष्ट- ( स ) क्षुध, क्षोभित, रीषित ।

वक्कर- ( स ) मेला । [ वक्क ।

वड- ( स ) वत्यव, जम्भ, मिष्टु,

वडा- ( स ) वराह ।

वत्त- वत्त- ( स ) कृष्ण, कठिन,

खरखरा, निछेड, पेस रहित ।

वृष्ट ( न ) वृष्ट, तद् वृष्ट ।

वृषा ( प ) निरस ।

वृषो. ( द ) मिषहरी ।

वृष- ( न ) क्षीटविशेष ।

वृष ( स ) गकल, वाचाम ।

स्वप्नारायणविवरण- ( स ) सत्य

युग मृच्छवर्ध- जेता गडव,

यं, हापर ग्याम मर्धे, कठि

एव हीन वयस जान हरि  
 भाव प्रसिद्ध ।  
 इन्द्रविन्दु म) टिकनीकरी की  
 कल-परी (प) पथिठ, सुन्दर,  
 सुन्दरताई, जेउता ।  
 एव (न) हना, इन्द्र ।  
 रेव-रेवा (न) उधीर, निव,  
 मितिती, पमिट ।  
 रेवड़ी के डेर ने पड़ना, सु-  
 कठिनाता ने बनना, देव  
 ने बागा ।

को राजा होना भूठ है ।  
 रेवाई (प) बचाई, रैनना,  
 बजागा ।  
 रेवमी (न) निनीप, बट पची ।  
 रेवु, रेनु, रे धुकी, रव, मूख  
 बाबू, एव मूख की र-  
 बिाए, भले, खिले पड़े ताकी  
 भी रेव नंदा है ।  
 रेवठा (उ) पागुरान की  
 नागा, धुटि पाक ।  
 रेवुव-म बंनुट । (पूर ।  
 रेत, रे र-ही बाबू, रच, धूख,  
 रेतः (उ) टक, दीप, बीज,  
 धातु ।

रेवपांशना बा रेवा पांशना  
 बा रेवापांशना सु-  
 निददकरना, ठेक करना ।  
 जो-पूडा मुनिव रेव तिन  
 पांशना । भरत मुपाय जोव  
 एव लांवी । एवांस् दुली  
 श्योतिषिनी ने बीक बा, रे  
 एवा है । बा मुनी कर्ने  
 श्योतिषी रमल बाले पादि  
 जे पूजातिनी रेवा पांनि  
 एवांस् निधय करि धरा  
 कि भरत राधा वं द्विने  
 एव सांघो है भाव यीपन

रेवथ (न) बाबू ।  
 रेवती । न ) बचाइ पाती,  
 नयन विषय । ( रान ।  
 रेवतीरमण-न) रेवभाद्र, बलि  
 रेवा (उ) मुझार, भीना, नदी  
 रिजिप नमैना नदी ।  
 रेव [उ] रेपी, रेथ, दीप  
 रेवो, न ) जेवो, जोरो, र  
 रेवठा (उ) रेनुका ।  
 रेव-न) निमा, रजनी, र

रोग-(स) व्याधि, बीमारी ।

रोगावृत्त्य. (स) कृत् ।

रोगच-(स) रोगि कारक, पाचक  
महिमाजंकार, भण्डितर ।

रोगग, रोगमा. (स) रोगदी,

गोरोगग, रोगी, दर्पण,

वेगदं । [ सिमर का मेद ।

रोगन. (स) कमलागुच्छी ।

रोगनी-(स) लुकपलाकी ।

रोगि [स] सूर्य दीप्ति ।

रोगिका-[ग] रोगी । [ हरिण ।

रोगि [स] जाला पाद का

रोगि, रोगिनी [स] रोगित,

रोगि है, रोगी है ।

रोगन [स] रोगा, कल्याण ।

रोगनी [स] रोगी जवाभा ।

रोगनी [स] मेदिनी, भूमि,

रोगी ।

रोगि [स] गठ, घाट, नीर,

विगारा, कूक, रोग, दिव ।

रोगन-(स) रोगाव, घटकाव-

रोगा-[ट] प्रवृत्तरण, विद्या

कालन, नीय कालन ।

रोगिता [स] रोगदुषा द्रव्य ।

रोग [स] रोग, बाल, रोग ।

रोग नाम-दोहा-रोग

रोगतनु रुद्र मे, द्रवतप

रुद्र यंत्र । सो सुराज,

मन्दभुज भयो, आश

तंत्र पत्रद १ १ ।

रोगका- [स] विष्टि ।

रोग रूप [स] रोग विष्ट, रोग

का सुराज ।

रोगपाट-(स) रोगपाटिपत्नी

रोग, जलवस्तु, दुग्धा

पादि, सभी कपड़ा ।

रोगाक्ष-[स] रोगाक्ष, मिष्टा

रोगाक्षी-[स] रोगी का चन्द्र ।

रोगाक्ष [स] भूमि, घटपद,

चक्र । [ मुष्टि ।

रोग [स] रोग, पगर्ष, रोग,

रोगिनी, रोगिनि-[स, द] नम्र

विशेष, चन्द्रमा की स्त्री,

चन्द्रमा की माता ।

रोगिता [स] रोगाक्ष, रोग

चन्द्रमा की स्त्री, रोग,

मन्दविशेष, नाम राजा ।

रोगिता [स] रोगाक्ष, चक्र





रोग-(स) व्याधि, बीमारी ।

रोगायुष्य (स) कृत् ।

रोगक (स) रुचि वारक, पापक

महिसाजहार, भण्डितर ।

रोगक, रोगका. (स) जलदी.

मोरोरोग, रोड़ी, दर्पण,

वेगर । [सिमर का मेर ।

रोगक (स) कमलागुण्डो ।

रोगको (स) वृक्षपनाकी ।

रोगि (स) मरी दीर्घ

रोगिणी (स) रोगी [डरिग ।

रोग [स] कला पाठ का

रोगिणी (स) रोगी [डरिग ।

रोग [स] रोगी, कल्पना ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोगी (स) रोगी जवाभा ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग नाम—दोहा—रोग

रोगतनु रुद्र मे, व

रोग चंड । सो सुरति,

मरुसुत भयो, बाधे

तेज पखंड । १ ।

रोगका [स] डिण्डि ।

रोग रूप [स] रोग द्वि, रोग

का सुरास ।

रोगपाठ [स] कल्पनादिपक्षी

वध, जगवध, दुवाग

पादि जनी कपडा ।

रोग [स] रोगखडा, मिश्रण

रोगायणी [स] राणी का वधू ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

रोग [स] रोग, रोग, रोग ।

श्रीकृ. [द] श्रीकृ. ।  
 श्रीकृ. [द] रत्ना परना ।  
 श्रीकृ. [द] निरुद्ध, यन्त्र,  
 सरदरी ।

श्रीकृ. [स] दरिद्र, निरधन ।  
 श्रीकृ. [स] लिङ्ग, दोष, लिङ्ग ।  
 श्रीकृ. [स] [द] हर्म, हर्मेयासी ।  
 श्रीकृ. [स] [द] हर्म, हर्मेयासी ।

श्रीकृ. [स] एष राजा का  
 नाम ।

श्रीकृ. [स] रत्न, चाँदी ।

श्रीकृ. [स] नरकविन्द, न-  
 दानक ।

श्रीकृ. [स] वसन्त, रौद्रपी  
 पुत्र, वधवार, वधवार पुत्र ।

श्रीकृ. [स] हर्म, कुटुम्बी ।

श्रीकृ. [स] यक्षणी ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

ल

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।  
 श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।  
 श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।  
 श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।  
 श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।  
 श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।  
 श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।

श्रीकृ. [स] श्रीकृ. ।



विचना ।

दसा करना ।

[ द ] नेहराई, यगी,

दरी ।

[ द ] दरिद्र, निरधन ।

[ द ] द्वेद, दोष, द्विद्र ।

[ द ] दुर्प देविजायी ।

दी ।

द्वय [ स ] एव राजा का

नाम ।

य [ स ] रजत, चांदी ।

रव [ स ] नरद्विनिम, भ-

यानक ।

रोहिदय (स) वसुधार्, रोहिणी

पुत्र, बुधवार, पन्द्रमा पुष ।

रोहिणी [ स ] हरे, कुटयी ।

रोहित [ स ] गङ्गा ।

रोहितय [ स ] रोहितय ।

रोहिण [ स ] पणिमा घर ।

रोहिणी [ स ] रोहितय ।

ल

लङ्घ [ स ] लङ्घन ।

लङ्घ [ स ] लाठी, लङ्घी,

लङ्घी ।

लङ्घटद्वगिरना [ स ] लाठी

रुद्र, गिरै न पध्याय

रहित भाव ।

लङ्घु [ स ] लातकनरुद्र ।

लपन [ स ] पतप, बापी,

मय ।

लगि [ प ] लगके, बाले, तप,

निमित्त, प्रवर्तव ।

लग्न [ स ] राशि का रुद्रय,

पायल ।

लविना [ स ] विवि विविप ।

लघु [ स ] लोटा, मीन, जल

पसर, लसका, लसुका,

घोड़ा, सुन्दर, पसार,

भाररहित, लुद्र पल,

लंघित, लामलः ।

लघुलघुतीव [ द ] लोटे लुच

ली ली ।

लघुनूचक [ स ] लोटी सुरद ।

लघुनामि लोटी नामपड़ी ।

लघुतरपी (स) लोटीगाव ।

लघुता (स) लघुलाई, लोटाई,

लुलुई । [ ललितन ।

लघुतापस (स) लोटा, तपसी,

समुदायन (म) छोटा दूग । नटन [५] मुगत, सुगता है ।

सप्तम ॥ यदुट । [नटो] । सटगा ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सता (७) पुष्पादिजती, शैव,

सप्त सदा 'म दो' कट टंग, दास या वृषा वरिह,

नटन टेर, कर । मोरि, विदेग, गावकोनी,

सप्तम [७] छोटी तामा । गुह्यादि । [दान ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरिखा- (७) सुयुक्त

निमित्तको । सतासूरि (शाविद्रुम, प्रवातो ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] सूर्या ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] समुद्र ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

सप्तम [७] छोटी तामा । सतासूरि [७] मासकोनी ।

खेच. प्यार. प्यारा, दुधारा ।

खसकि [द] खसकि ।

खसना [स] खी, नारी,

नैहरी, प्यारी ।

खसट [स] । खिबाट, नाचा

गारव्य, नस्तख ।

खसाम. (म) भूपद, गहना,

नेठ, रतन ।

खसित(स) गोभाखार, सुन्दर

खेटाखिन्नीय, धोति ।

खस(स) पत्त, धर्म. खपबास

निनिप का खंठवी भाग,

खेच, बिनाम खाल, परि

नाप, नेद, खान्द्रका पुष

खपवाई (म) श्रीलमाना ।

खसट. (स) खता खिन्नीय, खीय,

खीयप ।

खस(म)लीन, नीम, निमक.

सुन्दर, मनक ।

खस(स) खसखिन्नीय (न-स)

खीनासद्वय. प्यारासुन्दर ।

खसपत्त. (न) प्यारा पानी.

खसपत्त मोना ।

खसवेय. [स] पत्त में पत्त,

पत्तवृत्ति, पति सद्यतर ।

खसपो. [स] खर्का रेवड़ी ।

खपा. [स] बटेर, पचो खिन्नीयो ।

खवाई. [न] नवीनी खिगाई

नो, खिपकरके, वेदाई,

खिगाए खी । [दरन्ती ।

खवाक. खवापख. [न] खमुया

खवाए[प]भूठा, निप्याबादी ।

खवार के खसच । दोका ।

खातहि खापो गाव हय ।

पन धन खातहि गाहि ।

खातनहि निमवत खी

खीर नैस खसु गाहि ।

खविता. खातन ही खापो

गाँव खट खसखीस खी

खातन ही खातन खसखी

खसखी है. खातनही है

खीर खानिदी दुधारी

खातनपहार खी प्यारा

निमके है । खातनही





त्रिजुट बालुका वेत्ति ।  
इत इजायनी पग मङ्गल,

वचि रंजक मुग्ध नेत्रि ।  
ताम्र- (प) संक्षोभ, लज्जा ।

लाजा- (स) धाम की लाया,  
खोद, यत्र विनिष, भंगन  
द्रव्यजड़ी, सौंरु में चभीनी  
रयात, जो इच्छा के अग्रे-  
में समुद्र होत है, लज्जा ।

लाज्य- (घ) विना, लज्जा ।  
लाट- (प) सटपटी ।

लाटी- (द) तानू पादि मूषे, मुहम-  
खाना, ताड़ पादि मूषे ।

लाड़- (प) दुधार, प्यार, प्रभोष ।  
लाड़ना- [प] दुधार, प्यारा, प्रीति ।

लात- (स) पग, चरण, पैर,  
पाँव की मार, पदाघात ।

लाट- (प) बोझा, भार, पन्त-  
ड़ी, सानी चिचाने का

पाँव पशुवों का ।

लाधे- (प) पाए, चरण ।

लान- (स) गजबन्ध, बेरी ।

लापन- (स) मुष, बहुवचन ।

लाम (घ) प्राप्ति, उपार्जन,  
फल, व्याप ।

लाभ्य- लाज्य- (प) लाभयोग्य,  
प्राप्तियोग्य ।

लास- (स) नयविनिष, कर-  
जनो, रंगविनिष ।

लानजक- (स) लानज ।

लानन- (द) सत्तना, चापलुसी  
प्यारवाणी, प्यारी, दुधारी ।

लासना- (स) पूर्व सूर्यवदय  
लास की लासी ।

लाससा- (घ) इच्छा, वांछा,  
चाहता, महाभिचाप, मृ-  
दा, स्वारिम ।

लासी (प) दुधारी, प्यारी,  
लासना दुधारना । [पक्षी

लावक- लावा- (स-प) बटेर  
लावस्य- (स) प्रीति, सुन्दरता,

लितबीनी, सौंदर्य विनिष,  
लावयता ।

लावे- (स) फाने ।

लाहा- लाह- (द) लाम, प्राप्ति

लाजा- (स) लासी । येवती  
मुचात्र ।



3) रोज, कम, रोज।

(३) मैसाबांरद

मा, दुर्गप्राना, दु

दा, दुःख  
रना !

(क.क) तारी, बुधवार

श. नरनबाबु, मुम्बई.

1. (b) नकरी छोट, प्रयोजना

राष्ट्रनामा, २०

ना, बुझाना, लडा

ठाना. बन्दिहा नया

बुधवार, २०. बुधवार

उद्वाहना !  
उद्वाहना !

बटवट, दु. बटवट

सुभाष, सु. ब. १

भारत  
सं. (८) देवी

लेखक (२) दया  
प्रकाशक (३) दया

ਦਫਤਰੀ ਦ. ੧  
ਸੋਮਵਾਰ ੨੦ ਦਿਨ

१२५, विप

द्वितीयः प्रश्नः

संस्कृत- [३]

ਦੇਵਨਾਗਰੀ - ੧੨

ਦੁਖਦੀਨਾ ਵਿ:

दिनांक, रैखा, खया, रेखा ।

दिनांक, १९५१।  
 चेतिङ्ग (मं) पदि, नाय, सप्रे।  
 होटा

चैतन्य (ग) दत्त, होटा  
चैतन्य (ग) दत्त, होटा

हंनि, पीड़म, नाम सूत्र  
... योडा ।

म, घोड़ाचा, घोड़ा।  
म, घोड़ाचा, घोड़ा।

ਦੇਸ਼ (੪) ਪਲਕ: ੪੮੩/੧੯੮੩  
 ੧੯੮੩ (੪) ਪਲਕ: ੪੮੩/੧੯੮੩

१०. हाँ, (म.प.) सम, न  
कम नद।

जी. (ह) तवय, तव, तव, तव, तव

सं- सी. (ह. त. व. य. न.)  
सी. [सी.] यादवराय, जन्म

[illegible]

ਸੁਖ, ਨਰੁਪ, ਸੁਖ  
ਪਿਤਾ ਪਾਤਿ। ਪਾ

निष्क पादि । ची  
- जी ४१ । बी ४१

ਦੀਵਾ । ਚਾਹ  
ਬੰਦ ਬਨ, ਚੀਜ਼

... १०० ...

द्वितीयः, रविः

१. विपरीत  
 २. विपरीत

1. 1941

1944

पुनर्प्राप्ति, तदर्थम्

1. संस्कृत 2. संस्कृत

३५४, २००६



मल पाटभ सुखी, नाम  
 दीप सत सीए । लोचनजन  
 दृग दैवसी, तादिन देखे  
 लोच १११ [निच, पांय ।  
 लोचन. [द] लयन, लोचन,  
 लोच [सप] चंचल, लम्बाइट,  
 पांशू, पधर पसी, चतुर,  
 साकांशा, विद्या ।  
 लोला. [स] लोलता, चपला,  
 लोच, चंचल ।

लोचन. } (स) चंचल लोभी  
 लोचन. } लोचनी, कुकुर,  
 लम्बाइट, झूठा, चंचल, लुग-  
 ला, लोचपाच-इन्द्रोदिक,  
 पति लोभी लम्बाइट ।

लोच. [प] लोचनी, लोचिर ।  
 [स] टेका, लोचनी, डेका,  
 लाह, लप, लोचनी, पर्याप्त  
 मन्दरी, लोचन, लोच; नदी  
 का टेका, लोच का मैला ।  
 ल. [स-प] लोहा. गुह, रप,  
 मय, लाह पगर ।

लोहा [द] लोहा पातु विमेष ।  
 लोचन वारा [द] चंचल

पचारवाला ।

लोहित. [स] रक्तपत्र, लोचरंग,  
 लोचन रत्न, लोचर, रक्त-  
 लोच, लोचर, लोचनी पत्र ।

लोहिताङ्ग [स] लोचनपत्र ।  
 लोहितपुष्प [स] लोचनपत्र ।

लोच [प] लोचर, लोच ।  
 लोच पोट लोच, लोच लोच  
 लोच, लोचनी रत्न लोचनी

लोचनमिचलमाना, लोचन पपनी  
 लोचन से बहुत बड़ा कर  
 लोचनी । [ लोचनी ।

लोहावजाना, लोचन तलवार से  
 लो [प] लोचन, लोच, लोच, लोच ।  
 लोहा [पस] लोचनी, लोच,  
 लोहा, लोचनी, लोचनी ।

लोचन. [स] लोचन व्यवहार,  
 लोचनार, लोचन, लोच  
 लोचन ।

लोच [प] लोचनार, लोचनार ।  
 लोच लोच. [द] लोचनी ।  
 लोच [स] लोचनी. [लोचनी]  
 लोचनी लोचनी. [स] लोच  
 लोचनी, लोचनी, लोचनी, लोचनी



|                             |                               |
|-----------------------------|-------------------------------|
| म] वृक्ष विमेष, वड।         | वन्ता- (म) गोरोवन। [फूच।      |
| [म] मोक्षो।                 | वन्तुजीव-वन्तु- (स) दुपदरिषा- |
| [स] वासक, वज्रकारी।         | वन्तुपुष्प- (स) घासन।         |
| [स] ममान्, तुल्य, सदृश।     | वन्त्याषकोटको- [स] फूलेकना।   |
| (न) वपे, प्रिय, वज्रडा।     | वज्रि (स) पत्ति, पीता पीपधि।  |
| १- (स) वपे, नात।            | वप- वपन- (स) वेग संवन,        |
| न- (स) तुल्य, वधन।          | वीजधान, बाल मुकुताना,         |
| [२- (स) वराही वन्द्य।       | वीजवीना।                      |
| वरा- (स) वराहीकन्द, वरद्वर। | वदमा- [न] वीरवेर।             |
| वरी- (म) वैर।               | वपु- (म) देव, नरीर, निष्ठा।   |
| वरीमचत्- (स) वड़ी वैर।      | वपु- [स] वसू।                 |
| वह- (स) सीसा धातु। [लुकार]  | वन्तु- [स] वाघ।               |
| वधू- (स) पक्षारी सुंयवाला,  | वगन- (म) वदेन। [पक्षी।        |
| वन- (स) पानी।               | वयस- (स) वास्यादिषवस्या,      |
| वनकोदक- (स) वन का योदो।     | वयसा- [स] वीर का कोषी, तद     |
| वनज- (म) तुल्य।             | भाये वमगंध, वरे, गुर्व।       |
| वनकुल- (म) निरंगो।          | व- (स) विसर।                  |
| वनकुटा- (म) वरिष्कार।       | वरटा- वाटिका- [म] वरे।        |
| वनलति- (स) वरगद, पुष्पक-    | वर्पायन- (स) नाष्टाय, सविद्य, |
| रहित वृक्ष, वलिषा वीर।      | वेष्ट, मुष्ट, वष्टायं गदहस,   |
| वनिता- (स) स्त्री, वन्यादि  | वागवस्य, सन्दाज।              |
| वधनाथ।                      | वरतिष्ठ- (म) धनदापर।          |
| वनीक- (म) वासक, निदारी।     | वरतिष्ठिका- [स] पाठ। [देष्ट।  |
| वनीक- (स) वानर।             | वरदा- [म] वर दूपा, वसगंध,     |
| वन्ताक- (म) वांदा।          | वरदातु- (म) मुकुट, मुष्टिह।   |

पद १. म. म. म.

पदेके ( म ) माता पुत्र

म.

म. म. म. म.

म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.

म. म. म. म. म. म. म.



वसन.

[ ५४७ ]

[ वातारी.

दंनन. (म) दन, उपडा।

वसा. [स] वरवी।

वसिष्ठ. (स) वादस।

वसीर. (स) वसवीपर, वास

विरविरी।

वस. (म) वही नीचपरी।

व. (म) वुपेद वरुवन।

वृषा. वसुंधरा. वसुमति. (स)

वृषी, वृषीन।

वृषा. (स) वाद्या।

वृषिद्रा. (स) गदा, जेदा तद-

भावे गतावर।

वस. (म) वसो।

वसु. [न] वसु, पदाये, वीज।

वस. [स] वसन, उपडा।

वसुज. (म) वसुज।

वसुनी. [म] वसुनी।

वट. (म) वसुवशाका।

वट. [स] वसुज, वसु, धूर्त

ठन। [नमस्कार।

वदत. (स) वदति, प्रदान।

वंशो. [स] वंसलोचन।

वां. [स] विसृज्य, उपना, वितर्क,

मादृषी, उमुचय।

वानुवी. (म) वकुची।

वाद्य [स] पद उमुदाय, वसन,

क्रिकुरह। [वाद्य, वापी।

वाच. वाचा. [म] वागिन्द्रय,

वाचलति. (स) वसुभा, वीपरा,

सनपि।

वाद्या. (स) वसुभा, वीपरा, वसुद्विष।

वाजिमन्वा. (म) वसुगन्ध।

वाजिदन्त. (म) वाचस।

वाशी. वाजीवाह. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

वाद्या. वाद्या. (स) वीडा।

यामताः ( ५ ) एते चामत्वादि  
हय मात्रः ।

संज्ञा (स) महत्तमः ।

नापि बापी [म] ज्ञानाय,  
दावहु ।

व।प्र. (५) ब।व।जी ।

वागीमतस्य (४) वागीमवृत्तौ ।

वायव्य (स) वायव्यी, कोशः ।

त. ग. यी । म) कथेय, अ. ग. र ।

ਸਾ ਰਸਾਲੇ ਸ ਭਾਗੀਨੀ ਨਾਮ  
ਸਾਥੀ ਸੇ ਅਮਰਪੁਰ ।

५। पु. [५] पवन, हवा ।

चार दिवस, जल, पानी,  
 दोन दिवस पानी।

[illegible]

वर्ष १९५०

44 4' 4 4' 4 4' 4 4' 4

॥१॥

२ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

କିମ୍ବଦନ୍ତୀ ମାତୃବ୍ରତ ଶ୍ରୀ ରାମ

[illegible]

U. S. DEPT. OF AGRICULTURE

पारा- [ प ] सदाई, वपा  
निष्ठावर ।

वाराणसी [५] भाषी, पताका

पारायण- [प] बर्हिपयैपारः

ସାବିତ୍ରୀ, [ ୪ ] ଶ୍ରୀମତୀ, ଶ୍ରୀମତୀ

बनेसा रुपए ।

नारायणकविः । सु । पृष्ठ ५

वाराणसी- [म] ता. ११.५.५० ]

मादही. (म) मादही.

गणेशजीकडून / कडून ,

॥६॥ [म] प्रभ, पानी ।

। रिदु. [म] मैत्र, वादुष ।

रिद्धनामक (५) गोप्य !

विधि. [४] असुद्ध ।

विषयः {५} दुग्धा ।

विद्यायाः ( ५ ) चरुद्वयम् ।

विशेष विवरण, (५) कृष्णा

6370

1. ૭] પાત્રી :

॥ [५] गद्यः ॥

को- [४] इनादन ।

॥ ५ ॥ अथ चतुर्थः ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

928 4747

वार्तिक [स] बनेते ।  
 वादिता [स] वेताफूल ।  
 वान् वाना [स] सुगंधवासा ।  
 वासनीवन [स] दूध ।  
 वालपद [स] खयर ।  
 वासन्नुनिता [स] नाविका ।  
 वानपत्ता [स] पेन ।  
 वासविन्दु 'स' वेतमुठ ।  
 वानिका दाली (स) नाविका ।  
 वातुदा (स) दालू ।  
 वासेपन (स) केवटीमोवा ।  
 वासेज (स) भद्रेकीवतारी ।  
 वाल्हीव (स) हींग, केसर ।  
 वान्हीका (स) नीलवासान ।  
 वापक (स) दानोतप ।  
 वान (स) वरगद ।  
 वासर [स] दिवस, दिन, रोज ।  
 वासक (स) वाकस ।  
 वासनी (स) वसन्ता की नेवार  
 नावनी फूल ।  
 वासपुष्प (स) वनसुर ।  
 वासा (स) वाकस ।  
 वासुव [स] यवाय, चत्व, ठीक ।  
 वासुव (स) वसुपा ।

वासुवाकार (स) पत्ताची ।  
 वाहनो [स] रघादियान, सवारी ।  
 वाहिनी [स] पेना, नदी ।  
 वाद्य [स] भिन्न, पुष्पक, वहिर्भव ।  
 विषा (स) होहवर ।  
 विकटन (स) कटार ।  
 विक्रमा (स) मजोठ, रोहणी ।  
 विहिर (स) पची, चुपाड़ी ।  
 विशीर (स) सासपकवन ।  
 विक्रिय [स] विक्रिययोग्य पदार्थ,  
 वेचने के लायक चीज ।  
 विख्यात [स] प्रसिद्ध, मशहूर ।  
 विष्ण [स] सपद्रव, विषात ।  
 विषय [स] पण्डित, विद्वान,  
 चतुर । [ सपूर्व ।  
 विविच [स] पद्धत, पाचय,   
 विजय [स] जय, जीत, फतह ।  
 विजया [स] हरे, भांग ।  
 विहास [स] मारोारि, बिहास ।  
 विह (स) वाता भोग ।  
 विहङ्ग (स) वाशिरंग ।  
 विज [स] धन, द्रव्य, स्यात,  
 विचारित, ज्ञात, सम ।  
 वित्त (स) घोड़ा ।  
 वितुष (स) तूतिपा ।

वातनः ( ५ ) एषो अथवादि

मृग मातः ।

त ५ म गहा ।

वात वापी [म, जवाग्य,

वावडी ।

म ५ म वागनी ।

वागीमतस्य ( ५ ) वागीमतनी ।

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

वागु म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

वातनः [ ५ ] अथवादि, वागनी,

मिवावर ।

वागपसो [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

वागपार [म] वागी, वागनी

म, वागी ।

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

म ५ म वागनी कोवा

वार्तिक- [स] बगेरी ।  
 वार्धिका- [स] वेसाफून ।  
 वान- वाना- [म] सुगंधवासा ।  
 वासजीवन- [स] दूध ।  
 वालपत्र- [स] खयर ।  
 वाननूनिहा- [स] माविका ।  
 वानवता [स] धेनु ।  
 वासविन्द- 'स' वेनमुंड ।  
 वानिका-वाली- (म) माविका ।  
 वालुषा- (स) बालू ।  
 वासपत्र- ( स ) केवटोमोवा ।  
 वालेज- ( स ) भद्रेचीकगारी ।  
 वाल्हीर- (स) होंग, केसर ।  
 वान्हीका (म) मोलवानान ।  
 वाजक-म- दानोमग्री ।  
 वास- (स) बरगद ।  
 वासर- [म] दिवस, दिन, रोज़ ।  
 वासक- (स) वाकस ।  
 वासुती- (स) बसन्त को नेवार  
 नाथजो फूस ।  
 वासपुष्प (म) चनसुर ।  
 वासा- (म) वाकस ।  
 वास्तव-म- यथार्थ, सत्य, ठीक ।  
 वानुष- (स) वयुषा ।

वासुकाकार- (स) पत्तांशी ।  
 वाहनी- [स] रघादियान, सवारी ।  
 वाहिनी- [स] सेना, नदी ।  
 वाद्य- [स] भिन्न, पुयक, वहिर्भव ।  
 विपा- (स) होइवेर ।  
 विकटत- (स) कटार ।  
 विक्रमा- (स) मज्जीठ, रोइणी ।  
 विहिर- (स) पत्नी, चुपाड़ी ।  
 विहीर- (स) सालपकवग ।  
 विज्ञेय- [स] विक्रेययोग्य पदार्थ,  
 वेषने के लायक चीज़ ।  
 विख्यात- [म] प्रसिद्ध, मशहूर ।  
 विघ्न- [म] उपद्रव, विघात ।  
 विघ्नज- [म] पण्डित, विद्वान,  
 चतुर । [ सपूर्व ।  
 विविध- [म] बहुत, पायर्थ,   
 विजय- [म] जय, जीत, फतह ।  
 विजया- [म] हरै, भाग ।  
 विदाल- [म] मात्रारि, विन्ताव ।  
 विड- (स) काला नील ।  
 विडङ्ग- (स) बागिरंग ।  
 विप- [म] धन, द्रव्य, ख्यात,  
 विचारित, ज्ञात, लभ्य ।  
 विति- (स) धोड़ा ।  
 वितुङ्- (स) तूतिपा ।

वागतां ( व ) स्त्री चण्डालादि  
सुख मात्र ।

वाग्त ( स ) गृह्यत ।

वावि- वापी- [ स ] जलमात्र,  
वावही ।

वाप्य ( स ) वापकी ।

वागीमत्स्य- ( स ) वागीमत्स्यी ।

वायम्- [ स ] वायव्यी, वाय ।

वायमी- ( स ) वायवी, वायार ।

वायमीनी ( स ) वायवीनी तद्-

भाव ॥ चण्डमात्र ।

वायु- [ स ] पवन, वाय ।

वार- [ स ] वारि, जल, पानी,

ठोकर, घाव, वाही ।

वारध [ स ] निवारक, रोकेवा,

वाधक । [ वाधा, वाधी ।

वारध- [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध- [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वार- [ स ] च-आध, वीक,

निधिय ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वारध [ स ] च-आध, वीक,

वारध [ स ] मकृति, मतिरं ध

निधिय, वलन, गल ।

वार्तिक [स] बगेरी ।  
 वायिका [स] वेसाफूस ।  
 वान-वाना [न] सुगंधवाचा ।  
 वासनीवन [स] दूध ।  
 वासपत्र [स] खयर ।  
 वासन्नुनिवा [स] नाविका ।  
 वासवाता [न] वेनु ।  
 वासविन्दु 'स' वेनमुठ ।  
 वासिका, वाली (स) नाविका ।  
 वातुषा (स) बालू ।  
 वासेपत् (स) केवटीभीवा ।  
 वासेज् (स) भदैसीकेतारी ।  
 बालुहीक (स) होंग, केतर ।  
 बान्नीषा (स) गोलदानाग ।  
 वासक (स) दोनीजर्मी ।  
 वास, (स) बामद ।  
 वासर [स] दिवस, दिन, रोज ।  
 वासक (स) वाकस ।  
 वासली (स) वसुधा की नैवार  
 नाचरी फूस ।  
 वासुधुष (स) चनचुर ।  
 वासा (स) वाकस ।  
 वासक [स] ययार्थ, कृत्य, डीवा ।  
 वासुधु (स) बधुषा ।

वासुधाकार (स) पनांची ।  
 वाहनी [स] रघादियान, सवारी ।  
 वाहिनी [स] वेना, नदी ।  
 वाद्य [स] मित्र, प्रयत्न, वहिर्भव ।  
 दिपा (स) बीहवर ।  
 विक्रान्त (स) कटाई ।  
 विक्रमा (स) मजीठ, रोहपी ।  
 विकिर (स) पत्ती, चुपाड़ी ।  
 विकीर्य (स) सासपकवन ।  
 विक्रेय [स] विक्रेययोग्य पदार्थ,  
 बेचने के लायक चीज ।  
 विप्लवात [स] प्रसिद्ध, मयदूर ।  
 विप्ल [स] उपद्रव, विघात ।  
 विषमर [स] पण्डित, विद्वान,  
 चतुर । [ सपूर्व ।  
 विविध [स] बहुल, पाचर्य,   
 विजय [स] जय, जीत, फुलक ।  
 विजया [स] हरे, भांग ।  
 विडाल [स] मार्जारि, बिलाव ।  
 विडु (स) कासा नीन ।  
 विडु (स) बागिरंग ।  
 विज [स] धन, द्रव्य, ख्यात,  
 विचारित, ज्ञात, सम्य ।  
 विभि (स) घोड़ा ।  
 विरुड (स) तूतिपा ।





- (म) भोवभाफन । विभोग (स) विपरीत, उल्टा ।  
 (म) सुन्दर । विनय (म) देव ।  
 (घ) विच्छेद, जुदाई । विभक्तकटो (म) देलपुंठ ।  
 (घ) विच्छिन्न, विरत, विभक्तपेगिक }  
 गहरित । विस्वफल (म) देन का फल ।  
 [ घ ] विधोग, जुदाई । विवर (म) छिद्र, दोष, मू-  
 ग. [ घ ] रागगुण्य । राग, ऐव ।  
 म. [ घ ] स्थिति, व्याम, विवचा. (स) वलुमिच्छा, कइने  
 अंत, चवचान, निष्ठति, को इच्छा । [ विवह वाद ।  
 चनाति । [ छछटा । विवाद. (घ) ज्यहार, कलह,  
 बह. [ म ] विरोधदुल, विरोधी, विवाद. (स) टारपरिहार,  
 विरूप. (घ) गुण्य, भयानक । पाविप्रहण, व्याह ।  
 विरोध. (म) बैर, विरुद्धता, ग- विविध. (स) चनेक प्रकार,  
 दुगा, लड़ाई । [ दिर । नागाप्रकार, बहुमतारह ।  
 विलम्ब. (म) बद्धाख, चगीघ, विवेक. (स) सन्यक्ज्ञान, धिवेचन ।  
 विलक्षण. (स) निम्नयान्वित, विगत्या. (स) तामाभड़ी,  
 चर्च, विविध । [ जन्तु । गुरिष, करिहारो ।  
 विचक्षा. (म) विन के रहनेवाले विग्रपुष्पी. (म) मयनफल ।  
 विनाय. (स) रोदन, परिदेव- विगारद. (स) पंडित, चणर.  
 नोति । मगलभ, येठ ।  
 विनाय. (म) हाथभेद. फ्रीडा, विगाध. (घ) विस्तीर्ण, बृहत्,  
 विहार, पानन्द, हर्ष । सुन्दर, बड़ी इगाहन ।  
 विलेगय. (स) सरहा । विगाहाल्लिख. (स) कृतिवन ।  
 विलेगया. (स) गोह, चरहा, विजेष. (स) अधिक । [ फुत ।  
 विहीतो, सांप, मूस आदि । विजेषय. (स) भेदक धर्म, सि-

विशेष. ( स ) गुणादिभिर्भेद,  
विशेषणार्थं, मोक्षण ।

विश्राम. ( स ) निवास, स्थान,  
स्थिति । [ मगधूर ।

विश्रुत. ( स ) विख्यात, प्रसिद्ध ।

विश्व. ( स ) जगत, संसार,  
वदभिमानो, जीवद्यमन,  
मकल, शीठ ।

विश्वभेषज. ( स ) शीठ ।

विश्व. ( स ) पतिस, शीठ ।

विश्वामित्र. ( स ) गाधिपुत्र, मुनि  
विशेष ।

विश्राम. ( स ) प्रतीति, श्रद्धा,  
पूर्ण, नियय, यकीन ।

विश्वभर. ( स ) परमात्मा ।

विश्व. ( स ) गुरु, जड, र,  
निवासुरार । [ खेचसा ।

विश्वकण्ठिकिनी. ( स ) पूर

विश्वर. विश्वर } ( स ) पत्नी ।  
विश्वपत्नी.

विश्वारा ( स ) कीटकर पत्नी  
वासे पत्नी बटेर पत्नी ।

विश्व. ( स ) चौराह साग ।

प्री ( स ) बहुर, पीसा फूल  
या वंदार, वरंज ।

विश्वतिन्दु. ( स ) मंथरतेद ।

विश्वनामिनी. ( स ) दौनी राखा ।

विश्वमयन. ( स ) कमल ।

विश्वम. ( स ) पसम, दाहण,  
संकट, चयुग्म ।

विश्वमयन्द. ( स ) कतिपय ।

विश्वमुटी. ( स ) बखार ।

विश्व. ( स ) इन्द्रिय गोचर,  
श्रद्धादि, देश, स्थान ।

विश्व. ( स ) पतिस ।

विश्व. ( स ) पशुपति, इक्षी-  
दत, वराहदत्त ।

विश्व. ( स ) ककराभिन्दी ।

विश्व. ( स ) विश्व. तद भावे  
विश्व. मयन्द, मयन्दी ।

विश्व. ( स ) गोक, क्षेत्र ।

विश्व. ( स ) सुकेतु मयन्द,  
वरा, नागदमनी ।

विश्व. ( स ) विष्टा ।

विष्टी. ( स ) पानी या वपी ।

विष्टा. ( स ) मय, पत्नी ।

विष्णु. ( स ) व्य. पक, परमेश्वर,  
चमि, मय । [ विष्टा ।

विष्णुकाव्या. ( स ) सुन्दर पत्नी ।

[ कसेन ]

[ ३५२ ]

[ वृत्तफल ]

वक्रेण (स) प्रियंगु ।  
 वारे (स) नखनी [चांग]  
 विनो (स) कनक का पं-  
 सुविका (स) रोग विमेष,  
 वैजा ।

विस्तृत (स) विस्तीर्ण, फैला  
 हुआ । [ फैला हुआ ]  
 विस्तार (स) विस्तीर्णता,  
 विस्तार (स) डडवेर ।  
 विस्तृत (स) विस्तीर्ण, विस्तार-  
 युक्त, फैला हुआ ।  
 विस्तृत (स) पाप्य, पट्ट, त,  
 संमद । [ डेरान ]

विस्मित (स) विस्मययुक्त,  
 विस्मृत (स) अस्मृत, भूल ।  
 विहग (स) पक्षी, नेघ, गर,  
 नूत, चन्द्र । [ पक्षी ]

विहङ्गन विहङ्ग विहङ्गन (स)  
 विहित (स) जिस कर्म की  
 मात्रा में विधि हो ।

विहृत (स) भयादि कर के  
 व्याकुल । [ करप ]

विधिप [स] त्याग, प्रेरण, दूरी

वीज (स) बीजा ।

बीजकर्पास (स) घासन ।  
 बीजयोग (स) कनक का पता ।  
 बीजपूर (स) विजौरा लेनू ।  
 बीजपूरीपर (स) गङ्गाकांठरी ।  
 बीर (स) शौर्ययुक्त, बहादुर,  
 एडनेवाला, भार, कड़पा ।

बीरप (स) भार ।  
 बीरपन्थ (स) पथपथ ।  
 बीरतक (स) भार ।  
 बीरपती (स) रोहिता ।  
 बीरवृक्ष (स) नेवावा, कड़पा ।  
 बीरवेन (स) सुधानी ।  
 बीरा (स) बैला, काकोली तट  
 भावे समगन्ध ।

बीर्य [स] शुक्र, पराक्रम, बल,  
 प्रभाव, तेज ।  
 पुडा (स) बड़ी गौचररी ।  
 पुडोवदु (स) बड़ी गौचररी ।  
 हुडा [स] भेड़िया ।  
 हुडा (स) बाघ ।  
 हुको (स) प.ठ ।  
 हुतकोपा [स] बन्दाच ।  
 वृत्तपथ [स] युक्त ।  
 वृत्तकट [स] साहचिरविरी

व्यक्त (स) म्यष्ट, गक, मित, बुद्धि  
मान, स्थूल । [जन ।

व्यक्ति (स) पञ्चमाक्षर, प्रकाश,  
व्यङ्गदृष्ट्यर्ग । (स) केम न ।

व्यप स व्याकुल, व्यासक्त ।

व्यजन (स) मन्त्रा ।

व्यतिष्ठत स विपद्येय, चन्दा

व्यतीत, स' त्तीत, गुञ्जरादृषा

व्यथा सो न न पेट' तजनीक

न न शर म नि टन आचार

श्रीका परपुरय मे प'र पुन

धक्त मन्त्र मे मङ्गिपुटीपमद

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्यत त नो ।

व्याकरण [स] यष्ट, धातु, प्रत्य  
टि, बोधक शास्त्र, रफ, तद्धा

व्याकुल (स) उद्विग्न, शीघ्र  
ग्रन्थ, व्यथित, उदास ।

व्याम्य स विवर्ण, गीता, कवच ।

व्याम्यान 'म' व्याख्या, वर्णन ।

व्याप्त [स] सिद्ध, बाध, मेर ।

व्यापनस्य [स] बडी गछी ।

व्यापराखी [स] कटाई ।

व्याप्राच्छ 'म' सात्तरेङ्क ।

व्याप्राच्छः स बडोगछी ।

व्यापी 'म' रगनी ।

व्याप (स) शक्ति शिकारी ।

व्याप 'म' राम, कुटरोम,

विम ।

व्यापि 'म' अमरताम ।

व्याप 'म' विभ, अधिक

म' रङ्गनेवासा ।

व्याप 'म' ल' माये कर्म, कष्ट,

विक्र, टि ३ फन र ।

व्याप 'म' समाकाशा,

म' रङ्गनेवासा ।

व्याप 'म' द' दिव, पक्षदेम

व्याप 'म' र' दिव ।

व्यास. (स) सप, साप, हिंसक,

पशु, चीता, बाघ, सिंहादि ।

व्यास. (स) सुनिविष्ट, वि-

स्तार, कुतर ।

व्युत्पन्न. [स] पंडित, विद्वान् ।

व्योम. [स] ग्रीष्म, पीपल, मिर्च ।

व्यप. (स) बाव, छिद्र, फोड़ा ।

व्याप्य. (स) यन्त्रीपवीत, संस्कार

रहित, सावित्रीपतित ।

## श

शं. (स) कल्याण, योग, शुभ ।

शय. (स) मकार, भांति, बार ।

शङ्क. [स. फ] सम्पत्, मकाराद्या,

समर्थ, घोषा, शुक्ला,

संशय ।

शङ्कट. (स) गाढ़ी, छद्मदा,

रथ, यान विमेष ।

शङ्कशी. (स) नक्षत्री ।

शङ्काना. (स) भयमाना, डरा ।

शङ्कानी. (स) शङ्कधानी, स-

जिता, लज्जुष ।

शङ्काद्या. (स) समन्तर, यथ ।

शङ्कन. शङ्कन. (स) पची,

शुभ, शुभ का बिन्द ।

शङ्कनाधम. (स) खाग, वायस,

पधन पची ।

शङ्कनाहत. [स] साक्षधान ।

शङ्कनी. (स) मोक्ष, गृध्र, पची ।

शङ्कन्ति. [स] खग, पची,

विडिया ।

शङ्कचाङ्गी. [स] अक्षपीपर ।

शङ्कचादनी. (स) कुटभी ।

शङ्कचाची. (स) गाँहरदूब ।

शक्त. [स] सामर्थ्य, वसवान्,

कठोर ।

शक्ति. [स] माया, सत्ता,

वच, वकीं वदियार, स्त्री,

तारी, जोरी, पक्ष विशेष

सांग, सामर्थ्य ।

शक्य. [स] होने के योग्य,

साध्य, शक्यतर ।

शङ्क. [स] नक्षत्रा, रन्ध्र ।

शङ्कमाषी. [स] कोरेपा ।

शङ्कमुन. (स) अयन्त ।

शङ्कारी. (स) नीचनाद ।

शङ्काद्या. [स] इनरजव ।

शङ्कानृग. [स] वानर, वन्दर ।

शब्द (म) कुलिय, वच ।

शब्दर सः शब्दर आति ह  
रित वा ।

शब्दरो (म) तानाकडी ।

शब्दर (म) येड, कल्याण कल  
बटावारी चमुर, मृगधनुष

शब्दरारि, (म) कामदेव, धनङ्ग ।

शब्दल [म] बिकार, मन बट  
वृत्तधी ।

शब्दः स सोः २, ख उं २ः

शब्दिसन (म) शब्दः, धामिन ।

शब्दु सो शिव, शङ्कर ।

शब्दग सो निद्रा, निद्रा शब्दः

शब्दगी म शब्दः च मग ।

शब्दः स धामिन बट वन

भयातान दे० कमि-

क्या दे० २, २, २, २, २, २

२, २, २, २, २, २, २, २

कल २, २, २, २, २, २, २, २

शब्द स २, २, २, २, २, २, २, २

कल २, २, २, २, २, २, २, २

२, २, २, २, २, २, २, २

२, २, २, २, २, २, २, २

२, २, २, २, २, २, २, २

विमिष विमोमुष वान ।

कल मागेन माराच २५,

धाची तोपन पान २१३

स, यकवाय पराय पुति,

बहुते सिनिट मिमःत ।

बचनतीर को पीर बलि,

मिटे न ययो नृगजग २२३

शब्दमूर्ते स ज र, कानिष

की शर ।

शब्दमूर्ते स ब लोका विमरा

धानोका २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

शब्दमूर्ते २, २, २, २, २, २

विज्ञास गरायागतः ।  
 रस्त्र. (म) ग्ररप, ग्ररपयोग्य,  
 रचयोय ।  
 ग्ररत्. ग्ररद्. (न) कृतुविशेष,  
 पात्रिन, कात्तिक, पात्रिन  
 कात्तिक नाम, बत्तर ।  
 ग्ररभट्ट. (स) नुनि विशेष ।  
 ग्ररमित. (स) क्षजित ।  
 ग्ररारिष्ठा. (स) भिक्षुया पची  
 पानी पर सरनेवाला ।  
 ग्ररासन. (स) धनुष. धनुषा,  
 बाप, बाप, कमान ।  
 ग्ररासुर. (म) बापासुर ।  
 ग्ररीर. (स. फ.) काया, देह.  
 पांग, टुट, गात्र, निष्ठा ।  
 ग्ररीरनाम—दी. । काय  
 कनेवर कुनप वपु, देह  
 प्रातमा श्रंग । विप्रह उप-  
 धन संभजन, धान सरीर  
 पतंग ॥ १ ॥ तुप तन सम  
 सरिकरन लुगि, सरने पगिन  
 रूप लेत । कोनल सरन  
 सुगंध मदि. वो करि उप  
 मा देत ॥ २ ॥ ग्ररीर ने  
 एष नाम का नान जेव :

२ । कंध नाम—देहा ।  
 उन्नत हरि सम सुगन  
 हरि, कंध कंधरं शंस ॥  
 कर धर दीर्घतिज्ञा नुदित,  
 जिम चउरं नज्जि शंस ॥ २ ॥  
 ग्ररी. नाम—कंधवंसपत्र ।  
 गावधान कंधजन कंठेवर  
 उपवन है । कुनप देह संह-  
 नन ग्ररीरदु वपु तनु है ॥  
 काय नूति विप्रह पतंग  
 युग पंचदम है । वंसपचयह  
 छंदशला यट पंडम है ॥ ४ ॥  
 ग्ररीरी (म) देही, नीयाला, प्राणी ।  
 ग्ररेष (स) बाप ने, बापसरिजे ।  
 ग्ररैरा. ग्रवरैरा. ग्ररैर. (स) रस,  
 पांइ. गजर, नीनी, बालू ।  
 ग्रर्व. (स) कल्याण दायक,  
 सान्नी, मित्र ।  
 ग्रर्वैरी. (न) निगा. रजनी ।  
 ग्रर्वैरीनाय. (स) गंदना गनि. पं  
 ग्रर्वैरी (न) कल्याणदायक  
 सानिनी, मित्रा, पायित  
 ग्रर्वै (न) सुप, दर्प ।  
 ग्रर्वै. ग्रर्वै (स) विप्र म  
 ग्राह्य नाम ज्ञाति का स





मल्लतः [स] निरंतर ।

मल्लम् [स] घरा दूध ।

मल्लगा [स] घोषोद्धार, पहर, गोहायत ।

मल्लमसरोजः [स] पाषाणमल्ल ।

मल्लः [स] भाजी, तरकारी, हरा, पीत, यव, कोर, होपविम्वेय, तरकारी ।

द्विज्यो, कल, मूष, पत्ता, हंटी, जड़, गोबरहाता ।

मल्लपायः [स] पचाया तरकारी ।

मल्लभरीदः [स] सांभरनीमा ।

मल्लराटः [स] वयुषा ।

मल्लघोटा [स] कीबन्ती ।

मल्लवदिवः मल्लवनिवः [स] कुंजरा, विजाती ।

मल्लवः [स] हीन की वयु ।

मल्लः [म.द.] यव, चास, दूध, मल्लगा ।

मल्लः [स] मल्लि के सभासय, पविष्य दिविव ।

मल्लः [स] कुंजरा विम्वेय, मल्लगा, हाजी ।

मल्लगा [स] हाजी वृक्ष, बहुविध विचार ।

मल्लमसरोजः [स] वागर, बन्दर ।

मल्लो [स] वृक्ष, पेड़ ।

मल्लोटा [स] सिहोरा । [हरा ।

मल्लः [स] भाजी तरकारी,

मल्लः [स] पत्तरी चाकू पादि तेजवरवकी, चान, मिनी ।

मल्लिखलः } (स) वेनवृक्ष,

मल्लोत्तः } सुनिनाम ।

मल्लः [स] सुख, पानन्द, तीव्र ।

मल्लनः (स) लोभ, कष्ट ।

मल्लपरिः (स) विवाह, यज्ञ ।

मल्लः (स) मधुर, कटुवचन

सहिता, स्त्रि, ठाडा, लदु,

कोनच, सौम्य, लोभोदित ।

मल्लकुम्भः [स] नीला ।

मल्लका [स] लरही लोभ ।

मल्लिः (स) स्त्रिता, चैन,

ठण्ड, ई, घना, निवारण,

काम लोभादि का सीतना,

विषयी के मन का रोठना ।

मल्लः (स) चाप, मय, पिडार,

कोना, पासीम, बद्धुषा,

कुंजन ।

मायन (म) न. वदेत ।

मायानुपार (म) मायका नकार

मायुष (म) मोग, मय, य'वा ।

मायक (म) बाण, तीमर, ज्ञान ।

मायका नो बाण ।

मायक (म) पवीष, निपुष,

मेखये, भुयित, कृतवन् ।

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायको मायकमान ।

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायका (म) मकोको, निपुषो

मायपयिका (म) पयिगी ।

माय (म) मायन, भवन, चर, गङ्गा

मायामजेय (म) मीयामुष्टे ।

मायामुष्ट (म) काला मंग का

मायो धान ।

मायि-मायिम- (म) मायाम,

मान मायि यय इमल

यद्यु का ।

मायिमान्य (म) माय धान ।

मायिन (म) मीय ।

मायिपयि (म) मयिपय ।

मायो (म) धान, मीय

मायि यय, मीती, मीमा,

मय किय का धान,

मायम मायाम का मयि

मायन मयि मयि मायि

मयि मयि मयि मयि

मयि मयि मयि मयि

मयि मयि मयि मयि

मयि मयि मयि मयि

मयि मयि मयि मयि

मयि मयि मयि मयि

ભારતી લંબુ ગરાબી ૩૧૩

मान्य. (४) फलसम्बन्ध ।

गालियः (च) चौक, नैवारनुदं।

बालाक्षी- (न) नेगर ।

अ. लक्ष्मीनिर्यासः } (च) गोत्र  
 आ. लक्ष्मीनिर्यासः } २८ ।

गावळ. (च) बाळपणी, वसा  
सुगादि।

मायरा (न): दीव ।

ब्राह्मण- (न) निष्ठ, मनातन,  
निष्ठर । [गिरंतर ।

नाम्न- (च) सुगत, नित्य,

मानन- (६) बाघा, दण्ड, ता-  
उत, निष्ठा । { दोग्य ।

मासनीयः (स) ताड़नीयः, दण्डः

नाम्नि (गः पाश्चा, राश्वदृष्टः)

भाषा (न) संघ, पुस्तक, पोथी,  
चायूष, चितःकुमान सन्त

वेद, ऋग्विषद, सूक्ते नमः  
नामः इति पट्टाक्षः ।

गोपबन्धु (भ) ग्राह्यवेत्ता, पंडित

भा.क्रा.पं. (त) उभ्याद, यथा ।

माप्ती- (म) माझा, विदुष, विदुष  
विदुष- (य, क)

शिवप्रियुषः (स) सुमार्गः ।

गिर्यभिः [स] हृदस्यति ।

जिष्ठपङ्क्तिः [न] मयूर, मोर ।

ગિજર, [સ] પર્વત ટીકોર, નાદ,  
ધાર, ચોટો, પર્વતાગ્ર,  
પર્વત જી ચોટી ।

गिहरी- [स] पर्वत, पहाड़  
हिर गिरी ।

निष्ठा- [त] मन्त्र का टोका,  
दीपादि का टोम, फल,  
अग्नि, ज्वाला, बूझा,  
छोटो, हंगमिय।

मिथिपदेव. [न] तृतीयः ।

शिशुिग. [स] नदुरसभ, गीर०.  
रुनुर ।

विद्युत्-संस्कार की मिस्री।

मिषी- [स] नदूर, पग्नि, पाग,  
 फनेका, तिरिपारी । प-  
 जिनान—दी० । पायश  
 दण्डा दहन क.च, सिधी  
 धनदौ होय । एक लप  
 बुध नायु उप, नित होय  
 पुनि सोय ११२ सातु दे  
 ज्यु होत हति, विप्र

समाप्तः, (स) निम्न चत्वारि,

सदा. वृत्तः. प्रामाण्यः ।

समाप्तः (स) स्थायीवर्जित,

प्रतापः ।

समाप्तः [स] वृत्तः पदितः ।

समाप्तः [स] वृत्तः, वृत्तः,

पतिवर्जितः ।

समाप्तः [स] निम्न, वृत्तः, समाप्तः

पतिवर्जितः [स] वृत्तः, प्रीतिः ।

प्रतापः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

समाप्तः (स) वृत्तः वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः. वृत्तः

समाप्तः [स] समाप्तः. -

समाप्तः [स] समाप्तः. (वृत्तः)

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः,

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः.

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः,

समाप्तः समाप्तः ।

समाप्तः, समाप्तः, [स] समाप्तः.

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः,

समाप्तः, समाप्तः, समाप्तः.

समाप्तः समाप्तः ।

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः.

समाप्तः, समाप्तः [समाप्तः.

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः.

समाप्तः [स, स] समाप्तः.

समाप्तः, समाप्तः ।

समाप्तः, समाप्तः, समाप्तः, समाप्तः,

समाप्तः समाप्तः [समाप्तः, समाप्तः,

समाप्तः, समाप्तः, समाप्तः, समाप्तः.

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः,

समाप्तः, समाप्तः ।

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः.

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः.

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः.

समाप्तः [स] समाप्तः, समाप्तः.

प्रनुविषय, खोज, भाव ।  
 [म] निष्ठ, संयोग, दरार ।  
 बीच, नेत्री, निवाय, जोड़ा ।  
 [म] संक्षय, धाव, नेम ।  
 इच्छा ।

उत्थ, [म] कञ्जारात, साधं  
 वान, भंध्या नाम—दो० ।  
 निमिषुष भंध्या विट्वा  
 सब, भायंकाय प्रदीप ।  
 नाक परी चतु एदई,  
 छिन्ना करई तन्नि रोप ।  
 सन्निवर्ष [स] सविधान, समी-  
 पता । [ समीपे ।

सविधि, [म] निवट, पान,  
 सन्निपात [म] विदीय कारण ।  
 सन्निहित [स] निवट, समीप,  
 पहीस । [नतवार ।

सन्मान [द] पादर, तर्क्याद,  
 सन्मुख [द] सामने, पानी,  
 पादर, साक्षात ।

सपय [म] सपय, सीमंद ।

सपट [द] छकदी ।

[सपटि [स] जीध, कटपट,  
 तत्काय, सन्दी, तुरंत ।

सपय [म] गांठी स'दत ।  
 सपय [स] गिरद, गांठी,  
 पोर, नाठ के भाव ।

सपय [म] महापके, संगे,  
 पांय स'त [कती ।

सप दमस्य [म] गांधरात ।

सपुष [स] पुत स'दत ।

सपोका [द] सांय या पोषा,  
 बी० । [मि कोउ करे

सपुष सन येता । उरपा-  
 वरि गदि सपुष सपोका ।

सपुष सपुष सपोका छाटा  
 साय सा बघा ।

सपुत [म] सपुष, समीप ।

सपुता [म] भाव का बघा ।

सपु [सप] भात संख्यापायका ।

सप्तच्छपि, सप्तपि (प.न.)

सुगु, संगिरा, समिट,  
 पधि, पधप, पुधतल,

समीपी । सप्तच्छपि दो० ।

सप्तप पधि समिट सुग,

विद्यांगन सपान । भर

दाज नीतन धडित, या

दन्नि उर पान । ११ पु

सावमान. ( स ) अनादर, च-  
भाष. [ नीतिविशेष ।

साम. ( स ) तीसरा वेद, राज-  
सामयो. ( स ) वसु. पदार्थ, च-  
टासा, चारण, समूह द्रव्य,  
सामान ।

सामध. ( स ) समधीमिकन ।

सामर्थ. ( स ) बल, गति,  
योग्यता ।

सामप्रायक. ( स ) पिता का स-  
मपपदोप, यादक्रिया ।

सामय ( स ) समय, वेला, कास ।

सानान्य. ( स ) साधारण, च-  
नसार ।

सामीप्य सासुङ्ग. ( स. य ) नि-  
जटता, समीपता, समुच्च ।

सामुद्र. ( स ) पांगानोन ।

सामुद्रजन. ( स ) सामिन के बर्ण  
का पानी ।

सायं. ( स ) संभ्रांताज ।

सायक. सायक. ( स ) बाण, तीर,  
चक्र, तथवार । [ नान्त ।

साय. ( स ) सायंकास. दि-  
न ।

सायुष्य. ( स ) सुखविशेष, मन्त्र-  
कीन ।

सार. ( स ) वक्त्र, जल, धर्म,  
मन्त्र, इत्यादि शोभा, धृत,  
धन, न्याय, नवनीत, शोध,  
शोभा, वन, वायु रोग,  
येठ नित्य, गुदा, शीर,  
रक्षा, सार शब्द—शोभा ।  
सार बीजं धीरज धरम,  
सारवज्रभूतसार । सारत्रु  
सर्व को सांवरों, जिन  
मोक्षो भंसार । १ ।

सारक. [ स, फ ] मेला पक्षी,  
रक्षाकारक, जयपात्र, स-  
मासगोटा ।

सारङ्ग. [ स ] गगन, मृग,  
मौर, चातक, दीप, पक्षि,  
विष्णु धनु. धनुष, हरिच,  
बाधी, कच, राजहंस, चित्र,  
वक्त्र, मयूर । कामदेव,  
वेश, चामरच, कर्पूर,  
पुष्प, कोकिल, मेघ, सिद्ध,  
राजि, भूजि, वायु, राग  
विशेष । सारंग शब्द—

दो० । विजि चानर खष  
 संघ जुष, कर बाइस यइ  
 होय । पुंनग संघमसुत-  
 नद, खान बिछन हे सोय  
 ॥ १ ॥ जित तफाव भुजंग  
 पुनि, खो बइ मान समान  
 सारंग श्रीमगवान खो,  
 भगिने पाठो जान ॥ २ ॥  
 सारंग मुंदर कोष मत,  
 रात दिवस बइ भाग । खग  
 जानो पक धन बहिय, घंअ  
 पविता राग ॥ ३ ॥ रवि  
 सति दीपक मगन छवि,  
 बंदरि कुंजर रंग । पाटक  
 दादुष दीवडन, ये बहिये  
 सारंग ॥ ४ ॥ पपोदानान—  
 दो० । बल नुकरु दान  
 प डरी, साधिक सारंग  
 नाउं । घन खो बडे  
 पविहारा, नहि न बने  
 बलि जाउं ॥ १ ॥

सारंग [म] संदुन ।

सारंग [म] नकु, यइद ।

सारंग [म] नकुनकारिनी ।

सारंगिक [म] व्याध, गिकारी ।  
 सारज [म] नवनीत, मकुन ।  
 सारतद, [म] कदलीदृष, बने  
 डा दृष ।

सारवी. [म] रयवान्, रघ  
 इकेया, रयादि बाइनों  
 खो बाइनेवावा ।

सारद [म] नारदाता, नार  
 देनवावा, मरखती ।

सारदा [म] सरजती बाइने,  
 सारदेनवावा, खो बाइने  
 खो हे बाइने च रि पप  
 हे, परा छदय नानी बा  
 यःप खान पक गुवातीन  
 दूनरी पस्यंती ० ० भाव  
 छदय के मिरोभाग खान  
 न. खिक गुणबुद्ध, १२। तो-  
 खरी नखमा, भाके दण्ड  
 खान नखमगुव बुद्ध, ३३  
 खोवा बैयरी, भाके बुद्ध  
 खान तानन बुद्ध ॥ १ ॥  
 नरखती मरु बा बाइने  
 बिखित दंड के केरुदे ।  
 दण्डनाहिनी— ६२७ ६४







राजा । [ इषा ]

चित्त, (म) फेंका हुआ, फेंकाया  
चित्त, (म) मोघ, चमू, तुरत  
चीज, [म] फूस, पतला, दुबला,  
नाम, दुर्वल, निर्वल, चटा  
हुआ ।

चीयत, [म] चितितदिन, जो  
दिन चीज होय । [रस ]

चीर, [स] दुग्ध, दूध, चीर जल

चीरकाकोली [ स ] जानाम  
ख्यात तद्भावे यसमर्थ ।

चीरयो [स] दुधिया, चीर का-  
कोली तद्भावे यसमर्थ ।

चीरवल्ली [म] विचारकचन्द ।

चीरयाक [स] फटा दूध ।

चीरयुज [म] चीर का कोली-  
तद्भावे यसमर्थ ।

चीरयुक्ता [म] विचारकचन्द ।

चीरी, [म] घन, स्तन, चीरी,  
वाट, बरगद, बेबिधा  
पीपर ।

चीपवा, [म] दुधिया । [रमी ]

चीरका [म] दूध की चीर, चीर

चीराचितनया, (स) सफ़ी,

कमका ।

चीरोदृष्टं [स] बर, गुजर, बी-  
पर, पचाम पाकर, पद  
पांच दृष्ट ।

चीरिवाधारा [स] कीरकाकोली-  
तद्भावे यसमर्थ । [लीक]

चुद्र, [म] चमू, चमू, चीटा,

चुद्रचन्दन [म] काचचन्दन ।

चुद्रमन् [स] चठलामन् ।

चुद्रपटिका [ स ] किहिनी  
कटिभूषण ।

चुद्रा, (स) दाब, कुहासा, चुद्रा  
मन्द—दीहा । चुद्राविका

कहि नटी, सभुमाकी, जो

भाषा । इन सौ चुद्रा कहत

हे, मूरख नर भी ब्रह्मा ।

चुद्रावली, [स] किहिनी, कटि  
[ भूषण ]

चुधा, (स) भूष, चारिखा ।

चुधा, (स) भूषा, चुभुचु, चुविता

चुधित, (स) भूषा चुधास ।

चुधित, (स) भूषाम्, कचक,

जल उद्धरत, जलउपपन्न ।

(च) गराह, देह स्थान, पीक.  
 चेत, पुष्पभूमि, भूमि-  
 खण्ड, भूमि, मरीर, गृह  
 हिह स्थान, छो ।  
 चेत्य, (च) मरीर प्राता, पाप्मा,  
 जोष, चतुर, निपुण ।  
 चैव, (च) केंबना, बिताना, समग्र  
 बिताना, फूली का गुच्छा ।  
 चैम, (च) कल्याण, युग, कुम्भ ।  
 चैरियत । [बार ।  
 चैमवर (च) मुमकता, मङ्गल-  
 चैमवरी [च] चैमवरिणी, पत्नी  
 विमेष, मुमकारिणी ।

चैमवार (च) बहुतपसव ।  
 चैमा [८] कृपा, माऊ ।  
 चोम, [म] मन्देह, छोह, गीक,  
 बन्द, मोह, कैद, दण्ड,  
 उतसव, उद्धरण, हिलना,  
 चलायमान होना, कोपउर,  
 चलायमान । [ती, पृष्ठी ।  
 चोनि-चोपी- [द-स] चिति, पर  
 चोपीप [८] नृप, राजा ।  
 चोद- [८] मधु, मदमासी,  
 मोध । [काम, वचामत ।  
 चोर, [८] मुकल, नाहें का  
 आ, [८] निदिनी, बरती ।



